किस्मतकी करामात

रोमांचकारी घटनाओंसे पूर्ण
जासूसी उपन्यास

अनुवादक—
गिरीशचन्द्र जोशी

प्रकाशक—
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
२०३, हरिसन रोड
कलकत्ता

प्रथम संस्करण] दीपावली—१९३९ [मूल्य १।) रुपया

ब्राञ्च

ज्ञानवापी, काशी

दरीबा कलाँ, दिल्ली

बाँकीपुर, पटना

मुद्रक —
कृष्णगोपाल केडिया
= वणिक प्रेस =
१, सरकार लेन, कलकत्ता

किस्मतकी करामात

१

अन्धेरेमें आक्रमण

होटलकी अधखुली शीशेदार खिड़कीसे निकलनेवाली रोशनीसे दो राहगीरोंके चेहरे चमक उठे, और दोनों चेहरोंपर आश्चर्य-रेखाएं खिच गयीं, दोनों चौंककर खड़े हो गये। दो मेंसे किसीको भी यह उम्मीद न थी कि वे लोग इस तरह इस स्थान पर मिल जायंगे।

दो मेंसे एक जो बड़ा दिखलायी पड़ता था,—अपने नाटे साथीके कन्धोंपर हाथ मारकर उसने कहा—"ओह! स्प्रेट।" इतना कहकर वह हँसा, देखो, मैंने तुम्हें तुरत पहिचान लिया। दस वर्षमें तुम्हारा चेहरा काफी बदल गया, तब भी मुझे पहिचाननेमें जरा भी दिक्कत न हुई।

नाटेने लम्बेके हाथपर हाथ मारते हुए कहा—"ओह हो! ग्रेनाइट! तुमने तो मुझे ताज्जुबमें डाल दिया। दस वर्ष बाद एकाएक यहां मिलोगे, इसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी। तुम्हें

देखते ही दस वर्ष पहिलेकी घटना याद आ गयी। क्या उसे भूला जा सकता है, खैर! यहाँ मार्सेलीजमें तुम क्या कर रहे हो?"

"जिन्दगीके दिन बिता रहा हूँ। अलेक्जेण्ड्रा जानेके लिये यहाँ आया हूँ।"

"बहुत अच्छा। पी० एण्ड ओ० से चलो। मैं भी पोर्टसईद जा रहा हूँ। तुम कहाँ जा रहे हो?"

"इस वक्त तो पाराडिसमें एक दोस्तसे मिलने जा रहा हूँ। चलो न, मेरे साथ चलो। ओह! बड़ा मजा है। बड़ी बहार है। चलते हो? तुम्हें कुछ जरूरी काम तो नहीं है?"

"बहुत जरूरी तो नहीं।"

"तब चलो।"

"अभी नहीं। फिर आ सकता हूँ। मैं इस समय एक मजेदार मामलेमें हूँ।"

"मजेदार मामला क्या सिर्फ गलियोंका चक्कर लगाना है?" स्प्रेटने कुछ हँसते और कुछ सोचते हुए कहा।

"हाँ! लेकिन गलियोंका चक्कर भी किसी मतलबसे लग रहा है। समझे?

किस मतलबसे?

"यह जाननेके मतलबसे कि जिस शख्सकी छाया कई घण्टों-से मेरा पीछा कर रही है, उसका भीतरी रहस्य क्या है? मैं पेरिस-से यहाँ आया हूँ, तभीसे कोई शख्स मेरा पीछा कर रहा है।"

स्प्रेटने गलीकी इस मोड़से उस मोड़तक नजर दौड़ायी और फिर धीमे स्वरमें पूछा—"क्या अभीतक तुम वही खेल खेल रहे हो?"

"हां, मैं अभीतक वही अभिनय कर रहा हूँ, और आप जनाब?"

"मैं उस झंझटसे कभीका निकल चुका, इस समय मैं मिश्रकी सिविलसर्विसमें हूँ। लेकिन तुम मजाक तो नहीं कर रहे हो? क्या सचमुच कोई तुम्हारे पीछे लगा है।" इतना कहकर फिर एकबार स्प्रेटने चारों तरफ नजर दौड़ायी।

"मुझे शक है। मुमकिन है, मेरा सन्देह गलत हो।"

"नहीं, तुम्हारा सन्देह गलत नहीं हो सकता। मुझे दस वर्ष पहिलेकी दो-एक बातें याद आती हैं, मैं तुम्हारे सन्देहको गलत कहनेकी गलती नहीं कर सकता। वे दिन भी क्या थे? मैं आज भी उसे याद करके काँप उठाता हूं। मैं सोचता था कि वे दिन बहुत दूर चले गये, लेकिन देखता हूँ तुम अभीतक उसी चक्करमें पड़े हुए हो।"

"यह मेरे खूनका असर है, स्प्रेट।"

"हाँ, ठीक है, तुम्हारे खूनका ही असर है। तुम्हारा खेल भी कितना अनोखा था। अगर मौका मिले तो मैं अब भी तुम्हारा साथ करना चाहता हूँ। क्या तुमसे फिर मुलाकात होगी?

क्यों नहीं? हर हालतमें मैं कल सबेरे तुम्हें जहाजपर मिलूँगा।

बहुत अच्छा, स्प्रेटने कहा, लेकिन सावधान? कहीं फँस न

जाना। यह मार्सेलीज है। ओ हो! बड़ी भूल हो गयी, मैं भला तुम्हें क्या सिखला सकता हूँ। अच्छा फिर मिलेंगे।

दोनों, बिना और कुछ कहे-सुने क्षणभरमें भीड़में मिल गये। ग्रेनाइट अभी भी अपने लम्बे-चौड़े डीलडौलके कारण भीड़में बिलकुल नहीं मिल पाया था, लेकिन मार्सेलीज जैसे बहुरंगी शहरमें ऐसे बहुत आते-जाते थे। इसलिये उसका लम्बा-चौड़ा डीलडौल किसीका ध्यान अपनी तरफ न खींच सका।

पर इससे क्या? वह बड़ी सावधानीसे चल रहा था, लेकिन चल रहा था एकदम सीधा निर्भय होकर। जैसा कि उसने स्प्रेट-से कहा,—भले ही कोई उसका पीछा कर रहा हो, पर उसने एक दफा भी सिर घुमाकर, बराबर पीछा करते रहनेवालेको देखनेकी कोशिश नहीं की। वह चलता ही रहा, इसलिये कि आगे या पीछेसे किसीने भी उसके चलनेमें रुकावट नहीं डाली।

कोई उसका पीछा कर रहा है, यह जानते हुए भी उसने कुछ पर्वा न की, क्योंकि उसकी अद्भुत जिन्दगीमें इस तरहकी परिस्थिति पैदा हो जाना, साधारण बात हो गयी थी। जी० ग्रांट शाही जासूस था, ब्रिटिश गुप्त समितिका विश्वासपात्र एजेण्ट था, उसका काम खतरनाक होता था और इसीलिये उसके मार्गमें हमेशा खतरे आया करते थे; लेकिन वह भारीसे भारी आपत्तिसे न कभी घबराया और न हारा, इसीलिये अभी तक काम कर रहा था, और अभीतक आपत्तियाँ उसके मार्गमें आती रहती थीं।

यद्यपि स्प्रेटसे अलग होनेके बाद वह बिना बाधा बढ़ा चला जा रहा था, यह ठीक है, लेकिन यह भी बिलकुल ठीक है कि निर्भय चलते रहनेपर भी वह अपना पीछा करनेवाले शख्सको भर नजर देखना चाहता था। उसे इस बातमें जरा भी सन्देह नहीं था कि कोई उसके पीछे लगा आ रहा है। यह उसका सन्देहमात्र ही था, जैसा कि उसने स्प्रेटसे कहा था, कि उसके सन्देहका कोई निश्चित आधार नहीं है। पर ऐसा बहुत कम हुआ था, जब उसका सन्देह गलत निकला हो। गुप्त समितिमें काम करते हुए उसने जो अनुभव हासिल किया था, उसके आधारपर वह सन्देह करता था, और सौ में निन्यानवे दफे उसका सन्देह ठीक साबित हुआ था।

कई मरतबा बड़ी सावधानीसे छिपते हुए, तेजीसे, स्थिरता-पूर्वक, आक्रमणके लिये प्रस्तुत, अन्धकारका सहारा लेते हुए उसका पीछा किया जा चुका था, उसके लिये यह कोई नयी बात नहीं थी। लेकिन इस बार ताज्जुबकी यह बात थी कि ग्रेनाइट यह नहीं समझ रहा था कि उसका पीछा करनेवालेका मतलब क्या है? अक्सर राजनैतिक कागजात या कोई गुप्त समाचार पानेके लिये उसका पीछा किया जाता था।

किन्तु इस बार जी० ग्रान्टके पास किसी तरहके राजनैतिक कागजात या गुप्त समाचार न थे। यानी उसके पास ऐसी कोई चीज नहीं थी जो किसी दूसरेके लिये कीमती या जरूरी हो। वह एक बहुत ही मामूली कामसे सूडान जाना चाहता था जो

किसी देशकी राजनीतिसे कोई सम्बन्ध नहीं रखता था। तब उसका पीछा क्यों किया जा रहा था?

संभवतः किसी दुश्मनने व्यक्तिगत बैरका बदला चुकानेके लिये षड्यंत्र रचा हो। ऐसा होना असंभव नहीं था, किन्तु बहुत संभव भी न था। ब्रिटिश गुप्त समितिके गुप्त कार्यमें व्यक्तिगत बैरका क्या स्थान? इस समितिके मेम्बर कम न थे। वे बड़े-बड़े काम करते थे, किन्तु समितिके लिये, अपने लिये नहीं। व्यक्तिगत राग-द्वेषसे और ब्रिटिश गुप्त समितिसे कोई सम्बन्ध नहीं था। यह सोचकर जी० ग्रान्ट चक्करमें पड़ गया, उसके मनमें क्षण भरके लिये यह विचार उठा कि कहीं उसकी रक्षाके लिये ही ब्रिटिश गुप्त समितिने किसी अन्य मेम्बरको न लगा दिया हो। अगर यही बात है तो उसने स्प्रेटके साथ न जाकर भूल की। उसके साथ जाता तो मौज करता और दिल बहलाता। लेकिन किसी भी तरफसे निश्चित न हो सकनेके कारण उसने मामलेको आगे बढ़ाना ही ठीक समझा।

इस तरह विचारोंकी उधेड़बुनमें पड़ा हुआ वह मार्सेलीज की सड़क केनबीरी पर आया। केनबीरी शानदार सड़क है, मार्सेलीजको इस रास्ते पर गर्व है। इस सड़कपर बड़ी भीड़ थी। काफीघरों और होटलोंकी असंख्य बिजलियोंने सड़कपर दिनकासा प्रकाश फैला रखा था। मार्सेलीजके रहनेवाले यूरोपीय, ग्रीसियन और टर्किस ठाठबाठ और वेशभूषामें सजे आ जा रहे थे। मार्सेलीजकी यही विशेषता है कि वहाँ पूरब और पश्चिमका

फैशन पूर्ण मात्रामें विराजमान है। काली, गोरी और पीली जातिके स्त्री पुरुषोंका संगम होनेके कारण मार्सेलीजको त्रिवेणी का माहात्म्य प्राप्त हो गया है। वैसे तो मार्सेलीज पूरबका द्वार हैं, किन्तु यहाँ पूर्वीय और पश्चिमीय सभ्यता अपने पूरे रोब के साथ दिखलायी पड़ती है, जिसके पीछे पूर्वीय रहस्यका पर्दा लटका रहता है।

मार्सेलीज शहर अपूर्व है। हर तरहके स्त्री-पुरुष, वेश भूषा, नाच-गान, खेल-कूद, अभिनय, भाषा, रीति नीतिका जो साम-ञ्जस्य यहां है, वह किसी दूसरे शहरमें नहीं है। मार्सेलीजको अगर दुनियाकी नुमाइश कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। मानों यहां सातों समुद्रोंका पानी आकर मिल गया हो। यहाँ आनेवाले पेरिस और अफ्रिकाके लखपतियोंने यहाँके व्यवसायको ही उत्तेजना नहीं दी, बल्कि यहाँके काफीघरों, होटलों और चकलोंकी संख्या भी बढ़ायी है। मार्सेलीजमें हर तरहका आनन्द मिल सकता है। तबीयत बहलानेका हर तरहका सामान यहाँ मौजूद रहता है। यहाँके आदमी जैसे ही फैशन-परस्त ऐय्याश और मौजीले हैं, वैसे ही व्यवसाय पटु, परिश्रमी और बुद्धि-मान भी हैं। मार्सेलीज फ्रांसका सबसे बड़ा बन्दर है। इसका अपना सैकड़ों वर्षोंका इतिहास है। मेडिटेरियनका नीला जल मार्सेलीजके चरण पखारता है। इसका हृदय नदियोंके जलसे तृप्त रहता है। मार्सेलीज अपूर्व है।

मार्सेलीजकी शोभाश्री और चमक दमक देखता हुआ जी०

ग्रान्ट प्रधान सड़क पार कर फिर साधारण सड़कपर आ गया। सन्देह, अभी भी उसके हृदयमें तूफान उठाये हुए था। वह एक पतली सी गलीमें पहुँचा, भीड़ कम थी, बहुत ही कम और गलीमें रोशनी भी दूर दूरपर थी, बीच-बीचमें अन्धेरा पड़ता था। जी० ग्रान्ट सोच रहा था, पीछा करनेवाला इस गलीमें जरूर उस पर हमला करेगा, इससे बढ़िया मौका उसे कहाँ मिलेगा। मुमकिन है, वह एकाएक भयानक आक्रमण कर बैठे। अगर ऐसी बात हो। जी० ग्रान्ट सोचता था ऐसा भी सम्भव है। यही समझ कर वह वक्त जरूरतपर दुश्मनका मुकाबिला करने, उसके आक्रमण को व्यर्थ करनेके लिये तैयार हो गया।

और तेजकानोंने सन्देहको दृढ़ करनेमें सहायता दी। उसने अपने पीछे कुछ दूर पर किसीके जूतोंकी आहट सुनी। वह गेनवीरीकी भीड़भड़केदार सड़क पार करके इधर आते ही सावधान हो गया था। वह कभी तेजीसे बाँये चलता, कभीदाहिने, इतना सजग होनेपर भी जी० ग्रान्टने पीछे घूमकर नहीं देखा, वह न भागा और न रुका। लापरवाहीसे चल रहा था, लेकिन उसके कान खड़े थे और उसका हाथ जेबमें था, हाथमें रिवाल्वर था, थोड़ी देर बाद वह मोड़पर पहुँचा और एक अन्धेरे दरवाजेमें छिप गया, वह दीवालकी तरफ पीठ करके खड़ा हो गया ताकि दुश्मनका मुकाबिला कर सके।

दस मिनट इन्तजारमें गुजरे और ग्यारहवें मिनटपर उसका पीछा करनेवाला उससे बीस हाथके फासले पर आ गया।

जी० ग्रान्ट साँस रोककर, आँखें गड़ाकर, आगे बढ़ते हुए गलीकी मोड़के एकदम करीब आये हुए दुश्मनको देखने लगा।

क्षण भरमें वह सामने आ जायगा, और पीछा करनेवालेका रहस्य खुल जायगा।

सचमुच, क्षणभरमें एक लम्बी-चौड़ी मूर्ति किनारेपर आ गयी। चूंकि जी० ग्रान्ट वहां सांस रोके खड़ा था, इसलिये पीछा करनेवालेने सिवा एक नजर उधर ताकनेके और कुछ न किया। वह ग्रेनाइटको अन्धेरेमें देख न सका।

तीन सेकेण्ड बाद, जी० ग्रान्टने किसीके चलनेकी आहट सुनी। वह उसके पीछे-पीछे चलने लगा। परिस्थिति बिलकुल उलट गयी। अभीतक उसका पीछा किया जा रहा था, अब जी० ग्रान्ट पीछा करनेवालेके पीछे लग गया था।

वह अनजान आदमीका पीछा करते हुए पचास गज भी न गया होगा कि उसने एकाएक अपने पीछे जूतोंकी आवाज सुनी।

उफ! सारा गुड़ गोबर हो गया। जी० ग्रान्ट मन-ही-मन बोला। क्योंकि वह नहीं चाहता था कि अन्धेरी गलीमें, जब कि वह अपना पीछा करनेवालेका पीछा कर रहा हो और कोई तीसरा आदमी बीचमें आ जाय।

निश्चय ही तीसरा आदमी मेरा प्रयत्न व्यर्थ करनेके लिये पीछे लगा है। जी० ग्रान्टने सोचा।

परिस्थिति इतनी अस्थिर थी कि अधिक सोचनेका समय नहीं था।

जी० ग्रान्ट पलभर असावधान हुआ और एक अजनबी आदमी उसपर टूट पड़ा। उसके हाथमें छूरा चमचमा रहा था। जी० ग्रान्टने फौरन उसका बांया हाथ पकड़ लिया, किन्तु छूरे-वाला दाहिना हाथ न पकड़ सका। उसके दाहिने हाथमें छूरा था और वह वार करनेही वाला था। दोनों आदमी अपनी जान बचाने और दूसरेकी जान लेनेपर उतारू हो गये। जी० ग्रान्टने दो तेज पीली आँखें देखीं। वह लड़ाई-भिड़ाईके काममें गुरु था। लेकिन उसने महसूस किया कि सेरको सवा सेर मिला है और दुश्मनको काबूमें लाना हँसी-खेल नहीं है।

दोनों आपसमें गुंथे हुए थे कि अन्धकारमेंसे तीसरा आ कूदा। यह वही आदमी था जो थोड़ी देर पहिले जी० ग्रान्टके पीछे था।

तीसरे आदमीने जैसे ही जी० ग्रान्टके बीचमेंसे घुसकर, छुरेवाले आदमीकी कलाई पकड़ पायी, वैसे ही उसने उसे धर दबाया।

लेकिन इसके पहिले ही, तीसरे आदमीके आनेसे जी० ग्रान्टका ध्यान उधर जाते ही, छुरेवालेने छुरा तानकर उसपर वार कर दिया।

तीसरे आदमीके छुरेवालेको धर दबानेपर भी छुरेकी नोक उसके सीनेपर जम गई। तीसरे आदमीके धक्केने आक्रमण-कारीका हाथ ढीला कर दिया और छुरा उसके हाथसे छूटकर झन्नसे जमीनपर गिर गया।

आक्रमणकारीने जोरका झटका दिया और तीसरे आदमी-के पंजेसे निकलकर, जी० ग्रान्टके आगे बढ़नेके पहिले ही, अन्धकारमें छिप गया और तेजीसे भागता हुआ आँखोंसे ओझल हो गया।

जी० ग्रान्टने पहिले आक्रमणकारीके पीछे भागना चाहा। लेकिन दूसरे ही क्षण उसने समझ लिया कि अब अन्धेरेमें आक्रमणकारीका पता लगाना सम्भव नहीं है। जी० ग्रान्टने देखा कि तीसरा आदमी छुरेका घाव खाकर बिना हिले-डुले पड़ा हुआ है।

गहरा वार पड़नेसे मर न गया हो, इस संशयके साथ जी० ग्रान्ट उसपर झुका। आदमी ग्रेनाइटके पैरोंके पास पड़ा हुआ था, उसने आश्चर्य पूर्वक देखा कि उसे जरा भी चोट नहीं लगी।

ओफ! यह आदमी नहीं, दानव है। कितना मजबूत और बहादुर है। धुंधली रोशनीमें जी० ग्रान्टने देखा कि वह एक खास किस्मकी पोशाक पहिने हुए है। वह दीवालके सहारे गलीमें पड़ा हुआ था। एकाएक जी० ग्रान्टने देखा कि उसके हाथ और मुँह काला है, वह बिलकुल काला निग्रो या निग्रो जातिके सम्मिश्रणसे पैदा हुआ आदमी है।

क्या तुम्हें चोट लगी है? जी० ग्रान्टने काले आदमीके कन्धेपर हाथ रखते और उसके चेहरेको गौरसे देखते हुए पूछा।

क्षणभर बाद ही जी० ग्रान्टने उसे पहिचान लिया, उसके चेहरेपर आश्चर्य छा गया, वह ताज्जुब भरे स्वरमें बोला—

अरे, तुम। पम्पन।

उसने फ्रेञ्च गुप्त समितिकी मिस जुलीके अबसीनियन नौकरको पहिचान लिया।

२

खूनी कौन ?

वे दोनों जो प्रोफेक्वरके शानदार कमरेमें बैठे हुए थे, अपने-अपने फनके पूरे उस्ताद थे। खिड़कीसे बाहर सामने दूरपर नाट्रीडेम गिर्जा दिखलायी पड़ रहा था और ऊपर स्वच्छ आकाश। पेरिसके जनाकीर्ण भागसे दूर आमने-सामने बैठे हुए वे दोनों विभिन्नताका अनुपम उदाहरण बन रहे थे।

एक नाटा आदमी था, बहुत ही मीठा, बहुत ही बुद्धिमान और एकदम गोलाकार। उसकी खोपड़ीपर एक भी बाल न था, और उसकी चाँद ऐसी थी जैसा बिलियर्डका गेंद। उसका चेहरा हँस-सा रहा था और आँखें निश्छल थीं। लेकिन बर्टरम चारन उतना सीधा नहीं था जितना दिखलायी पड़ता था। अन्यथा वह बहुत शीघ्र ही फ्रेञ्च सरकारके जासूसी विभागका चतुर मेम्बर होनेका गौरव प्राप्त न कर पाता।

उसके साथीमें व्यक्तित्व साफ झलक रहा था। उसका कद

लम्बा और हृष्ट पुष्ट था। उसके कपड़े और उनकी बनावट और उसका चेहरा बतला रहा था कि वह अंग्रेज है। शानदार, आकर्षक और गम्भीर चेहरा कह रहा था मानो कोई बैरिस्टर हो। सच तो यह है कि वह एक विख्यात बैरिस्टर हो सकता था, अगर उसने बेकर स्ट्रीटके प्रसिद्ध जासूस सेक्सटन ब्लेकके नामसे प्रसिद्धि न पायी होती।

तो दोस्त, तुम विनोसा होटलमें ठहरे हो? बर्टरम चारनने फिर कहा।

शुक्रतक! सेक्सटन ब्लेकने जबाब दिया। अगर किसी समय टेलीफोन करो, और मैं न रहूँ तो अपना सन्देश भिजवा देना।

बेशक! चारनने स्वीकार किया। लेकिन अपने कमरेका नम्बर तो बतला दो। उसने गम्भीरता पूर्वक पूछा।

कमरा नम्बर २१। ब्लेकने उत्तर दिया, और कुर्सीपरसे उठते हुए कहा—अच्छा, नमस्कार।

बर्टरमने हाथ मिलानेके लिये बढ़े हुए ब्लेकके हाथको अपने हाथमें लिया और ब्लेक सामने खड़ा होकर उनके चेहरे पर नजर गड़ाकर कहने लगा—कमरा नम्बर २१, यह खास बात है।

तुम ऐसा ही समझो। ब्लेक अर्थपूर्ण हँसी हँसे। लेकिन मैं तुम्हारी खास बातसे बिलकुल नावाकिफ था, और हूँ। विनोसा होटलमें क्या खराबी है?

ओह, बहुत बढ़िया होटल है। बिलकुल शान्तिमय और क्लान्ति नाशक।

जहाँका वातावरण हर समय आनन्दपूर्ण रहता है, सिर्फ एक बात, जिसे तुम आनन्दवर्द्धक नहीं कह सकते, लेकिन आश्चर्यजनक और उत्तेजक कहा जा सकता है। क्यों, दोस्त? मेरा खयाल है कि तुम बड़े बुद्धिमान हो।

इस सम्मान पूर्ण सम्बोधनके लिये धन्यवाद। लेकिन चारन तुम अपनी बातोंसे ही अपनी बात काटते हो। तुमने अभी मेरे विनोसा होटलमें ठहरनेको "बदमस्ती" कहा था।

नहीं। मैंने "बदमस्ती" नहीं, किन्तु "खास बात" कहा। बर्टरम चारनने वाक्य ठीक करते हुए कहा—वह भी मुमकिन है, संयोगकी बात हो।

यानी विनोसा होटलमें ठहरना एक खास बात है?

और २१ नम्बर कमरेमें ठहरना भी।

लेकिन मेरे दोस्त, होटल भरमें २१ नम्बरवाला कमरा ही खाली था। ब्लेकने चतुर फ्रांसीसीपर उड़ती-सी नजर फेंकी, और कहा—तुम्हारी घुटी खोपड़ीमें कोई कीड़ा कुलबुला रहा है। कहो, क्या कहना चाहते हो।

फिर भी चारनने साफ-साफ कुछ न कहा।

वह बोला—तो यह संयोगकी बात है।

बेशक, संयोगकी बात है। गो कि मैं यह अच्छी तरह समझ गया हूँ कि यह संयोग तुम्हें रुचिकर नहीं हुआ। अगर तुम

मेरी उत्सुकता मिटाना नहीं चाहते, तो मैं जाता हूं देखो मुझे देर हो रही है। एक आदमीसे अभी मिलने जाना है। समय हो गया।

एक मिनट ठहरो। बर्टरमने कहा—और अपनी डेक्समेंसे कागजोंकी एक फाइल निकाली। फाइलमेंसे उसने अखबारोंकी कतरनका ढेर निकाला, और ब्लेकके सामने रख दिया।

इन्हें पढ़ो। शायद इनके पढ़नेसे तुम्हारी आँखें खुल जायें।

चारनने कहा।

वास्तवमें अखबारोंकी कतरनोंने ब्लेककी आँखें खोल दीं। जैसे ही उनकी आंखें, फ्रांसके "टेम्स" नामक अखबारकी कतरनपर पड़ीं, जिसपर छपा हुआ था।

होटलमें रहस्य-जनक खून।

इस शीर्षकके नीचे ये लाइनें छपी थीं।

"पीरी ड्रूसीली नामक एक अफ्रीकन व्यापारी पिछली रातको विनोसा होटलमें रहस्यपूर्ण ढंगसे मार डाला गया। पीरी ड्रूसीली कई सप्ताह पहिले पेरिसमें आकर रहा था। सबेरे होटलकी नौकरनीने उठकर देखा कि पीरी ड्रूसीलीके कमरेका दरवाजा बंद है, तो उसने दरवाजा खटखटाया, लेकिन कई बार दरवाजा खटखटानेपर भी दरवाजा नहीं खुला, तब उसने मैनेजरसे रिपोर्ट की। दरवाजा तोड़कर भीतर जानेपर देखा गया कि पीरीड्रूसीली अपने बिस्तरपर मरा पड़ा है। पीरी ड्रूसी-

लीको बिस्तरपर मरा पाकर यह भली भांति मालूम हो रहा था कि कमरेमें किसी तरहकी लड़ाई नहीं हुई। बेचारा ड्रूसीली गला घोंटकर मार डाला गया। हत्याकारीकी अंगुलियोंके निशान गलेपर साफ दिखाई दे रहे थे। कमरेकी खिड़कीका पल्ला खुला हुआ था जिससे मालूम होता था कि हत्याकारी खिड़कीके जरिये ही भीतर आया था और आते ही उसने ड्रूसीलीको गला घोंटकर मार डाला, क्योंकि अगल-बगलके कमरोंमें रहनेवालोंने रातमें रोने या चिल्लानेका शब्द नहीं सुना। हत्याका कारण अज्ञात है और हत्याकारी भी लापता है। इस रहस्यपूर्ण हत्याकाण्डसे काफी सनसनी फैल रही है।"

ब्लेकने पढ़कर सिर हिलाया और चारनको देखते हुए कहा—हाँ, ठीक है। मैंने इस हत्याकाण्डका संक्षिप्त हाल लन्दनके किसी समाचारपत्रमें पढ़ा था। मैं समझता हूँ, लगभग दो सप्ताह पहिले मेरे आर्मस्ट्रांग जानेके समय यह हत्याकाण्ड हुआ था।

ठीक है। सामने पड़े हुए समाचार-पत्रोंकी कतरनको गौरसे देखते हुए चारनने कहा—"इसी महीनेके तीसरे दिन बुधवारको यह हत्याकाण्ड हुआ था।

"हाँ, लेकिन मैं समझता हूँ, लन्दनके अखबारमें घटना-स्थलके स्थानपर इस होटलका नामोल्लेख नहीं था। खैर, यह विनोसा होटलकी घटना है?

मेरी उत्सुकता मिटाना नहीं चाहते, तो मैं जाता हूं देखो मुझे देर हो रही है। एक आदमीसे अभी मिलने जाना है। समय हो गया।

एक मिनट ठहरो। बर्टरमने कहा—और अपनी डेक्समेंसे कागजोंकी एक फाइल निकाली। फाइलमेंसे उसने अखबारोंकी कतरनका ढेर निकाला, और ब्लेकके सामने रख दिया।

इन्हें पढ़ो। शायद इनके पढ़नेसे तुम्हारी आँखें खुल जायें।

वारनने कहा।

वास्तवमें अखबारोंकी कतरनोंने ब्लेककी आँखें खोल दीं। जैसे ही उनकी आंखें, फ्रांसके "टेम्स" नामक अखबारकी कतरनपर पड़ीं, जिसपर छपा हुआ था।

होटलमें रहस्य-जनक खून।

इस शीर्षकके नीचे ये लाइनें छपी थीं।

"पीरी ड्रूसीली नामक एक अफ्रीकन व्यापारी पिछली रातको विनोसा होटलमें रहस्यपूर्ण ढंगसे मार डाला गया। पीरी ड्रूसीली कई सप्ताह पहिले पेरिसमें आकर रहा था। सबेरे होटलकी नौकरनीने उठकर देखा कि पीरी ड्रूसीलीके कमरेका दरवाजा बंद है, तो उसने दरवाजा खटखटाया, लेकिन कई बार दरवाजा खटखटानेपर भी दरवाजा नहीं खुला, तब उसने मैनेजरसे रिपोर्ट की। दरवाजा तोड़कर भीतर जानेपर देखा गया कि पीरीड्रूसीली अपने विस्तरपर मरा पड़ा है। पीरी ड्रूसी-

लीको बिस्तरपर मरा पाकर यह भली भांति मालूम हो रहा था कि कमरेमें किसी तरहकी लड़ाई नहीं हुई। बेचारा ड्रूसीली गला घोंटकर मार डाला गया। हत्याकारीकी अंगुलियोंके निशान गलेपर साफ दिखाई दे रहे थे। कमरेकी खिड़कीका पल्ला खुला हुआ था जिससे मालूम होता था कि हत्याकारी खिड़कीके जरिये ही भीतर आया था और आते ही उसने ड्रूसीलीको गला घोंटकर मार डाला, क्योंकि अगल-बगलके कमरोंमें रहनेवालोंने रातमें रोने या चिल्लानेका शब्द नहीं सुना। हत्याका कारण अज्ञात है और हत्याकारी भी लापता है। इस रहस्यपूर्ण हत्याकाण्डसे काफी सनसनी फैल रही है।"

ब्लेकने पढ़कर सिर हिलाया और चारनको देखते हुए कहा—हाँ, ठीक है। मैंने इस हत्याकाण्डका संक्षिप्त हाल लन्दनके किसी समाचारपत्रमें पढ़ा था। मैं समझता हूँ, लगभग दो सप्ताह पहिले मेरे आर्मस्ट्रांग जानेके समय यह हत्याकाण्ड हुआ था।

ठीक है। सामने पड़े हुए समाचार-पत्रोंकी कतरनको गौरसे देखते हुए चारनने कहा—"इसी महीनेके तीसरे दिन बुधवारको यह हत्याकाण्ड हुआ था।

"हाँ, लेकिन मैं समझता हूँ, लन्दनके अखबारमें घटना-स्थलके स्थानपर इस होटलका नामोल्लेख नहीं था। खैर, यह विनोसा होटलकी घटना है ?

जी हाँ, और २१ नम्बर कमरेकी। चारनने सिर हिलाते हुए कहा—इसीलिये मैंने कहा था, तुम्हारा विनोसा होटलमें आकर ठहरना, एक खास बात है। तुमने अपनी इच्छासे २१ नम्बर-वाला कमरा पसन्द किया?

तुम फिर मुझे छेड़ने लगे चारनसे ब्लेकने हँसते हुए कहा—तुम क्या मुझे ऐसा दुर्बल (?) समझते हो कि मैं वह कमरा इसलिये लेना पसन्द करूँगा कि कुछ दिनों पहिले उसमें भयानक हत्याकाण्ड हो चुका है। नहीं यह बात नहीं है। असल बात यह है कि उस समय और कोई कमरा खाली नहीं था। यह संयोगकी बात थी, पर बड़ा विचित्र संयोग था। मेरा खयाल है अब तक तुम रहस्यमय हत्या काण्डका पता लगा चुके होगे?

चारन गम्भीरता पूर्वक समाचार पत्रोंकी कतरन उलट रहा था। उसने कहा—नहीं। हत्याकाण्डका रहस्य अभीतक नहीं खुला। तुम्हें यह मामला दिलचस्प लगता है? मैं बहुत जल्दी ही तुम्हें सब बातें समझा सकता हूँ।

हाँ, कहो। बेशक, यह मामला मजेदार है, और इसका पूरा किस्सा सुननेके लिये मैं उत्सुक हो गया हूँ। क्या तुम्हें हत्याकारीका जरा भी पता नहीं चला?

हत्याकारीमें अपूर्व ताकत थी। चारनने जवाब दिया।

तुमने यह कैसे समझा?

पहिली बात यह कि पीरीड्रूसीली काफी लम्बा-चौड़ा और

ताकतवर आदमी था। उसमेंआक्रमण रोकनेकी पूरी ताकत थी, दूसरी बात यह कि वह इस तरह मरा पड़ा पाया गया मानो किसी बच्चेने खिलौनेकी गरदन मरोड़ डाली हो।

लेकिन, संभव है कि जिस समय पीरी ड्रुसीली सो रहा हो, उस समय आक्रमण किया गया हो।

तब भी जागते ही वह जान बचानेके लिये आक्रमण-कारीके साथ लड़ सकता था। अखबारोंमें यह ज़रूर छपा है कि मृत व्यक्ति और हत्यारेमें लड़ाई हुई, किन्तु इन अखबारवालोंको तो ऊटपटांग बातें लिखनेसे मतलब। बिस्तर का कपड़ा अस्त व्यस्त ज़रूर था, लेकिन कमरेमें इस तरहका कोई निशान नहीं था जिससे लड़ाईका प्रमाण मिलता हो। मेरे खयालसे यह बात स्पष्ट है कि जैसे ही आक्रमणकारीने पीरी ड्रुसीलीका गला दबाया वह बच्चेकी तरह असहाय हो गया। वह अपनी ताकतका उपयोग न कर सका। मरते समय पीरी ड्रुसीली तड़फड़ाया जिसकी वजहसे बिछौनेका कपड़ा अस्त व्यस्त हो गया। इसीलिये मैं कह रहा हूँ, हत्याकारीमें अपूर्व ताकत थी।

इतना जान लेनेपर भी तुम हत्याकारीका पता न लगा सके ?

नहीं। दोस्त, मुझे सख्त अफसोस है कि मैं सफल न हो सका।

सम्भवतः इसलिये कि तुम ऐसे आदमीकी तलाश कर रहे हो जिसमें अपूर्व ताकत हो। ब्लेकने कहा, अगर ड्रुसीलीपर

सोते हुए आक्रमण किया गया तो यह मुमकिन है कि जब उसका गला आक्रमणकारीके पंजेमें अच्छी तरह फँस गया तब उसकी आँखें खुलीं, उस समय उसने समझा कि उसकी जान लीजा रही हैं। और सोते हुए आदमीका गला दबानेमें किसी अपूर्व ताकतकी ज़ुरूरत नहीं है। संभव है आक्रमणकारी भी साधारण ताकतवाला ही हो, क्योंकि किसीका गला कसकर दबा देनेके बाद ज़ुरूरी यह है कि पंजा ढीला न होने पाये।

तुम्हारा कथन तर्कपूर्ण है, चारनने कहा, किन्तु प्रमाण ऐसे मिलते हैं कि जिस समय पीरी ड्रुसीलीपर आक्रमण किया गया, वह बिलकुल बेखबर न था। उसके पास अपनी रक्षा करने लायक समय था। ऐसा मालूम होता है कि पीरी ड्रुसीलीने आक्रमण रोकनेकी चेष्टा की। कमसे कम प्रमाणों द्वारा तो यही सिद्ध होता है।

किन प्रमाणों द्वारा ? ब्लेकने पूछा।

तुमने जो कतरनें अभी पढ़ीं उनमें यह बात नहीं लिखी गयी। चारनने कहा, और अपनी मेजके दराजमेंसे एक चाकू निकाला।

"यह काठका बना हुआ है।" चारनने फिर कहा, यह असागी लकड़ीका बना हुआ भद्दा चाकू है। किन्तु इस्पातके चाकूकी तरह तेज है। क्या तुमने ऐसा चाकू पहिले भी कभी देखा था ?

हां, यह असागीका बना हुआ है। ज़ुलस जातिके लोग इसे इस्तेमाल करते हैं। क्यों ठीक है कि नहीं ? ब्लेकने भद्दे चाकूको गौरसे देखते हुए पूछा।

हां, तुम ठीक कहते हो। ये चाकू दो तरहके होते हैं, लम्बे और छोटे। छोटे चाकू करीवसे आक्रमण करनेके लिये काम आते हैं, यह छोटी जातिका है।

हां। यह चाकू इस्तेमाल भी किया जा चुका है, चाकूके फलकी नोकपर पड़े हुए मैले दागको देखकर, ब्लेक वोले।

बहुत ठीक। तुम्हारा कहना सच है। यह चाकू ड्रूसीलीके पास था। होटलकी नौकरानीने इसे पीरीके कमरेमें मेजपर पड़े हुए देखा था। सम्भवतः पीरी इस चाकूको बहुत पसन्द करता था। क्योंकि यह नहीं कहा जा सकता कि वह काठका चाकू मुसीबतसे बचनेके लिये ही अपने पास रखता था। क्योंकि उसकी बन्द बेगमें भरा हुआ रिवाल्वर रखा हुआ था। जब दरवाजा तोड़कर लोगबाग उस कमरेमें घुसे, तब यह चाकू विस्तरेके करीब फर्शपर पड़ा पाया गया। डाक्टरी परीक्षा से मालूम हुआ कि उसका दायां हाथ टूटा हुआ था। इन बातों से तुम किस निर्णयपर पहुंचते हो ?

ब्लेकने चारनकी बातोंका जवाब देनेके पहिले कुछ सोचा विचारा, तुम यह कहना चाहते हो ? ब्लेकने जवाब दिया, कि ड्रूसीलीने मेजपरसे यह चाकू उठाकर, आक्रमणकारीसे अपनी रक्षा करनी चाही। इसलिये हत्याकारीने उसका हाथ पकड़कर तोड़ डाला।

हां। चारन उत्साह पूर्वक बोला। यह बात यह सिद्ध करती है कि हत्यारेमें निश्चय ही अपूर्व ताकत थी कि उसने पीरीका

कलाई तोड़ डाली। क्या मामूली लकड़ीकी तरह पीरी जैसे हट्टे कट्टे की कलाई तोड़ डालना साधारण आदमीका काम है? चाकूकी नोकपर जो खूनका दाग है, वह यह बतलाता है कि पीरीने चाकू लेकर आक्रमणकारीपर हमला किया, चाकू आक्रमणकारीके लग भी गया, और चोट लगनेसे पागल होकर उसने पीरीकी कलाई तोड़ डाली। आक्रमणकारीको चाकूसे चोट जुरूर लगी। फिर उसने पीरीका हाथ तोड़ डाला और गला घोटकर मार डाला।

इस तरहकी घटना होना असम्भव नहीं है। जब कि काफी ताकत रखते हुए पीरी ड्रुसीली अपने हत्यारेका कुछ न कर सका, कमसे कम अपने आपको मौतके पंजेसे छुड़ा न सका। तब क्या मेरा यह कहना युक्तिसंगत नहीं है कि हत्यारेमें अपूर्व ताकत थी। पीरी जैसे हट्टे कट्टे आदमीको बसमें करना साधारण ताकतवालेका काम नहीं है। अगल बगलके कमरेवालोंने किसी तरहका शब्द नहीं सुना जो इस बातका प्रमाण है कि पीरी ड्रुसीली तीन चार मिनटमें ही मार डाला गया। क्या अब भी तुम मुझसे सहमत नहीं हो?

बिलकुल असहमत नहीं हूं। ब्लेकने कहा, तुम्हारी आखिरी बातोंसे मालूम होता है कि तुम्हारा निर्णय युक्तिसंगत है। तुम्हारे पास इस बातके प्रमाण हैं कि हत्यारा हट्टा कट्टा और ताकतवर था। लेकिन इसमें आश्चर्य-जनक बात यह है कि इतना लम्बा-चौड़ा आदमी किस तरह छिपकर आ सका और किस तरह अपने-आपको छिपाये हुए भाग गया।

ब्लेककी बात सुनकर बर्टरम चारन एक आँख बन्द कर ध्यानमग्न हो गया और एक आँखसे ब्लेकको ताकते हुए कुर्सी-पर गरदन डाल दी।

इससे भी आश्चर्यजनक यह है कि, चारनने कहा, मेरा मत पहिले बयानके बिलकुल खिलाफ यह है कि पीरी ड्रूसीलीका हत्यारा बिलकुल छोटा आदमी था।

ब्लेकने उठते हुए अपनी घड़ी देखी और फिर कुर्सीपर बैठ गये।

मुझे देर हो गयी। ब्लेकने कहा, मैं उससे मिलने न जा सका, जो होना है वही होगा। लेकिन, तुम किस चक्करमें पड़ गये, चारन? पहिले तुमने कहा कि जितने प्रमाण मिले हैं वे यह बात सिद्ध करते हैं कि पीरी ड्रूसीलीका हत्यारा अपूर्व ताकतवर था। अब तुम अपनी बातके बिलकुल खिलाफ यह कह रहे हो कि एक बहुत ही छोटे आदमीने पीरी ड्रूसीलीका खून किया। तुम्हारी कौनसी बात सच है?

पीरी ड्रूसीली जैसा हट्टा कट्टा, वैसा ही लम्बा चौड़ा, वैसा ही ताकतवर आदमी पीरी ड्रूसीलीका खून कर सकता है, यह तो महज साधारण बात है। इसके विपरीत असाधारण किन्तु सम्भव यह भी है कि किसी छोटे, बिल्ली जैसे, मजबूत आदमीने खिड़कीके जरिये कमरेमें प्रवेश किया हो, क्योंकि ऐसा आदमी हरएक आदमीकी आँखोंसे बचता हुआ बिना बाधाके भीतर जा सकता था। क्या तुम समझते हो कि एक

मोटा-ताजा लम्बा-चौड़ा आदमी बिना किसीका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किये खिड़कीसे कमरेमें पहुँच सकता है?

मैं कुछ नहीं कह सकता, यह भी सम्भव है, वह भी सम्भव है। मैंने इस सम्बन्धमें कोई राय कायम करनेकी कोशिश नहीं की। यह सब सोचना समझना चारन, तुम्हारा काम है। लेकिन तुम्हारी बातोंसे मुझे इस मामलेसे दिलचस्पी हो गयी है। खैर, अगर यह मान लिया जाय कि ड्रूसीलीका हत्यारा छोटा-सा आदमी था, तब यह कैसे सम्भव हुआ कि उसने ड्रूसीली जैसे हट्टे कट्टेको जरासी देरमें मार डाला?

जुजुत्सु कौशलसे। क्यों, क्या यह असम्भव है? पूरबसे हम जो सबसे उपयोगी विद्या सीख सकते हैं, वह जुजुत्सु है। जापानियोंने इस विद्याका आविष्कार किया है। इस विद्याका जानकार मनुष्यके प्रत्येक अंगकी नसोंको अच्छी तरह जानता है। उसे हरएक अंगकी हड्डियों और पुट्ठोंका ज्ञान रहता है। यह विद्या बहुत ही उत्तम और अपूर्व है। अगर बुरा न मानो तो मैं यह कहूं कि जुजुत्सु जाननेवाले पूरबके आदमीके सामने हमारा पश्चिमीय पहलवान बिल्लीके सामने चूहेकी तरह है।

तुम्हारा कहना ठीक है। मैंने जुजुत्सुके चमत्कार पढ़े और सुने हैं। और यह भी मानता हूं कि जापानी इस विद्यामें जितने कुशल हैं, उनके मुकाबिलेमें हम लोग कुछ भी नहीं हैं। क्योंकि उन्हीं लोगोंने इस विद्याका आविष्कार किया है, उन्हें तो उस विद्यामें पारंगत होना ही चाहिये।

मेरा खयाल है कि कुछ सप्ताह पहिले पीरी ड्रु सीलीपर इसी विद्याका प्रयोग किया गया। अपूर्वताकत नहीं, बल्कि अपूर्व कौशलसे पीरी ड्रु सीलीकी जान ली गयी। चारनने कहा, मैं समझता हूं पहिले वह बिस्तरपर डाल दिया गया और फिर गलेको पंजेसे कसकर अंगूठेसे श्वासनली दबा दी गयी। इस तरह हत्यारा एक लम्बा-चौड़ा तगड़ा जवान नहीं, बल्कि जापानी खलासी या किसी विदेशी जहाजसे आया हुआ कुली होगा।

लेकिन अभीतक तुम हत्यारेका पता नहीं लगा सके ?

हाँ, अभीतक नहीं लगा। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इस रहस्यपूर्ण हत्याकाण्डके हत्यारेको गिरफ्तार करनेकी सारी आशा ही जाती रही। वह अभीतक छिपा है, पर जल्दी या देरसे उसे छिपे हुए स्थानसे बाहर निकलकर हमारे सामने आना ही पड़ेगा। निश्चय ही, हम उसे पकड़कर ही छोड़ेंगे।

लेकिन हत्याका उद्देश्य क्या था चारन ?

अब तुमने रहस्यकी असली बात पूछी। दोस्त, हत्यारेका उद्देश्य कुछ चुराना नहीं था। पीरी ड्रु सीलीके कमरेसे कोई चीज भी गायब नहीं हुई, गो कि उसके पास काफी माल था। उसके बेगमें हजारोंकी सम्पत्ति थी।

बेशक, तुम्हारी यह बात महत्वपूर्ण है और हत्याको रहस्य-मय बनाती है। अच्छा, पीरी ड्रु सीली किस तरहका आदमी था ? मेरा मतलब यह जाननेका है कि क्या तुम उसके व्यक्तिगत

जीवनकी गुप्त बातोंसे परिचित हो ? क्योंकि उसके जीवनकी गुप्त बातोंका पता लगनेसे यह अन्दाज लगाया जा सकता है कि हत्यारेका क्या उद्देश्य था।

कोई विशेष बात नहीं मालूम। हम सिर्फ इतना जानते हैं कि पीरी ड्रूसीली बहुत बड़ा मालदार आदमी था। उसके किसी सम्बन्धी या दोस्तका अभीतक कोई पता नहीं चला। कम-से-कम पेरिसमें तो उसका कोई सगा-सम्बन्धी नहीं है। उसकी जिन्दगी का अधिकांश भाग अफ्रीकामें बीता था। वह भी अफ्रीकाके एकदम भीतरी भागमें, सफेद आदमीके संसर्गसे बहुत दूर। साथ ही साथ यह भी सुना गया है कि उसका धन इतना पवित्र नहीं था, जितना कि होना चाहिये। अफ्रीका जैसे जंगली देशोंमें लोग कई तरहके ऐसे भयंकर तरीकोंसे धन पैदा करते हैं, जिन तरीकोंको हम लोग पाप समझते हैं और घृणा करते हैं।

उसने अपने आपको अफ्रीकन व्यापारी बतलाया, जैसा कि अखबारवालोंने भी लिखा है। ब्लेकने समाचार पत्रोंकी कतरन देखते हुए कहा।

हां ऐसा ही है, लेकिन उसने पापमय तरीकोंसे धन पैदा किया तो उसकी भयानक मौतने उससे पापोंका बदला ले लिया। फिर हमारा यह काम भी नहीं है कि हम यह पता लगाते फिरें कि उसने किन तरीकोंसे इतना धन पैदा किया। हमें सिर्फ इस बातका पता लगाना है कि वे क्या कारण थे, जिनके कारण पीरी ड्रूसीली मार डाला गया।

ठीक है। लेकिन तुम अगर यह जान लो कि उसने कौनसे तरीकेसे धन पैदा किया तो तुम्हें यह भी मालूम हो जायगा कि उसकी हत्याका क्या उद्देश्य था।

यह बात मैं सुझावके तौरपर कह रहा हूँ, ब्लेकने कहा—लेकिन मेरा यह खयाल है कि यह हत्या कोई भयानक बदला लेनेके लिये ही की गयी थी।

हाँ। यह हत्याकाण्ड ही ऐसा हैं कि इस सम्बन्धमें कई तरहकी अटकल लगायी जा सकती है। चारनने कहा, और एकाएक स्वर बदल कर बोला—खैर, दोस्त, जो भी हो, तुम्हारे लन्दन जानेके पहिले ही मैं तुमसे फिर मिलूँगा।

३

हरे बटन

प्रोफेक्चरसे बाहर निकलकर टुलीशीज जाते हुए मिस्टर ब्लेकका दिमाग अजीब उधेड़बुनमें पड़ गया। लेकिन उनके दिमागमें पीरी ड्रुसीलीके रहस्यपूर्ण हत्याकाण्ड और बर्टरम चारनकी बातें चक्कर नहीं लगा रही थीं। वे किसी और भी उधेड़बुनमें थे।

मिस्टर ब्लेक कई वर्षसे बर्टरम चारनको जानते थे। ब्लेकको फ्रेंच जासूसकी चतुरता और सजगतामें बहुत विश्वास था। दोनोंमें काफी दोस्ती थी, दोनोंका पेशा एक ही था, दोनोंने साथ ही काम किया था, दोनोंने एक दूसरेकी सहायता की थी, दोनों दिल खोलकर बातें करते थे, दोनों प्रेमभाव बनाए रखते थे, यदि उनका काम उन्हें प्रतिद्वन्दी बना देता तब भी।

लेकिन इस मामलेके सम्बन्धमें चारनकी बातचीतसे ब्लेकके हृदयपर यह प्रभाव पड़ा कि उन्होंने महसूस किया कि इस केसके बारेमें चारनने जी खोलकर बातें नहीं की। ड्रुसीली

हत्याकाण्डके सम्बन्धमें उसने जो बातें कहीं वे भी इधर-उधर-की, पहिले उसने एक बातका समर्थन किया फिर दूसरी बात-का और जब असली बात आयी तब बीचमें ही उसे बन्द कर दिया। ब्लेक इस तरहकी बात सोच रहे थे कि एकाएक उनके दिमागमें एक बात उठी।

वे सोचने लगे—

चारनको यह मालूम था कि मैं पेरिस आ रहा हूँ। उसे यह भी मालूम है कि मैं अक्सर विनोसा होटलमें ठहरता हूँ। फिर भी उसने अनजानकी तरह सवाल किया, तुम कहाँ ठहरे हो? बल्कि उसने विनोसा होटलमें ठहरनेको एक ख़ास संयोग बतलाया। क्या यह सिर्फ संयोगकी बात है कि जिस कमरेमें रहस्यमय हत्याकाण्ड हुआ, वही कमरा मुझको ठहरनेके लिये मिला?

ब्लेकने अपने आपही सवाल किया और एकाएक उन्हें एक भूली हुई बात याद आ गयी। उन्हें याद आया कि जिस समय वे होटलमें पहुँचे थे उस समय मैनेजर और बुकिङ्ग क्लर्कने उन्हें बड़े गौरसे देखा था, और आपसमें कुछ बातें की थीं। उस समय ब्लेकने इस बातपर विशेष ध्यान नहीं दिया। लेकिन इस समय उन्हें वह बात असाधारण मालूम हुई। उन्होंने लन्दनसे तार देकर ही अपने लिये एक कमरेका इन्तजाम करनेके लिये सूचित कर दिया था। तब भी यह ताज्जुबकी बात थी कि उन्हें २१ नम्बरका कमरा ही मिल सका।

ब्लेकका विचार फिर घूमा, वे सोचने लगे।

क्या यह सम्भव नहीं है कि बर्टरम चारनने जान-बूझकर ऐसा इन्तजाम किया हो कि मुझे २१ नम्बरका कमरा ही मिले।

जैसे ही ब्लेकके दिमागमें यह प्रश्न उठा वे आश्चर्य चकित हो गये।

उन्हें इस बातका विश्वास-सा हो गया कि यह चारनकी ही करामात है। उसीने मैनेजरसे कहकर २१ नम्बरवाले कमरे-का इन्तजाम कर दिया था। लेकिन अगर ऐसा हुआ हो, चारनके कहनेसे ही होटलके मैनेजरने उन्हें २१ नम्बरका कमरा दिया हो, तो क्यों ?

चारनने ऐसा क्यों किया ?

ब्लेकने इस प्रश्नका उत्तर पानेके लिये दिमागपर जोर नहीं दिया। बल्कि उन्होंने अपनी विचारधाराकी गति रोक दी। ऊँह ! उन्हें इस मामलेसे क्या मतलब ? वे फिजूल इसमें माथा पच्ची कर रहे हैं। उन्हें और भी बहुतसे जरूरी काम हैं। वे इस मामलेमें दिमागको क्यों खराब करें ? अभी तो उन्हें वही काम करना है, जिसके कारण वे पैरिस आये हैं।

यह सोचकर ब्लेकने इस विषयपर विचार करना रोक दिया। और इसके बाद दिनभर उन्हें फुर्सत नहीं मिली कि वे पीरो ड्रूसीलीकी हत्या और चारनके बारेमें कुछ सोचें।

वे दिनभर अपने आवश्यक कार्यों में फँसे रहे।

मि० ब्लेक विनोसा होटल लौटे उस समय सन्ध्या हो चुकी

थी। वे सीधे अपने कमरेमें चल गये, क्योंकि वे खाना खानेके पहिले एक बार नहाना चाहते थे। लेकिन जैसे ही उन्होंने अपने कमरेका दरवाजा बन्द किया और घूमे वैसे ही उन्हें भासित हुआ कि एक छाया उठ कर उनके सामने खड़ी हो गयी। अपनी ही छाया देख कर, क्षणभरके लिये ज़रा चौंकते हीं, ब्लेकके दिमागमें सवेरेकी बातें जो उन्होंने बर्टरमसे की थीं फिर ताजा हो गयीं। पीरी ड्रूसीलीकी बात याद आते ही उनके सामने हत्याकी तमाम बातें आ गयीं।

इसी होटलमें, इसी २१ नम्बरके कमरेमें हत्या हुयी थी। संयोगवश वे भी इसी कमरेमें ठहर गये, या किसीने जान बूझ कर उन्हें इसी कमरेमें ठहरा दिया। इसी कमरेमें, इसी पलंगपर ड्रूसीली गला घोंट कर मार डाला गया। एक पीले छोटे आदमीने इतने बड़े आदमीको मार डाला, कमसे कम बर्टरम का यही कहना था।

उफ! इस भयानक हत्याकाण्डका रहस्य क्या है? ड्रूसीलीका खून क्यों किया गया? वह खून करने पर क्यों उतारू हुआ। वह कौन है? क्या छोटा पीला आदमी खूनी है? क्या ड्रूसीलीका हत्यारा सचमुच जुजुत्सु जाननेवाला जापानी या किसी पूर्वीय देशका आदमी है? क्या सचमुच उसने अपनी जुजुत्सु विद्यासे ड्रूसीलीकी जान ले ली?

बर्टरम चारन बहुत ही चतुर जासूस है, उसे भी अभी तक हत्यारेका कोई पता नहीं लगा। अभी तक कई सप्ताह बीत

जाने पर भी हत्याकाण्डका रहस्य नहीं खुला। शायद कभी न खुले। लेकिन कमरेकी दिवालें सब कुछ देख चुकी हैं। ये सब जानती हैं। काश इन दीवालोंके जुबान होती, काश ये बोलने लगतीं, तो सारा रहस्य खुल जाता।

ब्लेकके दिमागमें यह खयाल आया कि दीवाल चाहे न बोले, पर दीवाल पर पड़ा हुआ दाग, खरोंच या अंगुलियोंका निशान बहुत कुछ कह सकता है। ब्लेक चमक गये, हां खुद अपने ही खयालसे चमक गये। उनकी तेज आंखें पत्थर, दीवाल या काठ पर पड़े हुए दागसे इतना काम निकाल सकतीं थीं कि हत्यारेको फांसी पर झूलना पड़े।

लेकिन इस तरहके निशान घटनास्थल पर तुरत पहुँचनेसे मिलते हैं। इस हत्याकाण्डको कई सप्ताह बीत चुके, इतने दिनों बाद दीवाल पर किसी तरहके निशान मिलना असम्भव है। निश्चय ही हत्याकाण्डके बाद कमरेकी पूरी सफाई की गयी होगी। फिर किसी भी तरहका मामूली सा निशान क्या बर्टरम की तेज निगाहोंसे छिप कर रह सका होगा?

दरवाजा किसीने खटखटाया और ब्लेककी विचारधारा रुक गयी। ओह! होटलकी नौकरानी थी।

आपके नहानेका पानी तैय्यार है। नौकरानीने कहा।

ब्लेक घूमे और नौकरानीको गौरसे देखा।

मुझसे पहले इस कमरेमें कौन टिका था? ब्लेकने पूछा।

जी, मोसिये। कई सप्ताहसे इस कमरेमें कोई नहीं रहा।

जबसे इस कमरेमें पीरी ड्रूसीली हत्या हुयी ?

नौकरानीने कुछ चौंककर जवाब दिया:–जी हाँ, मोसिये शायद ऐसा ही हो, ठीक नहीं मालूम। क्योंकि मैं इस होटलमें नयी हूँ।

ब्लेकने सिर हिलाकर उसे जानेकी आज्ञा दे दी, और जब तक वह दरवाजा बन्द करके न चली गयी तबतक उसी तरफ देखते रहे। नौकरानीके दरवाजा बन्द करके चले जानेपर, वे उठे और खिड़कीके पास गये। उन्होंने देखा कि खिड़कीकी जो चटकनी टूट गयी थी, वह हटा दी गयी और उसके स्थानपर दूसरी नयी लगा दी गयी। खिड़कीपर किसी अंगुलियोंके निशान न थे। खिड़की बन्द थी, ब्लेकने धक्का देकर खिड़की खोली। वे खिड़कीसे कूदकर पीछेकी छतपर चले गये, जहाँ लोहेके सींकचे लगे हुये थे।

इसके नीचे होटलके दरवाजेके बगलसे जानेवाला एक मामूली रास्ता था। सड़कपर लोहेके सींकचे लगे थे जो किसी भले आदमीको उधर आनेसे रोकते थे।

सम्भवतः वह पीला हत्यारा इसी तरफसे आया था, लेकिन वह खिड़कीतक कैसे पहुँचा। ब्लेक यही सोचने लगे।

ब्लेकने यह प्रश्न शीघ्र ही हल कर लिया। उन्होंने देखा कि एक लोहेका नल खिड़कीके पाससे नीचेतक गया है, बस, वे समझ गये कि हत्यारा इसी नलके सहारे ऊपर आ गया। ब्लेकने एक टांग नलपर रखी और फिर दूसरी और उसके सहारे चट नीचे आ गये।

अन्धेरा हो गया था। कोई भी चीज साफ दिखलायी नहीं पड़ रही थी। ब्लेकने अपनी जेबसे टार्च निकाला और अन्धकार के दो टुकड़े कर दिये। उन्हें किसी विशेष चीजके पानेकी उम्मीद न थी। उन्हें किसीके पैरों या जूतोंके निशान मिलनेकी भी आशा न थी। सड़क सुर्खीसे कुटी हुयी थी, और खिड़कीके नीचेसे लेकर रास्तेतक लोहेकी रेलिंग लगी हुयी थी। रास्तेके आस-पास दो एक छोटी पंग डंडियां इधर-उधर गई थीं। ब्लेकने यह सब स्थान अच्छी तरह देख लिये और उन्हें पूर्ण सन्तोष हो गया कि यहाँपर किसी तरहका निशान नहीं है। तब वे फिर उसी लोहेकी नलके सहारे ऊपर चढ़कर खिड़कीके रास्ते अपने कमरेमें आ गये। कमरेमें आकर एकबार फिर उन्होंने गौरसे फर्श और कमरेकी तमाम चीजोंका निरीक्षण कर लिया, क्योंकि ब्लेक यह जानते थे कि इतने दिनोंके बाद किसी तरहका निशान आदि मिलना असम्भव है। तब भी उन्होंने एकबार निरीक्षण कर लेना उचित समझा। उन्होंने कमरेमें कुछ न पाकर पासके स्नान घरके दरवाजेको धक्का देकर खोला और भीतर चले गये।

स्नान करते समय ब्लेकका ध्यान २१ नम्बरके कमरेके रहस्यमें उलझा हुआ था। गर्म जल उनके शरीरका मैल साफ कर रहा था, उनकी शारीरिक थकावट दूर हो रही थी, किन्तु दिमाग उसी कदर उलझा हुआ था। ब्लेक स्नान करके अपने कमरेमें आये और कपड़े पहिनने लगे। आधे कपड़े पहिनकर वे

फिर टार्च और अणुवीक्षण शीशा लेकर सोनेके कमरेके कालीन का निरीक्षण करने लगे।

चारनने कहा था कि विस्तरपर सिर्फ एक जगह खूनका दाग पाया गया था। ब्लेक सोच रहे थे कि क्या खूनके और दाग भी कहीं मिल सकते हैं? बिस्तर पर न सही, कालीन पर ही मिल जायं। शयनगृहमें कीमती लाल कालीन बिछा हुआ था। इसलिये अगर कालीनपर खूनकी बूंद पड़ी भी होगी तो, क्षणभरमें ही कालीन उसे सोख गया होगा। फिर चारनकी तीक्ष्ण आँखोंसे इस तरहके प्रमाण छिपे कैसे रह सकते हैं? लेकिन ब्लेक सोच रहे थे कि उन्हें कोई ऐसी चीज मिल सकती है जिसका न तो चारनने ध्यान किया हो और न अभी तक खुद ब्लेक हीने सोचा हो।

ब्लेक किसी न किसी तरह इस रहस्यका थोड़ा बहुत सुराग पानेके लिये बेचैन थे। वे यह जाननेके लिये व्यग्र थे कि पीरी ड्रूसीलीका हत्यारा साधारण तौरसे जख्मी हुआ या विशेष रूपसे। वे सोचते थे कि इस बातका निर्णय हो जाय तो हत्याका रहस्य भेद होनेमें बहुत मदद मिल सकती है। क्योंकि सख्त घायल आदमी आसानीसे भागकर अपने आपको छिपा नहीं सकता। सम्भव है कि उसको जाते हुए किसीने देख लिया हो। ब्लेकने तमाम कालीन छान डाला पर उन्हें खूनका दाग कहीं नहीं मिला।

लेकिन उन्हें कुछ भी नहीं मिला यह नहीं कहा जा सकता।

ब्लेकको जो चीज मिली, वह एक हरे रंगका बटन था। वह पलङ्गके एक पायेके पास उल्टा पड़ा हुआ था। ब्लेकने उसे देखा और झपटकर उठा लिया। बटनका आकारप्रकार देखकर ब्लेकने यह निश्चय किया कि यह बटन किसी कोटका है। उन्हें यह समझते भी देर न लगी कि लड़ाई झगड़ेमें ही यह बटन टूटकर गिर पड़ा था, क्योंकि बटनमें अभी भी कोटके कुछ सूत लगे हुए थे। बटनमें लगे हुए कोटके दो-चार सूतोंसे ही ब्लेकने समझ लिया कि कोट हरे रङ्गके वेलवेटका था। अनुवीक्षण शीशेसे देखते ही उन्हें अपने अन्दाजका यकीन हो गया। अणुवीक्षण शीशेने एक नयी बात और भी बतला दी। बटनके पीछेकी तरफ ब्लेकने देखा कि दो लाइनें बीचों-बीच क दूसरेको काट रही हैं, और दोनों लाइनोंके चारों हिस्से ऊपरनीचे और बांये दांये घूम गये हैं, इस तरह बटनके पीछे "स्वस्तिक" का निशान बन गया है।

हरा वेलवेटका कोट। इस तरहका साधारण रङ्ग और ढंगका कोट पहिने यहां कौन आया था? यह बर्टरमकी आंखोंसे छिपा कैसे रह गया? अगर इस प्रश्नका उत्तर मिल जाय तो ड्रूसीलीके हत्याकाण्डकी समस्या हल हो जाय? यह तो निश्चय है कि मरते समय ड्रूसीलीने आक्रमणकारीके साथ छीना झपटी की, उसीमें यह बटन गिर पड़ा। लेकिन यह बटन किसका है?

किन्तु यह बटन अभीतक यहां क्यों पड़ा रह गया?

बटरमने इसे कैसे नहीं देखा ? यह कैसे समझा जाय कि चारन-की आंखोंसे यह बटन छिपकर रह गया था ?

तब क्या यह बटन हत्यारेका नहीं है ? क्या हत्याके बाद कोई दूसरा आदमी आया, उसीका बटन है। क्या यह बटन उस आदमीका है जिसका हत्याकाण्डसे कोई सम्बन्ध नहीं ?

लेकिन प्रश्न तो यह है कि यह बटन अपने आप टूटकर नहीं गिरा, बल्कि काफी लड़ाई झगड़े और छीना झपटीके कारण नोंच कर फेंका हुआ है। इसमें किसी तरहका शक हो ही नहीं सकता, और नौकरानी बतलाती है कि पीरी ड्रुसीली के बाद कोई मुसाफिर यहां आकर नहीं टिका।

तब क्या यह सम्भव है कि चारनने बटन देखा हो और जान बूझ कर उसे फिर यहीं छोड़ दिया हो, जैसा कि वह चाहता था कि मिस्टर ब्लेक २१ नम्बर वाले कमरेमें आकर ठहरें। ब्लेक कुछ समय तक विचारमग्न हो गये और फिर बटनको जेबमें रख कर घुटनोंके बल झुक कर कालीनका निरी-क्षण करने लगे। वे सोचते थे कि कालीन पर उन्हें खूनका कोई दाग मिल जाय तो बड़ा काम निकले।

एक एक इञ्च कालीनका निरीक्षण करते हुये, ब्लेक बड़ी होशियारीसे आगे बढ़ रहे थे। वे इसी तरह पलंगके चारों ओर और फिर कमरे भरमें घूम गये पर उन्हें कोई निशान न मिला। कालीनका एक एक इञ्च स्थान देखना बड़ा टेढ़ा काम था। इस काममें उन्हें लगभग डेढ़ घण्टेका समय लग गया। डेढ़

घण्टे लगातार परिश्रमके बाद अकृत कार्यहोकर ब्लेक कालीन परसे उठ कर खड़े हो गये। उन्हें विश्वास हो गया कि कमरेमें अब कोई भी निशान नहीं है, जिससे हत्याकाण्डके रहस्यका पता लग सके। उन्हें खूनका कोई दाग न मिल सका।

किन्तु डेढ़ घण्टेका परिश्रम बिलकुल निरर्थक गया, यह नहीं कहा जा सकता। उन्हें तीन बाल मिले। बस ये तीन बाल ही उनके डेढ़ घण्टेके परिश्रमका फल था। पहिला बाल लम्बा था, दूसरा उतना लम्बा नहीं किन्तु भूरे रङ्गका था, तीसरा छोटा काले रङ्गका था।

ब्लेकने तीनों बालोंको एक सफेद कागज पर रखा और गौरसे देखने लगे। अगर वे बाल ही बोलने लगें तो पीरी ड्रुसीलीके हत्याकाण्डका सारा रहस्य खुल जाय। क्या ये बाल बोलेंगे? यह भी सम्भव है कि वे महिनों पहिले हीसे कालीनमें पड़े हों? यह भी सम्भव है कि रोज साफ होने पर भी वे बाल कालीनमें घुसेके घुसे रह गये हों। सम्भव है वे पीरी ड्रुसीलीके आने पर ही कमरेमें गिरे हों। तरह तरहकी सम्भावनाएं ब्लेकके हृदयमें उठ रहीं थीं।

अगर बालोंका विशेषज्ञ इनकी वैज्ञानिक परीक्षा करे तो शायद भेदकी कोई बात मालूम हो। विशेषज्ञ इन बालोंकी वैज्ञानिक परीक्षा करके बतला सकता है कि बालोंवाला किस जाति, किस उमरका था। वह व्यक्ति स्त्री था, या पुरुष, काला या गोरा या पीला। यह भी मालूम हो सकता है कि बालोंका

रङ्ग स्वाभाविक है या खिजाबसे रंगा गया है। यह भी मालूम हो सकता है कि बालोंवाला तन्दुरुस्त था या दुबला पतला। ब्लेक खुद भी अच्छे वैज्ञानिक थे, बालोंकी वैज्ञानिक परीक्षा करके वे ये सब बातें जान सकते थे। किन्तु अफसोस, पेरिसमें वे अपने वैज्ञानिक यन्त्र लेकर नहीं आये थे।

वे एकाएक कुछ सोचकर मेजके सामने बैठ गये, और स्मिथके नाम एक खत लिखने लगे। उन्होंने लिखा कि बालोंका वैज्ञानिक परीक्षण करके प्रोफेसर वेलीको भी दिखलाना, जब वे तुम्हारे परीक्षणको ठीक बतावें तब जितना जल्द सम्भव हो, मेरे पास भेज देना।

ब्लेकने एक एक करके तीनों बालोंको अलग अलग कागजमें लपेटा और फिर एक लिफाफेमें रख दिया। उन्होंने खत और बालोंको लिफाफेमें बन्दकर, टिकट लगाया और जेबमें रखकर भोजन करने चल पड़े।

स्मिथके पास बालोंवाला लिफाफा भेजे तीन दिन बीत चुके थे। शुक्रवारका दिन आ पहुंचा था। ब्लेक स्मिथके उत्तरकी प्रतीक्षा कर रहे थे, उन्हें आशा थी कि पहिली डाकसे ही स्मिथका जवाब आ जायगा, पर उन्हें निराश होना पड़ा। पत्रका जवाब न पानेके कारण ब्लेकने शामकी गाड़ीसे लौटनेका निश्चय कर लिया। इन दिनोंमें ब्लेकने बर्टरम चारनसे मुलाकात की, पर उन लोगोंमें पीरी ड्रूसीलीके सम्बन्धमें कोई बातचीत नहीं हुई।

ब्लेक यह सोचकर कि शायद् पहिली डाकसे चिट्ठी न आयी तो दूसरी डाकसे आ सकती है, दोपहरके समय होटल लौटे। उन्हें यह देखकर ताज्जुब हुआ कि पत्रके जवाबकी जगह खुद् स्मिथ बैठा हुआ, इन्तजार कर रहा है।

मैं ठीक समयपर आ गया। बात यह हुयी कि मैं पहिली डाकसे पत्र न छोड़ सका, इसलिये हवाई जहाजसे चला आया ताकि आपके रवाना होनेके पहिले, मैं पेरिस पहुंच जाऊं।

तुम ठीक समयपर आ गये। इसके सिवा ब्लेकने स्मिथसे उस समयतक कुछ भी नहीं कहा, जबतक कि वे लोग अपने कमरेमें न पहुंच गये। कमरेमें जाते ही ब्लेकने स्मिथसे पूछा—बालोंकी परीक्षाका क्या नतीजा निकला?

जी हाँ, मैंने बालोंकी परीक्षा की और ठीक निर्णयपर पहुँचा और इसी लिये मैं चला भी आया कि शायद यह काम बहुत जरूरी हो। स्मिथने कहा—और जेबसे एक लिफाफा निकालकर ब्लेककी तरफ बढ़ाते हुये कहा—देखिये, यह प्रोफेसर वेलीका बालोंके सम्बन्धमें निर्णय है। किन्तु वेलीका निर्णय मेरे निर्णयसे बिलकुल मिलता है।

तुम बहुत होशियार हो। कहकर, ब्लेकने लिफाफा ले लिया और प्रोफेसर वेलीने बालोंके सम्बन्धमें जो कुछ लिखा था, उसे पढ़ने लगे। लम्बा बाल और मझौला भूरा बाल क्रमशः एक स्त्री और एक पुरुषका हैं। दोनों व्यक्ति यूरोपियन हैं। ब्लेकने इन दो बालोंके सम्बन्धमें वेलीका निर्णय पढ़कर सन्तोष

जाहिर नहीं किया, क्योंकि इसमें उनके कामकी कोई बात न थी। वेलीके इस निर्णयसे ड्रुसीलीके हत्याकाण्डपर प्रकाश नहीं पड़ता था। इसके बाद वे तीसरे बालके सम्बन्धमें वेलीका निर्णय पढ़ने लगे।

तीसरा छोटा काला बाल उस आदमीका है जो अफ्रीकन जातियोंमेंसे किसी एकका है। उस आदमीकी अवस्था लगभग तीस चालीस वर्षकी होनी चाहिये। उसमें काफी ताकत और साहस होना चाहिये। वह शख्श अपने बालोंकी हिफाजत करनेवाला होना चाहिये, उस व्यक्तिके सिरसे अलग हुये इस बालको एक सप्ताहसे ज्यादा और एक महीनेसे कम होना चाहिये।

ब्लेकने आखिरी तीसरे बालके सम्बन्धमें प्रोफेसर वेलीका निर्णय पढ़कर सन्तोष जाहिर किया। ब्लेक वेलीका निर्णय पढ़कर थोड़ी देरतक कुछ सोचते रहे। स्मिथ चुपचाप उनके सामने बैठा हुआ था किन्तु उन्होंने स्मिथसे कुछ न कहा। स्मिथने भी सरदारका ध्यान भंग नहीं किया। सोचते-सोचते ब्लेक एकाएक उठे, और स्मिथसे बिना कुछ कहे सुने, कमरेका दरवाजा खोला और बाहर चल दिये।

स्मिथ बैठा-बैठा देखता ही रह गया।

४

काले बालका रहस्य

ब्लेकके एकाएक इस तरह चले जानेसे स्मिथको कुछ ताज्जुब हुआ। किन्तु उसने ब्लेकके चेहरेके चढ़ाव-उतारको खूब ध्यानसे देखा था।

लन्दनमें ब्लेकके भेजे हुए तीन बालोंको पाकर ही स्मिथ कुछ चक्करमें पड़ गया था। किन्तु उसने ब्लेकके आदेशानुसार बालोंकी परीक्षा की और फिर प्रोफेसर वेलीके पास परीक्षाके लिये ले गया। वेलीने बालोंकी परीक्षा करके जिस समय अपना निर्णय दिया उस समय पैरिस डाक जानेका वक्त निकल चुका था, इसलिये स्मिथ खुद ही हवाई जहाजसे पैरिस चला आया था।

यद्यपि स्मिथने ब्लेककी आज्ञाका पूर्ण पालन किया था, किन्तु बालोंके सम्बन्धमें उसकी उत्सुकता बहुत बढ़ गयी थी। वह समझ गया था कि बिलकुल व्यावसायिक कामसे पेरिस

जानेपर भी ब्लेक किसी-न-किसी रहस्यमय घटनाके पीछे पड़ गये हैं। वह सोच रहा था कि जिस घटनाने ब्लेकको अपनी तरफ आकर्षित किया वह जरूर असाधारण होगी, और ब्लेकके भेजे हुए ये बाल भी किसी-न-किसी तरह रहस्यसे घनिष्ट सम्बन्ध रखते होंगे।

पेरिसमें आकर बालोंके सम्बन्धमें वेलीका निर्णय पढ़नेके बाद ब्लेकके चेहरेपर जो भावोंकी घनी छाया दिखलायी पड़ी, उससे स्मिथको विश्वास हो गया कि मामला वस्तुतः असाधारण और रहस्यमय हैं। उसे यह भी मालूम हो गया कि इन तीनों बालोंके सम्बन्धमें वेलीका निर्णय, जिस अज्ञात रहस्यको सुलझानेमें उसका सरदार लगा हुआ है, उसे बहुत कुछ सुलझाता है। वह ब्लेकके एकाएक बिना कुछ कहे सुने उठकर चले जानेसे यह समझ गया कि जरूर, ब्लेकको किसी ऐसे रहस्यका पता लगा है, जिसके लिये वे बहुत उत्सुक और उद्विग्न थे।

अब इस बातका अन्दाजा लगाना कि ब्लेक कहां गये, फिजूल है। स्मिथने सोचा, शायद टेलीफोन करने गये हों। और चुपचाप बैठकर ब्लेकके लौटनेकी प्रतीक्षा करने लगा। उसे उम्मीद थी कि ब्लेक शीघ्र ही लौटेंगे।

स्मिथकी उम्मीद पूरी हुई। ब्लेक शीघ्र ही वापस आ गये। उन्हें मुश्किलसे दस मिनट लगे होंगे। उनके चेहरेपर एक खास भाव अभी भी बना हुआ था। जैसे ही ब्लेक कमरेमें आये, स्मिथने ब्लेकके चेहरेको गौरसे देखा।

उसने बातचीतका सिलसिला छेड़नेके मतलबसे पूछा—

आप एकाएक उठकर कहां चले गये ?

मैं मैनेजरसे यह पूछने गया था कि क्या कोई नीग्रो कभी इस कमरेमें ठहरा था ? ब्लेकने जवाब दिया।

निग्रो मुसाफिर ! मैनेजरने क्या जवाब दिया ?

जैसा कि मैं समझता था, वैसाही।

अच्छा। तो इससे कोई मतलब सिद्ध हुआ ?

ओह ! इससे बहुत बड़ा मतला हल हो गया। घबराते क्यों हो ? तुम्हें अभी सब कुछ मालूम हो जाता है। इतना कहकर पोरी ड्रूसीली हत्याकाण्डके सम्बन्धकी तमाम बातें जो उन्हें कुछ दिनों पहिले बर्टरम चारनने कहीं थीं, स्मिथको सुना दीं।

ओह ! सरदार। वह इसी कमरेमें मार डाला गया। ब्लेक-की तरफ आश्चर्य-पूर्ण दृष्टिसे देखते हुए स्मिथने कहा—यह तो बड़ी मजेदार बात है।

हां, मजेदार तो है। ब्लेक बोले।

लेकिन, सरदार। जिसने पीरी ड्रूसीली जैसे हट्टे कट्टे आदमीको मार डाला वह पीला आदमी दानवाकार रहा होगा।

हां। हो सकता है। ब्लेकने जवाब दिया। लेकिन मेरा ख़याल है कि हमारा दोस्त चारन यहांपर जरा-सी भूल कर रहा है। हत्यारा पीला नहीं, काला आदमी था।

आप इस निर्णयपर कैसे पहुँचे ?

मैंने जो तीन बाल तुम्हारे पास परीक्षाके लिये भेजे थे,

उनमेंसे एक काले बालकी परीक्षासे यह रहस्य खुल गया। मैंने ये बाल इसी कालीनपर पड़े पाये थे। दो बाल अपने मतलबके नहीं है। तीसरा काला बाल किसी नीग्रोका है। यही बाल हमारे कामका है। मेरा विश्वास है कि यह बाल पीरी डू्सीली-के हत्यारेका है।

मैं इस निर्णयपर पहुँचनेके लिये कारण बतलाता हूं। ब्लेक कहते ही रहे, क्योंकि वे देख रहे थे कि स्मिथ इस मामले-में काफी दिलचस्पी ले रहा है। वे कहने लगे, इस बालका इस कमरेमें मिलना इस बातको सिद्ध करता है कि जिस समय यह बाल बालवालेके सिरसे टूटकर गिरा, तब वह आदमी इस कमरेमें था। वेलीका वक्तव्य यह बतलाता है कि इस बालको कमरेमें पड़े हुए, एक सप्ताहसे ज्यादा और एक माससे कम समय हुआ। और तुम जानते हो कि इसी समयके दरमियान पीरी डू्सीलीकी हत्या हुई थी।

फिर यह होटल इस तरहका है कि यहांपर काले आदमियोंका स्वागत नहीं होता। इस होटलमें ज्यादातर यूरो-पियन ही ठहरते हैं। अपनी इस धारणाकी पुष्टिके लिये मैं यहांसे एकाएक उठकर नीचे गया और इस सम्बन्धमें पूछ-ताछ की। मैनेजरने मुझे बतलाया कि हालहीमें कोई काला आदमी इस कमरेमें आकर नहीं ठहरा। बल्कि मैनेजरने मुझे यहांतक बतलाया कि, उसे मैनेजरी करते हुए पांच वर्ष हो गये और पिछले पांच वर्षोंमें कोई भी काला आदमी इस होटलमें नहीं ठहरा।

इन बातोंसे क्या सिद्ध होता है ? यही कि जो काला आदमी इस कमरेमें आया, वह लोगोंकी नजर बचाते हुए आया और छिपता हुआ चला गया। इस तरह काले आदमीका आना जाना साबित करता है कि वह जरूर किसी गुप्त मतलबसे आया होगा। पीरी ड्रुसीलीके सम्बन्धमें हमें मालूम हुआ है कि वह एक कुविख्यात अफ्रीकन व्यापारी था। और जो प्रमाण मिले हैं, वे बतलाते हैं कि जिस शख्सने पीरी ड्रुसीलीका खून किया, वह अफ्रीकन नीग्रो था। हत्याका उद्देश्य चोरी न था, क्योंकि पीरो ड्रुसीलीके पास जो माल था, वह ज्योंका त्यों रहा। हत्यारेने उसके धनको छूआ भी नहीं। इससे यह बात सिद्ध होती है कि हत्याका उद्देश्य भयानक बदला था।

स्मिथने उत्साह पूर्वक कहा—ओफ ! ओ !! सरदार। यह मामला तो बड़ा सनसनीखेज है।

हां ठीक है। ब्लेकने कहा—इतना सनसनीखेज कि मैंने इसके लिये लन्दन लौटना मुलतवी कर दिया।

लेकिन यह मान लेनेपर भी कि हत्यारा निग्रो था, हमें इस हत्याकाण्डके बारेमें विशेष कुछ भी नहीं मालूम हुआ। स्मिथने कहा।

"विशेष कुछ भी है" ब्लेकने यह कहकर अपनी जेबमें हाथ डाला और एक हरा बटन निकालकर कहा, यह बटन मुझे, इस कमरेमें कालीनपर पड़ा हुआ मिला। मेरा खयाल है कि पीरी ड्रुसीलीने यह बटन अपने हत्यारेके कोटसे नोच लिया।

इस बटनके पीछे "स्वस्तिक" निशान है। मैंने कल दिनभर डायरेक्टरी उलटकर उन फर्मोंका सूचीपत्र तैयार किया है जो "स्वस्तिक" ट्रेडमार्कका बटन बनाते हैं। मुझे एक सौ पोशाक बनानेवाले फर्मोंका पता मिला है, जो तैयार कपड़ोंमें स्वस्तिक मार्का बटन लगाते हैं।

उफ! एक सौ दुकानदार। इन सबकी दुकानोंमें घूमनेके लिये तो बहुत समय चाहिये। स्मिथने कहा।

बेशक! एक सौ दुकानदारोंके यहां जाना आना सख्त काम है। ब्लेकने जवाब दिया। लेकिन मेरी बात अभी खत्म नहीं हुई। यह बटन हरे वेलवेट कोटसे नोचा गया है और हरे वेलवेटके कोट सब लोग नहीं बनाते। वस्तुतः पेरिसमें सिर्फ तीस दुकानें ऐसी हैं जहांसे वेलवेटके कोट खरीदे जा सकते हैं। और उन-तीस दुकानोंमेंसे सिर्फ एक पोशाक बेचनेवाला, स्वस्तिक मार्का बटन कोटोंमें लगाता है। किन्तु इस फर्मकी इसी शहरमें सोलह शाखाएँ हैं। इसलिये यह कोट सत्रह दुकानोंमेंसे किसी एक दुकानसे खरीदा गया है। अब तुम मेरा मतलब समझे?

जी हां। अब हमारा काम है कि इन सत्रह दुकानोंकी फेरी लगांय। स्मिथने जवाब दिया।

बहुत ठीक। ब्लेकने कहा—गोकि इसमें हमें सफलताकी आशा बहुत कम करनी चाहिये। हो सकता है कि वेलवेटका कोट बेच दिया गया हो और नीग्रोने यह कोट सेकेण्ड हैण्ड (पहिने हुए) कोट बेचनेवालेके पाससे खरीदा हो। तब भी हमें

चेष्टा करनी चाहिये। तुम आठ दुकानोंपर जाकर पता लगाओ, बाकी नौ दुकानोंपर मैं जाता हूं। सबसे अच्छा उपाय यह है कि तुम पोशाकवालेके यहां जाओ, और कहो कि तुम्हें एक वेलवेटका हरा कोट चाहिये। बातों ही बातोंमें कहो कि ठीक वैसा ही कोट चाहिये, जैसा कि तुम्हारे एक नीग्रो दोस्तने खरीदा है। अगर यह बात कहनेसे दुकानदार तुम्हारे मतलबकी कोई बात न कहे तो तुम कहना कि महाशय, यह कोट वैसा नहीं है जैसा कि मैं चाहता हूं। इतना कहकर, बाहर चले आना। नहीं तो तुम्हें कमसे कम आठ हरे कोट खरीदने पड़ेंगे।

यह बहुत बढ़िया रास्ता है, सरदार। मैं अभी कामपर जाता हूं, अगर आप मुझे हरा कोट पहिने हुए, लौटा देखें तो समझ लीजियेगा कि मैं अपने कार्यमें सफल हो गया।

लेकिन मैं सफल हुआ, तो कहीं तुम मेरा कोट न पहिन लेना। ब्लेकने मजाक करते हुए कहा—यह लो इस कागजमें दुकानदारोंके नाम और पते लिखे हैं। किन्तु मैं समझता हूं कि रवाना होनेसे पहिले हमें पेट पूजा कर लेनी चाहिये।

ओह! मेरे पेटमें तो न जाने कबसे चूहे कूद रहे हैं। मैं यह बात कहने ही वाला था, चलिये।

दोनों भोजनालयमें पहुंचे और पेट पूजा करने लगे। दोनों ही चटपट खाकर अपने अपने कामपर जानेकी जल्दीमें थे।

अब हमें अपने काममें लगना चाहिए। भोजनके बाद ब्लेकने कहा और थोड़ी देर बाद ही वे लोग होटलके बाहर आ गये।

अच्छा, विदा, नमस्कार, कहता हुआ स्मिथ एक सड़क की तरफ चल पड़ा। ब्लेक भी अपने रस्ते लगे।

पहली दूकानपर उन्हें सफलता नहीं मिली। उन्हें भी कुछ विशेष उम्मीद न थी। बल्कि उन्हें तो सम्भावना यह दिखलाई पड़ रही थी कि स्मिथ और उनका परिश्रम बेकार हो जायगा। वे यह सोच रहे थे कि शायद निग्रोने किसी सेकेण्ड हैण्ड कोट बेचने वालेके पाससे कोट खरीदा हो।

दूसरी दूकानसे भी वे खाली हाथों लौटे। बल्कि इस दूकान में तो उनका एक पक्के दूकानदारसे पाला पड़ गया, जिसके कारण उन्हें मजबूरन एक जोड़ा टाई खरीदकर जान बचानी पड़ी। उनकी निराशा क्षण प्रतिक्षण बढ़ रही थी तब भी वे तीसरी दूकानमें गये।

सौभाग्यवश दूकानमें घुसते ही मैनेजरकी ब्लेकपर नजर पड़ गयी। उसने ब्लेकको प्रतिष्ठित खरीददार समझा और खुद ही दूकानदारी करने लगा।

जी हां, मोसिये। मुझे आपके निग्रो दोस्तका भलीभांति स्मरण है, क्योंकि कोट उसके बहुत बड़ा था और हमें काटकर छोटा करना पड़ा था। उस समय हमारी दूकानमें सिर्फ एक ही कोट बच गया था, वह भी काफी बड़ा, इसलिये हमने आपके छोटे दोस्त निग्रोके लिये उसे छांटकर छोटा कर दिया और सस्ते दामोंमें ही दे दिया। अगर मैं भूलता नहीं हूं तो यह एक महीनेकी बात होगी।

हां, एक महीना ही हुआ होगा। ब्लेकने कहा, और बनावटी सन्तोष जाहिर करते हुए बोले—शायद यह तो आपको न मालूम होगा कि वह इस समय कहां होगा?

मोसिये। जरा क्षणभर ठहरिये। हमारे रजिष्टरमें उसका पता होगा, क्योंकि कोट तैयार करके हमें उसके मकानपर भेजना पड़ा था।

थोड़ी ही देरमें रजिस्टरमें मैनेजरको ब्लेकके दोस्तका पता मिल गया।

मोसिये! डूपोन्ट उसका नाम है। मैनेजरने कहा, और उसका ठिकाना नं० ५ रू-डी एवीली है, यह मोन्टमेट्री इलाकेमें है। अब आप गौर फरमायें तो हम एकसे एक बढ़िया कोट दिखा सकते हैं, पर वेलवेटका नहीं।

ब्लेकने मैनेजरको खुश करनेके लिये बहुतसे कोट देखे और एक रङ्ग-बिरङ्गा कोट खरीदा, जिसकी कि उन्हें बिलकुल जरूरत नहीं थी। ब्लेकने यह सोचा कि मैनेजरने उसे जो कीमती पता बतलाया उसकी एवजमें उससे एक कोट खरीद लेना चाहिये।

ब्लेकका चेहरा प्रसन्नतासे खिल गया। ओह! इतनी आसानी से कामयाबी हासिल हो गयी। उन्हें ताज्जुब तो जुरूर हुआ, पर वे दूकानदारपर अविश्वास नहीं कर सकते थे। भला दूकानदार उनके साथ विश्वासघात क्यों करेगा? रू-डी- एवीली पहुंचते ही दूकानदारकी सच्चाई सिद्ध हो जायगी।

सड़ककी मोड़पर आकर उन्होंने एक गाड़ीवालेको ठहरने-

का इशारा किया और गाड़ी ठहरते ही सवार हो गये। दस मिनट बाद ही गाड़ी मोन्ट मेण्ट्री पहाड़ीकी ओर दौड़ने लगी। रू-डी- एवीली सड़क छोटी सी थी। उसमें हर तरहके काले, गोरे, पीले आदमी दिखलायी पड़ रहे थे। ५ नम्बरवाला मकान एक सस्ता बोर्डिंग हाउस (निवास-गृह) था।

ब्लेकके कुण्डा खटखटाते ही एक बुढ़िया औरत, शायद मालकिनने मकानका दरवाजा खोल दिया। ब्लेकके प्रश्न करने पर उसने कहा—

जी हां, मोसिये डुपोण्ट इसी मकानमें रहते हैं। बल्कि इस समय भी घरपर ही हैं।

वाहरे भाग्य! ब्लेकने मन ही मन कहा। क्या बात है! किस्मत साथ दे रही है।

उन्होंने बीस फ्रैंक (फ्रेञ्च सिक्के) निकालकर बुढ़ियाकी मुट्ठीमें भर दिये।

मोसिये डुपॉन्ट मेरे पुराने दोस्त हैं। उन्होने बुढ़ियासे धीरे धीरे कहा, वह मुझे यहां देखकर अचम्भेमें पड़ जायगा, बिना उसे खबर दिये हुए मुझे उसके कमरेतक ले चलो।

बीस फ्रैंकका बुढ़ियापर बड़ा असर पड़ा। वह बिना एक शब्द भी बोले बढ़ी और ब्लेकको दो तल्लेपर ले गयी।

आपके मित्र उस कमरे हैं, मोसिये।

बुढ़ियाने एक कमरेकी तरफ अपनी शीर्ण अंगुली उठाकर कहा, कोई डर नहीं है, सीधे चले जाइये।

बुढ़ियाको वहीं छोड़कर ब्लेक धीरे-धीरे कमरेके सामने पहुँचे। दरवाजा बन्द था। वे बाहर खड़े होकर आहट लेने लगे, पर किसी तरहकी आहट न मिली। तब उन्होंने अत्यन्त सावधानीके साथ बन्द दरवाजेके दरारसे भीतर झांककर देखा। उन्होंने किवाड़ोंके बारीक दराजमेंसे देखा कि कमरेमें एक मेज है, और कालेबालोंवाला एक नीग्रो दरवाजेकी तरफ पीठ किये हुये टेबलके सामने बैठा है, शायद वह टेबलपर झुका हुआ कुछ पढ़ रहा था। लेकिन एक मिनट बाद ही ब्लेकको मालूम हो गया कि उनकी धारणा गलत है, क्योंकि वह जरा भी हिलडुल नहीं रहा था, शायद पढ़ते-पढ़ते सो गया था।

ब्लेकने धीरेसे कमरेकी चटकनी हटायी और आहिस्तेसे दरवाजा खोला।

भीतरसे ताला बन्द न होनेके कारण दरवाजा आसानीसे खुल गया। वे बिना शब्द किये दबे पाँओं भीतर गये। भीतर जाते समय उन्होंने दरवाजा पहिलेकी तरह बन्द कर दिया। ब्लेकके भीतर चले जानेपर भी नीग्रो मेजके सहारे पड़ा रहा। कमरेमें सिर्फ एक खिड़की थी और बहुत ही मामूली सामान था, अधिकाँश भागमें अन्धेरा छाया हुआ था। कमरेमें एक नजर दौड़ा लेनेके बाद ब्लेक स्थिरता पूर्वक अपने शिकारकी तरफ बढ़े।

वे ठीक उसके पीछे जाकर खड़े हो गये, तब भी वह ब्लेक-की उपस्थितिसे बेखबर रहा। वह मेजपर दोनों काले हाथ रखे

और एक हथेलीपर गाल रखे सोया हुआ था। मेजपर अखबारोंकी कतरन पड़ीं हुयीं थीं। सम्भवतः सोनेसे पहिले वह उन्हीं कतरनोंको पढ़ रहा था। ब्लेककी तेज आंखें कतरनोंपर गयीं और उन्होंने बड़े-बड़े अक्षरोंमें छपा एक शीर्षक पढ़ा।

"पीरी ड्रूसीलीका हत्यारा कौन ?"

इस तरहकी छोटीसी गलीमें साधारण मकानके अन्धकार पूर्ण कमरेमें बैठकर अखबारोंकी कतरनोंका अध्ययन अद्भुत बात हो सकती है, पर हर एकके लिये नहीं। खासकर इस नीग्रोके लिये नहीं। उसने जान बूझकर वे सब अखबार इकट्ठा किये थे, जिनमें उसके द्वारा किये गये भयंकर खूनका रोमांचक वर्णन था। वह सम्भवतः इन अखबारोंको पढ़कर पुलिसकी बेवकूफीपर मन-ही-मन हँस रहा था और अपने साफ बचजाने पर गौरव अनुभव करते हुये परमात्माको धन्यवाद देते देते सो गया था।

ब्लेकको परिस्थिति समझनेमें क्षणभर भी नहीं लगा। वे नीग्रोके सामने आये और दृढ़, जोरदार और अधिकारपूर्ण स्वरमें बोले—

तुम पीरी ड्रूसीलीके खूनी हो।

नीग्रो चौंक गया, उसकी आंखें खुल गयीं, वह एकटक ब्लेकको ताकने लगा, उसका काला चेहरा और भी भयानक हो गया।

तुम पीरी ड्रूसीलीके खूनी हो। ब्लेकने कड़ककर कहा

ब्लेकके दुबारा कहनेका नीग्रोपर बिजलीकासा असर हुआ। उसकी ऐसी हालत हो गयी मानो किसीने गोली मार दी हो। वह घबराकर कुर्सीपरसे उछल पड़ा और दो हाथ पीछे हटकर भयपूर्ण दृष्टिसे ब्लेकको ताकने लगा, मानों मौतके भयने उसे धर दबाया हो।

ब्लेक समझे कि इसका भयातुर होना सिर्फ एक चाल है, वल्कि पीछे हटकर वह अपने बचावका उपाय सोच रहा है।

सुनो। ब्लेक गरजे।

दो सप्ताह पहिले, पिछले महीनेके तीसरे सप्ताहमें बुद्धवारको तुम खून करनेके इरादेसे रूकार मीली रास्तेसे विनोसा होटलमें खिड़की द्वारा भीतर गये। तुम लोहेके नलके सहारे चढ़-कर ऊपर गये, और २१ नम्बर कमरेकी खिड़कीकी चिटकनी धक्का देकर तोड़ डाली, और खिड़कीके रास्तेसे कमरेमें घुसकर, तुमने गला घोटकर पीरी ड्रूसीलोको मार डाला। समझे! मेरे पास तुम्हारे विरुद्ध काफी पक्के सुबूत हैं।

ब्लेक नीग्रोके जवाबका इन्तजार करने लगे। पर उनकी तेज आंखें नीग्रोपर जमी हुयीं थीं, वे निश्चय कर चुके थे कि किसी तरहकी बेजा हरकत करते ही वे नीग्रोपर गोली चला देंगे। क्योंकि उन्हें यह अच्छी तरह मालूम हो चुका था कि यह छोटासा नीग्रो महाधूर्त, जुजुत्सुविद्याका पक्का जानकार और काफी ताकतवर है। वे जानते थे कि जरासी असावधानी-

होते ही चालाक नीग्रो उनके सिरपर सवार हो सकता है। उन्हें मालूम था कि अपनी फुर्तीके कारण ही उसने पीरी ड्रूसीली जैसे हट्टे-कट्टे आदमीको मिन्टोंमें मार डाला। ऐसे भयानक आदमीसे प्रतिक्षण सावधान रहना बहुत जरूरी है। लेकिन नीग्रोको मानो काठ मार गया हो। उसे क्या मालूम था कि ब्लेकके रूपमें उसकी मौत विना बुलाये ही अचानक सिरपर सवार हो जायगी। वह दीवालके सहारे खड़ा हुआ, भयपूर्ण दृष्टिसे ब्लेकको ताक रहा था।

तुम आदमी हो या भूत। टूटी-फूटी फ्रेंचमें नीग्रो बोला।

घवड़ाओ मत, मेरा परिचय प्रो फेक्चरमें मिल जायगा। तुम चुपचाप मेरे साथ चलते हो या पुलिसको बुलाऊं?

नहीं! नहीं!! पुलिसको मत बुलाओ। मैं आपके साथ चलता हूं, हुजूर। जहां आप कहियेगा चलूंगा। लेकिन आपके पास इस वातका क्या प्रमाण है कि मैंने पीरी ड्रूसीलीकी हत्या की है? कमसे कम इतना तो वतला दीजिये।

मेरे पास जो प्रमाण हैं, वे प्रो फेक्चरमें चलते ही मालूम हो जायेंगे। वहानेवाजी छोड़कर मेरे साथ चलो। याद रखना। चालाकी चले तो जानसे हाथ धोना पड़ेगा।

नीग्रो आगे वढ़नेमें कुछ हिचकिचाया, फिर बोला—मैं चुपचाप आपके साथ चलता हूं। मेरी जिन्दगीका खेल खत्म हो गया।

उसकी वातचीत और हरकत काफी शान्त थी। ब्लेककी

उम्मीदसे भी अधिक, फिर उन्हें याद आ गया कि इस छोटेसे शैतानने पीरी ड्रूसीलीके साथ कैसा विश्वास घात किया था। उन्होंने खतरेमें जाना पसन्द नहीं किया। ब्लेक बोले—

अपने दोनों हाथ ऊपर उठाओ। ब्लेकने रिवाल्वर निकाल नीग्रोके सीनेकी तरफ तान दिया और बोले—मैं पहिले तुम्हारी तलाशी ले लूं, फिर शायद विश्वास हो जाय। हाथ ऊपर उठाओ।

नीग्रोने ब्लेकका हुक्म मान लिया। एक हाथसे ब्लेकने नीग्रोकी तलाशी ली। उसके कपड़ोंमें रिवाल्वर या कोई खत-रनाक हथियार नहीं मिला, बलिक ब्लेककी धारणाके बिलकुल खिलाफ उसकी जेबमें एक खुले लीफाफेमें एक चिट्ठी मिली। जैसे ही ब्लेकने नीग्रोकी जेबमेंसे चिट्ठी निकाली वैसे ही उसने ब्लेकके हाथसे चिट्ठी छीननेकी कोशिश की। लेकिन ब्लेकने उसे ढकेल दिया।

ब्लेकने देखा लिफाफेपर लिखा था—

मोसिये वर्टरम चारन।

प्रो फेक्चर—

ब्लेकने जैसे ही लिफाफे पर यह नाम पढ़ा उनके दिलमें एक विचित्र सन्देह पैदा हुआ। ब्लेक उत्तेजित होकर नीग्रोपर झपटे और उसे खिड़कीके पास खींच ले गये, जहां काफी रोशनी थी। नीग्रोको वहाँ ले जाकर वे उसका चेहरा गौरसे देखने लगे। देखते-देखते उन्होंने न जाने क्या सोच कर उसके काले

बालोंको पकड़ कर ऊपरकी तरफ खींच दिया, एक ही झटकेमें काले बालोंका झब्बा उनके हाथमें आ गया और एक बिलियर्डके गेंद सा चमकता हुआ सिर उनके सामने आ गया। यही नहीं, बल्कि काले चेहरेके भीतरसे एक गोरा चेहरा भी निकल आया।

ब्लेक यह अभूतपूर्व परिवर्तन देखकर चिल्ला उठे।

ओह! वारन! तुम हो! खूब!!

वर्टरम वारनने धीमे स्वरमें कहा—

दोस्त, सब गुड़ गोबर हो गया। बड़ी भूल हो गयी। मेरी जेबमें यह चिट्ठी देख कर तुम सब कुछ समझ गये। दोस्त, बड़ी गलती हुयी।

यद्यपि ब्लेक अपनी जासूसी जिन्दगीमें हर तरहकी परिस्थितिका सामना करनेके आदी हो गये थे। वे विचित्र और रहस्यपूर्ण परिवर्तनोंके लिये हमेशा तैयार रहते थे।

लेकिन इस समय जिस तरहकी असम्भव घटना घटी, जिस तरह परिस्थितिमें अद्भुत परिवर्तन हो गया, उसे देख कर ब्लेक अवाक् हो गये। फिर उनका आश्चर्यका भाव शिकायतके रूपमें बदल गया। उन्होंने कहा—:

मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं, वारन। तुमने मुझे बेवकूफ बना दिया। ओह! बुरी तरह छकाया। दोस्त, तुम बड़े चालाक हो, बहुत चालाक हो। आज मैं तुमसे हार गया। अच्छा, मैं खुशी-ब खुशी इस मामलेसे हाथ खींच लेता हूं, विदा होता हूं, नमस्ते।

ठहरो ! ठहरो !! मेरे दोस्त। नाराज क्यों होते हो ? मैं प्रार्थना करता हूं, ठहर जाओ। चारनने बढ़ कर ब्लेकका कोट पकड़ लिया।

लेकिन ब्लेकने कोट छुड़ा लिया और दूसरे ही क्षण कमरे का दरवाजा बन्द हो गया। ब्लेक जल्दी-जल्दी सीढ़ियां पार करते हुये बाहर आये। भाग्यवश सीढ़ियोंमें उन्हें कोई न मिला। गलीमें आते ही वे तेजीसे कदम बढ़ाते हुये चल दिये।

यह सिर्फ एक मजाक था। चलते-चलते जरा स्वस्थ्य होते ही ब्लेकने सोचा, गोकि यह मजाक खुद उनके ही खिलाफ था। और इस तरहके मजाकसे वे शायद ही कभी ऐसे छके हों। अब ब्लेक समझे कि कुछ दिनों पहिलेसे चारन बातचीतमें उनके साथ विशेष सावधानी क्यों बरतता था। ब्लेक मन ही मन हंसे, चारनकी चालाकी पर।

ओह ! वह चालाक है। निहायत चालाक है। वाह चारन !

क्यों नहीं ? जब ब्लेकका दिमाग ही उसके दिमागके सामने हार गया, तब औरकी क्या बात ? जो भी हो, चारनको अपने उद्देश्यमें सफलता मिली। पीरी ड्रूसीलीके मामलेमें ब्लेक पूरी दिलचस्पी लेनेको तैयार हो गये।

चारन जानता था कि २१ नम्बरवाले कमरेमें बटन है, बल्कि उसने जान बूझ कर बटनको कमरेमें छोड़ दिया ताकि ब्लेकको बटन मिल जाय और उसी बटनके आधार पर वे आगे बढ़े। लेकिन चारन अपना काम करता जा रहा था, उसे मालूम

हो गया था कि कोट हरे रङ्गके वेलवेटको था, जिससे कि बटन नोंचा गया था उसे यह भी मालूम हो गया था कि—उन्हीं सत्रह दुकानोंमेंसे किसी एक दूकानसे यह कोट खरीदा गया। पर चारनने काला बाल नहीं देखा था, इसीलिये वह कहता था कि किसी पीले आदमीने पीरी ड्रुसीलीका खून किया। इस तरहकी चालसे उसका अभिप्राय यह था कि ब्लेकका ध्यान इस तरफ जाय, उनकी उत्सुकता बढ़े और वे इस मामलेमें दिलचस्पी लें। क्योंकि वह जानता था कि एकसे दो दिमाग बढ़कर हैं। वह छिपी तौरसे ब्लेककी हरकतों पर नजर रखने लगा और यह देख कर सन्तुष्ट हुआ कि ब्लेककी दिलचस्पी इस तरफ बढ़ रही है। उसे मालूम हो गया था कि ब्लेकने यह मालूम कर लिया है कि वेलवेट कोट पेरिसकी सत्रह दुकानोंमें से किसी एकसे खरीदा गया है। यहाँ तक तो सब ठीक था, किन्तु चारनकी समझमें यह बात नहीं आ रही थी कि पीले आदमीके एवजमें ब्लेक नीग्रोकी तलाश क्यों कर रहे हैं। वह कौनसी बात है जिसके कारण ब्लेक इस निर्णयपर पहुंचे कि पीरी ड्रुसीलीका हत्यारा पीला नहीं काला आदमी है। इसी प्रश्नका जवाब पानेके लिये चारनने डुपोन्ट नामक नीग्रोकी कल्पना की और दूकानके मैनेजर से मिलकर सब बातें ठीक कर लीं।

तीसरी दूकानका मैनेजर चारनकी चालाकीमें शामिल था। इसीलिये जैसे ही ब्लेक दूकानमें घुसे वह सब काम छोड़-

कर उनके सामने हाजिर हुआ। इधर जितनी देरमें ब्लेक तीन दूकानोंमें घूमे उतनी देरमें चारन हाथ पेर मुँह रंगकर, नकली बाल पहिनकर पूरा नीग्रो बन गया। और भाड़ेपर लिये हुये रु० डी० एवेलीवाले मकानमें चला गया। वह ब्लेकसे पहले ही रु० डी० एवेलीवाले मकानमें पहुँच गया। क्योंकि वह यह जाननेके लिये बहुत उत्सुक था कि किस आधारपर ब्लेक पीरी ड्रुसीलीके हत्यारेको काला आदमी समझ रहे हैं?

बस सिर्फ इतनीसी बात कि ब्लेक किस आधारपर इस निर्णयपर पहुँचे कि पीरी ड्रुसीलीका हत्यारा काला आदमी है, चारनके इस नाटकका कारण थी। लेकिन इतना सब कुछ होनेपर भी चारनका मतलब नहीं निकला, वह जो बात जानना चाहता था नहीं जान सका। उसका सब परिश्रम व्यर्थ गया। गोकि ब्लेक भी इस मजाकसे काफी छके थे, पर चारनका मतलब भी हल नहीं हुआ। इतना सब कुछ होनेपर भी वह काले बालके रहस्यसे अपरिचित ही रहा।

ब्लेक मन-ही-मन मुस्कराये। इस समय वे चारनसे जरा भी नाराज न थे, बल्कि वे चारनकी होशियारीकी मन-ही-मन तारीफ कर रहे थे। इस प्रकार मन-ही-मन सोचते-विचारते वह चले जा रहे थे कि एक गाड़ीवालेको देखकर उन्होंने ठहरनेका इशारा किया।

गाड़ीवाला ठहर गया और वे गाड़ीमें बैठ गये। गाड़ी विनोसा होटलकी तरफ चल पड़ी। होटल पहुँचकर ब्लेकने

देखा कि स्मिथ अभीतक नहीं लौटा। उन्हें स्मिथके इतना शीघ्र लौटनेकी उम्मीद भी न थी। वह जब तक सब दूकानोंका चक्कर न लगा लेगा तबतक नहीं लौटेगा। ब्लेक यह बात अच्छी तरह समझते थे। साथ ही ब्लेकको यह भी विश्वास था कि स्मिथके परिश्रमका कोई फल न निकलेगा। वे सोच रहे थे कि इस प्रकार चारनके बीचमें आ पड़नेसे अच्छा यही होता कि वे इस मामलेमें हाथ ही न देते। क्योंकि पीर्गी ड्रुसीली के हत्याकाण्डका पता लगाना चारनका काम था। ब्लेकने सोचा—बेहतर यही है कि चारनका काम उसीके मत्थे छोड़कर वे लन्दन लौट जांय। यह निर्णयकर मिस्टर ब्लेक अपने मुसाफिरी सन्दूकमें चीजें भरने लगे।

आशासे बहुत पहिले ही स्मिथ लौट आया। जैसे ही स्मिथने कमरेमें प्रवेश किया, ब्लेकने सिरसे पांवतक उसे देखा। उनके माथेपर सलवट पड़ गयी और वे स्मिथके पास आकर खड़े हो गये। स्मिथके प्रसन्न चेहरेपर विजय हास्य खेल रहा था और वह हरा वेलवेटका कोट पहने हुये था।

हुजूर, किस्मत देखिये। मैं अपने काममें सफल होकर लौटा।

तुम सफल हो गये। संशय पूर्वक ब्लेकने पूछा।

जी हां। चौथी दूकानमें सफलता मिली। यह दूकान एवेन्यू मोरी लेनपर है, दूकान छोटी है, पर बड़ा ठाट-बाट है। और हमारे रहस्यमय नीग्रो दोस्त कौन हैं? जानते हैं?

नहीं।

आपको हजार वर्षमें भी अन्दाज नहीं हो सकता। हुजूर।

जी हां! इसीलिये तो मैं इस मामलेमें अन्दाज नहीं लगाता। चुप हूँ।

पम्पन। स्मिथने कहा—पम्पन नाम सुनकर आश्चर्यपूर्ण भाव ब्लेकके चेहरेपर दिखायी पड़ा।

५

फिर हमला

सैकड़ों मील लम्बे चौड़े रेगिस्तानमें सूरज डूब रहा था। डूबते हुये सूरजकी अनन्त नारंगी किरणें अलेक्जेण्ड्रियाको मानो सोनेमें स्नान करा रहीं थीं। मस्जिदों, मीनारों और प्राचीन बड़ी बड़ी इमारतोंके गुम्बजोंपर सूरजकी आखिरी किरणें सोनेके पत्तर चढ़ा रहीं थीं। सूरज डूब रहा था, मानो कोई महान् दानी विदेश जाते समय अपना अपार सोना लुटाता हुआ जा रहा हो। और पूरबकी तरफसे अंधेरेकी चादर उठकर दुनियाको ढांक रही थी, ताकि स्वर्गवाले अलेकजेण्ड्रियाके वैभवको देखकर जलने न लगें।

यूरोपियन होटलकी फैशनेबल खिड़कीपर हाथ रखे जी० ग्राण्ट खड़ा था। उसकी नजर सड़कपर थी और हर एक राहगीरपर पड़ रही थी। सैकड़ों मस्जिदोंकी ऊंची मीनारोंसे धर्म-भीरु मुल्लाओंकी आजानकी आवाज धर्म-प्रिय जनताको मस्जिदोंमें बुला रही थी।

अगर मार्सेलीजको यूरपकी देहली कहा जाय तो इस शानदार शहरको यूरपका महान् दरवाजा कहना चाहिये। अलेक्जेण्ड्रिया अपने वैभवमें अद्वितीय है। यही नहीं, संसारका शायद कोई भी शहर परस्पर विरोधी विशेषताओंमें अलेक्जेण्ड्रियाका मुकाविला नहीं कर सकता। यहाँपर पाप और पुण्य, भलाई और बुराई, सौन्दर्य्य और गन्दगी, शान और सत्यानाशका जो मिश्रण है, वह अद्भुत है।

आजसे नहीं, वल्कि दो हजार वर्ष पहिलेसे इस शानदार शहरने संसारके सामने गौरव पूर्वक अपना मस्तक ऊँचा किया था, और आजतक किये हुये है। अब भी उसकी शान निराली है। यह शहर ऐतिहासिक है, गोकि आजकल यहाँपर बिजलीकी ट्राम चलती हैं, मोटरें दौड़ती हैं, बड़ी-बड़ी आधुनिक इमारतें बन गयी हैं।

अपने दो हजार वर्षके लम्बे जीवन-कालमें इस शहरने जैसे धर्म, दर्शन, विज्ञानका पाण्डित्य लाभ किया वैसेही सुरा, सुन्दरी, सौन्दर्य्यका उपभोग भी किया और पापका पलड़ा भारी वना डाला। इसने हर तरहकी बहार देखी और हर तरहकी तकलीफें झेलीं।

अलेक्जेड्रियामें जहाँ विद्वान्, शरीफ और मालदार आदमियोंकी कमी नहीं, वहां बदमाशों, हत्यारों और डकैतोंका भी अभाव नहीं है।

यूरोपियन होटलकी खिड़कीपर खड़ा हुआ जी० ग्राण्ट

शायद किसी शैतानकी तलाशमें ही था। या मुमकिन है किसी भले आदमीकी प्रतीक्षा कर रहा हो। जैसे ही सूरज छिपा और अन्धेरी रातने अपना काला पर्दा फैलाया किसीने दरवाजा खटखटाया। जी० ग्राण्टने सुना और दरवाजेकी तरफ घूमकर बोला—भीतर आ जाओ।

जी० ग्राण्टके दरवाजा खोलते ही पम्पन भीतर आ गया।

वह कमरेमें आते ही अदबसे झुका और फिर चुपचाप बैठकर जी० ग्रान्टके आदेशकी प्रतीक्षा करने लगा। जैसे वह वर्षोंसे जी० ग्रान्टकी खिदमतमें ही रहता आया हो।

क्या तुम्हें आरामदेह जगह मिल गयी? किसी तरहकी तकलीफ तो नहीं है। जी० ग्राण्टने पूछा।

पम्पनने सिर हिलाया, हँसा, उसके सफेद चमकीले दांत भद्दे मोटे ओठों पर आ गये।

बहुत अच्छा। सिर्फ रातभरकी बात है, आरामसे बैठो। दोस्त, कुर्सी ले लो।

पम्पन एक कुर्सी खींचकर उसके अगले भागपर बैठ गया। उसके कान हर आहटपर खड़े हो जाते थे। वह शायद किसी घटनाके घटित होनेकी आशंका कर रहा था, शायद उसे शक था कि कोई उसके पीछे लग रहा है।

जी० ग्राण्ट जेबमें दोनों हाथोंको डाले हुये, लम्बे-लम्बे कदम बढ़ाता हुआ, पम्पनके पास पहुँचा और बोला—तुम कौनसा विचित्र खेल-खेल रहे हो? पम्पन!

पम्पन, जी० ग्राण्टका सवाल सुनकर भी चुप रहा, सिर्फ प्रश्नकर्ताकी ओर उद्विग्न और सशंकित दृष्टिसे देखता रहा।

बोलो, मैं सचसच जानना चाहता हूँ। जी० ग्राण्टने शब्दों पर जोर देते हुये पूछा—तुम कौनसे अद्भुत कार्यमें लगे हुये हो?

इस बार भी पम्पन चुप रहा। उसने जी० ग्रांटके प्रश्नका उत्तर देनेकी कोई चेष्टा नहीं की बल्कि उसकी आँखोंमें जिद्दीपन भर गया। वह चुपचाप बैठा रहा।

जी० ग्राण्टने, दरवाजा बन्द किया और फिर पम्पनके सामने आकर बैठा और बोला—सुनो। उसने कहा, तुम पेरिससे मार्सेलीजतक मेरे पीछे आये। फिर कुछ घण्टोंतक तुम बराबर मेरे पीछे लगे रहे। तुम्हारी यह हरकत मुझे सन्देह-जनक प्रतीत होती है। अगर तुम्हें मेरे साथ खारटूमतक चलनेकी इतनी सख्त जरूरत ही है तो जब मैं रू० डी० रेविनीमें था, तब तुमने मुझसे सीधे-सीधे क्यों नहीं पूछ लिया? अब मुझे तुम्हारी मालकिनके पाससे सूचना मिली है। उन्होंने लिखा है कि तुम बिना उनकी अनुमति और इच्छाके उनकी नौकरी छोड़कर चले आये। तुम इस सम्बन्धमें क्या कहते हो?

इस बार पम्पनने जवाब दिया। उसने अपना काला हाथ उठाया और अंगुलियोंके कल्पित अक्षरोंमें जवाब दिया, क्योंकि वह गूंगा था।

"पम्पन स्वतन्त्र आदमी है" उसने प्रकट किया और उसके अशान्त काले चेहरेपर गौरवकी एक रेखा चमकी।

मैं यह जानता हूँ, पम्पन। जी० ग्रान्टने तुरत कहा—मैं तुम्हारी ईमानदारीमें रत्तीभर भी सन्देह नहीं करता। लेकिन तुम्हारा वर्तमान रूखा. व्यवहार मुझे परेशान कर रहा है। गोकि तुम यह भी नहीं कह सकते कि मिस जुली तुम्हारे मेरे साथ यहाँ होनेका हाल जानती हैं। लेकिन, फिलहाल उस बात-को छोड़ भी दिया जा सकता है। मैं जानता हूँ, तुम स्वतन्त्र आदमी हो। तुम्हारा कहना बिलकुल ठीक है। तब भी पम्पन यह तुम्हारे जैसे आदमीके लिये उचित नहीं है कि वह अपना कर्तव्य भूल जाय। तुम्हारा यह कर्तव्य था कि तुम अपने जानेकी सूचना अपनी मालकिनको दे देते। मैं नहीं समझता, इसमें तुम्हारा क्या नुकसान था। तुम अगर उनकी नौकरी नहीं करना चाहते थे तो साफ-साफ कह देते। खैर, अब यह बत-लाओ कि तुम मेरे साथ खारटूम क्यों चलना चाहते हो? तुम्हारा क्या मतलब है? क्या तुम मेरा विश्वास कर सकते हो?

पम्पनने इस बार फिर कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि अपनी खोपड़ी इधरसे उधर हिला दी। जी० ग्रान्ट चुपचाप दो मिनट-तक पम्पनका चेहरा देखता रहा और फिर बोला—तुम्हें मेरा विश्वास नहीं है? पम्पन।

पम्पनकी-आंखोंमें साधारण विरोध जागृत हुआ। उसने जी० ग्रान्टको देखा और उसकी अँगुलियोंने कहा—पम्पन अपने मालिक जी० ग्रान्टको अपनी जान सौंप सकता है।

इतना विश्वास कर सकता है कि अपने आपको उनकी इच्छापर छोड़ सकता है।

लेकिन तुम अपना रहस्य मुझसे छिपाना चाहते हो? राज़ नहीं खोलना चाहते?

पम्पनके चेहरेपर फिर जिद्दी भाव झलक आया, मगर वह चुप ही रहा।

जी० ग्रान्ट बड़े गौरसे पम्पनको देखने लगा, मानों उसके चेहरेसे उसके भाव जाननेका प्रयत्न कर रहा हो। थोड़ी ही देर बाद जी० ग्रान्ट फिर बोला—

शायद मैं तुम्हारा भेद जानता हूं। सुनो। तुम्हारा भी पेरिससे ही पीछा किया जा रहा है और जब तुम मेरे पीछे-पीछे चल रहे थे, तुम्हारे पीछे भी कोई लगा हुआ था। वह वही आदमी था, जिसने मुझपर आक्रमण किया था और तुमपर चाकू चलाया था पर भाग्यवश तुम्हें कोई चोट नहीं पहुंचा सका। इस सम्बन्धमें मेरी धारणा है कि वह आक्रमण पाकेट मारनेकी गरजसे नहीं किया गया था। जहांतक मैं समझता हूं, इस आक्रमणका मतलब गहरा था, वह शुरूसे ही तुम्हारा पीछा कर रहा था, उसका तुम्हारे साथ सीधा सम्बन्ध है, शायद जिस रहस्य पूर्ण उद्देश्य प्राप्तिके लिये तुम प्रयत्न कर रहे हो उससे भी। तुम जानते हो कि कोई तुम्हारा पीछा कर रहा है, शायद यह भी जानते हो कि पीछा करनेवाला कौन या किस दलका है। जिस समय उसने मुझपर आक्रमण किया उस समय

तुमने मेरा बचाव तो किया ही, पर तुम उसका भी काम तमाम करना चाहते थे, लेकिन वह मौका पाकर भाग गया और तुम मुझे छोड़कर जा नहीं सकते थे। क्यों? शायद इसलिये कि बिना मेरी सहायताके तुम मार्सेलीजसे यहांतक नहीं आ सकते थे। ठीक है या नहीं?

जी० ग्रान्टने अपने सवालका खुद ही जवाब दिया।

हां, मुझे विश्वास है कि मेरी धारणा ठीक है। उसने सिलसिला जारी रखा। सुनो, फिर तुमने उस आदमीसे बचनेकी कोशिश की, पर तुम इस काममें सफल नहीं हुए। वह आदमी मार्सेलीजसे तुम्हारा पीछा कर रहा है। नहीं, नहीं! मैं उस आदमीको ठीक-ठीक देख नहीं पाया। गोकि जबसे यहाँ आया हूं तबसे बराबर उसी आदमीकी तलाश कर रहा हूं। वह पतला, सियार जैसा चालाक कौवेकी तरह सयाना और चीतेकी तरह धूर्त है। वह धूर्त यहां अलेक्जेंड्रियामें तुम्हारा पीछा कर रहा है। मैं अच्छी तरह जान गया हूं कि वह तुम्हारी हर एक हरकत देख रहा है, और तुम्हारे बाहर निकलनेका इन्तजार कर रहा है। वह फिर मौका मिलते ही तुमपर आक्रमण करेगा। वह योंही नहीं छोड़ देगा। बोलो, तुम क्या कहना चाहते हो?

जब कि जी० ग्रान्ट बोल रहा था पम्पन नाराजी और झुंझलाहटसे भर गया था। उसकी आँखोंमें क्रोध और दृढ़ता थी और उसके काले दिमागके पीछे कोई जाल बन रहा था।

वह कोई बात सोच चुका था और किसी निश्चयपर पहुँच गया था। वह क्षणभर चुप रहा और फिर उसकी अंगुलियां हिलने लगीं।

महान् मालिक जी० ग्रान्टको अधिक कष्ट न करना होगा। उसने कहा—पम्पन बहुत उपकृत है, अब वह आपका साथ छोड़कर खुद अकेला ही आगे चला जायगा।

जी० ग्राण्ट अशान्त होकर बोला—तुमने निश्चय कर लिया है कि अपना रहस्य मुझे न बतलाओगे?

यह पम्पनका गुप्त रहस्य है। उसने जवाब दिया, इसका सिवा पम्पनके और किसीके साथ कोई सम्बन्ध नहीं।

और वह रहस्यमय सूअर जो छायाकी तरह तुम्हारे पीछे लगा हुआ है, तुम्हें अकेला पाकर शेर हो जायगा। जी० ग्राण्टने कहा – बहुत अच्छा। तब भी तुम यह समझ लो कि खारटूम सकुशल पहुँचना खेल नहीं है। इधर देखो, पम्पन। उसने आखिरी कोशिश की—सबसे अच्छा उपाय यही है कि तुम मुझसे सच-सच कह दो। अगर तुम अकेले बढ़ोगे तो वह शैतान मौके-बे-मौके तुमपर हमला जरूर करेगा। कम-से-कम तुम्हारी मालकिनका खयाल करके मैं यह नहीं चाहता कि तुमपर कोई आपत्ति आवे। तुम जानते हो मालिकिन तुमपर कितनी मेहरबान है। बोलो, मुझसे अपना मतलब कह डालो, मेरी भलमनसाहत और सहायताका विश्वास करो। तुम्हारा लाभ ही होगा।

पत्थर जैसे निग्रो पर जी० ग्राण्टकी बातोंका कुछ भी असर नहीं पड़ा, लेकिन वह सिर झुकाये ही रहा। उसकी अंगुलियों-ने कहा—ये तमाम बातें पम्पनसे सम्बन्ध रखती हैं। मैं अपने दयालु स्वामीका बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ। अब मैं विदा होता हूँ। नमस्कार।

जैसी तुम्हारी मर्जी। जी० ग्राण्टने कहा—और अपने चौड़े कंधे हिलाये।

सामनेकी मेजपर ग्लास और ह्विस्की रखी थी। जी० ग्रान्टने एक ग्लास भर कर ओठोंसे लगाते हुये कहा, पम्पन। तुम्हारे कार्यकी सफल कामनाके लिये मैं पान कर रहा हूं। तुम्हें अपने कार्यमें सफलता प्राप्त हो।

उसका स्वर स्निग्ध और वर्ताव दोस्ताना था। पहिला ग्लास खाली करके जी० ग्रान्टने कहा, तुम भी विदाके समय एक ग्लास पीओ। जिससे मुझे विश्वास हो जाय कि तुम्हारे दिलमें मेरे प्रति कोई खराब भाव नहीं है।

जी० ग्रान्टके निमन्त्रण पर पम्पन अपनी कुर्सीसे उठकर मुस्कराता हुआ जी० ग्रान्टकी तरफ बढ़ा, उसने जी० ग्रान्टके हाथसे ग्लास लिया और प्रसन्नता पूर्वक सारा ग्लास गटगट पी गया।

बहुत अच्छा, अब एक सिगरेट भी उड़े। बस, फिर विदा।

पम्पनने जी० ग्रान्टका यह निमन्त्रण भी हंसते हुये स्वीकार किया और कुर्सीका सहारा लेकर सिगरेटका धुआं उड़ाने लगा।

पम्पनको अपने मालिकके साथ पीने खानेका सौभाग्य कभी नहीं हुआ था। इस लिये अपना इतना सन्मान देख कर वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने मन-ही-मन जी० ग्रान्टको धन्य-वाद दिया।

दोनों खाली ग्लासोंको फिर भरते हुये जी० ग्रान्टने कहा— गुडलक पम्पन, अखिरी बार। पम्पनने भरे हुए ग्लासोंकी ओर देखकर सिगरेटके दो तीन कस खींचे और ग्लास उठाना चाहा पर उसेअनुभव होने लगा मानो उसका दम घुट रहा है, मानो वह बेहोश हो रहा है, उसने एक दफा अपने मुंह पर हाथ फेरा। फिर जी० ग्रान्टकी तरफ देखा, वह ग्लास बढ़ाये हुये पम्पनकी ओर ताक रहा था। पम्पनने पूरा जोर लगा कर उठनेको चेष्टा की। पर एक लम्बी सांस खींच कर कुर्सी पर गिर पड़ा। जी०ग्रान्टने पम्पनकी अँगुलियाँसे छूटे हुये ग्लासको जमीन पर गिरनेसे पहिले ही रोक लिया।

दो मिनट जी० ग्रान्ट चुपचाप जहाँका तहाँ बैठा हुआ बेहोश आदमीको गौरसे देखता रहा। जब उसने देख लिया कि पम्पन हिलडुल नहीं सकता, तब वह उठा और दरवाजेके पास जाकर ताला बन्द कर दिया। जी०ग्रान्टने वापिस आकर देखा कि प-म्पन बिलकुल बेहोश है। ग्रेनाइटने झुककर उसे उठा लिया और बिना किसी दिक्कतके बिस्तर पर लिटा दिया।

जी० ग्राण्टने किसी मतलबसे ही पम्पनको बेहोश किया था। पम्पनको एकदम बेहोश देखकर जी० ग्राण्टने बड़ी फुर्तीसे उसके

कपड़े पहिन लिये। पम्पनके कपड़े पहिन लेनेके बाद जी० ग्राण्ट शीशेके सामने गया और अपना चेहरा काला करने लगा, पांच ही मिनटमें उसने अपना रूप एकदम बदल लिया। जब रूप परिवर्तन की क्रिया पूरी हो गयी तब जी० ग्राण्टने पहिले पम्पनका और फिर अपना चेहरा दर्पणमें देखा, जरा भी फर्क न था। पम्पनके कपड़े पहिनकर और उसके जैसा मुँह बनाकर, हाथ पैर रङ्गकर वह एकदम पम्पन बन गया था। उसे विश्वास हो गया कि उसे जो कोई भी देखेगा वही पम्पन समझेगा।

अपने रूप परिवर्तनसे बिलकुल सन्तुष्ट होकर जी० ग्राण्टने सिर हिलाया और भरा हुआ रिवाल्वर पाकेटमें रखकर फिर एकबार पम्पनको देखा, वह एकदम बेहोश था। दरवाजेके पास आकर ग्राण्टने ताला खोला और फिर बाहरसे बन्द कर दिया।

क्षण भरमें ही वह सड़कपर आ गया। सड़क परसे वह एक संकड़ी गलीकी मोड़पर आया। वहाँसे चलकर एक होटलके दरवाजेपर पहुंचा और ऊंटकासा शब्द कर दरवाजा खोलनेका इशारा किया।

होटलका दरवाजा खुल गया, वह भीतर गया। यह होटल गैर यूरोपियनोंके लिये था। होटलमें काले पीले लोगोंका जमघट था। उसे यह देखकर सन्तोष हुआ कि एक नजर देखनेके सिवा किसीने भी उसके आनेपर विशेष ध्यान नहीं दिया।

वह एक टेबलके सामने बैठ गया और छिपी तौरसे हर एकको देखने लगा। पर उसे कोई भी आदमी गौरसे नहीं

देख रहा था, ग्रेनाइट जानता था पम्पनके पीछे एक आदमी लगा हुआ है, उसे यह भी मालूम था कि जैसे ही वह पम्पन बनकर अपनी होटलसे निकला वैसे ही किसीने उसका पीछा किया। पीछा करनेवालेने उसे होटलमें जाते देखा था, तब क्या यह सम्भव नहीं था कि वह भी उसके पीछे होटलमें घुसता? लेकिन जी० ग्राण्टके बाद कोई भी आदमी होटलमें नहीं घुसा। तो क्या वह बाहर ही ठहर गया? या वे धूर्त आँखें जी० ग्रांटकी चालाकी जान गयीं?

वह थोड़ी देर तक बैठा रहा, फिर लोगोंके बीचमेंसे जाकर काठकी सीड़ियोंके पास पहुंचा और ऊपर चढ़ गया। दो तल्लेपर जाकर वह एक कमरेमें गया, कमरेमें मामूली सामान था, जगह बहुत साफ न थी। होटलके इसी कमरेमें पम्पनने डेरा डाला था। कमरेमें पहुंचते ही ग्रेनाइटने एक सरसरी निगाह पम्पनके सामानपर डाली और फिर दरवाजा बन्दकर खड़ा हो गया। वह कमरेका दरवाजा बन्द किये किसीके आनेकी प्रतीक्षा कर रहा था। जिन तेज आंखोंने पम्पनको होटलमें घुसते हुए देखा, वे पम्पनसे बदला लेने शायद उसके कमरे तक आनेका प्रयत्न करें, जी० ग्रान्टका यही खयाल था। पांच, दस, बीस, चालीस, साठ मिनट बीत गये, पर किसीके आनेकी आहट नहीं मिली, तब ग्रान्ट बाहर आया। वह फिर नीचे आ गया, वहांपर पांच मिनट ठहरा एक ग्लास बीयर पीया और होटलके बाहर आ गया। क्या

वे तेज आंखें अभी भी उसका पीछा करेंगी? उसने मन ही मन सोचा। क्या उन्हें पम्पनकी वास्तविकतामें सन्देह हो गया? क्या वे मेरी चालाकी जान गयीं? जी० ग्रांट कुछ भी निश्चय नहीं कर सकता था।

दिनके प्रकाशमें रौशन अलेक्जेन्ड्रियाकी सड़कोंपर अंधकार छा गया था। बीच-बीचमें दिखलायी पड़नेवाली धुंधली रोशनी अन्धकारकी भयंकरताको बढ़ा रही थी। अरब, मूर, सूडानी, जापानीज, यूरोपियन, अमेरिकन लोगोंसे आबाद यह शहर रात्रिके अन्धकारमें अपनी विचित्रताको रहस्यमय बना रहा था। इजिप्टका यह पुराना सुन्दर अलेक्जेण्ड्रिया अपनी तमाम खूबसूरतीको अन्धकारके भयानक आवरणमें छिपाये हुए था।

तंग रास्तेसे निकलकर जी० ग्रान्ट अलेक्जेंड्रियाके शानदार रातमें दिनकी तरह रौशन राहगीरोंसे भरे हुए प्रधान पथपर आया। होटलों, दूकानों, और शराब घरोंके सामने लगी हुयीं हजारों बत्तियोंसे रास्ता जगमगा रहा था। और बड़ी बड़ी इमारतोंके नीचे पड़े हुए बदमाश, बीमार, कंगाली राहगीरोंको अपने छूतके रोग बांट रहे थे। मालदार रङ्गीनमिजाज नागरिक अपनी अपनी माशूकोंको लिये हुए मौजकर रहे थे। और झूठी तड़क भड़कसे ग्राहकोंकी जेबें हल्की करनेवाली आवारा औरतें होटलोंके इर्द गिर्द चक्कर काट रहीं थीं।

जी० ग्रान्ट अलेक्जेन्ड्रियाकी रौनक देखता हुआ, लापर-

वाहीसे बढ़ता हुआ चला जा रहा था। लेकिन वह वाहरसे जितना ही लापरवाह था भीतरसे उतना ही सजग और होशि-यार था। गोकि उसे इस भीड़ भड़क्केमें किसी तरहकी आशंका नहीं थी। वह जानता था कि आक्रमणकारी सुनसान स्थानपर ही हमला कर सकता है। तब भी उसे हफ्तेभर पहिलेकी मार्सेलीजवाली घटनाका स्मरण था। आक्रमणकारीके लिये यह सम्भव था कि भीड़ भड़क्केमें वारकर आसानीसे छिप जाय। अलेक्जेंड्रिया जैसे शहरमें कोई बात असम्भव नहीं थी।

उसका पीछा किया जा रहा था। उसे विश्वास हो गया कि एक छाया उसके पीछे लगी हुई है। अबतकका उसका सन्देह विश्वासमें परिणित हो गया। पहिले उसे सन्देह हुआ था कि शायद उसका रूप परिवर्तन दुश्मनकी आँखोंको धोखा न दे सका, किन्तु अब उसे विश्वास हो गया कि वह अपने कार्य-में सफल हो गया। पम्पनका रहस्यमय दुश्मन उसका पीछा कर रहा था। वह जी० ग्रान्टको ही पम्पन समझ बैठा था।

बहुत अच्छा हुआ। जी० ग्रान्टने मनहीमन कहा। अब यही बाकी रह गया है कि उसे किसी सुनसान गलीकी तरफ ले जाया जाय, ताकि वह आक्रमण कर सके और मुझको उसके साथ गुंथने, तथा उसको पहिचाननेका मौका मिल जाय। मैं यह जान सकूं कि पम्पनका पीछा करनेका उद्देश्य क्या है?

एक हफ्ते पहिले जब पम्पनके रहस्यमय आक्रमणकारीने हमला किया था, उस समय जी० ग्रान्टने उसकी एक झलक

भर देखी थी। लेकिन गाढ़े अन्धकारके कारण वह साफ साफ नहीं देख सका था, किन्तु उसे याद आ रहा था कि वह शख्स मझोले कदका था। ताज्जुबकी बात तो यह थी कि साधारण कदका होनेपर भी वह पम्पनके पंजेसे निकल कर भाग गया था। यही नहीं बल्कि उसने पम्पनपर आक्रमण भी किया था, तब निश्चय ही उसमें अपूर्व ताकत और कौशल है।

जी० ग्रान्ट यह सोचता हुआ चल रहा था कि मौका पाते ही अन्धेरा मिलते ही, रहस्यमय व्यक्ति उसपर हमला करेगा। लेकिन उसके आक्रमण करनेके पहिले वह उसपर आक्रमण कर बैठे तो? नहीं! वह ऐसा नहीं करेगा। ऐसा करनेसे तो उसका मतलब ही चौपट हो जायेगा। जी० ग्रान्टने निश्चय कर लिया कि जो होना हो सो हो जाय। यह सोचकर वह अरब मुहल्लेकी तरफ बढ़ा। जगमगाती सड़क उसके पीछे रह गयी।

गंदी तंग अन्धेरी गलियोंमें मैले कुचैले अधनंगे अरबी छोकरे ऊधम मचा रहे थे। दरवाजोंपर बैठे हुए अरब स्त्री-पुरुष चखचख मचाये हुए थे और अपने दुर्गन्धपूर्ण निश्वासोंसे वायु-को दूषित बना रहे थे। ग्रेनाइटको अरबोंने जाते हुए देखा और उनकी आँखोंमें सन्देहका भाव भर गया। तोभी किसीने भी काले आदमीपर हमला नहीं किया, किसी तरहकी रोक टोक नहीं की। लेकिन उस काले आदमीके स्थानपर अगर कोई यूरो-पियन होता तो शायद यह बिना किसी दिक्कतके इन गलियोंको पार न कर पाता।

पम्पन बना हुआ जी० ग्रान्ट जेबमें हाथ डाले, अंगुलियोंमें रिवाल्वर थामे, चुपचाप चला जा रहा था। यह पहिला ही मौका न था कि उसे इस तरहके गन्दे मोहल्लोंको पार करना पड़ा हो। वह ऐसे मुहल्लों और उनके गन्दे, खतरनाक, अधिवासियोंसे अच्छी तरह परिचित था। वह इन अरबोंकी दुष्टता और धूर्ततासे काफी परिचित था। उसे इन अरबोंसे किसी तरहका भय या आशंका नहीं थी, वह इनकी तरफसे निश्चिन्त था। उसका सारा ध्यान तो उस रहस्यमय व्यक्तिकी हरकतोंपर केन्द्रित था जो कुछ दूरीपर चलता हुआ, उसका पीछा करता आ रहा था।

लेकिन यह क्या हुआ। पीछा करनेवालेकी आहट एकाएक रुक क्यों गयी? क्या बात हुई? उसके आनेकी आहट सुनायी क्यों नहीं देती? क्या मामला है?

आहटका एकाएक रुक जाना क्या मतलब रखता है? तब वह क्या करे? क्या रुक जायं? या चलता ही रहे? अजीब पहेली थी! जा० ग्रांटका शरीर काफी मजबूत था, उसका मन भी हर तरहकी मुसीबतें बर्दास्त करनेके लिये तैयार था। वह इतनी देरसे उसके पीछे था, तब अब क्या हुआ? वह पीछे घूमकर भी नहीं देख सकता था, क्योंकि वह यह प्रकट करना चाहता था कि उसे बिलकुल मालूम नहीं कि कोई उसका पीछा भी कर रहा है। अगर वह पीछे घूमकर देखता तो सारा मामला ही बिगड़ जाता। ग्रेनाइटने सन्देहको उखाड़ फेंका

और इस विश्वासके साथ कि वह जरूर उसके पीछे लगा है, आहट चाहे न भी मिलती हो, आगे बढ़ा।

यह निश्चय करके ग्रेनाइट थोड़ी ही दूर आगे बढ़ा होगा कि आपत्ति सिरपर आ पड़ी। पूर्ण सावधान होनेपर भी ग्रेनाइट चौंक गया, और परिस्थिति समझनेके पहिले ही, आक्रमण कारीने उसे धर दबाया।

६

पम्पनका रहस्य

गिरते गिरते ग्रेनाइटने अपनी अचानक पराजय अनुभव की। फुर्तीले जुजुत्सु विद्याके जानकर पम्पनके रहस्यमय शत्रुने एकाएक उसे धर दबाया। जुजुत्सुके एक दांवसे ही उसके होश उड़ गये। उसने कन्धेसे ग्रेनाइटको इतने जोरका धक्का दिया कि काफी ताकत होते हुए भी वह अपनेको संभाल नहीं सका और लड़खड़ाकर गिर पड़ा। ठीक इसी तरहके कन्धेके धक्केसे मार्सेलीजमें पम्पनको गिरा दिया गया था और उसके उठनेके पहिले ही आक्रमणकारी भाग गया था।

गोकि जी० ग्रान्ट काफी ताकतवर था, पर वह जुजुत्सुके दांवपेच नहीं जानता था। तब भी उसके जोरके धक्केसे लड़खड़ाकर गिरते हुए ग्रेनाइटने अपने शरीरको बहुत कुछ संभाला, जिससे कि धड़ामसे गिरनेपर भी उसको बहुत ज्यादा चोट नहीं लगी। जमीनपर गिरते ही उसने अनुभव किया कि ज्यादा

चोट नहीं लगी, तब भी वह बिना हिले-डुले सड़कपर पड़ा रहा और चुपचाप सड़कपर पड़े रहनेपर भी उसका दिमाग काम करने लगा। उसने सोचा कि पम्पनका रहस्यमय आक्रमण-कारी उसे छूरा भोंककर मारडाल सकता था। किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। इससे यह सिद्ध हो गया कि रहस्यमय व्यक्तिका उद्देश्य पम्पनकी हत्या करना नहीं है। वह सिर्फ अपने दुश्मनको बेहोश करना चाहता है। क्यों? वह पम्पनको बेहोश करके क्या करेगा? कौनसा मतलब निकालेगा?

इस सवालका जवाब उसी समय मिल गया। ग्रेनाइटके चेहरे पर किसीकी गर्म सांस पड़ी। एक मजबूत हाथ उसके कपड़ोंके भीतर गया और उसकी भीतरी जेब टटोलने लगा। ग्रेनाइट वेहोशीका बहाना किये हुए पड़ा रहा। दो मिनट बाद ही मजबूत हाथ उसके कपड़ोंके बाहर आ गया। कोई अज्ञात चीज जिसकी मजबूत हाथोंवालेको सख्त जरूरत थी, उसके कपड़ोंमें नहीं मिली। अब वह क्या करेगा? क्या ग्रेनाइटको यों ही छोड़ देगा। या मार डालेगा?

अत्यन्त सावधानीके साथ ग्रेनाइटने अपनी पलकें जरा ऊंची कीं। एक काली भयावनी मूरत उसपर सवार थी, दो भयानक पीली आंखें उसकी तरफ ताक रहीं थीं। उसके मज-बूत हाथमें एक लम्बा, पतला, तेज खञ्जर चमक रहा था। उसके माथेसे थोड़ा ऊंचा मजबूत हाथ था, जिसमें खञ्जर था। ओह! वह ग्रेनाइटको मारना चाहता था। तब वह मारता क्यों नहीं

था ? एक ही वारमें खञ्जर सीनेके आरपार हो जाता। क्षणभरमें ही उसका काम तमाम हो जाता, तब देर क्यों ? क्या हत्यारा मौतकी प्रतीक्षाकर रहा था ? नहीं, बल्कि वह जीवनकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह इस इन्तजारमें था कि बेहोश दुश्मन होशमें आये और तब वह खञ्जरके जोरसे जो कुछ जानना चाहता हो जान ले।

आक्रमणकारीका यही मतलब था। या और कुछ ?

उफः भीषण परिस्थिति थी। मौत सरपर नाच रही थी। तब ग्रेनाइटने सोचा, निश्चय किया, कि उसका बेहोश पड़े रहना ही अच्छा है। जबतक दुश्मन यह समझ रहा है कि वह बेहोश है तभीतक उसकी खैर है। जबतक वह बेहोश बना रहे खञ्जरके वारसे बच सकता है।

लेकिन इस तरह बेहोश कितनी देर रह सकता है ? इस तरह कितनी देर मौतको धोखा दिया जायगा ? उसने फिर पलकें खोलकर देखा मजबूत हाथोंमें खञ्जर चमक रहा था।

क्या किया जाय ? ग्रेनाइटने सोचा और एकाएक उसने बड़े जोरसे अपना घुटना उसके मुंहपर दे मारा, खञ्जर उसके हाथसे छूटकर गिर पड़ा और तब ?

उसने ग्रेनाइटका मुकाबिला किया। पर ग्रेनाइट हटकर खड़ा हो गया। उसका दुश्मन चूहेकी तरह दौड़कर उससे गुथना चाहता था। वह दौड़ता हुआ आया और उसने फिर उसीप्रकार कन्धेके धक्केसे ग्रेनाइटको गिरा देना चाहा। लेकिन

उसका वार खाली गया। ग्रेनाइट इस हमलेके लिये पहिलेसे तैयार था। जैसे ही उसने अपने कन्धेको उठाकर ग्रेनाइटको धक्का दिया, वैसे ही वह हट गया। इसबार ग्रेनाइट बच गया पर अपने वेगको न संभाल सकनेके कारण दुश्मन ही लड़खड़ा गया, ग्रेनाइटके हट जानेसे वह धड़ामसे जमीनपर गिर गया। पर इस अवसरपर भी उसने लाभ उठाना चाहा। वह खञ्जर उठानेकी कोशिश करने लगा। खञ्जर उसके हाथमें आ गया, वह तेजीसे उठा और ग्रेनाइटपर झपटा। अपने बचावके लिये ग्रेनाइट उसके नीचेसे निकल जाना चाहता था, इसलिये सिरपर खञ्जर आते ही वह झुक गया और उसीक्षण आक्रमण-कारी ग्रेनाइटको छोड़कर जल्दीसे घूमा और भागा।

वह कायर था। गीदड़ था। जैसे ही उसने देखा कि ग्रेनाइटने उसकी दोनों चालें मातकर दीं, वह घबरा गया, और मौका निकालकर भाग गया। ओफ! कितना कायर और साथ ही कितना खतरनाक!

पीछा करना बेकार था। यह समझकर ही जी० ग्राण्टने उसका पीछा नहीं किया। अन्धेरी रातमें, छोटी संकड़ी, घुमावदार गलियोंमें सैकड़ों ऐसे स्थान मिल सकते थे जहाँ रहस्यमय कायर आक्रमणकारी छिप जाता। जी० ग्राण्ट दांत पीसता हुआ खड़ा रहा। वह काफी उत्तेजित हो गया था। दस मिनटमें ही क्या-क्या हो गया। और किसीको पता भी न चला। न जाने इस तरहकी कितनी ही रहस्यमय वार-

दातें अलेकजेण्ड्रियामें रोज होती थीं, और अन्धकारमें छिप जाती थीं।

जी० ग्राण्ट कुछ देरतक वहीं खड़ा रहा और फिर उसी तरफ चला जिस तरफ उसका दुश्मन भागकर अंधेरेमें छिप गया था। उसे इस बातका सन्तोष था कि उसकी चाल किसी हद्तक सफल हुयी। पहिले तो वह पम्पनका पीछा करनेवाले रहस्य-मय व्यक्तिको झांसा देनेमें सफल हुआ, दूसरे वह उसके साथ भिड़ गया और समझ गया कि कौनसी तरकीबसे मार्सेलीजमें रहस्यमय व्यक्तिने पम्पनको परास्त कर दिया था, वह तरीका कन्धेका धक्का था।

उफ़! यह पीली आँखोंवाला महाधूर्त रहस्यमय व्यक्ति जुजुत्सुमें बहुत ही प्रवीण है। पूरबने यह विद्या निकालकर यूरोपवालोंकी गर्मी ठण्डी कर दी। यूरोप अभी जुजुत्सु विद्यामें बच्चा ही है। जी० ग्रान्ट मन-ही-मन जापानकी सामुहाई जातिको इस विद्याका आविष्कार करनेके लिये धन्यवाद दे रहा था। बेशक जापानियोंने इस विद्यामें कमाल हासिल कर लिया। लेकिन वह रहस्यमय व्यक्ति कौन है? वह साधारण बदमाश तो है नहीं, यह तो उसकी करतूतें ही बता रहीं हैं। लेकिन जी० ग्राण्ट पीली आँखोंवालेके बारेमें कुछ भी नहीं जानता था। जहाँपर वह मार्सेलीजमें था वहींपर अलेक्जेण्ड्रियामें भी। वह निश्चयपूर्वक यह भी नहीं कह सकता था कि वह आदमी पीली जातिका ही है, गोकि उसकी पीली आँखें कई दफा देखी

थीं। अफसोस अन्धेरेमें वह उसका चेहरा-मोहरा भी ठीकसे नहीं देख सका।

और उसका रहस्यमय उद्देश्य? पम्पनके पीछे लगनेका मतलब? वह पम्पनका खून करना नहीं चाहता, यह तो लगभग सिद्ध हो गया। कम-से-कम इतना तो माना ही जा सकता है कि हत्या करना उसका मुख्य उद्देश्य नहीं है। वह उस चीजके पीछे है जो चीज वह समझता है कि पम्पनके पास है। लेकिन इस सम्बन्धमें भी वह निश्चित नहीं है। इसीलिये उसने पहिले मार डालने और फिर तलाशी लेनेकी कोशिश नहीं की। शायद उसे यह आशंका सता रही थी कि अगर वह चीज पम्पनके पास न निकली तो गुनाह बेलज्जत होगा। पम्पन, सिर्फ पम्पन ही जानता है कि वह चीज कहां छिपी है? इसीलिये यह समझ कर ही उसने उसे मार डालनेकी कोशिश नहीं की क्योंकि ऐसा करनेसे छिपी हुई चीजके मिलनेकी तमाम संभावनाएं नष्ट हो जांयगी।

लेकिन वह चीज क्या है? किस चीजके पीछे पम्पन यहाँ तक आया और खारटूम जाना चाहता है? वह कौनसी चीज है, जिसके लिये रहस्यमय पीली आँखोंवाला व्यक्ति हाथ धोकर पम्पनके पीछे लगा हुआ है? वह क्या चीज हो सकती है?

जी० ग्रान्टको मजबूत हाथोंकी अंगुलियोंका स्मरण हो आया जो उसके कपड़ोंके भीतर उसके सीनेपर इधर-उधर घूमी थीं, जब कि वह बेहोशीका बहाना बनाये गलीमें पड़ा हुआ था।

जब कि पीली आँखोंवालेने उसके कपड़ोंमें कुछ न पाकर, असफलता सूचक ठण्डी साँस ली थी। वे अंगुलियाँ क्या देख रहे थी? किस चीजकी तलाश कर रहीं थीं? तब क्या सचमुच पम्पनकी वास्केटमें कोई चीज छिपी हुई है?

पम्पनने अपनी वास्केटमें क्या छिपा रखा है? बहुत कुछ सोचनेपर भी ग्रेनाइट यह समझ न सका। उसे ताज्जुब भी हुआ कि उसने पम्पनके कपड़ोंकी तलाशी क्यों न ली? अगर वह चाहता तो कपड़े बदलते समय बड़ी आसानीसे पम्पनके कपड़ोंकी छानबीन कर सकता था। लेकिन उस समय तो उसे बाहर निकलनेकी जल्दी थी। उसे ये सब बातें सोचनेकी फुर्सत ही कहां थी।

वह इसी तरहकी विचार-धारामें बहता हुआ होटलकी तरफ बढ़ा चला जा रहा था। एकाएक उसके दिमागमें यह सवाल उठा कि कहीं पम्पनकी कमीजमें ही तो वह चीज नहीं छिपी है। ग्रेनाइट पम्पनकी कमीज पहिने हुये था। यह खयाल आते ही उसने कमीजकी तमाम जेबें छान डालीं, पर कुछ न हुआ। कोई चीज न मिली। उसकी आशंका व्यर्थ हुई। उफ! अजीब उलझन है।

और उलझनका अन्त नहीं। तब क्या किया जाय? आक्रमणकारी तो भाग गया। कुछ मतलबकी बात भी नहीं मालूम हुई। अब सिवा होटल लौट जानेके और क्या किया जा सकता है। रात फिजूल ही काली की। सारे परिश्रमपर पानी फिर गया। हाथ क्या लगा? सिर्फ असफलता। वह तेजीसे होटलकी

तरफ रवाना हुआ। तब भी वह सशंक था, यद्यपि उसे उम्मीद नहीं थी कि पम्पनका पीछा करनेवाला पीला रहस्यमय व्यक्ति फिर उसका पीछा करेगा, तब भी उसने सजग रहना ही उचित समझा।

लेकिन क्या ठीक है? ऐसे शतानके लिये असम्भव ही क्या है? मुमकिन है, अब भी वह छिपे तौरसे पम्पन समझ कर ग्रेनाइटका पीछा कर रहा हो। और जब वह एक दफा धोखा खा चुका है, असफल हो चुका है, तब जब उसका नया आक्रमण होगा। अब जब वह दुबारा अपने शिकारपर हमला करेगा, तब वह निश्चय ही महाभयंकर, अकाट्य और खूंखार होगा। ऐसे धूर्त आदमीसे बचते रहनेके लिये हर समय सजग रहना ही अच्छा है।

होटल लौटते हुये जिस समय जी० ग्रान्ट अरबी मोहल्ले की गलियोंसे पार हो रहा था, उस समय फिर उसे महसूस हुआ कि कोई पैर बढ़ाता हुआ उसके पीछे चल रहा है। उसे फिर मालूम हुआ कि कोई उसका पीछा कर रहा है। उसने अपना हाथ जेबमें डाल लिया और अँगुलियोंमें रिवाल्वर थाम लिया। इस बार उसने रिवाल्वर चलानेका निश्चय कर लिया था। किन्तु इस बार भी उसने घूम कर नहीं देखा, सामने चलता ही रहा। अरबी मोहल्लेको पार कर वह फिर प्रधान सड़कपर आ गया और कोई घटना नहीं घटी। किसीने उस पर आक्रमण नहीं किया।

रात काफी बीत चुकी थी। सड़कपर भीड़का पता न था। किसी किसी होटलमेंसे किसी बाजेका कोई स्वर सुनायी पड़ जाता, या किसी मोटरमें पड़ी हुयी मस्त मलायन सुन्दरीका मुक्त हास्य सुनायी पड़ जाता, बस। वह तेजीसे कदम बढ़ाता हुआ होटलके सामने पहुँचा और प्रधान दरवाजेसे न जाकर बगलके दरवाजेसे भीतर घुस गया।

उसने भीतर आकर परमात्माको धन्यवाद दिया। सामनेके शीशेमें उसने देखा कि उसके कपड़े कीचड़में सन गये हैं और गिर जानेके कारण उसके चेहरेका रंग भी कई स्थानोंसे उड़ गया है। और उसके चेहरे पर कई जगह मिट्टी लग गयी है।

वह अपने कमरेमें पहुंच गया, किसीने उसे नहीं देखा। उसने धीरेसे दरवाजा खोला और भीतर गया। पम्पन अभी तक उसी तरह बिस्तर पर बेखबर पड़ा हुआ था, जिस तरह जी० ग्रान्ट उसको छोड़कर गया था। वह सीधा पलंगके पास गया और उसने बिना क्षणभर सोचे समझे पम्पनके सीनेमें हाथ डाल दिया। वह कोई चीज ढूंढ़ने लगा। उसका हाथ उसके सीने पर पहुंच गया तब उसका अंगुलियोंमें कोई चीज लगी। वह क्या था? चमड़ेका मामूली बेग? हाँ, साधारण बेग। लेकिन इस बेगके मिलते ही जी० ग्रान्टको मालूम हुआ, मानो उसे एक साम्राज्य मिल गया।

उसने बेग निकाल लिया, खोल डाला, और देखने लगा कि बेगमें क्या है?

ओह! उसे अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। क्या यह भी सम्भव है?

मनीबेगमें क्या था?

एक बेल्ट यानी कमरबन्द।

वह कमरबन्द ऊंटके बालों और रेशमका बना हुआ था। उसके आगेके हिस्सेमें छ सात इञ्च इधर उधर पक्के सोनेके तार थे. यानी वह सोनेके तारोंसे गुंथा था। इतना ही नहीं सोने के उन तारोंमें नग गुंथे हुये थे। सोनेके तारोंके बीचो-बीच

एक बहुमूल्य रत्न जगमगा रहा था। उस रत्नके चारों तरफ छोटे बड़े कीमती हीरे लाल जड़े हुये थे। कमरबन्दमें इतने कीमती जवाहिरात थे कि उनकी कीमत कूतना बड़े-से-बड़े जौहरीके लिये असम्भव था। कमरबन्द रत्नोंसे जगमगा रहा था। जी० ग्राण्ट कमरबन्दको देखकर आश्चर्य चकित हो गया। हीरा, मोती, मानिक, पन्ना, लाल, नीलम ऐसा कोई रत्न नहीं था जो कमरबन्दमें न जड़ा हो। कमरबन्दके आगेका हिस्सा जो सोनेके तारोंसे मढ़ा था, काफी वजनदार था। बीचमें दो लाल नगीने चमक रहे थे

इतने अद्भुत कीमती कमरबन्दको पम्पनके पास पाकर जी० ग्रांट अचम्भेमें पड़ गया। वह सोचने लगा, इस कमरबन्दका असली मालिक कितना मालदार होगा? आखिर पम्पनको यह कमर बन्द कहाँसे मिला? जी० ग्राण्टने फिर एकबार कमरबन्दको देखा। वह जानता था कि उसका एक छोटासा नग भी एक राज्यकी

कीमतके बराबर है। उसका एक नगोना एक नबाबका खजाना खरीद सकता है। इस कमरबन्दसे करोड़ोंकी जायदाद खरीदी जा सकती है।

कमरबन्दके कारण ही वह पीला सूअर पम्पनके पीछे लगा। पर आखिर वह बदमाश कौन है? उसे कैसे मालूम हुआ कि पम्पनके पास कमरबन्दके रूपमें अगाध सम्पदा है। जी० ग्राण्टने कमरबन्दकी कीमत अन्दाजनेकी कोशिश नहीं की, क्योंकि वह अच्छी तरह समझता था कि कमरबन्दके एक नगकी भी ठीक-ठीक कीमत कूतना आसान नहीं है। वह जानता था कि एक नगकी कीमत इतनी हो सकती है जितनी उसकी दस सालकी आमदनी न हो। दो लाल रत्नोंको बेचकर एक छोटासा साम्राज्य खरीदा जा सकता है।

संयोगकी बात देखिये कि इतनी अगाध सम्पति पम्पनके पास न जाने कहाँसे अनायास ही आ गयी। और पम्पन उसे मामूली चीजकी तरह लिये जा रहा है। लेकिन इसी कमरबन्दके लिये; अब या दो घण्टे बाद उसे अपनी जानसे हाथ धोना पड़ेगा। इसी कमरबन्दके पीछे उसे अपनी जान गवानी पड़ेगी। कमरबन्दके चमकते हुये लाल रत्न मानो खूनके प्यासे हों। मानो वे किसीका खून पीनेके लिये जीभ लपलपा रहे हों। मुमकिन है यह बेशकीमत कमरबन्द अबतक कितनोंकी जानका ग्राहक बन चुका हो। कौन जाने, इस कमरबन्दके पीछे कैसा लोमहर्षक इतिहास छिपा हुआ है।

पम्पनकी मौत ! कमरवन्दके खूनी इतिहासमें हत्याका एक नया अध्याय जोड़नेवाली है। मौत ! सिर्फ मौत ही पीले पापीसे पम्पनका पीछा छुड़ा सकती है। पम्पनका खून पीकर ही पीला पापात्मा सन्तुष्ट हो सकता है। जबतक वह रहस्यमय-व्यक्ति कमरवन्द हथिया न लेगा पम्पनके पीछे छायाकी तरह लगा रहेगा। भला वह पापी इस रत्नभण्डारको आसानीसे कैसे छोड़ देगा ? निश्चय ही इस समय भी वह पम्पनपर भयानक, मारात्मक हमला करनेकी बात सोच रहा होगा। क्या वह अपने खूनी इरादेसे बाज आयेगा ?

एकाएक, जी० ग्रान्टकी आंखें ऊपर उठीं और खिड़कीपर जाकर रुक गयीं। वह अभीतक विचारोंमें मग्न था। पर किसी अज्ञात चीजने उसका ध्यान भंगकर दिया। खिड़कीसे कोई छाया, किसीके सिरका प्रतिविम्ब कमरेमें पड़ा, वह चौंक गया। चौंकते ही उसका हाथ जेबमें चला गया और उसकी मजबूत अंगुलियोंमें भरा हुआ रिवाल्वर आ गया। उसने रिवाल्वर बाहर किया और खिड़कीके पास आकर देखा, कोई न था। तब क्या उसे भ्रम हुआ ? जी० ग्रान्टके चेहरेपर क्रोध और आश्चर्यके भावोंने अधिकार जमा लिया। वह खिड़कीके पास बड़ी तेजीसे पहुंचा, इधर उधर झांका, पर कुछ दिखलायी न पड़ा। तो क्या उसकी आंखोंने उसे ही धोखा दिया ?

अभी भी उसके दिमागपर एक धुंधली तसवीर अङ्कित थी। एक पीली चमड़ेके गंदे भयानक शकलसूरतके पीली

आंख और मजबूत आदमीके पीछे उसका सारा ध्यान केन्द्रित था। उसकी आंखोंमें उसी भयानक पीले पापीकी तसवीर नाच रही थी। तो क्या उसने ही खिड़कीसे झांका जी० ग्रान्टने उसकी ही छाया देखी? जरूर उसने जी० ग्रान्टके हाथमें कीमती कमर-बन्द देख लिया। अब क्या होगा? उसने सोचा—जो भी हो, देखा जायगा। उसने खिड़की बन्दकर दी और चिटकनी लगा दी। खिड़की बन्दकर वह फिर कमरेके बीचोंबीच आ गया। रात भरके लिये दुश्मनके आनेका रास्ता बन्द करके उसने सोचा, रातभरके लिये, तो छुट्टी मिली, कल देखा जायगा।

जी० ग्रान्ट छाया देखकर रिवाल्वर ले खिड़कीकी तरफ झपटा था तब, वह कमबन्द कमरेमें ही छोड़ गया था। खिड़की बन्दकर जब वह कमरेके बीचोंबीच आया तब भी कमरबन्द बिजलीकी रोशनीमें पड़ा हुआ जगमगा रहा था। उसने कमरबन्द उठा लिया, और उसे गौरसे देखने लगा। पर उसका देखना निरर्थक था। कमरबन्द बोल नहीं सकता था। अपना इतिहास खुद नहीं बतला सकता था। आखिर, कुछ सोचकर जी० ग्रान्टने कमर-बन्दको सन्दूकमें रख दिया। इतना ही नहीं बल्कि जी० ग्रान्टने सन्दूकमें ताला भी लगा दिया, गोकि उस रातको अब उसका कमरेसे बाहर जानेका भी इरादा नहीं था। तब भी उसे इस बातकी आशंका हो गयी थी कि संभव है कि उसकी आंखोंके सामने ही उसके देखते देखते कमरबन्द गायब हो जाय।

कमरबन्दको तालेचाभीमें बन्दकरनेके बाद वह अपना काला

चेहरा साफ करने और पम्पनको पहिनाये हुए अपने कपड़े फिर पहिननेके लिये उठा। उसने अपने चेहरेका रङ्ग तो छुड़ा लिया पर पम्पनके कपड़े उतारकर खुद पहिनने, और पम्पनके असली कपड़े उसे पहिनानेके लिये यह आवश्यक था कि पम्पन को इधरसे उधर किया जाय। लेकिन परिस्थिति ऐसी थी कि वह पम्पनको जगाना नहीं चाहता था। वह यह देखना चाहता था कि नींद पूरी हो जानेपर, पम्पन उठकर क्या करता है? इसलिये वह पम्पनके कपड़े पहिने ही बैठ गया।

बैठे बैठे, आधा घण्टा बीत गया। पम्पनके जागनेकी कोई आशा न दिखलायी दी। तब जी० ग्रान्ट फिर कुर्सीपरसे उठा, सन्दूक खोला, कमरबंद निकाला और फिर सन्दूक बन्दकर दिया।

कमर बन्द लेकर वह आरामकुर्सीपर लेट गया, और आँखें फाड़कर अद्भुत कीमती कमरबन्दको देखने लगा। इस कीमती कमरबन्दका क्या इतिहास है? वह सोचने लगा इसका असली मालिक कौन है? यह अबतक कहाँ था? किस तरह पम्पनके पास आया? किस तरह पीली आंखोंवालेको इसका पता चला? पीली आँखोंवाला ही कौन है? पम्पन इसे लेकर कहाँ जाना चाहता है? इस आखिरी सवालने तो जी० ग्रान्टको एकदम बेचैन बना दिया। बहुत कुछ सोचने विचारनेपर भी जी० ग्रान्टकी समझ में कुछ न आया। बल्कि कमरबन्दका रहस्य और भी अभेद्य मालूम होने लगा। जी० ग्रान्टको कमरबन्दके बारेमें कुछ भी

मालूम होता तो वह बहुत कुछ सोचता, पर मुश्किल तो यही थी कि वह कमरबन्दके बारेमें कुछ भी नहीं जानता था।

जी० ग्रान्ट जानता था--पम्पन जुलीका वर्षों पुराना विश्वास-पात्र सेवक था। जुली पम्पनका पूरा विश्वास करती थी। सच तो यह है कि उसे पम्पनकी ईमानदारीपर गर्व था। ऐसा ईमान-दार नौकर बिना अपनी मालकिनकी इच्छा और अनुमतिके चुपचाप चलदे। हरतरहसे पूछनेपर भी अपना रहस्य न बतलाये तब सिवा सन्देहके क्या हो? लेकिन जी० ग्रान्टने सोचा—पम्पन पर एकाएक सन्देह करना ठीक नहीं। तब वह ग्रान्टके पीछे क्यों लगा है? और फिर वह ग्रान्टसे अपना भेद क्यों छिपाता है? वह खारटूम जाकर ही क्या करेगा? किसी भी बातका जरा भी पता नहीं चलता। परिस्थिति क्षण प्रतिक्षण गम्भीर होती जा रही है। पर जी० ग्रांट क्या करे?

इसी तरह विभिन्न विचारोंमें मग्न जी० ग्रांट न जाने कबतक आरामकुर्सीपर लेटा रहा। न मालूम कितना समय बीत गया, पर विचारोंमें फंसे रहनेके कारण जी० ग्रान्टको कुछ मालूम ही नहीं हुआ। एकाएक पम्पनकी आहट सुनकर उसका ध्यान भंग हुआ। जी० ग्रान्टने पलकें उठाकर देखा कि उसने गहरी नींद आनेके लिये ह्विस्कीमें जो दवा पम्पनको पिलायी थी, उसका असर खत्म हो चुका और पम्पनने आँखें खोल दीं, वह उठनेकी चेष्टा करने लगा।

पम्पनको उठनेकी चेष्टामें व्यस्त देखकर, जी० ग्रान्टको ध्यान

आया कि वह कमरबन्दका क्या करे? वह सोचने लगा अपने पास कमरबन्द न पाकर पम्पन क्या करेगा? जी० ग्रांटने उसी क्षण कमरबन्द आरामकुर्सीके नीचे छिपा दिया और देखने लगा कि पम्पन क्या करता है?

पम्पन जम्हाई लेता रहा, और बदन तथा अंगुलियाँ मरोड़ता रहा। दो-तीन बार बदन मरोड़ने और अंगुलियां चटकानेके बाद वह उठ खड़ा हुआ। अभीतक उसके दिमागपरसे दवाका असर बिलकुल गायब नहीं हुआ था। अभीतक उसे पता न था कि उसका प्राणोंसे प्यारा कमरबन्द उसके पास नहीं है। वह उठकर पलंगपर बैठ गया, और पलंग पर बैठते ही उसका हाथ सीनेपर गया। उसकी अंगुलियां कुछ टटोलने लगीं।

जी० ग्रान्टने देखा कि उसकी आंखोंमें व्यग्रता छा गयी और उसका हाथ सीनेपर किसी चीजकी तलाश करने लगा। लेकिन वह चीज उसे नहीं मिली, उसने आखिरी बार फिर अपने हाथ को सीनेपर घुमाया और फिर उसे असफलताके सिवा कुछ न मिला। जैसे ही उसे विश्वास हुआ कि कमरबन्द उसके पास नहीं है वह पलङ्ग परसे उछल पड़ा। उसकी आंखें सुर्ख हो गयीं और उसका चेहरा भयङ्कर हो गया। उसने अपनी काली भयावनी आँखोंको घूमाकर कमरेमें चारों तरफ देखा. यह जानने के लिये कि वह कहाँ है? उसकी अँगारे सी लाल आंखें कमरेमें घूमती हुयीं आराम कुर्सीपर लेटे हुये ग्रान्ट पर जाकर रुक गयीं।

पम्पनकी आंखोंमें सन्देह छा गया, क्योंकि उस कमरेमें ग्रान्टके सिवा कोई दूसरा न था। लेकिन क्या उसका मालिक ही उसके साथ विश्वासघात करेगा? क्या सफेद आदमी इतना पतित हो गया? उसे ग्रान्ट पर सन्देह करते हुये झिझक मालूम पड़ती थी। लेकिन क्षणभर बाद ही उसका चेहरा सख्त हो गया, आंखोंमें प्रतिशोधका भाव झलकने लगा, मोटे ओठों-से घृणा टपकने लगी, वह काली अंगुलियोंको मुट्ठीमें समेटे हुये धीरे-धीरे ग्रेनाइटकी तरफ बढ़ा।

तब भी जी० ग्रान्ट हिलाडुला नहीं, उसने पम्पनसे भी कुछ नहीं कहा। उसने जेबमें हाथ डाला और रिवाल्वर निकाल लिया। एक आंखवाले भयानक रिवाल्वरको अपनी तरफ देख-कर झिझका। तब भी वह पीछे नहीं हटा, बल्कि रिवाल्वरका निशाना बचा कर जी० ग्रान्टपर झपटनेका मौका देखने लगा।

मैं जानता हूं, तुम्हारा मतलब क्या है। पम्पन, मुझे तुम्हारा रहस्य मालूम हो गया। तुम्हारी चीज मेरे पास है, पर मैं उसे तुम्हें न देकर, उसके असली मालिकको देना चाहता हूं। उसने शान्त गम्भीर स्वरमें कहा।

पम्पनके गलेसे एक विचित्र आवाज निकली, उसकी अंगु-लियां तेजीसे हिलीं और उसने अंगुलियोंके अक्षरोंमें कहा— पम्पनका उद्देश्य भी उसे उसके असली मालिकको देना है।

उसकी अंगुलियोंकी हरकतबन्द हुयी, जी० ग्रान्टने पम्पनका चेहरा गौरसे देखा। उसके चेहरेका भयानक भाव लुप्त हो गया।

था, आंखोंसे सचाई टपक रही थी। जी० ग्रान्टको मालूम हुआ, मानो उसका अविश्वास करना मानवताका अपमान करना है।

मैं तुम्हारे उद्देश्यकी सफलता चाहता हूं। तुम्हारे मार्गमें किसी तरहकी रुकावट भी नहीं डालना चाहता। जी० ग्रान्टने कहा, और आरामकुर्सीकी गद्दीके नीचेसे कमरबन्द निकाल कर लापरवाहीसे पम्पनकी तरफ फेंक दिया।

पम्पन प्रसन्नतासे चिल्ला उठा, उसने झपटकर कमरबन्द उठा लिया और उसे चूम कर, सीनेसे बांध लिया। उसके चेहरेसे व्यग्रताके भाव मिट गये, उनका स्थान कृतज्ञताने ले लिया। उसका काला सिर और आंखें जी ग्रान्टके सन्मानमें झुक गयीं।

लेकिन वह कुछ बोला नहीं, बल्कि चुपचाप पत्थरके पुतलेकी तरह कई मिनट तक खड़ा रहा। शायद उसके दिमागमें दो परस्पर विरोधी भावोंका युद्ध हो रहा था। पम्पन खड़ा रहा, जी० ग्रान्ट आराम कुर्सी पर लेटा रहा. पांच मिनट तक एकदम सन्नाटा रहा। फिर, पम्पनकी काली अंगुलियां हिलने लगीं।

पम्पन अपने मालिक जी० ग्रान्टसे भेदकी बात कहना चाहता है। उसकी अंगुलियां बोली—पर कहानी बहुत बड़ी है, और पम्पन बेजुबान है, लेकिन वह बड़ी तेजीसे लिख सकता है।

जी० ग्रान्ट उठा और उसने अपने सफरी सन्दूकमेंसे फाउन्टेन पेन और कागजका पैड निकाल कर, पम्पनको सामनेकी कुर्सीपर बैठनेका इशारा किया।

७

मिस जुलीपर क्या बीता ?

पम्पन ! स्मिथने कहा ।

अच्छा ! पम्पन । ब्लेकने दोहराया । उनकी आँखोंमें ताज्जुब भर गया । पम्पन ! वे फिर बड़बड़ाये ।

पम्पन, ब्लेकके लिये नया नहीं था । ब्लेक पम्पनसे अच्छी तरह परिचित थे । वे मिस जुलीके इथोपियन नौकर पम्पनको अच्छी तरह जानते थे ।

तब क्या उसने पीरी ड्रूसीलीका खून किया ? बिना किसी प्रमाणके, बिना गवाहीके, बिना स्मिथकी पूरी बात सुने । ब्लेकने न मालूम क्यों हठात् विश्वास कर लिया कि पीरी ड्रूसीली-का खूनी पम्पन है ।

क्षण भरके लिये उनके दिमागमें चारनका यह तर्क कि "पीरी ड्रूसीलीका हत्यारा जुजुत्सु विद्या जाननेवाला कोई हट्टा कट्टा आदमी है" आया । पर ब्लेकको पम्पनका नाम सुन

लेनेके बाद चारनका तर्क सबल न जँचा। ब्लेकने सोचा—पीरी ड्रूसीली चाहे जैसा हट्टा कट्टा रहा हो, किन्तु इथोपियन पम्पन-के सामने वह बच्चा जैसा ही माना जायगा। पम्पनके लिये पीरीका गला घोंट देना बायें हाथका खेल है। ब्लेकके ऐसा विश्वास करनेका कारण था। क्योंकि मिस्टर ब्लेक मिस जुली-के इने गिने घनिष्ट दोस्तोंमेंसे थे और वे कई मरतबा पम्पनकी ताकतके करिश्मे देख चुके थे। वह भैंसे जैसा तगड़ा था, उसके कन्धे सांड़ जैसे मजबूत थे और उसकी अंगुलियां मानों फौला-दकी बनी हुईं थीं। उन्हें विश्वास हो गया कि पम्पनके हाथोंमें पड़कर पीरी ड्रूसीलाकी तमाम ताकत हवा हो गयी, और पम्पनके सामने उसका वैसा ही हो जाना जैसा चूहा बिल्लीके सामने हो जाता है, बिलकुल सम्भव था।

सम्भव है। ब्लेकने मन ही मन कहा—मिस जुलीके विश्वास पात्र नौकर पम्पनने पीरी ड्रूसीलीको मार डाला हो। ओह! वह हरे रंगका कोट। ब्लेकको उसी क्षण याद आ गया कि पम्पनको हरा कोट बहुत पसन्द था। वे जानते थे कि पम्पन-को तड़क भड़कदार कपड़ोंका बड़ा शौक है। वे जानते थे, अपूर्व ताकत होनेपर भी पम्पन बड़ा चुस्त था। वह साँपकी तरह सरकता हुआ अपने शिकारका पीछा कर सकता था, वह चीते-की तरह उछल कर अपने शिकारको बेकाबू कर सकता था। पम्पनके लिये होटलके पिछवाड़ेसे नल पकड़ कर ऊपर चढ़ जाना और खिड़कीके रास्ते कमरेमें चले जाना बिलकुल आसान

काम है। वह बड़ी आसानीसे विनोसा होटलके कमरेमें घुसकर पीरी ड्रुसीलीको मार सकता है

लेकिन क्यों?

यही सबसे जबर्दस्त सवाल था। पम्पन पीरी ड्रुसीलीको मार सकता है,यह मान लेनेपर भी यही सवाल हल नहीं होता कि उसने पीरी ड्रुसीलीका खून क्यों किया? हत्याका उद्देश्य चोरी तो हो ही नहीं सकता। किसी चीजके लिये पम्पनको किसीका खून करनेकी क्या जरूरत? क्योंकि उसकी मालकिन मिस जुली काफी मालदार है, और वह पम्पनको किसी भी चीजके लिये तरसा नहीं सकती। ब्लेक जानते थे कि मिस जुली पम्पनको बहुत मानती है और हमेशा उसका खयाल रखती है।

तब पम्पनने खून क्यों किया?

क्या बदला लेनेके लिये? मुमकिन है बदला लेनेके लिये ही पम्पनने पहिलेसे तैयारी करके पीरी ड्रुसीलीका खून किया हो। मुमकिन है, पीरी ड्रुसीलीकी हत्याके पहिले उसने छिपे छिपे उसका पीछा किया हो। उसके सोनेका स्थान देख लिया हो। हो सकता है पम्पन दिनसे ही उसके पीछे लग गया हो। या पीरी ड्रुसीलीके लौटनेके समय पम्पन छिपा हुआ होटलके आसपास खड़ा हो। और यह निश्चय हो जानेपर कि पीरी ड्रुसीली खा पीकर सो गया, पम्पन होटलके पीछेसे पीरीके कमरेमें घुसा हो और उसे गला घोटकर मार डाला हो। तब क्या बदला लेनेके लिये ही पम्पनने पीरी ड्रुसीलीका खून किया?

ब्लेक गम्भीरतापूर्वक सोचने लगे, स्मिथ चुपचाप बैठा रहा।

लेकिन वह कौन सा गुप्त रहस्य था, जिसके कारण पीरीको बेमौत मरना पड़ा ? पीरीके पास काफी माल था, वह मालदार अफ्रीकन व्यापारी समझा जाता था। पर वस्तुतः वह कौन था ? कोई नहीं जानता। उसके पास इतना धन कहाँसे आया? किसीको मालूम नहीं। उसके जीवनका समस्त रहस्य उसीके साथ चला गया। पर पम्पनने उसे क्यों मारा ?

पम्पन जैसा आदमी बिना सोचे समझे किसीका खून नहीं कर सकता,—कोई न कोई ऐसी बात जरूर होगी जिसके कारण पम्पनने पीरी ड्रुसीलीको मार डाला।

पम्पनने आपके दिमागको उलझनमें डाल दिया। सरदार। स्मिथने ब्लेककी विचार धारामें बाधा देते हुए कहा मेरे दिमागमें भी पम्पन खलबली मचाये हुए है। मैं समझता हूँ अब बाकी तीन दुकानोंपर चक्कर लगाना फिजूल है। लेकिन अब आप क्या करनेका इरादा कर रहे हैं ? खुली हुई सफरी बेगको देखते हुए स्मिथने पूछा।

क्या चलनेकी तैयारियाँ हो रही थीं ?

हाँ, किसी कारणवश। पर वह बादमें बतलाऊँगा। लेकिन मुझे विश्वास हो रहा है कि पीरी ड्रुसीलीकी हत्याकी जिम्मेवारी पम्पनके सिवा किसीपर नहीं है।

जी हाँ। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि जैसा हरा वेलवेटका

कोट मैं पहिने हुए हूँ, वैसा ही पम्पनने खरीदा था। एवेन्यू मोरीलेनवाला दुकानदार पम्पनको अच्छी तरह जानता है। क्योंकि ज्यादातर पम्पन उसी दुकानसे कपड़े खरीदता है। यह दुकान रू० डी० रेवांनीके विलकुल करीब हैं। दुकानदारने मुझे सब बातें साफ-साफ कह दीं। लेकिन अगर और भी किसी काले आदमीने ऐसा ही हरा कोट खरीदा होगा तो मामला बहुत बेढब हो जायगा। क्या यह सम्भव है?

असम्भव कुछ भी नहीं है। ब्लेकने कहा, पर मेरा ध्यान पम्पनपर ही है।

फिर थोड़ी देर विचार-निमग्न रहनेके बाद ब्लेक एकाएक बोले—

हमें इसी वक्त रु० डी० रेवांनी चलना चाहिये। हमें अभी चलना चाहिये। जरा-सी देर होते ही वर्टरम वारन सारा खेल बिगाड़ देगा। हमें वारनसे पहिले ही पहुँच जाना चाहिये।

वर्टरम वारन! स्मिथने ताज्जुबसे कहा, लेकिन जनाव, वह इस मामलेमें कुछ भी नहीं जानता।

ओह! स्मिथ। तुम नहीं जानते। वह सब कुछ जानता है। उसे जरूर मालूम हो गया होगा कि तुम उस दुकानमें गये हो। उसे पम्पनका पता भी लग गया होगा। वह बड़ा चालाक है। चलो। जल्दी चलो। रास्तेमें मैं तुम्हें एक नयी बात बतलाऊँगा।

नयी बात? स्मिथको ब्लेककी बात सुनकर ताज्जुब हुआ। वे क्या नयी बात बतलायेंगे। उसने ब्लेकको गौरसे देखा, पर

बिना एक शब्द बोले, उनके पीछे-पीछे कमरेसे बाहर निकलकर, होटलके दरवाजेपर आकर खड़ा हो गया। होटलके सामनेसे जाती हुई एक गाड़ीको उन्होंने ठहरनेका इशारा किया, और उसी गाड़ीपर सवार होकर रु० डी० रेवींनीकी तरफ रवाना हो गये। ब्लेकने गाड़ीवालेसे जल्दी चलनेको कहा और स्मिथसे बोले। लो अब मैं तुम्हें नयी बात बतलाता हूँ।

और उन्होंने अपनी और निग्रो रूपधारी बर्टरम बारनकी मुलाकातका सारा हाल बयान कर दिया।

अब तुम समझे कि मैं रु० डी० रेवींनी चलनेकी जल्दी क्यों कर रहा हूँ। अगर बर्टरम बारन वहाँ हमसे पहिले पहुँच गया तो जाते ही पम्पनको गिरफ्तार कर लेगा। गोकि मैं यह नहीं चाहता कि पम्पन अपने अपराधकी सजा न पाय, और न्यायका अपमान हो। लेकिन मैं यह जरूर चाहता हूँ कि यह बाजी हम लोगोंके हाथ लगे। कमसे कम उसे मेरे साथ मजाक करनेकी सजा तो मिलनी ही चाहिये। दूसरी बात यह कि, मैं चाहता हूँ कि मिस जुली सब बातोंसे वाकिफ हो जाय।

खूब! वाकई बड़ा मजेदार मामला है; कमसे कम मुझे तो बड़ा मजा आ रहा है। इतना कहकर स्मिथ चुप हो गया।

इसके बाद दस मिनटोंतक शान्ति रही। कोई किसीसे कुछ न बोला। वे लोग रु० डी० रेवींनी पहुँच गये। गाड़ी जैसे ही दस नम्बर मकानके सामने खड़ी हुई, ब्लेक गाड़ीसे कूद पड़े। स्मिथ भाड़ा चुकाने लगा। इतनेमें ही ब्लेक मकानकी सीढ़ियोंपर चढ़

गये। उन्होंने दरवाजेपर लगी हुई घण्टी बजायी, और दरवाजा खुलनेका इन्तजार करने लगे। उन्हें उम्मीद थी कि खुद पम्पन ही आकर दरवाजा खोलेगा और हमेशाकी तरह उनका स्वागत करेगा। पीला जांघिया, रेशमी कोट और कमीज पहिने हुए पम्पनकी तसवीर उनकी आँखोंमें नाचने लगी। स्मिथ भी भाड़ा चुकाकर आ पहुँचा।

दरवाजा खुला, पर खोलनेवाला पम्पन न था। बल्कि मिस जुलीकी जवान नौकरानी एनीटी थी। ब्लेक एनीटीको अच्छी तरह पहिचानते थे। उसका स्वभाव बहुत अच्छा था। एनीटी-को दरवाजेपर पाकर ब्लेकको ताज्जुब हुआ, क्योंकि इसके पहिले ब्लेक जब-जब मिस जुलीसे मिलने आये थे, तब-तब पम्पनने ही दरवाजा खोला था।

मिस एनीटीने मि० ब्लेकको फौरन पहिचान लिया और मधुर मुसकानसे स्वागत किया।

तुम्हारी मालकिन घरपर हैं? ब्लेकने सवाल किया।

एनीटीके जवाब देनेके पहिले ही भीतरसे किसीने जवाब दिया।

हाँ है। लेकिन एक मिनट देर होते ही शायद आप उसे नहीं पाते। आप कौन साहब हैं?

यह मिस जुलीकी आवाज थी। वह सीढ़ीसे उतर रही थी। उसने बढ़िया रेशमी कपड़े पहिन रखे थे, और कहीं जा रही थी। दो सीढ़ियाँ पार करते ही उसने ब्लेकको देखा, उसके चेहरेपर

प्रसन्नता छा गयी, वह ब्लेककी तरफ बढ़ी और अपना कोमल हाथ उनकी तरफ बढ़ा दिया।

ओहो ! धन्यभाग, आप हैं। और स्मिथ भी। उसने उल्लसित होकर कहा।

हाँ। लेकिन मामला जरा टेढ़ा है। और बहुत ही जरूरी। मालूम होता है मैं ठीक समयपर आ गया। किसी एकान्त स्थानपर चलो। मुझे बहुत जरूरी बातें करनी हैं।

ब्लेकके बोलनेका गंभीर ढंग देखकर जुली समझ गयी कि कोई टेढ़ा मामला है। वह बिना कुछ कहे सुने बांयी ओर घूम गयी, और हालके तीन कमरोंमेंसे एक कमरेमें घुसी। ब्लेक और स्मिथ भी उसके पीछे थे।

कमरेमें पहुँचकर ब्लेकने संक्षेपमें जुलीसे सारी बातें कह दीं। मिस जुलीका मकान बड़ा शानदार था। इस समय वह खुद भी मोहक पोशाक पहिनकर लुभावनी बनी हुई थी। कमरा भी काफी सजा हुआ और सुन्दर तथा शान्त था, पर परिस्थिति ऐसी गंभीर थी कि किसीका मन शान्ति अनुभव नहीं कर रहा था। जुलीका मोहक रूप और कमरेका शान्त-वातावरण भी परिस्थितिमें कोई परिवर्त्तन न ला सका। यद्यपि जुलीका यह कमरा निहायत शानदार था, इसकी सजावट बड़े-बड़े रईसोंके कमरोंको मात करती थी, कमरा देखनेसे ही यह मालूम हो जाता था कि इसकी मालकिन सौन्दर्यप्रिय और पूर्वीय कलाकी प्रशंसिका है। कमरेकी सजावटसे कहीं

भी किसी चीजका अतिरेक प्रगट नहीं होता था। यद्यपि कमरे-की हरएक चीज़ कह रही थी उसकी मालकिनके पास काफी दौलत और समझ है। दुनियाकी नजरोंमें वह मिस कोरेलो स्पेनडिश थी। उसके बहुत थोड़े घनिष्ट दोस्त थे, जिनमें मिस्टर ब्लेक भी एक थे, जो मिस कोरेलो स्पेनडिशको किसी दूसरे ही नामसे जानते थे। उस नामसे जानते थे जिस नामसे वह पहिले-पहिले फ्रेंच गुप्त समितिमें भर्ती हुई थी। वर्षोंसे परिचित होनेपर भी ब्लेक उसके जीवन रहस्यसे बहुत कम वाकिफ थे। ब्लेकको जुलीका इतिहास मालूम न था। वे नहीं जानते थे कि जुली वस्तुतः कौन है? उसके पास इतनी सम्पत्ति कहांसे आयी?

उसका जीवन स्वच्छन्द था। वह अपनी इच्छानुसार जिन्दगी व्यतीत करती थी। लोगोंकी आलोचना प्रत्यालोचना-की उसे पर्वा न थी। कोई भी उसकी इच्छा या कामनामें रोड़े नहीं अटका सकता था। यानी वह खुद अपनी मालकिन थी। उसकी पैठ सभ्य समाजके ऊँचे-से-ऊँचे स्थानपर थी। बड़े-बड़े रईसोंके दरवाजे उसके स्वागतके लिये खुले रहते थे। जहां जहाँ भी वह अपनी खूबसूरतीकी सुगन्धि फैलाती हुई जाती वहाँ-वहाँ उसके स्वागतके लिये पलकपावड़े बिछ जाते। पेरिस-के सभ्य समाजमें उसकी तूती बोलती थी।

उसने अपने रसभरे ओठोंको हिलाया—

हां तो मोसिये ब्लेक। किस चीजने आपको इस कदर परे-शान कर रखा है?

मामला बहुत गंभीर है। ब्लेकने कहा, वह पम्पनसे सम्बन्ध रखता है।

इतना कहकर ब्लेक यह देखनेके लिये चुप हो गये कि उनके शब्दोंका मिसपर क्या असर पड़ा। गोंकि उसके चेहरेपर जिज्ञासा झलक पड़ी किन्तु उसकी आँखोंमें ताज्जुबका जरा भी भाव न था। मुमकिन है, वह अपने काले नौकरके कारनामेसे परिचित हो चुकी हो। इसीलिये उसे ब्लेककी बात सुनकर अचम्भा न हुआ हो।

उस बातका पम्पनसे सम्बन्ध है। बहुत ठीक। बात क्या है?

मैं वही बात कहनेको यहाँ दौड़ा आया हूँ, मिस। लेकिन इसके पहिले मुझे कुछ सवाल कर लेने दो! संभव है पम्पनकी गिरफ्तारीका वारण्ट लेकर वारन अभी आ पहुँचे। मामला बहुत गंभीररूप धारण कर चुका है।

गिरफ्तारीका वारण्ट! किस अपराधके लिये?

इतना सुननेपर भी जुलीको कुछ ताज्जुब न हुआ। वह उसी कदर निश्चिन्त भावसे बैठी रही!

हत्याके अपराधमें। ब्लेकने कहा—इस महीनेकी तीसरी तारीखको बुधवारकी रातको अफ्रीकन व्यापारी पीरी ड्रुसीलीका विनोसा होटलके कमरेमें खून करनेके अपराधमें।

मिस जुलीके चेहरेकी रंगत बदल गयी। इस बार वह ब्लेककी बात सुनकर स्तब्ध और परेशान हो गयी। आप क्या कह रहे हैं? उसने सन्देह पूर्ण स्वरमें पूछा।

मुझे यह बात दुहरानेके लिये मजबूर मत करो। ब्लेकने कहा—समय बहुत कम है। मैं यहाँ तुम्हारी मदद करने आया हूँ. मेरा विश्वास है कि तुम अपने नौकर पम्पनका बहुत विश्वास करती हो, और उसका तुम्हारा बहुत पुराना सम्बन्धहै। मैं यह जानना चाहता हूँ कि इस समय पम्पन कहाँ है? मैं जानना चाहता हूँ कि पम्पन इस बारेमें क्या कहना चाहता है।

पम्पन यहाँ नहीं है। जुलीने जवाब दिया। वह चला गया, उसने मेरी नौकरी छोड़ दी।

क्या? उसने तुम्हारी नौकरी छोड़ दी? तुमने खुशी-ब खुशी उसे चला जाने दिया।

नहीं। राजी खुशी नहीं तब भी वह चला ही गया। मैं क्या करती?

इसके माने हैं कि वह भाग गया। और तुम यह नहीं समझ सकी कि क्यों?

आप कहना चाहते हैं कि उसने खून किया इसलिये बिना मेरी मर्जीके भाग गया। लेकिन मैं कभी विश्वास नहीं कर सकता। बल्कि मैं इस बातपर भी विश्वास नहीं कर सकती कि पम्पनने किसीका खून किया है। मेरा वफादार पम्पन कभी ऐसा नहीं कर सकता। क्या आपको विश्वास है? मोसिये ब्लेक, क्या आप सचमुच अपनी बातपर विश्वास करते हैं?

हाँ। कम-से-कम मेरा ऐसा ही विश्वास है। मैं तुम्हें भी विश्वास दिला सकता हूँ कि मेरा विचार ठीक है।

उधर देखो, स्मिथकी तरफ। तुम इस हरे वेलवेट कोटको पहिचानती हो ? याद करो।

हां , याद आता है। पम्पन भी इसी तरहका कोट पहिने था।

बहुत ठीक अब यह बतलाओ कि वह कोट पम्पन अपने साथ ले गया या नहीं ?

मैं ठीक नहीं जानती। मुमकिन है वह छोड़ गया हो, संभव है वह ले गया हो।

तो जरा मेरे साथ पम्पनके कमरेतक चलो। हमें देखना है कि पम्पन कोट ले गया या नहीं। जल्दी करो। बट्टरम चारन आता ही होगा।

जुलीने ब्लेककी बातका कोई जवाब नहीं दिया, वह चुपचाप उठी और चल पड़ी। ब्लेक और स्मिथ उसके पीछे पीछे हाल पारकर सीढ़ियोंके ऊपर चढ़ने लगे। मकानके एकदम ऊपरवाले तल्लेमें पम्पनका कमरा था। वे लोग उसी कमरेमें पहुंचे। ब्लेकने झपटकर पम्पनका सन्दूक खोल डाला और वेलवेटका हरा कोट निकाल लिया। यही है! ब्लेकने प्रसन्नता से उछलकर कहा।

ब्लेकके हाथमें पम्पनका कोट था। उन्होंने उसे उलट पलट कर देखा। उनके मुखपर सफलताकी प्रसन्नता छा गयी। कोट पम्पनका था और उसका एक बटन गायब था। कोट देखनेसे साफ मालूम हो रहा था कि किसीने बटन नोच लिया है, क्योंकि

बटनके स्थानपरका कोटका कपड़ा भी जरासा फट गया था। ब्लेकको अब पूर्ण विश्वास हो गया कि पम्पनही खूनी है।

ब्लेकने कोटके गायब बटनके स्थानकी ओर इशारा करते हुए जुलीसे कहा—देखो यहाँपर बटन नहीं है। यह बटन, विनोस्रा होटलके २१ नम्बरवाले कमरेमें पाया गया। उसी कमरेमें पीरी ड्र ्सोलीका खून हुआ। वह बटन मेरे पास है, यह देखो।

उन्होंने बटन निकालनेके लिये अपनी जेबमें हाथ डाला, दूसरे ही क्षण उनकी आँखोंमें सन्देह भर गया, वे दूसरी जेबमें बटन ढूंढ़ने लगे, फिर तीसरीमें। इस तरह उन्होंने अपनी तमाम जेबें छान डाली पर बटन नहीं मिला।

चला गया। बटन खो गया, नहीं चुरा लिया गया। बटन जेबमें था। ताज्जुब है। यह चोरी किस समय हुयी? कुछ समझमें नहीं आता।

शायद आप होटलमें भूल आये हों? जुलीने कहा।

नहीं होटलमें नहीं भूल सकता। जब मैं होटलमें बैठा हुआ अपने बक्समें लन्दन लौटनेके लिये सामान भर रहा था, शायद उस समय गिर पड़ा हो। पर मेरा मन गवाही नहीं देता।

ब्लेक भवें संकुचित करके कुछ सोचने लगे। एकाएक उन्हें एक बात याद आ गयी। उन्हें वह घटना याद आयी जब रू० डी० एग्रीली मुहल्लेके मकानमें नीग्रो वेशधारी चारनने ब्लेकका कोट पकड़कर खींचा था उन्हें मालूम हुआ, मानो ठीक उसी समय बटन चारनने उनकी जेबसे निकाल लिया।

सड़कपर ठीक जुलीके घरके सामने एक गाड़ी आकर खड़ी हो गयी। गाड़ीका दरवाजा खुला और एक छोटा सा आदमी घुटा हुआ सिर लिये गाड़ीसे उतरा।

ओह! चर्टरिस ब्राउन आ गया! ब्लेक एकाएक बोले।

मिस जुली, मैं कानूनकी आँखोंमें धूल नहीं झोंकना चाहता, लेकिन इस मामलेमें मैं और ब्राउन प्रतिद्वन्द्वी हैं। याद रखो। चर्टरिस ब्राउनके पास कर चढ़ा हो एक मात्र प्रमाण है। लेकिन अगर वह पकड़का नया हरा कोट पा जायगा तो उसके पास काफी जोरदार सबूत हो जायगा। हर मनबढ़न कोट सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, तुम मेरा मतलब समझीं? मिस जुली!

नीचेसे दरवाजेपरकी घण्टीको किसीने जोरसे दबाया, घण्टी टनटना उठी।

जुलीके चेहरेपर क्षण भरके लिये उदासी छा गयी। उसे ब्लेककी बातोंमें सन्देहकी गंध मिली, पर अचानक याद ही उसे ब्लेकका अपना पुराना परिचय स्मरण हो आया। सन्देह मिट गया। एक अपूर्व मुस्कराहट उसके चेहरेपर दौड़ गयी, जिसे देखकर बड़ें बड़ोंकी चाल की हवा खाने चली जाती है।

मुझे अपना कोट उतार दो। उसने स्मिथसे कहा—जल्दी करो।

स्मिथने बिना हिचकिचाहटके अपना नया हरा कोट उतारकर मिस जुलीके हाथोंमें दे दिया। यह देखनेके लिये किसीकी बुद्धि क्या कर सकती है?

जुलीने स्मिथका कोट लेकर मोड़कर पम्पनके सन्दूकमें रख दिया और ब्लेकके हाथसे पम्पनका कोट छीनकर एक गुप्त स्थानपर छिपा दिया। स्मिथ हंसता हुआ स्त्री बुद्धिका चमत्कार देख रहा था।

मोसिये चारनको यह न मालूम होना चाहिये कि आपलोग यहां आये हुए हैं। मिस जुलीने तेजीसे कहा—इधर आइये। जल्दी कीजिये।

वे लोग जुलीका अनुगमन करते हुए नीचेके तल्लेमें सामने की तरफ गये, जुलीने एक कमरेकी ओर इशारा करते हुए कहा, भीतर जाइये।

आप कुछ खयाल न कीजियेगा। उसने फिर कहा, ब्लेकके सिरहिलाते ही, उसने कमरेका दरवाजा बन्द कर दिया। ब्लेक और स्मिथ बन्द हो गये।

उन्होंने नीचेके दरवाजेके खुलनेका शब्द सुना, फिर किसीके ऊपर आनेकी आवाज आयी।

कोई आदमी मिस जुलीसे बातचीत कर रहा था। क्या बात कर रहा था यह सुनायी न पड़ा। तब भी उन्होंने समझ लिया कि चारन जुलीसे बात चीत कर रहा है।

स्मिथने ब्लेककी तरफ मुखा तिब होकर कहा—जुली क्या चाल चल रही है! वह चारनको बेवकूफ नहीं बना सकेगी।

अपने आप ही मालूम हो जायगा। घबरानेकी क्या बात है? ब्लेकने जवाब दिया और आराम कुर्सीपर लेट गये।

फिर दोनोंमेंसे कोई भी न बोला । दोनों कान लगाये बाहर-की आवाज सुननेकी कोशिश करने लगे । ब्लेक भी काफी उत्सुक थे । वे देखना चाहते थे कि यह खूबसूरत मिस चारन-की चालाक बुद्धिको धोखा दे सकती है या नहीं । बटरम चारन घरमें आ गया था । वे जानते थे, चारन कितना होशियार और बुद्धिमान है । ओह ! वह अपने काममें कितना प्रवीण है । यह बेचारी मिस उसके सामने क्या है ? तब भी बुद्धियोंका खेल मजेदार है । क्या जुली अपने काममें सफल होगी ? क्या वह चारनको बुद्धू बना सकेगी ? ये सवाल ब्लेक ने अपने मनसे ही पूछे । नीचेके तल्लेमें दो चालाक आदमियोंकी चालाकीका द्वन्द हो रहा है । मिस जुली भी फ्रेञ्च गुप्त समितिमें काम कर चुकी थी और चारन तो फ्रेञ्चकी खुफिया पुलिसका सबसे चलता पुर्जा आदमी था ही ; मिस जुलीकी बुद्धिपर पम्पनका भविष्य निर्भर करता है । देखें क्या होता है ?

लेकिन चारनकी आँखोंमें धूल झोंकना आसान काम नहीं है । ब्लेकको जुलीकी सफलतामें बहुत कम विश्वास था । गोकि ब्लेक कह चुके थे वे न्यायका गला नहीं घोटना चाहते । पर पाठक ही निर्णय करें कि प्रसिद्ध जासूस सम्राट्का यह काम किस श्रेणीका था ।

ब्लेक जिस परिस्थितिमें कमरेमें बन्द थे उसे खूब अच्छी तरह समझ रहे थे, और उसका मजा ले रहे थे ।

तीव्र प्रतीक्षामें मिनट-पर-मिनट गुजरने लगे । तब दरवाजा

खुला, चारनकी आवज सुनायी पड़ी। उसके ऊपर चढ़नेकी ध्वनि कानोंमें पड़ी। वह ऊपर आ रहा था, उसी तल्लेमें जिसमें वे बन्द थे।

ओह! इस छोटेसे घुटे हुये आदमीके व्यक्तित्वका कितना रोब इन दोनों परम चालाक और प्रसिद्ध व्यक्तियोंपर छा गया था। जूलीकी आवाज कमरेके सामनेसे पम्पनके कमरेकी तरफ गयी। कमरा खुला, कोई उसमें गया।

ब्लेक और स्मिथके दिल धक्-धक् करने लगे, सन्दूक खुलने की आवाज हुयी उसके बोलनेकी फुसफुसाहट मालूम पड़ी, और उसके बाद चारनकी तेज हँसीसे इमारतका कोना-कोना गूंज उठा। ओह! इसकी हँसी भी कितनी तेज है। वह हमेशा इसी तरह क्यों हँसता है!

फिर दरवाजा बन्द हुआ। फिर पद ध्वनि सुनायी पड़ी और ठीक उनके कमरेके सामने आकर रुक गयी। बाहर जुली और चारन भीतर स्मिथ और ब्लेक।

इधरसे चलिये। मोसिये चारन। इस कमरेमें मेरी दायी लेटी है। उसके सिरमें बहुत जोरसे दर्द हो रहा है। जुलीकी आवाज सुनायी पड़ी।

माफ कीजियेगा। मुझे मालूम न था। मैं आपकी दायीको जरा भी तकलीफ नहीं देना चाहता। धन्यवाद। इतना कहकर वह चुप तो हो गया, पर उसकी तेज हँसीसे फिर इमारतका कोना कोना गूंज गया।

८

ब्राउनने फिर बाजी मारी

कैसा चालाक आदमी है। चलो छुट्टी मिली।

एक दूसरेको देखनेके बाद ब्लेकने कहा—बर्टरम ब्राउन चला गया।

हाँ, आफत टली। वह देखिये, गाड़ीका दरवाजा बन्द होनेकी आवाज। स्मिथने उत्साह पूर्वक कहा।

चला गया। ब्लेकने जवाब दिया और सन्तोषकी साँस ली।

जो भी हो, लेकिन खूब बुद्धू बना। मैं तो समझता था कि वह दरवाजा जरूर खोलेगा। स्मिथने कहा।

हाँ मुझे भी यही सन्देह हुआ था। ब्लेकने जवाब दिया।

मिस जुलीके ऊपर चढ़नेकी आहट मिली। वह तुरन्त ऊपर आ गयी और आते ही उसने दरवाजा खोल दिया। उसका चेहरा सुर्ख था। वह अपनी विजयपर खुश हो रही थी।

बला तो टली। पर मोसिये ब्लेक, वह आपके कमरेके

सामने आकर डट गया था। आपने सुना वह दरवाजेपर खड़ा होकर क्या कर रहा था?

हाँ, मैने सुना। लेकिन; वाह! तुमने ठीक मौकेपर हमें बचा लिया। ताज्जुब तो यह है कि वह इसी कमरेके सामने आकर क्यों खड़ा हुआ?

आप क्या समझते हैं? क्या उसे कुछ सन्देह था?

ब्लेकने कहा—मिस जुली। चारन किसपर सन्देह करता है और क्या सोचता है, यह कोई नहीं जान सकता। क्या उसने मेरे बारेमें कुछ पूछा था?

जी नहीं। उसने आपका कोई जिक्र नहीं किया। वह सिर्फ पम्पनका कोट देखना चाहता था।

मैं भी यही समझता था। बहुत अच्छा हुआ।

मैंने उसे वही कोट दिखलाया जो स्मिथ थोड़ी देर पहिले पहिने हुये था। इतना कह कर जुली हँसी। उसके सफेद मोती से दाँत चमके। ओह! तुमने उसका चेहरा नहीं देखा। मोसिये ब्लेक। बेचारा ठग लिया गया। अफसोस! उसकी सारी चालाकी धूलमें मिल गयी। मैंने उसे कैसा बेवकूफ बनाया!

वाकई आश्चर्यकी बात है। मिस जुली! तुमने मुझे बड़ी विचित्र परिस्थितिमें डाल दिया। नहीं, मैं जान बूझकर ही ऐसा कर बैठा। पर जो भी हो। अब इस मामलेकी मुझे छानबीन तो करनी ही पड़ेगी।

लेकिन मोसिये ब्लेक! पम्पन निरपराध है। जुली चिल्लाई,

अगर उसने पीरी ड्रुसीलीको मारा भी होगा तो आत्मरक्षाके लिये।

यह प्रमाणित करना असम्भव है। ब्लेकने जवाब दिया। तब भी अगर यह बात सिद्ध की जा सके तो कोई हर्ज नहीं। इस मामलेमें कानूनकी रक्षा करते हुये मैं सब कुछ करनेको तैयार हूं।

अच्छा, नीचे चलिये। जुलीने कहा, और वे लोग नीचेके उसी कमरेमें आ गये, जिसमें वे पहिले आकर बैठे थे।

अब हमें पूर्ण गम्भीरतासे परिस्थिति पर विचार करना चाहिये। यह पम्पनको मौतसे बचानेका सवाल है। एक आदमी के जीवन मरणकी समस्या है। मैं थोड़ी देरके लिये मान भी लेता हूं, मिस जुली कि पम्पनने आत्मरक्षा के लिये पीरी ड्रुसीलीका खून किया। लेकिन जूरी तो इसी तरह मान नहीं लेंगे। उनके सामने तो जोरदार प्रभावशाली प्रमाण रखनेसे ही काम निकलेगा। पहिली बात तो पम्पनके खिलाफ यह है कि वह पीरी ड्रुसीलीके कमरेमें खिड़की राहसे घुसा। क्या तुम कह सकती हो किसीके कमरेमें रातके समय खिड़कीकी राह घुसना न्याय संगत है?

पम्पन बिना कारण एक चींटीको भी तकलीफ नहीं दे सकता मोसिये ब्लेक!

ब्लेकने कहा—मैं इस बातपर भी विश्वास कर लेता हूं। लेकिन न्याय इस लिये किसी खूनीको नहीं छोड़ सकता

कि खूनी पहिले बड़ा भारी महात्मा रहा था। जब तक कि यह प्रमाणित न हो कि अपने बचावके लिये उसने खून किया। मेरा खयाल है कि मेरे आनेके पहिले तक तुम्हें पम्पनके इस भयानक अपराधके बारेमें कुछ भी नहीं मालूम था।

बिलकुल नहीं! आपके सिवा मुझसे इस बारेमें किसीने कुछ भी नहीं कहा था।

ठीक है। लेकिन क्या तुम बतला सकती हो कि पम्पनके एकाएक नौकरी छोड़ कर भाग जानेका कारण क्या है?

कुछ ठीक ठीक नहीं कह सकती। पम्पनके इस बर्तावसे मैं खुद विचारमें पड़ गयी हूँ। पम्पनकी बातें कहने पर मुझे कई गुप्त बातें कहनी पड़ेंगी। विचार विमग्ना जुलीने कहा।

कोई हर्ज नहीं। तुम मेरा विश्वास करो। पम्पनके सम्बन्ध-में जो बातचीत हो मुझसे कह डालो। मैं कह चुका हूं, यथा-संभव पम्पनको बचानेकी कोशिश करूंगा। मैं जानबूझकर ही इस मामलेमें पड़ा हूं। मैं एक सवाल करना चाहता हूं, आशा है तुम ठीक-ठीक जवाब दोगी। लगभग दो सप्ताह पहिले, पीरी ड्रुसीलीकी हत्याके बाद क्या पम्पन कहींसे घायल हुआ था? उसके बदनपर किसी तरहकी चोटका निशान था?

सिर्फ उसकी बांहपर जरासी चोट लगी थी। उसने कहा था कि वह उसके हाथसे ही लग गयी।

मिस जुली कुछ यादसा करने लगी।

ओह! हां, मुझे याद आया। वह उत्तेजितसा मालूम होता

था। उत्तेजनाका रहस्य मुझे मालूम न था, इसलिये मुझे उसकी उत्तेजना अद्भुत मालूम पड़ती थी। उसकी यह हालत पीरी ड्रूसीलीकी हत्याके बादसे ही थी। इसके सिवा वह इन दिनों-में घरसे बाहर बहुत रहने लगा था। यह पिछले महिनेकी बात है।

इसी आखिरी सप्ताहके बाद ही पीरी ड्रूसीलीकी हत्या हुयी। इससे मेरा यह अनुमान सत्य सिद्ध होता है कि पम्पन पीरी ड्रूसीलीका पीछा करता रहा, और उसके हर कामपर कड़ी नजर रखता रहा। सम्भवतः वह उन दिनों पीरी ड्रूसीलीका पीछा कर रहा था, उसका पेरिसमें आनेका उद्देश्य जाननेके लिये। पम्पनने तुम्हारी नौकरी छोड़नेके लिये क्या कैफियत दी?

वह मुझसे बिना कुछ कहे ही चला गया। मैं इस महिनेकी नवीं तारीखसे लेकर तेरहवीं तारीखतक पेरिसमें नहीं थी। मैं जब लौटकर आयी तब पम्पन नहीं था, पर वह यह पुर्जा लिख कर छोड़ गया।

जुली अपनी कुर्सीपरसे उठी। और आलमारी खोलकर उसमेंसे कागज़का एक पुर्जा निकाला, और ब्लेकके हाथोंमें देकर बैठ गयी। कागजपर गोल अक्षरोंमें स्पष्ट फ्रेंच भाषामें कुछ लाइने लिखी हुई थीं।

पम्पन क्षमा चाहता है। उसको जी बहुत भारी हो रहा है। वह अपनी मातृभूमि जानेके लिये पेरिस छोड़ रहा है।

पम्पनका सन्देश पढ़कर, मिस्टर ब्लेकने मिस जुलीसे पूछा ।

पम्पनका यह सन्देश पाकर तुम्हें ताज्जुब नहीं हुआ ? एक अनहोनीसी बात नहीं लगी ?

सचमुच । पहिले तो मुझे इस कागजपर विश्वास ही नहीं हुआ, फिर मैं समझी कि उसने मजाक किया है। पम्पन मेरी नौकरी छोड़ देगा, इस बातका खयाल भी मुझे ताज्जुबमें डाल सकता है। आखिर वह मुझे क्यों छोड़ देगा, लेकिन जब चार दिन बीत गये और पम्पन नहीं लौटा। तब मैं इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगी। किन्तु, मुझे तब भी आशा थी कि वह फिर मेरे पास लौट आयेगा।

लेकिन, वह नहीं लौटा । एक सप्ताह बीत गया। फिर इसी तरह कई सप्ताह बीत गये । मैं जानता हूँ, पम्पनके साथ तुम्हारा बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है। पम्पन तुम्हारे बड़े कामकी चीज है। मेरा विश्वास है कि एक सप्ताह बाद तुमने गुप्त रूपसे पम्पनका पता लगाना शुरू कर दिया होगा। जहाँ जहाँ पम्पनके जानेकी संभावना होगी, वहाँ वहाँ तुमने खबर भेजी होगी। क्योंकि पम्पन कहाँ जा सकता है, शायद यह बात तुम्हारे सिवा कोई नहीं जानता। तुम जानती हो इस समय पम्पन कहाँ है ? या कहाँ हो सकता है ?

जुली कुछ हिचकिचायी, पर यह बात ब्लेकसे छिपी न रही।

ओह। तुम्हें उसका पता मालूम है। ब्लेकने कहा—अगर तुम्हें मेरा विश्वास नहीं है तो तुम उसका पता न बतलाओ।

नहीं। मोसिये ब्लेक। मैं आपका विश्वास करती हूं। जुली बड़बड़ायी—किन्तु परिस्थितिकी भयंकरता देखकर, मैं सोचती हूं कि आप न जाने तो अच्छा है।

तुम्हारी खुशी, पर इससे कुछ होता जाता नहीं, ब्लेकने कहा।

बहुत अच्छा। लीजिये मैं बतलाती हूँ। पम्पन मोसिये जी० ग्रान्टके साथ है।

क्या ? जी० ग्रान्टके साथ ? आश्चर्यपूर्ण स्वरमें मिस्टर ब्लेकने प्रश्न किया।

हां, मैं जब पेरिस लौटी तो पम्पनका सन्देश पानेके बाद मुझे मार्सेलीजसे भेजा हुआ मोसिये ग्रान्टका तार मिला, जो कई दिन पहिले आ चुका था। जुली फिर उठी, फिर आलमारी खोली, तार निकालकर लायी और ब्लेकके हाथोंमें दे दिया।

ब्लेकने तार लेकर पढ़ा, उसमें लिखा था।

पम्पन मेरे साथ है। पूर्ण सुरक्षित। बाकी समाचार फिर।

"ग्रान्ट"।

मार्सेलीजमें जी० ग्रान्ट क्या कर रहा है ? ब्लेकने तार पढ़कर पूछा।

वह किसी राजनैतिक या इसी तरहके अन्य किसी कामसे मार्सेलीज होकर खारटूम जा रहा है। उसे मार्सेलीजमें कोई जरूरी काम रहा होगा। वह पेरिससे जानेके पहिले नवीं तारीख

को यहां आया था। लेकिन मैं उस समय पेरिससे बाहर थी, इसीलिये मुलाकात न हो सकी।

संयोगकी बात है। उसी दिन तुम पेरिससे गयी थी।

हाँ। और पम्पनको मोसिये ग्रांटसे मालूम हो गया होगा कि वह खारटून जा रहा है।

बिलकुल ठीक। और वह उसीके पीछे मार्सेलीजतक चला गया। उसके बाद जी० ग्रान्टने कोई समाचार नहीं भेजा?

नहीं, अभीतक कोई समाचार नहीं मिला। शायद वे जबतक खारटूम न पहुँचे कोई समाचार न भेजें। लेकिन मैंने अलेकजेण्ड्रियामें मोसिये ग्रांटके पास तार भेज दिया था।

वाह! इस तरह तो सारा मामला ही दूसरा रूप ग्रहण कर रहा है। ब्लेकने कहा—तुमको याद होगा, पम्पनने अपने सन्देशमें लिखा था कि वह अपनी मातृभूमिको वापिस जा रहा है। पहिले तो मैं समझा था कि यह पम्पनकी एक चाल है। इसलिये कि उसका ठीक पता न लग सके, लेकिन अब उसका लिखा, सत्य सिद्ध हो रहा है। कमसे कम उसका यह लिखना निरी धोखेबाजी तो नहीं है। अगर वह अपनेको छिपाना चाहता तो जी० ग्रांटका साथ कदापि न पकड़ता। क्योंकि पम्पन इतना तो जरूर समझता होगा कि जी० ग्रांट तुम्हें इस बातकी खबर जरूर देगा कि पम्पन उसके साथ है। पम्पनकी मातृभूमि उत्तर पूरब अफ्रीका होनी चाहिये। वह तुम्हारे यहाँ कैसे नौकर हुआ? मिसजुली, नुकसान न हो तो बतलाओ!

यह भी एक अद्भुत कथा है, बड़ी विचित्र मिस जुलीने जवाब दिया और एक बहुत पुरानी स्मृति उसके दिमागमें ताजा हो गयी। मैंने शायद ही किसीसे यह बात कही हो। लेकिन आपसे कहती हूँ। जुली बोली

पन्द्रह वर्ष पहिलेकी बात है, जिस समय मैं छोटी-सी लड़की थी। उन दिनों मेरी पीठपर लम्बे बाल लहराया करते थे। हम लोग इजिप्ट और सूडान घूमते हुए, लमोइसमें आये। उस समय मैं अपने अभिभावकके साथ थी। उन्हीं दिनोंमें, एक दिन हम लोग अटबारा नदीकी शोभा देखते हुए मीलों दूर निकल गये। बहुत दूर आगे जानेपर हमने देखा कि कोई आदमी किनारे-पर पड़ा हुआ है। मानो कोई मुर्दा पड़ा हो। मैंने उस आदमीके नजदीक चलकर देखनेकी जिदकी। हम लोग किनारेपर पहुँचे और देखा कि आदमी मुर्दा नहीं जिन्दा है। लेकिन उसकी हर-एक साँस आखिरी साँस मालूम होती थी। वह बिलकुल नंगा था, सिर्फ जरा-सा कपड़ा उसकी कमरसे लिपटा हुआ था। उसके तमाम बदनपर चाबुककी मारके दाग थे, और उसकी जुबान काट डाली गयी थी। मालूम होता था कि वह उसी हालतमें किसी तरह अपने हत्यारोंके हाथोंसे छूट कर मीलों दूर-से यहाँतक भागता हुआ आया और लड़खड़ा कर गिर पड़ा। उसके पैर ठोकरें लगनेसे लहुलूहान हो रहे थे। आदमी बड़ी भयंकर हालतमें था, हमें उसके बचनेकी जरा भी उम्मीद न थी।

लेकिन मोसिये ब्लेक, वह मरा नहीं। हमलोगोंने उस नावपर

रखवा लिया। कुछ ही दिनोंकी सेवा सुश्रूषाके बाद वह अच्छा हो गया, उसके घाव भर गये। उस समय उसको अवस्था उन्नीस वर्षके लगभग थी। लेकिन उसका शरीर काफी हृष्ट-पुष्ट और उसके पुट्ठे काफी मजबूत थे। इस लिये घाव भरनेके कुछ दिनों बादसे ही उसके शरीरका विकास होने लगा। कुछ ही महिनोंके बाद वह एक हट्टा-कट्टा जवान हो गया। तब यह स्वाभाविक था कि वह काउण्ट डी समोइस और मेरे प्रति उपकृत हो जाता। थोड़े ही दिनोंमें वह काउण्टका विश्वास-पात्र नौकर बन गया। मेरे अभिभावककी मौत होनेके बाद, पम्पन, यही नाम मैंने उस आदमीका रखा था, पूर्ण स्वामिभक्तिके साथ मेरी नौकरी करता रहा। मैंने कभी उसको कोई शिकायत नहीं सुनी। मैं नहीं समझती कि उससे बढ़ कर स्वामिभक्त कोई नौकर हो सकता है। मोसिये ब्लेक, इस तरह पम्पन मेरे यहाँ नौकर हुआ।

काफी देर तक ब्लेक और स्मिथ जुलीकी अद्भुत कहानी सुनते रहे। पम्पनकी जीवनी सुन कर दोनोंको बहुत ही आश्चर्य हुआ और जुलीके दर्दनाक वर्णनका दोनोंपर गहरा प्रभाव पड़ा। साथ ही उसकी वफादारीके सम्बन्धमें भी दोनोंकी धारणा बहुत अच्छी हो गयी। आखिर ब्लेकने कहा—

तुमने बहुत ही विचित्र कहानी सुनायी। मैंने ऐसी सच्ची पर रोमांचकारी घटनाएं बहुत कम सुनी है, किन्तु मिस जुली तुमने एक बात नहीं बतलायी। पम्पनको तुम लोगोंने जिस

हालतमें पड़े पाया, उस हालतमें वह कैसे पहुँचा, तुम लोगोंने यह सवाल जरूर किया होगा। बस, अब मैं यह जानना चाहता हूं कि पम्पनने उस हालतमें पहुँचनेका क्या कारण बतलाया ?

कुछ नहीं! यह जबाब सुन कर आपको अचम्भा होगा। लेकिन इसमें ताज्जुबकी कोई बात नहीं है। क्योंकि आप भूले न होंगे कि उसकी जुबान खींच ली गयी थी। वह बोल नहीं सकता था। बहुत दिन इसी तरह बीत गये कि हमलोग एक दूसरेसे विशेष बात नहीं कर सकते थे। मुझे जब यह मालूम हुआ कि पम्पन इथोपियन भाषा जानता है तो मैंने इथोपियन पढ़ना शुरू किया, थोड़े ही दिनोंमें मैं अबसीनियन भाषा बोलने लगी किन्तु मेरे सवालोंके जबाबमें पम्पन या तो सिर हिलाकर हाँ कहता, या ना। फिर मैंने अंगुलियोंके अक्षरोंसे उसे बातचीत करना सिखाया। उसने अँगुलियोंकी भाषामें बोलना सीख लिया। फिर उसने फ्रेंच सीखना शुरू किया। और थोड़े ही दिनोंमें वह मुझसे भी अच्छा फ्रेंच लिखना जान गया। गोकि मैं इथोपियन लिखना पढ़ना ज्यादा न सीख सकी। बस फिर हम अपनी अँगुलियोंसे बातें करने लगे।

लेकिन पम्पनने यह कभी नहीं बतलाया कि वह अटवारा नदीके किनारे ऐसी बदतर हालतमें कैसे पहुँचा। कई मरतबा मैं उसका पूर्व इतिहास जाननेके लिये व्यग्र हो उठती, और उससे तरह-तरहके सवाल करती। लेकिन वह जिद्दी बन जाता और मेरे सवालोंका जबाब देनेसे इनकार कर देता। बहुत कोशिश

करने पर भी मैं उसके पूर्व इतिहाससे वाकिफ न हो सकी। उसने कभी भी अपने पहिले जीवनके सम्बन्धमें कुछ कहनेकी चेष्टा नहीं की, सम्भवतः उसकी कथाके पीछे कोई भीषण घटना छिपी हुई थी, जिसके कारण वह सब बातें कहनेसे हिचकता था।

फिर थोड़ी देरतक निस्तब्धता रही। ब्लेककी भवें संकुचित हो गयीं, मानो वे कोई गम्भीर प्रश्न सोच रहे हों।

क्या तुम्हारे पास सूडान और इजिप्टका नक्शा है? ब्लेक ने जुलीसे पूछा। जुलीनेने इजिप्ट और सूडानका नक्सा निकाल कर दे दिया, ब्लेक गौरसे देखने लगे।

यह देखो, नक्शेपर अंगुली रख मिस्टर ब्लेकने जुलीसे कहा—खारटूम अटबारा नदीसे लगभग एक सौ मील पश्चिम है। और कैरोसे खारटूम जानेवाली रेल अटबारा शहर होकर जाती है, जहाँपर अटबारा नदी नीलमें मिलती है। यह अटबारा नदी अबसीनियाकी ताना झीलके पासके पहाड़ोंसे निकली है। मेरे खयालसे यही स्थान पम्पनकी जन्मभूमि होना चाहिये। इससे जैसा कि मैंने पहिले कहा पम्पनका उद्देश्य धोखा देकर भाग जानेका नहीं है। किन्तु उसने जैसा कि अपने सन्देशमें लिखा ठीक है कि वह अपना जन्म भूमिको जा रहा है। इस बातसे यह सिद्ध हो गया कि पम्पन तुम्हें धोखा देना नहीं चाहता और सचमुच वह अपनी मातृभूमिको जा रहा है। लेकिन क्यों?

ओह! जुलीने कहा—आप यह खयाल करते हैं कि पीरी ड्रूसीलीकी हत्याके कारण होनेवाली फाँसीकी सजाके डरसे वह फ्राँस छोड़कर अवसीनिया भाग गया है?

नहीं। मैं यह नहीं समझता। ब्लेकने जवाब दिया। मैं यह नहीं कहता कि उसने अपने अपराधकी भीषणताका भी अनुभव किया है. इसीलिये मैं यह मानता हूं कि वह फाँसीके डरसे नहीं भागा है, किन्तु उसके अबसीनिया जानेमें कोई रहस्य है। अगर पम्पनका इरादा सिर्फ फाँसीसे बचनेका होता तो वह तुम्हें अपने जानेका पता नहीं बतलाता, वह ग्रेनाइटका साथ भी नहीं करता। क्योंकि उसे अच्छी तरह मालूम है कि जी० ग्राण्ट सरकारी खुफिया है। इसके सिवा उसे अबसीनिया छोड़े पन्द्रह वर्ष हो चुके, और वह अबसीनियासे एक तरहसे मारकर फेंक दिया गया था, ऐसी हालतमें अबसीनिया उसके छिपनेके लिये सुरक्षित स्थान नहीं हो सकता। बल्कि मुमकिन है कि वहां उसको इससे भी अधिक भयंकर आपत्तिका सामना करना पड़े। अगर अबसीनिया जानेमें उसका कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्य न होता तो वह अपने अपराधको तुम्हारे सामने स्वीकार कर लेता और तुम्हारी शरणमें आ जाता, क्योंकि वह इतना तो जरूर जानता होगा कि तुम उसको बचानेके लिये कुछ उठा न रखोगी। ब्लेकने कहा—मिस जुली। मेरा विश्वास है कि अबसीनिया जानेमें पम्पनका कोई गुप्त उद्देश्य है, संभवतः उसी उद्देश्यसे प्रेरित होकर उसने पीरी ड्रूसीलीकी

हत्याकी। पीरी ड्रूसीलीकी हत्या और पम्पनके अबसीनिया जानेमें कोई गुप्त सम्बन्ध है। अच्छा, मिस जुली, पम्पनने बातों ही बातोंमें कभी इस तरहका भाव प्रगट किया कि पीरीके साथ पम्पनकी जान पहिचान है ?

बिलकुल नहीं। मुझे अच्छी तरह मालूम है पम्पनने कभी भी पीरी ड्रूसीलीका किसी किस्मका जिक्र नहीं किया। मैंने पीरी ड्रूसीलीका नाम भी कभी नहीं सुना। सिर्फ अखबारोंमें उसकी हत्याका समाचार पढ़ा।

पीरी ड्रूसीलीका जीवन भी रहस्यपूर्ण था। ब्लेकने जवाब दिया। मालूम होता है कि उसकी जिन्दगीका अधिकांश भाग अबसीनियाके अज्ञात प्रदेशोंमें बीता। वहीं उसने अगाध संपति पैदा की, पर कैसे, किन साधनोंसे, यह किसीको मालूम नहीं। मेरा अपना खयाल है कि उसकी कमाई अच्छी न थी, उसने जरूर किन्हीं बुरे कर्मोंसे धन पैदा किया था। उसका धन खून और आंसूओंसे सना हुआ था। लोगोंको रुलाकर और खून करके ही उसने धन पैदा किया होगा। इसीलिये उसे अपने पापोंकी उचित सजा मिली। गोकि मैं यह नहीं कह सकता कि पम्पनने कानूनको हाथमें लेकर अच्छा काम किया, या उसे अपने अपराधकी, अगर वह साबित हो जाय तो, सजा न मिलनी चाहिये।

मैंने पम्पनके घायल अवस्थामें मिलनेवाली तुम्हारी कहानी-को खूब गौरसे सुना है, और उसीके विवेचनके बाद मैं इस

निर्णयपर पहुंचा हूं कि पम्पन पीरी ड्रूसीलीको पहिलेसे जानता था। उस समयसे जानता था जिस समय वह अबसीनियामेंथा। मुमकिन है पीरी ड्रूसीलीके षड़यंत्रके कारण ही पम्पन उस अवस्थामें पहुंचा हो, जिसमें तुमने उसे पड़ा पाया था। पन्द्रह वर्ष बाद पेरिसमें पीरी ड्रूसीलीको देखते ही पम्पन उत्तेजित हो उठा। संभवतः उसे पुरानी घटनाएं याद आ गयीं और मेरा विश्वास है कि किन्हीं अज्ञात तीव्र भावनाओंके कारण पम्पन एकाएक तुम्हारी नौकरी छोड़कर अबसीनिया जानेको बाध्य हो गया।

आपका अन्दाज ठीक हो सकता है। मिस जुलोने कहा—वह मेरे यहां पन्द्रह वर्षों से नौकर था, मैं उसे बहुत स्नेह करती थी। मैंने कभी स्वप्नमें भी नहीं सोचा था कि पम्पन मेरे यहाँसे चला जायगा। अगर मोसिये ग्रान्टका तार न मिलता तो मैं पम्पनको खोजनेमें कोई कसर न रखती। मोसिये ब्लेक—पम्पन जैसा नौकर मिलना असम्भव है।

यह सौभाग्यकी बात है कि तुम्हें पम्पनकी तलाश नहीं करनी पड़ी। अन्यथा तुम्हारी वजहसे पुलिसको भी बहुतसी बातोंका पता लग जाता। पुलिस उसके पीछे पड़ी हुई है। यह तो तुम्हें मालूम ही है। और वह उसे योंही नहीं छोड़ देगी। खासकर जब यह मामला चारनके हाथमें है। क्या चारनने पम्पनके बारेमें कुछ पूछा था।

हाँ, मोसिये बर्टरम चारनने मुझसे पूछा था कि पम्पन

कहाँ है। मैंने जबाव दिया मेण्टनवाले मेरे मकानपर। लेकिन कोटने चारनको खूब धोखा दिया; वह स्मिथवाला कोट लेकर उसमें टूटा हुआ बटन देखा रहा था। मेरा खयाल है कि हम लोगोंने बर्टरमको बहका दिया।

नहीं, मेरा यह खयाल है। ब्लेकने जवाब दिया। और तुम निश्चय जान रखो मिस जुली, कि बर्टरमको अगर यह विश्वास हो गया कि पम्पन ही अपराधी है तो फिर पम्पनकी रक्षा नहीं हो सकती। पम्पन चाहे जहाँ चला जाय बर्टरम उसे जरूर पकड़ लेगा। कोई भी ताकत बर्टरमके मार्गमें बाधा नहीं डाल सकती। यह ऐसा शख्स है कि जिस बातके पीछे पड़ता है, उसका अन्त किये बगैर नहीं छोड़ता। तुम इस मामलेमें कुछ करना चाहती हो? मिस जुली।

मैं क्या करूँ? आप मुझे क्या करनेको कहते हैं?

मैं क्या कहूँ। यह मेरा मामला तो है नहीं। मेरे लिये तो यही बेहतर है कि अब आगे मैं इस मामलेमें कुछ न करूँ, चुप रहूँ।

आप वादा करते हैं कि हमारी बातें किसीको मालूम न होगी। जुलीने सवाल किया।

हाँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ।

बहुत अच्छा। मैंने निश्चय कर लिया, मुझे क्या करना चाहिये। मैं सिर्फ मोसिये ग्रेनाइटके खतका इन्तजार कर रही हूँ। उनका खत आते ही मैं खारटूम चल दूँगी। मैं एकदफा पम्पनसे मिलना चाहती हूँ।

ब्लेकने सिर हिलाया और जानेके लिये कुर्सीपरसे उठे।

मेरी तुम्हारे साथ चलनेकी बड़ी इच्छा है, मिस जुली। मिस्टर ब्लेकने रवाना होते हुए कहा—यह मामला बड़ा मजेदार है, और इसमें मुझे बड़ा रस मिल रहा है। मेरा ख्याल है कि खारटूम जानेपर तुम्हें और आगे भी जाना पड़ेगा। यह यात्रा बड़ी दिलचस्प होगी। मेरी तुम्हारे साथ जानेकी बड़ी इच्छा है, पर क्या करूँ, काम बहुत है, इसलिये मजबूर हूँ। मैं विदा होता हूँ, और तुम्हारी यात्राकी सफलताकी कामना करता हूँ। मुझे उम्मीद है कि इस यात्रासे लौटनेके बाद तुम मुझे मजेदार कहानी सुनाओगी।

इतना कहकर ब्लेक विदा हुए, स्मिथ उनके पीछे बिना एक शब्द भी बोले रवाना हुआ। वे दोनों विचारोंमें डूबे हुए थे, जैसे ही वे लोग जुलीके मकानसे निकले; ब्लेकका नाम लेकर किसीने पुकारा। ब्लेकने ताज्जुबसे घूमकर देखा—कि सामने चालाक चारनका बालहीन चेहरा मुस्करा रहा था। ब्लेक चारनको सामने देखकर ठिठके।

वाह दोस्त। बहुत इन्तजार कराया। मैं तो प्रतीक्षा करते करते ऊब गया था। लेकिन वाह! जुलीके घरमें कमरेमें बन्द बेचारी दायीका सिरदर्द बहुत जल्दी अच्छा हो गया। शायद यह तुम्हारी चीज है, लो। धन्यवाद किसी दूसरे समय दे देना। गुडबाई। बिदा।

स्मिथको कोट देकर आश्चर्यपूर्ण दृष्टिसे ताकते

हुए ब्लेकको वहीं खड़ा छोड़कर बर्टरम चारन चल दिया। क्षणभरमें चारन आंखोंसे ओझल हो गया। चारनके अदृश्य हो जानेके बाद मिस्टर ब्लेकने स्मिथसे कहा—यह आदमी असाधारण है। हम इसे बुद्ध समझ रहे थे, पर उलटा वही हमें बेवकूफ बनाकर चल दिया। खैर, चलो।

गाड़ीवालेको रोककर, वे गाड़ीपर सवार हुए और होटल की ओर चल दिये। गाड़ी तेजीसे होटलकी तरफ जा रही थी।

ब्लेकने स्मिथके कोटको उलट पुलटकर देखा,। फिर अपने कोटकी जेबें बटन तलाश करनेके लिये देखने लगे पर बटन नहीं मिला। ब्लेकको विश्वास हो गया कि रू० डी० एवीलीवाले मकानमें चारनने ही उनकी जेबसे बटन निकाल लिया। कोटकी जेब देखते देखते ब्लेक एकाएक चौंक पड़े। स्मिथने ब्लेकका यह भाव देखा और पूछा—क्या हुआ? सरदार।

ब्लेकने कुछ जवाब न दिया वे मन ही मन कहने लगे—ओफ! चारनने बड़ा चकमा दिया। बटन ही नहीं उसने तीन बालोंवाला लिफाफा भी गायब कर दिया। ओह। बर्टरम। आह। उसने सारी बाजी ही उलट दी। ब्लेक सोचने लगे—बाल और बटन उसने एक ही समय उड़ाये और मुझे पता तक न चला। सन्देह भी नहीं हुआ। ओह! यह बर्टरम तो गजबका चालाक निकला। अब क्या किया जाय? उसके पास तो सब प्रमाण अपने आप चले गये।

गाड़ी विनोसा होटलके सामने आकर खड़ी हुयी। स्मिथ

ब्लेकसे फिर कुछ पूछना चाहता था पर गाड़ीके रुक जानेके कारण चुप रह गया। गाड़ी रुकते ही ब्लेक उतर गये और होटलमें घुस गये। स्मिथने गाड़ीवालेको भाड़ा दिया, और ब्लेकके चौंकनेका कारण सोचता हुआ होटलमें घुसा। स्मिथने होटलमें आकर देखा कि मिस्टर ब्लेक टेलीफोनवाले कमरेमें टेलीफोनमें किसीसे बात कर रहे हैं। वह मिस जुलीसे बात कर रहे थे। बात-चीत खत्म करके जब वे टेलीफोनके कमरेसे बाहर आये, उस समय उनके चेहरेपर मुस्कराहट दौड़ रही थी।

मामला क्या है? अपने कमरेमें पहुंचते ही स्मिथने सवाल किया।

हमलोग घूमने चलेंगे। ब्लेकने कहा।

घूमने! कहाँ? स्मिथके ताज्जुबका ठिकाना न रहा।

खारटूम।

खारटूम। स्मिथने दोहराया—तब हम मिस जुलीके साथ चल रहे हैं।

हाँ। जुलीका जहाज वोनवेंटर मेण्टनके बन्दरगाहपर खड़ा है। हम भी जुलीके साथ उसी जहाजपर खारटूम चल रहे हैं। लेकिन पहिले हमलोग पेरिससे केलाकी गाड़ीमें बैठेंगे, जैसे कि हमलोग लन्दन वापिस जा रहे हों। ताकि चालाक चारनको हमारे खारटूम जानेका पता न लगे, वह समझे कि हम लन्दन जा रहे हैं। जो भी हो, हम उसे काफी हैरान करेंगे। जल्दीसे बिस्तर बाँधो।

६

कीमती कमरबन्द

उसी रातको अलेक्जेंड्रियाके यूरोपियन होटलमें बैठा हुआ ग्र नाइट पम्पनका अद्भुत जीवन चरित्र पढ़ रहा था। पम्पनने अपने रहस्यपूर्ण जीवनकी अद्भुत कहानी अपने हाथोंसे फ्रेंचभाषा-में लिखी थी। गोकि पम्पन बेज़ुबान था, पर उसकी फ्रेंच लिखनेकी शैली बड़ी सुन्दर थी। उसकी हर एक लाइनमें, हरएक पेजमें, उसके जीवनकी उस रहस्यपूर्ण और रोमाञ्चक कहानीका वर्णन था, जिसे उसकी ज़ुबान कहनेमें असमर्थ थी। उसकी कहानी इतने जोरदार, पर साफ और सीधे शब्दोंमें लिखी हुयी थी कि पढ़नेवालोंको अवाक् बना देती थी। उसकी कहानी पढ़कर यह कहावत पूर्ण सत्य मालूम पड़ती थी कि, पुरुषका भाग्य देवता भी नहीं जानते।

पन्द्रह वर्ष पहिले—

पम्पनने लिखा था।

मैं एक महलमें रहता था। महल महामान्य नीगस बहरकरीनका था। महामान्य बहरकरीन अबसीनियाके कमहारा प्रान्तके अधीश्वर हैं। उसी शानदार महलमें मेरा जन्म हुआ। मेरे पिताका नाम रास केन तेनन था। वे महामान्य नीगसके खजांची थे। मेरा लालन-पालन बड़े लाड़-प्यार और शानों-शौकतके साथ हुआ। जब मैं लगभग बीस वर्षका था, तभी मेरे पिताका देहान्त हो गया। उनकी मृत्युके बाद महामान्य नीगसने मुझे खजांची बनाया। मैं बीस वर्षका नवजवान था, दुनिया मुझे रंगीन दिखलायी देती थी। महामान्य नीगसने मेरा विश्वास कर मुझे खजांची बना दिया था और मैं पूरी सावधानीके साथ अपना कर्तव्य पालन किया करता था।

महामान्य नीगसके एक कन्या थी, जो उम्रमें मुझसे कुछ छोटी थी। हम लोग साथ ही लिखे-पढ़े थे। जवान होनेपर मैं उसपर आसक्त हो गया, और प्रेम करने लगा। उसका नाम शाहजादी जेली था।

शाहजादी जेली, उस समय पन्द्रह वर्षकी थी। उसके यौवनकी कली खिल रही थी। वह रक्त कमलिनीके समान मोहक और प्यारी थी। महलके कितने युवक ही ऐसे थे, जो शाहजादी जेलीको देखकर ठण्डी साँसें भरते थे, लेकिन वह उनकी तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखती। उन युवकोंमें एकका नाम रास-टेकला गोमन था। वह भी मेरी ही तरह राज-कर्मचारी और रियासतदार था और शाहजादी जेलीपर मरता था।

शाहजादी जेली, वाकई इतनी सुन्दर थी, इतनी मोहक थी, कि कोई युवक बिना उसकी तरफ खिंचे रह ही नहीं सकता था। उसकी खूबसूरतीका ठीक-ठीक वर्णन हो ही नहीं सकता। वह अनुपम थी। वह इतनी प्यारी थी कि मैं अपने सम्पूर्ण हृदय-से उसको प्यार करता था। वह मेरा सर्वस्व था।

लेकिन क्या वह कभी आँख उठाकर मेरी तरफ देखती? कभी जरा-सा भी हँसती? नहीं। मैं इसके लिये तरसा करता था। ओह! परमात्माने माशूकको बेवफा क्यों बनाया?

लेकिन नहीं,यह मेरी भूल थी। परमात्माको कोसना मेरी नादानी थी। कुछ दिनोंके बाद ही मैंने उसके रंग-ढंग और व्यवहारमें परिवर्तन देखा। मैंने उसकी आँखोंमें उसके दिलके भाव पढ़े। वे आँखें साफ-साफ कह रहीं थीं, कि शाहजादी जेली मुझसे अलग नहीं है। ओह! जेलीकी आँखोंने मुझे पागल बना दिया।

जैसे ही मैं उसकी आँखोंको भाषा समझ पाया, खुशीके मारे नाच उठा। मुझ-सा भाग्यशालो कौन होगा! मैंने सोचा। पर मुझे मालूम न था कि दुर्भाग्य ऊपर खड़ा हुआ, मेरी प्रसन्नतापर क्रूर हँसी हँस रहा है। लेकिन, सब कुछ जान लेनेपर भी मैंने जेलीसे कुछ कहा नहीं।

मैं इन्तजार करने लगा। अपने हृदयकी उठती हुई तीव्र उमंगको संयत रखते हुए, प्रतीक्षा करने लगा। मेरा विश्वास था कि जेलीके पिता महामान्य नीगस जेलीके विवाहके समय

मेरी प्रार्थनापर सहृदयता पूर्वक विचार करेंगे। मैं व्यग्रता पूर्वक उसी दिनकी प्रतीक्षा करने लगा।

उन्हीं दिनों कमहाराके शाही दरवाजे पर एक मुसाफिर पड़ा पाया गया जो बीमार था। जो किसी दूर देशसे आ रहा था। उसका चेहरा सफेद था, वह गोरी जातिका था, लेकिन उसकी आत्मा काली थी, अमावसकी रातसे भी भयङ्कर और खूँख़ार।

महामान्य नीगस बहर करीनको जब मालूम हुआ कि एक गोरा आदमी बीमारीकी हालतमें फाटक पर पड़ा कराह रहा है, तो दयालु नीगसने उसकी देख-रेख करनेकी आज्ञा दी। महामान्य नीगस बड़े दयालु पुरुष थे। महामान्य नीगसके हुक्मके मुताबिक गोरेको उठा कर महलमें लाया गया और दवादारू की गयी। पीरो ड्रुसीली, यही उसका नाम था, थोड़े ही दिनोंमें अच्छा हो गया। दस पन्द्रह दिनमें ही उसको गयी हुयी तमाम ताकत वापिस लौट आयी।

पीरी ड्रुसीलीके रवाना होनेके पहिले, एक दिन महामान्य नीगसने मुझे हुक्म दिया कि मैं इस अनजान यात्रीको राज्यका खजाना दिखला दूं। उन्होंने यह हुक्म पीरीकी प्रार्थनापर दिया था। मैंने पीरी ड्रुसीलीको खजाना दिखला दिया। दूसरे दिन वह महामान्य नीगस द्वारा दी गयीं भेंटकी बहुमूल्य चीजोंको लेकर कमहारासे रवाना होनेको तैयार हो गया।

और उसी रातको अद्भुत, भयानक विपत्तिने मुझे आ घेरा।

ऐसा मालूम हुआ मानो, मैं स्वप्न देख रहा था कि खजानेकी चाभी मुझसे छीनी जा रही है, मैं छीननेवालेसे लड़ रहा हूं, मुझसे जबर्दस्ती चाभी छीनी जा रही है। जब तक मुझमें जरा-भी ताकत बची, मैं लड़ता रहा, जब तक मैं विवश न कर दिया गया, मुझसे चाभी छीनी न जा सकी। मुझे ऐसा मालूम हुआ मानो दो अपरिचित हाथ मुझे अपने बिस्तर परसे उठा रहे हैं, मुझे महलसे उड़ाकर लिये जा रहे हैं। मानो किसीने मुझे किसी गाड़ीमें रख दिया और कहीं दूर देश ले चला।

रात बीत गयी, सबेरा हो गया। गाड़ी चलती ही रही। दिनमें दो एक बार कहीं ठहरी भी पर थोड़ी देरके लिये। दिन भर गाड़ी चलती रही, मुझे मालूम न हुआ कि मैं कहाँ जा रहा हूं। क्यों और कौन लिये जा रहा है · सूरज डूब गया। रात का अन्धेरा छा गया। मेरी बेहोशी दूर हुयी, और तब मैंने अनुभव किया कि मैं स्वप्न नहीं देख रहा हूं। सचमुच, मैं एक गाड़ीमें हूं और कहीं जा रहा हूं। लेकिन मैं रस्सियोंसे इस कदर जकड़ दिया गया हूं कि जरा भी हिल-डुल नहीं सकता, मेरी जुबान प्याससे सूख रही थी।

उस रातको मुझे थोड़ा खाना और पानी दिया गया। लेकिन मेरा दिमाग इतना खराब कर दिया गया था, और अन्धेरा इतना गहरा था कि मैं समझ नहीं सकता था, कि मुझे ले जानेवाला कौन है ?

फिर सवेरा हुआ और फिर गाड़ी उसी रफ्तारसे चलने लगी। मेरा शरीर इस तरह कसकर बाँधा गया था कि उसकी वेदनाके मारे मैं तड़प रहा था और अपने दिमागको भी ठीक नहीं रख सकता था। गाड़ी रहस्य पूर्ण पथकी ओर बढ़ी चली जा रही थी। क्षण-क्षणमें मैं दर्दके मारे बेहोश होने लगा। महामान्य नीगस, कमहाराका महल और जेलीकी याद करके मैं तड़पने लगा। मुझे मालूम हुआ मानो मैं हमेशाके लिये नीगस की सेवासे वञ्चित कर दिया गया। शायद अब मुझे जेलीके दर्शन नहीं होंगे।

फिर रात सिरपर आ गयी। गाड़ी फिर ठहरी। और सवेरा होते ही यात्रा फिर शुरू हुयी। लेकिन मेरा दिमाग सुन्न हो गया और मैं बिलकुल अज्ञान हो गया। जब मुझे होश आया, तब मैंने देखा कि मैं गाड़ीमें नहीं हूँ, बल्कि रेतीले मैदानमें लगे हुये एक तम्बूमें जमीनपर पड़ा हुआ हूं। तब मेरे बन्धन खोल दिये गये थे और मेरे पैरोंमें लोहेकी मजबूत जंजीर डाल दी गयी थी, ताकि मैं भाग न सकूँ। भोजन और पानी मेरे सामने लाकर रखा गया; मैं खानेपर टूट पड़ा और क्षणभरमें सब खाना खा गया और पानी पी लिया। क्योंकि मुझे दो दिनसे खाना नहीं दिया गया था। जैसे ही मैं खाना खा कर चुका, एक आदमी तम्बूमें दाखिल हुआ।

वह पारी ड्रूसीली था।

उसे देखकर मैं खुश हुआ। प्रसन्नताके मारे चिल्ला उठा।

मैंने सोचा मुसीबतमें एक मित्रके दर्शन हुये। मैंने सोचा, यह आदमी एक दिन हमारे महलके सामने बीमार और बुरी हालतमें पड़ा हुआ था। हमारे महामान्य नीगसने इसकी हिफ़ाजतका हुक्म दिया था, हम लोगोंकी सेवासे इसकी जान बची थी, यह अच्छा हुआ था। मैंने इसे खजाना दिखाया, उपहार दिये और महामान्य नीगससे उपहार दिलवाये। इतनी दया और उपकारके बदलेमें क्या यह आदमी मेरी मदद नहीं करेगा? क्यों नहीं? जरूर करेगा। यही सोचकर मैं प्रसन्नतासे चिल्लाया। पर मेरी आशा छलनी निकली।

पीरी ड्रूसीलीने मेरी तरफ देखा भी नहीं। वह अपने कोट और वास्केटके बटन खोलने लगा और उसकी अंगुलियाँ अपने वास्केटमें कोई चीज ढूंढ़ने लगीं। फिर उसकी अंगुलियों-की हरकत रुक गयी। उसने अपना कोट और वास्केट उतार दिया उसके बाद मैंने जो कुछ देखा उससे मेरे तमाम अच्छे भाव कुचल गये। पीरीके सम्बन्धमें जितनी सद्भावनाएं थीं मिट गयी और एक भयंकर, नग्न असत्यका रूप मेरे सामने आ गया।

कोट और वास्केट उतारनेके बाद मैंने देखा कि पीरीने शाही कमरबन्द पहिन रखा है। यह कमरबन्द कमहाराके शाही खजाने-में सबसे कीमती आभूषण था, महामान्य नीगस बहरकरीन-के शाही आभूषणोंमें यह सबसे कीमती और महत्वपूर्ण था। यह शताब्दियोंसे कमहाराके शाही खजानेमें था और महामान्य नीगस इसे उत्सवादिपर व्यवहार करते थे। इसकी कीमतका अन्दाज

आजतक नहीं लगा था। पीरी ड्रुसालीके पास शाही कमरबन्द देखकर सब बातें मेरी समझमें आ गयीं। मुझे उसके भयानक विश्वासघातका पता लग गया। तब मैंने समझ लिया कि मैं भयानक स्वप्न नहीं देख रहा था, पर वस्तुतः घटनाएं घटित हो रहीं थीं। सचमुच मैं महलमें अपने बिस्तरपर कोई दवा पिलाकर बेहोश कर दिया गया। खजानेकी चाभियां मुझसे छीन ली गयीं, शाही कमरबन्द चुरा लिया गया, और मुझे भी कैद करके यहां ले आया गया ताकि मैं विश्वासघातका रहस्य न खोल सकूं।

वह बदमाश, विश्वासघाती शैतान मेरे सामने खड़ा था। जरासी दूर, सिर्फ चार फीटकी दूरीपर। उसके सीनेपर शाही कमरबन्द था। उफ! इसी शैतानपर इतनी मेहरबानी की गयी थी। इसीको मौतसे बचाया गया था।

वह बहुत खुश था और तम्बूमें टहल रहा था।

मैं क्रोधके मारे अन्धा हो गया। मैं उसपर झपट पड़ा और उसे जमीनपर दे मारा, उसके गलेको हाथोंमें लेकर उसका सिर जमीनपर दे देकर मारने लगा। उसने मेरे हाथोंसे छूटनेकी बहुत कोशिश की। पर छूट न सका। मैंने अपने पैरोंके बन्धन तोड़नेका प्रयत्न किया लेकिन इतनेमें हो न जाने कहाँसे बहुतसे आदमी तम्बूमें घुस आये और मुझपर टूट पड़े। मैं चोटकी बेचैनीसे बेहोश हो गया।

फिर जब मैं होशमें आया तो मुझे मालूम हुआ कि मुझपर

बहुत मार पड़ी है। मैं उस समय तम्बूके बाहर धूलपर पड़ा हुआ था। मेरे चारों तरफ छ-सात खूंखार दढ़ियल अरबी बैठे हुए थे। सबके पास राइफलें थे और वे मेरे बदनमें अंगुली गड़ा-गड़ाकर देख रहे थे। मानो मैं आदमी नहीं कोई सूअर था जिसे वे खरीदना चाहते हों। उनका सरदार खड़ा हुआ पीरी ड्रुसीलीसे बातचीत कर रहा था। पीरी ड्रुसीली मुझे अरबोंके हाथ बेच रहा था। अरब सरदार मेरे शरीरका मोल-तोल कर रहा था। पीरीको सामने देखकर मैं फिर क्रोधसे पागल हो गया और बन्धन तुड़ाकर उसपर आक्रमण करनेकी चेष्टा करने लगा। मैंने धक्का देकर अरबोंको अपने रास्तेसे हटा दिया और पाजी पीरीपर आक्रमण कर दिया। मैंने पीरीका गला घोटना शुरू कर दिया, क्षणभरमें ही उसकी सांस रुक गयी और वह बेहोश होकर गिरनेको ही था कि अरब उसकी मददको आये और उसे मेरे पञ्जेसे छुड़ाकर मुझ-पर टूट पड़े। मैं अकेला उन सबसे लड़ने लगा। मेरे पैर बंधे हुये थे, सारा शरीर रस्सीसे जकड़ा हुआ था, मैं सिर्फ हाथोंसे लड़ रहा था।

मैंने उस शैतानको सैकड़ों गालियाँ दीं और उसके विश्वास घातके लिये उसे काफी धिक्कारा और कहा कि कभी-न-कभी तुमसे इस विश्वासघातका बदला जरूर लूँगा। मैंने कहा—तुमने शाही कमरबन्द चुराकर जो विश्वासघात कियाहै,उसके लिये तुम्हें मरना पड़ेगा। अगर अरबोंने मुझे पकड़ न रखा होता तो मैं

उसी समय उसका खून पी लेता। पाजी ड्रुसीली मेरी बातोंके जवाबमें ठहाका मारकर हँसा, लेकिन एकाएक उसकी हँसी रुक गयी। शायद उसने सोचा कि मेरी बातोंसे अरबोंको यह मालूम हो गया कि उसके पास माल है, ऐसी हालतमें अरबोंकी नीयत कहीं बदल न जाय। यह सोचकर, वह अरब सरदारको एक किनारे ले गया और जिस कीमतपर अरब सरदार मुझे खरीदना चाहता था, उसी कीमतपर बेच दिया। उफः वह कैसी भयानक घड़ी थी। पीरीने मुझे अरबोंके हाथ बेच दिया, उन लोगोंने मुझे एक लकड़ीसे बाँध दिया और पीरी ड्रुसीलीके सामने, उसीकी आज्ञासे उन्होंने मेरी जुबान काट डाली। उसने इसी शर्तपर मुझे बेचा था कि मेरी जुबान काट डाली जायगी। उस शैताानने यह काम इसलिये किया कि मैं जिन्दा रहकर उसके भयंकर विश्वासघातकी कथा दुनियाको सुना न सकूँ। उस पापीने मुझे बेजुबान कर दिया और अपने रास्ते चला गया।

वह चला गया, पर मैंने उसे जाते नहीं देखा, क्योंकि जुबान कटते ही मैं बेहोश होकर गिर पड़ा था। मैं कितनी देर या दिनों बाद होशमें आया, मालूम नहीं। लेकिन एक दिन जब मेरी आँखें खुलीं तो मुझे मालूम हुआ कि मैं जिन्दा हूँ। मैं वेदनासे तड़प रहा था, और उम्मीद कर रहा था कि मौत आकर मुझे तमाम तकलीफोंसे रिहा कर देगी! मैं मौतकी प्रतीक्षा करता हुआ कई दिनोंतक पड़ा रहा, पर मौत नहीं आयी, बल्कि मेरे घाव धीरे-धीरे भरने लगे।

गुलामोंका व्यापार करनेवाला वह अरब सरदार जिसने मुझे खरीदा था, उत्तरी इलाकेमें घूम रहा था और गुलामोंकी खरीद-फरोख्त कर रहा था। मेरी हालत बहुत ही खराब थी इसलिये मेरे हाथ-पैर खुले हुए थे क्योंकि सरदार समझता था कि मेरी हालत इतनी खराब है कि मैं कोशिश करनेपर भी भाग नहीं सकता। सरदारने यही सोचकर मुझे बन्धन मुक्त कर रखा था। इसके बाद जब मैं अच्छा हुआ तो वे मुझसे बहुत सख्त काम लेते और अगर मैं काम करनेसे इन्कार करता तो मुझे बड़ी बेरहमीसे पीटते। इस तरहके व्यवहार और भयंकर मारसे घबरा कर मैंने निश्चय कर लिया कि या तो इनके पंजेसे भागा जाय, या भागनेकी चेष्टामें लड़कर जान दे दी जाय, क्योंकि इस तरहकी गुलामीकी वेदनापूर्ण जिन्दगीसे मरना हजार दर्जे बेहतर है। यही सोचकर एक दिन मैंने अपने सतानेवालोंपर आक्रमण किया, घमासान लड़ाई हुई, मैं काफी घायल हो गया, तब भी दो अरबोंको मारकर वहाँसे भाग निकला। मैं भाग निकला, अन्धकारने मेरी सहायता की, मैं रातभर भागता ही रहा। सवेरा हुआ, दिन निकला, दोपहरका सूरज सिरपर आया, शाम हुई, पर मेरा भागना बन्द न हुआ। समय और दूरीका खयाल किये बिना मैं भागता चला गया। इस तरह दो रात और तीन दिन भागते-भागते मैं अटबारा नदीके किनारे आया। मेरी तमाम शक्ति नष्ट हो चुकी थी, पैर लहूलुहान हो गये थे, अटबारा नदीके किनारे आकर मैं बेहोश होकर गिर गया।

उसके बाद काउण्ट डी समोइस और मिस जुलीने मेरी दवा-दारू की और मुझे अपनी नावपर ले लिया। अफसोस, मैं फिर जिन्दा हो गया। कितना अच्छा होता अगर मैं अटवाराकी रेतीपर ही पड़ा हुआ, मर जाता। पर, परमात्माकी ऐसी मर्जी न थी। हाय, मेरे जीवनमें भी क्या-क्या उलट-फेर हुए।

काउण्ट डी समोइस बड़े सहृदय सज्जन थे। उन्होंने मेरी बड़ी सेवा की, मुझे जीवन दान दिया। उन्होंने मेरे घावोंमें मर-हम लगवाया, मेरे खाने पीनेका इन्तजाम किया। कई सप्ताह बाद मैं अच्छा हो गया और उनके साथ युरोप आया।

लेकिन मुझे जैसी जैसी भयङ्कर यातना भोगनी पड़ी थी, जैसे कष्ट बर्दास्त करने पड़े थे, उनके कारण मेरे दिमागको काफी धक्का लगा था और मैं अपने पिछले जीवनकी बहुतसी बातें भूल गया था। मुझे कुछ भी याद नहीं रहा। दिमागमें एक अजीब तरहका सन्नाटा छाया रहता था। बुद्धि जरा भी काम नहीं करता था। मेरे अच्छा होनेके बहुत दिनों बाद, महीनों बाद मेरा दिमाग सही हुआ। मेरी बुद्धि ठिकाने आयी। और तब मैं सोचने लगा कि कमहारा महलके विश्वासघातमें पीरी ड्रुसोलाका कोई न कोई साथी जरूर रहा होगा। क्योंकि एकदम अनजान आदमी बिना दूसरेकी सहायताके ऐसा काम नहीं कर सकता। तब मुझे याद आया कि उस रातको मैं अपने बनावटी दोस्त रासटेकला गोमनके साथ बैठा पी रहा था।

तब यह निश्चय हुआ कि पीरी ड्रुसीलोके इशारेपर टेकला गोमनने ही मुझे बेहोश किया था।

रास टेकला बड़ा काईयां और धूर्त था। वह पहले भी कई बार मेरे साथ चालबाजियां चल चुका था, किन्तु मैंने उनपर ध्यान नहीं दिया था। वह शाहजादी जेलीके कारण मुझसे जलता था।

क्योंकि मेरे कारण ही शाहजादी उसकी तरफ आँख उठाकर नहीं देखती थी। गोकि वह शाहजादीको खुश करनेके लिये हर तरहकी चेष्टायें किया करता था। इसलिये उसका यह चाहना कि मैं महलमेंसे गायब करदिया जाऊँ, शाहजादीकी निगाहोंसे गिर जाऊँ, असम्भव नहीं था। अपनी मुहब्बतकी राहमें मुझे कांटा समझकर, रासटेकलाने पीरी ड्रुसीलीकेसाथ षड़यन्त्र रचा, उसका षड़यन्त्र सफल हुआ। सम्भवतः उसने महा मान्य नीगस करीनको यही बताया होगा कि मैंने ही खज़ानेसे शाही कमर बन्द चुराया, और मैं ही उस अगाध सम्पत्तिको लेकर भाग गया। यह खयाल करते ही मेरा जी बेचैन हो गया। हाय! महामान्य नीगसने मुझे विश्वासघाती समझा। इस खयालसे मैं काफी उत्तेजित और गर्म हो गया। मैं सोचने लगा-क्या कभी यह भी संभव होगा कि मैं एक बार फिर कमहारा महल पहुंच सकूं और अपने बनावटी दोस्त, चालबाज रासटेकला गोमनके सामने खड़ा हो सकूं। वर्षों बीत गये, पर मुझे यह अवसर नहीं मिला। मेरे जीवनको यह साध नहीं मिटी। धीरे-

धीरे समय बीतने लगा, पिछली घटनाओंपर विस्मृतिका पर्दा पड़ने लगा, लेकिन भूल कर भी मैं उन घटनाओंको भूल नहीं सकता था। बीचमें मैं उत्तेजित हो जाता और सारी घटनायें फिर ताजी हो जाती। तब भी मैं निराश होता जा रहा था, मुझे ऐसा मालूम होता था, मानो इस जीवनमें मुझे कमहारा महलके दर्शन न होंगे। इस जिन्दगीमें शाहजादी जेलीकी मधुर मुसकान नसीब न होगी। मैं महा मान्य नीगस और शाहजादी जेलीके सामने अपनेको निर्दोष सिद्ध न कर सकूँगा।

हाय मैं क्या करूँ कैसे अपने आपको निर्दोष प्रमाणित करूं? कैसे उस पाजी षड्यन्त्रकारीकी पोल खोलकर महामान्य नीगसके सामने असली बात प्रगट करूं? मैं गूंगा हूं। मेरी जुबान काट डाली गयी, हाय! जो सत्य मैं जानता था, जुबानसे कह नहीं सकता था। ओफ! शाहजादी जेलीका खयाल मुझे अलग मारे डालता था। इससे अच्छा होगा कि मैं आत्महत्या करके मर जाऊं और तमाम तकलीफों, वेदनाओं, और परेशानियोंसे छुटकारा पालूं। इस तरहकी जिन्दगीसे तो मरना बेहतर है। लेकिन मैं मर न सका, कोशिश करनेपर भी मर न सकनेका कारण जेलीके पुनः दर्शनकी क्षीण लालसा, महामान्य नीगसके सामने अपनेको निर्दोष प्रमाणित करनेकी प्रेरणाके सिवा और कुछ न था। मैं क्रमशः अपने नये मालिक काउण्ट डी० समोइस और बालिका मिस जुलीके स्नेह बन्धनमें बंधने लगा। मैं मर न सका। अपने नये मालिककी दयालुता और मिस

जुलीके स्नेहपूर्ण व्यवहारके कारण आत्महत्या करनेकी इच्छा मरने लगी। मैं तनमनसे काउण्टकी सेवा करने लगा। वे बड़े दयालु और उपकारी सज्जन थे, उनके यहां मुझे हर तरहका सुख और सुविधाएं प्राप्त थीं। धीरे धीरे समय बीतता गया और भयानक पुरानी घटनाओंकी स्मृति धुंधली पड़ती गयी। इसी तरह दिनपर दिन बीतते चले गये। महा कृपालु काउण्टकी मृत्युके बाद दुखित हृदयसे मैं मिस जुलीकी सेवा करने लगा। मिस जुली मुझे बहुत मानती थी। मेरा हृदय भी उसके प्रति इतना उपकृत हो गया था कि अगर मैं मिस जुलीके इशारेपर जान भी दे सकता तो अपनेको धन्य समझता। आज भी मैं मिस जुलीकी आज्ञासे जान देनेमें अपना सौभाग्य समझता हूं। मैंने कभी सोचा भी न था कि मुझे मिस जुलीकी नौकरी छोड़नी पड़ेगी। मैंने कभी इस तरहका कृतघ्नता पूर्ण कार्य करनेका खयाल भी नहीं किया। बल्कि सच तो यह है कि मिस जुलीकी कृपासे ही मुझे नवजीवन मिला था और इसलिये मैं अपने प्राणोंको उसका दान समझता हूं।

लेकिन परमात्माको कुछ और ही मंजूर था। एक दिन मैंने पेरिसकी सड़कपर पाजी पीरी ड्रुसीलीको देखा, पीरी मुझे न देख सका लेकिन पन्द्रह वर्ष बीत जाने पर भी उसके कुछ मोटे और प्रौढ़ हो जाने पर भी मैं उसे देखते ही पहचान गया। उस पाजीको पेरिसकी सड़कपर देखते ही क्रोधके मारे मेरी आत्मा काँप उठी। मेरे रोम-रोमसे प्रतिहिंसाकी चिनगारियाँ

निकलने लगी। मेरी रग रगमें प्रतिशोधका भाव भर गया, शरीरमें खूनकी गति बढ़ गयी। क्षणभरमें पन्द्रह वर्षके अन्तरका पर्दा काईकी तरह हट गया। घटनाएं ताजा हो गयीं और मेरे हृदयका घाव हरा हो गया। मुझे उसके भयंकर विश्वासघातकी याद याद आयी और मैं उत्तेजनाके मारे पागल सा हो गया।

मैं समय, स्थान, परिस्थिति सब कुछ भूल गया। जीमें आया उस पाजी पापीका गला घोटकर उसी क्षण मार डालूँ। दुनियाके पर्देसे एक पापीका नाम मिटा दूँ। पर वह बिना मुझे देखे ही बढ़ा चला जा रहा था। इसलिये मुझे भी उसका पीछा करना पड़ा। मेरी रगरगमें घृणा समा गयी थी। मैं उसका पीछा करता हुआ तेजीसे आगे बढ़ा। सोचा, अब देर क्यों? ऐसा अवसर फिर आये या न आये, इसे इसी वक्त खत्म कर डालो। मैं उसकी तरफ झपटा। लेकिन मैं उसके बिलकुल करीब पहुंचू इसके पहले ही उसने एक गाड़ी खड़ी करवायी और उसपर सवार होकर चल दिया। गाड़ीपर सवार होते हुये उसने ड्राइवरको विनोसा होटल चलनेको कहा था, यह मैंने सुन लिया और दूसरी गाड़ीकर उसके पीछे विनोसा होटल चला।

जैसे-जैसे गाड़ी विनोसा होटलकी तरफ बढ़ रही थी, मेरे मनकी एकाएक उत्तेजित भावना शान्त पड़ रही थी और उसका स्थान दृढ़ निश्चय ग्रहण कर रहा था। मैंने निश्चय किया कि पूर्ण सावधानीके साथ निरापद स्थानपर पीरी

ड्रूसीलीको मार डालूँगा ताकि वह किसी भी तरह बचने न पाये। सड़कके बीचोबीच मारनेसे मुमकिन है लोगबाग उसकी सहायताके लिये दौड़ पड़ें। गाड़ी होटलके सामने पहुंची और वह तुरत होटलमें घुस गया। मैंने भी अपनी गाड़ी छोड़ दी और होटलके सामने चक्कर लगाने लगा। मेरा मतलब यह जाननेका था कि पीरी ड्रूसीली किस कमरेमें ठहरा है। इन्तजार करते-करते कई घण्टे गुजर गये पर उस दिन वह होटलसे बाहर नहीं निकला। पर मैंने बड़ी होशियारीसे पता लगा लिया कि वह २१ नम्बरके कमरेमें ठहरा हुआ है।

दूसरे दिन शामको मैं फिर उस होटलके सामने पहुंचा और उसका इन्तजार करने लगा। मैं उसे छिपे तौरसे देखना चाहता था। मैं चाहता था कि मैं तो उसे अच्छी तरह देखलूँ पर वह मुझे न देख सके।

घंटे भरकी प्रतीक्षाके बाद वह होटलमेंसे निकला और निकलते ही मोटरमें सवार हो गया, होटलसे मोन्टमारट्रीके शराबखाने तक मैंने पीछा किया, वहाँसे उसके पीछे-पीछे थियेटर में गया। वह हमेशा ही मेरी पकड़से छूट जाता था। मैं चाहता था कि उसे मार डालनेसे पहिले उसे अपना परिचय दूँ ताकि वह यह समझता हुआ मरे कि मैंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और उसे अपने विश्वासघातका बदला मिला गया। लेकिन वह हरबार गाड़ीमें ही आया गया इसलिये मुझे मौका नहीं मिला।

इस तरह उसका पीछा करते हुये कई दिन बीत गये पर

जैसा मैं चाहता था वैसा मौका नहीं मिला। जब एक सप्ताह बीत गया तब मैं उसे मार डालनेके लिये व्यग्र हो उठा और कोई रास्ता न देखकर मैंने निश्चय किया कि विनोसा होटलके कमरेमें ही उसे मार डालूँगा। यों अनुकूल अवसरकी प्रतीक्षा-में समय बरवाद करना मूर्खता है। बस, मैं उसका खून करनेको दृढ़ संकल्प हो गया।

विनोसा होटलका २१ नम्बरका कमरा मेरे कामके लिये बहुत सुविधाजनक था। २१ नम्बरका कमरा होटलके पीछे था, उसमें एक खिड़की थी जो पीछेकी तरफ एक छोटी सुन-सान गलीकी तरफ खुलती थी। मैंने अपने निश्चयके मुताबिक पिछले महीनेकी तीन तारीख बुधको पीरी ड्रुसीलीकी प्रतीक्षा में होटलके इधर-उधर चक्कर लगाने शुरू किये। पीरी होटलके बाहर नहीं निकला, बल्कि उसके कमरेकी खिड़कीसे निकलने-वाली रोशनीसे मैंने समझा कि वह भीतर ही है। रात क्रमशः बढ़ने लगी और साथ-ही-साथ मेरी बचैनी भी।

कई घण्टे रात बीत जानेपर २१ नम्बर कमरेकी रोशनी बुझ गयी। कमरेमें अन्धेरा हो गया, मेरे चारों तरफ भी अन्धेरा था। रात्रिका गाढ़ा अन्धकार था और मेरे आसपास कोई न था। मैंने देखा होटलके पीछेवाली गलीमें बिल्कुल सन्नाटा है। मुझे यह विश्वास हो गया कि मुझे कोई देख नहीं रहा है। मैं पैर दबाये हुये पिछवाड़ेवाली गलीमें गया और होटलके चारों तरफ लगे हुए लोहेके सींकचोंपर चढ़

गया, फिर दीवालसे लगे हुये लोहेके नलके सहारे २१ नम्बरकी खिड़कीके पास पहुंचा। चारों तरफ भयंकर सन्नाटा था, मैंने खिड़कीको हल्का धक्का देकर खोला, चिटकनी टूट गयी, मैं कमरेमें चला गया। और············

अलेक्जेन्ड्रियाको यूरोपियन होटलके ग्रांटवाले कमरेमें पूर्ण निस्तब्धता छायी हुयी थी, सिर्फ पम्पनकी कलम बीच बीचमें चरचराकर शांति भंग करनेका निष्फल प्रयत्नकर रही थी। पम्पन दत्तचित्त होकर अपनी अद्भुत आत्मकथा लिख रहा था, और जी० ग्रान्ट पढ़ रहा था। वह आत्मकथाके आखिरी अक्षरों-को लिख रहा था कि जी० ग्रान्टने गर्दन ऊंची की। सिर झुकाये पढ़ते पढ़ते जी० ग्रान्टकी गर्दनमें दर्द होने लगा और अब बाकी ही क्या रहा, जी० ग्रान्टने मन ही मन सोचा, इसके आगे तो सब मामला साफ है। सारी घटनाएं ज्ञात हैं।

पम्पनकी आत्मकथाकी आखिरी पंक्तियां पढ़े बिना ही जी० ग्रान्ट समझ गया कि होटलके कमरेमें घुसनेके बाद, उसने पीरी ड्रूसीलीको मार डाला और उसकी तलाशी लेकर शाही कमरबन्द अपने कब्जेमेंकर लिया। उसके बाद उसने कमरबन्द महामान्य नीगसको लौटानेका निश्चय किया, और अपने इसी इरादेको पूरा करनेके लिये वह मिस जुलीकी नौकरी छोड़कर उसके साथ कमहारा जा रहा है।

उफः कैसी सनसनीखेज कहानी है। कितनी अद्भुत और कितनी रोमांचक, साथ ही कितनी सत्य। सच है, पुरुषके

भाग्यमें क्या लिखा है यह देवता भी नहीं जानते। कमहाराका शाही खज़ाञ्ची, मिस जुलीका नौकर! "किमाश्चर्यमतः परम्"। जी० ग्रांट पम्पनके लिखे हुये एक अक्षरको भी झूठा नहीं समझता था। उसका पम्पनपर आगाध विश्वास था। पम्पनकी आत्मकथामें प्रेम, विश्वासघात, उत्पीड़न, स्नेह, प्रतिहिंसाके भाव कूट-कूटकर भरे थे। जिस दर्दनाक, अद्भुत भयङ्कर घटनाओंको पम्पनकी जबान नहीं कह सकती थी उनको पम्पनकी कलमने कह दिया। गोया "कागज पै रख दिया है कलेजा निकालकर"।

पम्पनकी आत्मकथा पढ़कर जी० ग्रान्टका हृदय पम्पनके प्रति करुणा और विश्वासघाती पीरीके प्रति घृणासे भर गया। पर पीरी डूसीली अपने कियेका दण्ड पा चुका था, अब उसके प्रति घृणा करना व्यर्थ है यह समझकर जी० ग्रान्ट घृणाका भाव अपने दिलसे दूर करने लगा। पीरी मर गया, ठीक ही हुआ। उसे मरना ही चाहिये था। उसके लिये ऐसी मौत ही मुनासिब सजा थी। पम्पनने उसे मारकर पृथ्वीका बोझा हल्काकर दिया। पम्पनने जो कुछ किया वह करनेके लिये उसके पास पर्याप्त कारण थे, गोकि पम्पनका यह कार्य उसके हकमें अच्छा न था। पीरी तो अपनी करनीका फल पा चुका पर पम्पनपर आनेवाली आफतका क्या होगा?

ग्रेनाइटका हृदय पम्पनके प्रति सहानुभूतिसे भर गया। उसे पम्पनसे यह सवाल करनेकी जरूरत नहीं मालूम हुई कि पीरी-

का खून करके उसने कानूनका उल्लंघन किया, उसका क्या होगा ? वह पम्पनकी घृणा और उत्तेजना समझ रहा था, वह समझ रहा था कि पम्पनके स्थानपर वह होता तो शायद वह भी वही काम करता जो पम्पनने किया। जिस शख्सने उसके साथ इतना बड़ा विश्वासघात और अत्याचार किया हो उसके प्रति पम्पनके हृदयमें प्रतिहिंसाके सिवा कौनसा भाव जाग्रत हो सकता है? उसे पम्पनके कार्यमें जरा भी अस्वाभाविकता या अनौचित्य न दिखलायी पड़ा।

ग्रेनाइटने अनुभव किया कि पम्पनका अबसीनिया लौटनेका कारण महामान्य नीगसको उनका शाही कमर-बन्द लौटानेके सिवा और भी कुछ है। पम्पनने अपनी आत्म-कथामें शाहजादी जेलीका जिस रोचक ढङ्गसे वर्णन किया था, उससे यह स्पष्ट था कि पम्पनका दिल अभी भी जेलीपर फिदा था। और एक बार फिर वह अपने माशूकको देखना चाहता था, रक्त कमलिनीके समान सुन्दरी शाहजादी जेली पन्द्रह वर्ष बाद भी क्या पम्पनकी प्रतीक्षामें बैठी होगी? जो भी हो, इसमें जरा भी शक नहीं कि गूँगा पम्पन अपने हृदयकी समस्त आशा और जोशके साथ शाहजादी जेलीको चाहता था। उस की लगन शाहजादीकी तरफ लगी हुई थी। गोकि उसका चेहरा काला था, पर उसकी आत्मा और मन स्फटिककी तरह स्वच्छ था। पन्द्रह वर्ष बीत जाने पर भी उसके दिलमें आश-नाईका चिराग जल रहा था, क्यों नहीं ? पम्पन अच्छे ऊंचे

और धनाढ्य खानदानमें पैदा हुआ था। शाही खजानेका खजांची था। ऐश्वर्य और सौन्दर्य उसके चरणोंमें लोटा करता था। वही पम्पन, आज दीन, हीन, हालतमें, अपनी मातृभूमि को लौट रहा था। कहां, वह वैभव, मान संभ्रम और कहां यह दयनीय अवस्था। किस्मतकी करामात है।

ग्रेनाइटने पम्पनकी ओर देखा, उफः! अवसीनियाके शाही खजानेका खजांची आज इस हालतमें? तब भी उसका चेहरा चमक रहा था। पम्पन काली जातिका था किन्तु ऊंचे कुलमें पैदा होनेके कारण उसका चेहरा बिलकुल काला न था, बल्कि गहरा भूरा था। उसकी काली आंखोंमें दृढ़ता और आत्मगौरव झलक रहा था। उनमें अपूर्व आत्मत्याग और कष्ट सहनके भाव भी स्पष्ट दीख रहे थे। उसकी दृष्टि तीक्ष्ण थी जो उसकी दृढ़ताकी परिचायक थी। उसके ओठों और नाकसे ईमानदारी टपक रही थी।

पम्पनने अपना अद्भुत आत्म चरित्र लिखकर कलम मेज पर रख दी। कलम रख कर उसने सिर ऊंचा किया, एकाएक ग्रेनाइटकी आंखोंसे उसकी आँखें मिल गयीं। आंखों ही आंखों में एक दूसरेने आपसके भावोंको समझ लिया। पम्पनका चेहरा खिला हुआ था, मानो अपना आत्म चरित्र लिखकर, पम्पन सदा दबानेवाले एक बोझसे छुटकारा पा गया। जो रहस्य उसने बार बार पूछने पर भी मिस जुली तकको नहीं बतलाया था, जिस रहस्यको वह पन्द्रह वर्ष तक धरोहरकी तरह छिपाकर

रखे हुये था, उस रहस्यको उसने ग्रेनाइटसे कह दिया। क्यों ? क्योंकि पम्पनने समझा कि ग्रेनाइट बहादुर, योग्य और सच्चा आदमी है। ग्रेनाइट हर तरहसे उसकी सहायता कर सकता है, और ग्रेनाइटकी मददसे वह अपने ध्येय तक आसानी से पहुँच सकता है। पम्पनसे आंखों-आंखोंमें बात कर ग्रेनाइटने जोशमें भर कर पम्पनका हाथ अपने हाथमें लेकर दबाते हुए कहा—

कुछ चिन्ता नहीं, पम्पन! मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। मैं हर तरहसे तुम्हारी मदद करूंगा। दोस्त! पम्पनका बेज़ुबान गला भावावेगसे भर गया। उसकी आंखोंमें स्नेहकी बाढ़-सी आ गयी। उसने ग्रेनाइटके हाथको लेकर अपनी आंखोंसे लगाया हार्दिक स्नेहकी दो बून्दें ग्रेनाइटके हाथ पर पड़ीं। ओह! वह काला आदमी मानवताकी कोमल भावनाओंसे व्याप्त हो गया। उसके हृदयकी वृत्तियां कितनी साफ और ऊंचे दर्जेकी थीं। पम्पन और ग्रेनाइट आमने सामने बैठे थे, दोनों चुप थे, एक-टक ताक रहे थे, बाहरसे बिलकुल शान्त थे और भीतर दोनोंके हृदयमें स्नेहका झरना बह रहा था। काले और गोरेका भेद दोनोंसे बहुत दूर चला गया था, दोनोंकी आत्माएं मिल रहीं थीं कमरेकी अधखुली खिड़कीसे प्रातःकालका प्रकाश दोनोंके चेहरोंको आलोकित कर रहा था।

अलेक्ज़ेण्ड्रयाकी प्राचीन मस्जिदकी मीनार परसे मजहब परस्त मुल्ला आजान दे रहा था।

लाइलाह लिल् लिल्लाह!

१०

खारटूमकी ओर

मिस जुलीने जब सुना कि मिस्टर ब्लेक और स्मिथके साथ उसके जहाजपर खारटूम चलना चाहते हैं, तो वह बहुत खुश हुई। उसने कप्तानको इसकी सूचना दे दी और ब्लेक तथा स्मिथके आरामके लिये हर तरहका इन्तजाम करनेके लिये हुक्म दे दिया। निश्चित समयपर मिस जुली रवाना हुयी और बिना किसी बाधाके जहाजपर पहुँचकर मिस्टर ब्लेक और स्मिथकी प्रतीक्षा करने लगी।

मिस्टर ब्लेक और स्मिथ वर्टरम चारनकी निगाहोंसे बचनेके लिये रातकी गाड़ीमें पेरिससे केला रवाना हुये और वहाँसे मेण्टन बन्दरगाह जानेके लिये दूसरी गाड़ी पकड़ी। मिस्टर ब्लेक जिस गाड़ीसे मेण्टन रवाना हुये उसका नाम क्यूट्रेन था, यह गाड़ी फ्रांसमें तूफानमेलकी तरह प्रसिद्ध है और बहुत तेज रफ्तारसे चलती है। क्यूट्रेनसे ब्लेक और

स्मिथ सबेरा होते-होते मेन्टन बन्दर पहुँच गये। गाड़ी-से उतरकर दोनों जहाजी स्टेशनकी तरफ रवाना हुए, जेटीपर जाकर उन्होंने देखा कि मिस जुलीका जहाज वोनवेंटर खड़ा हुआ है। जेटापर पहुँचते हो मिसके आदमीने उन्हें सलाम किया और कहा—

हुजूर! मालकिन बड़ी देरसे आपलोगोंका इन्तजार कर रही हैं। ब्लेक और स्मिथ मिस जुलीके आदमीके साथ नाव-पर सवार होकर वोनवेण्टर जहाजपर गये।

वहाँ पहुँचते ही मिस जुलीने बड़े तपाकसे मिस्टर ब्लेक-का स्वागत किया।

आइये, मिस्टर ब्लेक, मैं घण्टोंसे आपका इन्तजार कर रही थी। हमें अभी रवाना हो जाना चाहिये। मैं कप्तान लिफी-वरको जहाज चलानेको कह रही हूँ।

इतना कहकर, मिस जुलीने जहाजके कप्तान मिस्टर लिफी-वरको जहाज चलानेका इशारा किया और फिर मिस्टर ब्लेक-की तरफ मुखातिब होकर बोली।

क्यों वर्टरम चारनका क्या हाल है? फिर तो उसके दर्शन नहीं हुये? मिस जुलीके चेहरेपर उत्सुकता झलक रही थी।

नहीं। वर्टरमका अभीतक तो पता नहीं है, ब्लेकने जवाब दिया। और तुमने उसे देखा?

नहीं। बिलकुल नहीं। मुझे उसकी गंध भी नहीं मिली। हँसते हुये जुलीने जवाब दिया। मैं आपका टेलीफोन आनेके

आधा घण्टे बाद ही पेरिससे चल दी थी। यदि उस धूर्तराजने मेरा मतलब ताड़ भी लिया होगा तो वह इतनी जल्दी पेरिस छोड़नेकी तैयारी नहीं कर सकेगा। मिस्टर ब्लेक, अब आप निश्चिन्त हो जाइये। बर्टरमका इतनी जल्दी पेरिस छोड़ना असम्भव है।

असम्भव कुछ भी नहीं है, मिस जुली। बर्टरमके कोषमें असंभव शब्द है ही नहीं। वह जिस वक्त जो चाहे सो कर सकता है। ब्लेकने कहा, लेकिन मैं समझता हूँ, इस बार हमने बर्टरमको खूब चकमा दिया है। मुमकिन है, वह मेरा पीछा करने इङ्गलैण्ड जानेकी तैयारी कर रहा हो। बर्टरम लन्दन गया तो खूब छकेगा।

संभव है वह इस वक्ततक लन्दन रवाना हो गया हो। मुक्त हास्य हँसते हुये मिस जुलीने जवाब दिया, उसने होटलमें आपका पता लगाया होगा, और जब उसे मालूम हुआ होगा कि आप केला गये हैं, तब उसे विश्वास हो गया होगा कि आप जरूर लन्दन चले गये। ओ हो! हो!! बर्टरम कैसा बुद्धू बना। ओ हो! हो!

मिस जुलीकी बातोंके जवाबमें ब्लेक कुछ कहना ही चाहते थे कि उनकी तेज आँखें किसी चोजपर जाकर रुक गयीं। वे नजर गड़ाकर कोई चीज देखने लगे, और मिस जुलीसे बोले—जरा अपनी दूरबीन देना।

मिस्टर ब्लेकने जैसे दूरबीन लेकर अपनी आँखोंसे लगायी,

वैसे ही जहाजने छूटनेकी सीटी दी और उसके पहिये तेजीसे समुद्रकी अनन्त जलराशिको जोरोंसे मथने लगे। जहाज बन्दरगाह से दूर होने लगा। मेन्टनकी पहाड़ियोंके टीले, टीलोंके ऊपर बड़े-बडे पेड़ोंकी टहनियां, उसके पीछे अस्त होता हुआ सूर्य, और सूर्यकी किरणोंसे अर्द्ध प्रकाशित बन्दरगाह दूर होता जा रहा था। मिस्टर ब्लेकने दूरबीनका फोकस ठीक किया और बन्दरगाहपर हिलती हुई किसी चीजको ताज्जुबसे देखने लगे :

ब्लेक जिस चीजको देख रहे थे, वह एक हिलता हुआ हाथ था, जिसकी अंगुलियोंमें एक टोप था। वह हाथ जिस आदमी-का था, उसके बगलमें एक छाता दबा हुआ था, उसकी खोपड़ी सफाचट, आंखें हरी तेज चमकदार थीं, और उसका चेहरा मुस्करा रहा था। वह किसीको बिदा करने आया था। उसके हाथका टोप हिल रहा था और चेहरा हँस रहा था।

वह हँसी साधारण हँसी नहीं थी। विजय गौरवकी मुक्त हँसी थी। उसका चेहरा खिल रहा था। बिदा करने आनेवालों-के चेहरोंपर वियोग जनित दुखकी जो रेखा रहती है, उसका उसके चेहरेपर नाम-निशान नहीं था। वह देख रहा था, मिस्टर ब्लेक उसे देख रहे हैं, शायद इसीलिये वह जी खोलकर हँस रहा था, और बड़ी प्रसन्नतासे अपना टोप हिला रहा था। ब्लेकको मालूम हुआ मानो उसकी हृदय बेधक हँसी समुद्र पारकर उनके जहाजपर टूटी पड़ रही है। मानो उसके हास्यमें ब्लेकका जहाज डूबा जा रहा है।

ओह! हमारा दोस्त बर्टरम चारन आ गया। पराजयकी हँसी हँसते हुए मिस्टर ब्लेकने यह कहकर, दूरबीन मिस जुलीके हाथमें दे दी।

आप क्या कहते हैं? साश्चर्य मिस जुलीने कहा, और दूरबीन लेकर देखने लगी। लेकिन मिस जुलीके दूरबीन लगाते ही जहाज घूम गया और मेण्टनका बन्दरगाह ठीक उसके पीछे हो गया। सामनेका दृश्य आंखोंसे ओझल हो गया।

मिस जुलीने हताश होकर दूरबीन आंखोंपरसे हटा ली और ब्लेककी तरफ घूमकर, अविश्वास पूर्ण स्वरमें बोली—क्या बर्टरम चारन था? सचमुच बर्टरम चारनको हमारा पता लग गया था?

हां। या तो वह बर्टरम चारन था या उसका भूत।

तब बर्टरमका भूत ही हो सकता है। बर्टरम चारन नहीं हो सकता।

नहीं, मिस जुली। वह बर्टरम चारन ही था। ब्लेकने विश्वास पूर्वक कहा। वह बर्टरम चारन ही था। उसने मुझे दूरबीनका फोकस ठीक करते हुए देखा, वह मुझे देखकर बड़े जोरसे हँसा और अपना टोप उतार कर जबतक आंखोंसे ओझल नहीं हो गया हिलाता रहा। उसे पहिचाननेमें भूल थोड़े ही हो सकती है। निश्चय ही वह बर्टरम चारन था।

तब यह कहिये कि वह होटलसे ही आपके पीछे लगा था?

या तुम्हारे घरसे ही तुम्हारे पीछे लगा था। या तो उसने

तुम्हारा पीछा किया या मेरा, जो भी हो, वह आया हमी लोगोंके पीछे ?

लेकिन, अगर वह मेरे पीछे लगा होता तो इतनी देर बाद क्यों दिखलायी पड़ता। ठीक जहाज खुलनेके समय। मैं समझती हूं वह आपके पीछे ही आया था।

हो सकता है। लेकिन यह भी नहीं कहा जा सकता कि वह जहाज खुलनेके समय ही पहुंचा था। मुमकिन है, वह पहिले ही आ गया हो, और छिपा हुआ सब कुछ देख रहा हो। जहाज खुलनेके पहिले हमें दर्शन देनेसे उसका क्या मतलब निकलता ? मैं कहता हूं कुछ भी नहीं। क्योंकि न तो वह हमारे जहाजपर आ सकता था, न किसी तरहसे हमारे जहाजको रोक सकता था। तब वह पहिले दर्शन क्यों देता ?

खैर, आपकी बात ही ठीक सही। लेकिन उसके आनेका मतलब क्या हो सकता है ?

ओह। यह ऐसा सवाल है, जिसका जवाब सिर्फ बर्टरमचारन ही दे सकता है। उसका मतलब जरूर है, पर मतलब क्या है, वह या तो बर्टरम जानता है, या तुम अन्दाजकर सकती हो।

जुली क्षणभर निस्तब्ध खड़ी कुछ सोचती रही, और फिर हँसती हुयी बोली, मैंने अन्दाज लगा लिया। मिस्टर ब्लेक मैं बर्टरमका मतलब समझ गयी।

वह आपके साथ ही केलेकी ट्रेनसे उतरा था। वह आपको विदा करने आया था। लेकिन जब उसने जेटीपर पहुँचकर

देखा, वह जरा देर करके आया तो उसे अफसोस हुआ, मिस्टर ब्लेक, वह आपको भेजने आया था। लेकिन देरसे पहुँचनेके कारण वह बड़ा परेशान हुआ होगा।

मिस जुली फिर हँसी। बर्टरमकी कल्पित परेशानीकी कल्पना करके वह हंस रही थी।

नहीं, वह देरसे पहुँचनेके कारण परेशान नहीं बल्कि खुश हुआ। उसे परेशान होनेकी जरूरत नहीं थी। वह ठीक उसी समय दिखलायी पड़ा जिस समय वह चाहता था कि मैं उसे देखूँ। अपनी सफलतापर बर्टरम खुश ही हुआ। मिस जुली! इस बार भी हम बर्टरमका मतलब न भांप सके और उसने हमारा भेद जान लिया। लेकिन जो भी हो। अब हम बर्टरमसे बहुत दूर निकल आये हैं, हमें उस खुर्राटकी निरर्थक बातोंमें अपनी यात्राका मजा किरकिरा न करना चाहिये। अब फिर जब बर्टरम दिखलायी पड़ेगा तब देखा जायगा। हमें तो यात्राका मजा लूटना चाहिये।

लेकिन यह यात्रा मजेदार नहीं है। मजेके लिये भी नहीं, मिस्टर ब्लेक! आप जानते ही हैं कि हमारी यात्राका उद्देश्य बहुत गम्भीर है।

मैं वह बात भूला नहीं हूं। विषयकी गम्भीरताको अच्छी तरह महसूस करता हुआ भी मैं यह नहीं चाहता कि हम इस तरह मुहर्रमी शकल बनाये यात्रा करें, मानो किसीकी शव यात्रामें शामिल होने जा रहे हों। सम्भव है, हमें उतनी गम्भीर

परिस्थितिका सामना न करना पड़े, जितना तुम सोच रही हो ।

आप अपना मतलब साफ-साफ कहिये ?

साफ साफ ही कह रहा हूं । मेरा मतलब यह है कि हमने अभी तक पम्पनके मामलेका खराब पहलू ही सोचा हैं, गोकि हमलोग जो कुछ भी जानते हैं, वह एक खयाली धारणाके ऊपर निर्भर करता है । दूसरे पम्पनके खिलाफ पीरीकी हत्या करनेके अभियोगमें जो प्रमाण हैं, वे भी संयौगिक हैं । हाँ, बर्टरम चारनके पास ऐसा कोई पक्का सुबूत है, यह मालूम नहीं होता । जब बर्टरम कोई पक्का सबूत लेकर आगे बढ़ेगा, तब देखा जायगा । अभी हम जरूरतसे ज्यादा चिन्ता करके आपने दिमागको क्यों खराब करें ? मैं तो कहता हूं, हमें अपनी यात्राका पूरा मजा उठाना चाहिये ।

मिस जुलीने मि० ब्लेककी बातोंका जबाब नहीं दिया ।

लेकिन रंगीले स्मिथने मिस्टर ब्लेककी बातोंका हृदयसे समर्थन किया, वह बोला, ठीक है, हुजूर ! जब समस्याका सामना करना पड़ेगा, तब हम तैयार रहेंगे । अभीसे घबराने और परेशान होनेकी क्या जरूरत है । फिर जिन्दगी भर तो हमलोग काममें ही फँसे रहते हैं, दिमाग कभी चिन्तासे खाली नहीं रहता । यह मामला भी हमारा दिमाग फेरे ही हुये है, तब भी, काम काजके झण्झटोमेंसे अगर कुछ दिनोंके लिये तबीयत बहलानेका मौका मिल रहा है, तो इस अवसरको हाथसे क्यों

खोयें। गम्भीर मामले तो हर समय ही सिर पर लदे रहेंगे। यह तो "जब तक जीना तब तक सीना" वाली बात है। पर दिल बस्तगी भी इन्सानके लिये बहुत जरूरी चीज है। इससे थकावट उतर जाती है, काम करनेका जोश पैदा होता है।

स्मिथका कहना बिलकुल ठीक था। कामकाजका झंझट तो हमेशा ही लगा रहता है। फुर्सत सिर्फ आलसी और बेकार आदमियोंको ही रहती है। आदमी वही है जो कामके समय तो काम करे और बाकी समय हँसी-खुशीमें काटे। क्योंकि "जिन्दगी वो है जो हंसखेलके खुश होके कटे।" फिर मिस जुलीका जहाज भी बहुत सुन्दर था जैसी अच्छी मालकिन थी, उसीके अनुकूल उसका जहाज था। पर उसे तरह-तरहकी सुविधाएं प्राप्त थीं। मनोविनोदके तमाम साधन मौजूद थे। तिसपर समुद्र शान्त था और अपूर्व शोभासे सुशोभित था।

मिस जुलीका जहाज बोनवेण्टर मध्यसागरको पार करता हुआ, स्वेज नहरसे लाल समुद्रमें आ गया और पोर्ट सईदकी तरफ बढ़ने लगा।

लालसागरमें आते ही मालूम हुआ मानो वे लोग दूसरी दुनियामें चले आये। वे लोग पोर्टसुकिनपर पहुंच गये। ब्लेकने हिसाब लगाकर देखा कि उनका जहाज काफी तेजीसे आया है और रास्तेमें उन्होंने कहीं भी फिजूल वक्त बरबाद नहीं किया। यहांसे नूबीयन रेगिस्तान पार करके उन्हें पांच सौ मीलका सफर करना था। यदि वे लोग यहां न उतरकर पोर्टसईद उतरते

तो उन्हें खारटूम जानेके लिये दो हजार मीलसे भी ज्यादा सफर करना पड़ता।

ट्रेन द्वारा खारटूम जानेके लिये तैयार होकर मिस जुलीने बोनवेण्टर जहाज कप्तान लिफीवरके भरोसे छोड़ दिया और उसे समझाकर कह दिया कि हम लोग जबतक खारटूमसे लौट कर न आवें तुम यहींपर रहना। हमें आनेमें देर होगी, या आगे जाना होगा अथवा तुम्हें मेन्टन भेजना होगा तो खारटूमसे इसकी सूचना दे दी जायगी।

बन्दरगाहसे स्टेशनपर सामान भिजवाकर मिस जुली, मिस्टर ब्लेक और स्मिथके साथ स्टेशनपर पहुंची। सुबहका सुहावना समय था, ठण्ढी हवा चल रही थी। वे लोग चाहते थे कि सबेरेकी कोई गाड़ी मिल जाय तो राततक खारटूम पहुंचा जाय। स्टेशन पहुंचनेपर मालूम हुआ कि गाड़ी जानेमें अभी दो घण्टे बाकी हैं। इसलिये, सब लोगोंने निश्चय किया कि तबतक शहर घूम आया जाय। शहर घूमनेमें सबसे अधिक दिलचस्पी स्मिथ दिखा रहा था। क्योंकि पूर्वीय शहरोंसे स्मिथका परिचय बहुत कम था।

सुकिन दर्शनीय शहर है। उसकी बड़ी रेतीली सड़कोंके दोनों तरफ खजूरके लम्बे-लम्बे पेड़ोंकी कतारें हैं। सुकिनसे ही एक लम्बा विस्तृत पथ,कसालाके रेगिस्तानको जाता है। मकानात बिलकुल पूर्वीय ढङ्गके थे, तीन तरफके छोटे-छोटे सफेद मनोहर मकानोंकी लाइनें बड़ी भली मालूम होती थीं। बीच-

बीचमें छोटी छोटी झोपड़ियां, बङ्गले और पश्चमीय ढङ्गके सुन्दर मकान शहरकी शोभामें विविधताका आकर्षण पैदा कर रहे थे। होटलों, और काफीखानोंमें फैजोंके बीच-बीच एकाध टोप भी दिखलायी पड़ रहा था। शराबखानोंमें बड़े सस्ते दामोंमें शराब बिक रही थी। बहुतसे आनन्दी जीव काफीखानोंके सामने बैठे हुये, गप्प लड़ा रहे थे और काफी पी रहे थे। छोटी छोटी गलियोंमें नङ्ग-धड़ङ्ग लड़के ऊधम मचा रहे थे। सुकिनका आम बाजार बहुत सुन्दर था। वहांकी दुकानें बड़ी शानदार और भव्य थीं। जिनमें हरतरहकी चीजें मिल सकती थीं। एक ऐसी दुकान भी थी जिसमें सूईसे लेकर मोटरतक मिलती थी। सुनारोंकी दुकानोंकी शीशेवाली आलमारियोंमें पूर्वीय गहनोंकी प्रदर्शनीसी लगी हुई थी।

रास्तेमें कई आदमी चमड़ेकी जिल्दवाली सुनहरी अक्षरोंसे छपी हुई कुरान शरीफ बेच रहे थे। उनके पास कुरान शरीफकी इतनी छोटी-छोटी प्रतियां भी थीं जिन्हें मढ़वाकर गलेमें लटकाया जा सके या बांहपर बांधा जा सके। बहुतसे श्रद्धालु बाहों और गलोंमें गण्डे ताबीजकी तरह इन मढ़ी हुई कुरानोंको पहिने घूम रहे थे।

हर गलीमें कमसे कम एक हम्माम (स्नान घर) था। जिसमें ठण्डे या गर्म पानीसे नहानेका बढ़िया इन्तजाम था। मालिशके लिये भी कम उम्रके चुस्त सुन्दर अरबी छोकरे नौकर तथा स्नान करानेके लिये यूरोपियन देशोंकी हसीन औरतें तैयार

थीं। इनको ग्राहकोंसे अत्यन्त नम्रता पूर्वक और हँसते हुए बात-चीत करनेकी शिक्षा दी गयी थी। यहांके हम्मामोंके भीतर न जाने कितने रहस्य पूर्ण और रोमांचक कार्य होते हैं, लेकिन नये यात्रीको इन सब बातोंकी खबर नहीं रहती। वहांकी पुलिस अक्सर हम्मामोंकी तलाशी लेती और वहांसे लड़के लड़कियोंका उद्धार करती है। जो भी नया यात्री एक दफा किसी हम्माम घरमें चला जाता है, वहांका रहस्य और आकर्षण उसे बार-बार वहां जानेको बाध्य करता है।

ब्लेक स्मिथको सब चीजें दिखला रहे थे, और नवीन बातें बतला रहे थे। स्मिथको इनमें बड़ा मजा आ रहा था। हम्माम घरोंकी रहस्यपूर्ण घटनाएं सुनकर स्मिथको बड़ा ताज्जुब हुआ। ब्लेक साथ न होते तो वह शायद हम्माममें जानेकी कोशिश भी करता।

इस तरह शहर घूमते-घूमते सूरज सिरपर आ गया। बादल विहीन नीले आकाशमें सूर्य तेजीसे चमकने लगा और सुकिन वासियोंको पसीनेसे तर करने लगा।

स्मिथको यह धूप असह्य मालूम हुई। उसने जुलीसे कहा—

ओह! इस मुल्कमें तो सूरज आग बरसाता है।

जुलीने हँसते हुए कहा, अभी तो दोपहर नहीं हुआ। मध्याह्न-में सूरजकी गर्मी देखना और इस मुल्कमें तो सूरज फिर भी ठण्डा है, जरा आगे चलोगे, तब सूरजकी प्रचण्डताका पता चलेगा।

मैं धूपके मारे जला जाता हूं। मध्याह्नके सूरजसे भगवान बचाये! किसी ठण्डी जगह चलो, नहीं तो मुझे बेहोश हुआ ही समझो। स्मिथने कहा!

ब्लेकने घड़ी देखी, और बोले, हां, मिस जुली लौट चलो। गाड़ीका वक्त हो गया। तीनों जने स्टेशन आये। स्मिथको इस बातका मलाल ही रह गया कि धूपकी तेजीके कारण वह सारा शहर नहीं घूम सका। स्टेशनपर पहुँचते ही सिगनल डाउन हो गया और थोड़ी ही देरमें भक्-भक् करती हुई गाड़ी प्लेटफार्म-पर आकर खड़ी हो गयी। ट्रेनमें वे लोग सवार हुए, दस बजते-बजते गाड़ी सुकिनको लाल समुद्रके भरोसे छोड़कर चल दी।

ब्लेक, स्मिथ और जुली लम्बे-चौड़े जहांतक नजर जाय वहांतक फैले हुए मैदानको देख रहे थे। बीच-बीचमें जुलीके स्मृति पटपर पम्पनकी तसवीर खिंच जाती, ब्लेक देखते-देखते बर्टरमकी हास्य-ध्वनि सुननेका अनुभव करने लगते, स्मिथ बैठा-बैठा सोच रहा था, आगे क्या है? कैसा देश, किस तरहके आदमी देखनेको मिलेंगे?

रेलगाड़ी पूरी रफ्तारसे धुआं और आग उगलती हुई, स्टेशनके बाद स्टेशन पार करती हुई बढ़ी चली जा रही थी। दोपहरका समय हो आया। मध्याह्नका प्रखर सूर्य सिरपर आ गया, मानो चारों तरफ आग लग गयी। ठण्डे देशमें रहनेवाले यूरोपियन यात्री घबरा गये। सूडानका विस्तृत भूभाग तपने लगा। उनकी गाड़ी गर्म हो गयी। असहनीय गर्मी पड़ने लगी।

सूडानका सारा प्रदेश तवेकी तरह जलने लगा, सिर्फ आग उगलनेवाला इञ्जिन सन्-सन् करता हुआ, मुसाफिरों और गाड़ि-योंको उड़ाये लिये जा रहा था।

दोपहरका भोजन कर हमारे तीनों यूरोपियन यात्री स्लीपिं-गकार (सोनेकी गाड़ी) में चले गये और पंखेकी गर्म हवामें करवटें बदलते हुए, थोड़ी देर बाद ही सो गये।

दूसरे दिन सबेरे गाड़ी उस समय खारटूम पहुँची जिस समय मुर्गा बांग देता है—

कुकड़ूं कूं ! कुकड़ूं कूं !!

खारटूम पहुचते ही तीनोंके मुर्झाये हुए दिल खिल गये।

खारटूममें क्या पहुँचे मानो स्वर्गमें पहुँच गये। नीलके तट-पर बसा हुआ यह शहर अत्यन्त मनोरम है। इसकी इमारतें सुन्दर और सफेद, गलियां साफ, चौड़ी और हवादार हैं। धूल, धूप और गर्मीसे व्याकुल हमारे तीनों यात्री खारटूममें आकर बहुत खुश हुए। उन्हें ऐसा मालूम हुआ मानो वे अदनके खुश-नुमा बागमें आ गये हों।

फरवरी महिनेके उन दिनोंमें जब कि कड़ाकेके जाड़ेसे यू-रोपकी हड्डियां थर-थर कांप रहीं थीं, खारटूममें बसन्तकी बहार छायी हुई थी।

इसलिये गर्मी और गर्दसे परेशान, यात्राश्रमसे थके हुए मिस्टर ब्लेक, स्मिथ और जुलीके दिल खारटूमकी हवा लगते ही खुश हो गये। खारटूम स्टेशनपर उतरकर वे लोग टैक्सी

द्वारा एक शानदार और आरामदेह होटलमें जाकर टिके। होटलमें पहुंचकर ब्लेकने अपना सामान कमरेमें रखाया और स्नान घरमें घुस गये। उन्होंने खूब मलकर स्नान किया, साफ ठण्डे पानीमें नहानेके कारण उनकी सारी थकावट दूर हो गयी और शरीर भरमें स्फुर्ति आ गयी। स्नानादिसे छुट्टी पाकर, कपड़े बदलकर मिस्टर ब्लेक होटलके स्मोकिंग रूममें आ बैठे और स्मोकिंग पाइपको ताजा कर धुएंके कश छोड़ते हुए जुली और स्मिथके आनेकी प्रतीक्षा करने लगे।

थोड़ी ही देरमें मिस जुली और स्मिथ भी आ गया। नये सोफीयानी कपड़े पहिनकर, सजबज कर आयी हुई मिस जुली बड़ी भली लग रही थी। स्मिथके चेहरेपर भी प्रसन्नता झलक रही थी।

मि० ब्लेकने कहा आजका दिन और रात हमें खारटूममें ही बितानी चाहिये। दोपहरका भोजन करके दो घण्टे सो लेनेसे बची खुची थकावट भी दूर हो जायगी शामको घूमने चला जायगा।

घूमनेकी बात सुनकर स्मिथको बहुत खुशी हुयी। मिस्टर ब्लेक और जुलीसे भी स्मिथकी उत्सुकता छिपी न रही।

रातको वे लोग फिर एक कमरेमें इकट्ठा हुए। रात बड़ी प्यारी थी। क्योंकि हवामें काफी उत्तेजना थी, लम्बे लम्बे खजूरके पेड़ोंकी छाया सामनेके विस्तृत पथपर पड़ रही थी, नील नदीका पाट नीलमकी तख्तीकी तरह चमक रहा था,

चांदीके चमकदार थालकी तरह चमकते हुए चांदपर नीले आकाशका चंदवा छाया हुआ था, जिसमें छोटे सुन्दर तारे टंके हुए थे, ताड़के वृक्षोंसे छन छनकर आती हुयी चांदनी बगीचे के घासके हरे मखमलसे मुलायम लानोंपर टहलनेवाले नर नारियों को प्रमुदित कर रही थी। हवामें अपूर्व ताजगी और गन्ध थी। हवाकी मधुर गन्ध बतला रही थी कि वह खारटूमके हरेभरे बाग बगीचोंमें खिले हुए सुगन्धित पुष्पोंके परागको उड़ाकर खुद सुगन्धित बन गयी है।

एक अपूर्व समां था, मनोहर ऋतु थी, चांदनी रात थी।

मि० ब्लेक आरामकुर्सीपर लेटे हुए तमाखू पी रहे थे और रात्रिके सौन्दर्य और शान्तिका उपभोग कर रहे थे। स्मिथ उनकी पासकी कुर्सीपर बैठा हुआ चाँदनीकी शोभा निरख रहा था। पूरबका यह अपूर्व सौन्दर्य पश्चिममें कहां? स्मिथ और ब्लेक ही नहीं जुली भी चुप थी। वह भी किसीकी यादमें, किसीके विरहमें, एक मीठा दर्द महसूस करती हुयी वसन्त श्री देखनेमें मगन थी।

वातावरण शान्त और स्निग्ध था, कमरेमें सन्नाटा छाया हुआ था। मिस जुलीने सबसे पहिले शान्ति भंग की।

शामको आपलोग अकेले रह गये।

हाँ। मैं घण्टेभरतक तुम्हे खोजता रहा पर तुम्हारा पता नहीं लगा। अपनी चक्करदार कुर्सीको मिस जुलीकी तरफ घुमाते हुए मिस्टर ब्लेकने कहा, मैं समझ गया कि तुम अकेली ही

कहीं घूमने चली गयी। बहुत सुविधाजनक मौका मिल गया था न!

नहीं, नहीं। मैं सुविधाजनक मौका नहीं चाहती थी। जुली ने मुस्कराकर जवाब दिया, मैं जरा ब्रिटिश लिगेशनतक घूमने गयी थी।

ओह! तुम बड़ी फुर्तीली हो, मिस जुली। जुलीके खारटूम तक आनेका सबब यादकर मिस्टर ब्लेकने कहा, तुम समयका सदुपयोग करना जानती हो! क्षणभर शान्त रहकर फिर उन्होंने एकाएक पूछा—तुमसे जी० ग्रान्टकी मुलाकात हुयी?

नहीं। वह चला गया।

चला गया? इंगलैण्ड नहीं लौटा?

नहीं, वह पम्पनके साथ किसी रहस्यपूर्ण स्थानकी ओर चला गया। मुझे मालूम हुआ कि वे दोनों कल सबेरेकी गाड़ीसे सीनर चले गये। मिस जुलीने निराशापूर्ण स्वरमें कहा।

कल सवेरे ही?

जी हां। कितना अच्छा होता यदि हमलोग एक दिन पहले पहुंच सकते? पछताते हुए मिस जुली बोली। वे लोग एक हफ्ते पहिले खारटूम आये थे। यहां आकर ग्रेनाइटने अपने कामकी रिपोर्ट ब्रिटिश लिगेशनको दी, और छुट्टीके लिये दरख्वास्त दी। वह सीनर गया है, और पांच हफ्तेकी छुट्टी लेकर। उसने बतलाया कि वह बहुत ही जरूरी कामसे पांच सप्ताहके लिये बाहर जा रहा है। मुझे यह भी मालूम हुआ कि जब वह

यहां आया था, तब उसके साथ एक इथोपियन आदमी था। मेरा विश्वास है कि वह पम्पन ही था।

तो वे लोग अब अबसीनियाकी तरफ गये हैं! मिस्टर ब्लेकने कहा।

आपका यही खयाल है?

हां। मिस जुली, तुम यह समझलो कि सीनर जाना ग्रेनाइट और पम्पनका चरम उद्देश्य नहीं है। क्योंकि ग्रेनाइटको अगर सीनरतक जाना होता तो वह पाँच हफ्तेकी छुट्टी क्यों लेता? सीनर यहाँसे सिर्फ डेढ़सौ मील है, लेकिन वहांसे वे अबसीनियाके किनारेतक पहुंच जाते हैं। मेरा विश्वास है कि ग्रेनाइट पम्पनके अबसीनिया जानेका रहस्य जान गया है। और इसीलिये वह छुट्टी लेकर पम्पनके साथ अबसीनिया गया है। वे लोग सीनर होकर अबसीनिया जायंगे।

मिस जुलीने विचारते हुए कहा—आपका कहना ठीक हो सकता है। तब आपकी राय क्या है? क्या हमलोग कल सवेरे सीनर चलें और वहाँ ग्रेनाइट तथा पम्पनका पता लगायें।

ब्लेकने जवाब दिया, मेरा खयाल है कि सीनर जाने पर भी हमलोगोंको उनका पता नहीं लगेगा। हमलोग यह भी अन्दाज नहीं कर सकते कि वे लोग अबसीनियाके किस भागमें गये हैं। तुमको मालूम है कि सीनरसे कई रास्ते भिन्न२ इलाकों की तरफ गये हैं, मुमकिन है हमलोग वहां जाकर, उस तरफ चल पड़ें, जिससे ठीक विपरीत दिशामें ग्रेनाइट गया हो। इस

समय ग्रेनाइटका पता लगाना मुश्किल है। इसके सिवा मेरा विश्वास है कि अपना काम पूरा कर जब ग्रेनाइट लौटेगा तो यहाँ ज़ुरूर आयगा?

तब, यही ठीक रहा कि हमलोग ग्रेनाइटके इन्तजारमें यहीं रुक जांय।

हां। कुछ दिनोंतक ठहरनेके लिये यह स्थान कुछ बुरा नहीं है। लेकिन मैं इन दिनों हाथपर हाथ धरे बैठा नहीं रहूंगा। मेरा इरादा है कि इस मामलेमें मैं कुछ न कुछ करता रहूं।

मैं भी यही चाहती हूं। मिस जुली चट बोल उठी।

बहुत अच्छा। आज रात तो हम सिवा गप लड़ाने और सोनेके क्या कर सकते हैं? चलो, हमलोग पहिले भोजन करलें। फिर इस विषयमें बातचीत करेंगे।।

जी हां, सरदार। बड़ी भूख लगी है। स्मिथ इतनी देरमें सिर्फ यही बोला।

मिस जुली भी तैयार थी।

होटलके भोजनालयमें जाकर उन्होंने छककर भोजन किया। स्मिथको खजूरका मुरब्बा बहुत पसन्द आया। मिस जुलीको पनीरका बहुत शौक था। तीनो आदमी खानेके समय बिलकुल चुप रहे, सिर्फ होटलके नौकरसे किसी चीजके लानेका आर्डर दे देते थे। तीनों चुपचाप भोजन कर रहे थे, किन्तु तीनोंके दिमाग चुप न थे, वे बराबर अपना काम कर रहे थे किन्तु तीनों दिमागोंमें एक ही प्रश्न तेजीसे चक्कर लगा रहा था। वह

प्रश्न बर्टरम चारन सम्बन्धी न था। ग्रेनाइट सम्बन्धी भी नहीं, वह सिर्फ पम्पन सम्बन्धी था। तीनों एक ही बात सोच रहे थे कि पम्पन अबसीनिया क्यों जा रहा है ? वहां जानेका गुप्त रहस्य क्या है ? क्या जी० ग्रांटसे उसने सब बातें कह दीं ? वे बातें क्या हो सकती हैं ?

भोजन करके ये लोग होटलके बाहरके लानपर ताड़के पेड़ों-की छायामें बैठकर काफी पी रहे थे और बसन्तकी मधुर रात्रिका आनन्द उठा रहे थे।

मिस जुलीने अपने पतले-पतले ओठोंसे काफीके प्यालेको चूमकर रखा हो था कि मिस्टर ब्लेक उसकी तरफ झुके और बोले।

हम लोग सबेरे मिलनेवाली सबसे पहिली गाड़ीसे ही सीनर चलेंगे, मिस जुली। सीनर चलनेपर, मुमकिन है हमें ग्रेनाइट और पम्पनका ठीक ठीक पता लग जाय। हमें सीनर जल्दीसे जल्दी पहुंचना चाहिये।

आश्चर्य पूर्वक जुलीने मि०ब्लेककी तरफ देखा। क्योंकि ब्लेक ही थोड़ी देर पहिले सीनर जानेकी निरर्थकता प्रगट कर चुके थे।

आपने इतनी जल्दी अपना मत परिवर्तन क्यों कर दिया ? जुलीने पूछा।

बहुत बड़ा कारण है। मि० ब्लेकने डिशमें कप रखते हुये कहा—सबसे बड़ा कारण यह है कि मैं बर्टरम चारनके पहुंचनेके पहिले ही पम्पनको सब बातोंसे सावधान कर देना चाहता हूं।

बर्टरम चारन। मिस जुलीने अवाक् होकर कहा, बर्टरम ! इस समय वह यहांसे हजारों मिल दूरपर होगा। आप क्या सपना देखा करते हैं ?

नहीं। स्वप्न नहीं देखता। ठीक कह रहा हूं। बर्टरम हमारे पास ही है। वह देखो, ब्लेकने इशारा किया, और मिस जुली तथा स्मिथने घूमकर देखा, होटलके बाहरके दूसरे लानपर एक बेंतकी कुर्सीपर बैठा हुआ खल्वाट खूसट, मुस्कराता हुआ सिग-रेट पी रहा था। उसके घुटे हुये सिरपर चान्दकी रोशनी पड़ रही थी और उसका सिर बिलियर्ड गेन्दकी तरह चमक रहा था।

निश्चय ही वह बर्टरम चारन था।

बर्टरमने देखा कि तीन चेहरे उसे गौरसे देख रहे हैं। यह देखते ही वह खिल-खिलाकर हँसा, और कुर्सी छोड़कर उनकी तरफ बढ़ा।

तीनोंके पास आकर बर्टरम चारन मिस्टर ब्लेकसे बोला—

कहो, मेरे दोस्तो ! क्या हाल-चाल है ? हम लोगोंका यह मिलन भी क्या सिर्फ संयोगकी बात है ?

तुम ठीक कहते हो, बर्टरम ! ब्लेकने कहा।

इससे सिद्ध है कि तुम लोग मेरे रास्तेमें आगे आगे चल रहे हो। अच्छा है। तुम लोग मेरा रास्ता साफ करते चलो।

बर्टरमके इस शुष्क मजाकपर भी ब्लेक, जुली और स्मिथ हँसे।

लेकिन, दोस्तो। तुम मुझे पकड़कर रखना चाहते हो,

और मैं किसी औरको पकड़ाना चाहता हूं। तुम लोगोंका लक्ष्य मैं, और मेरा लक्ष्य कोई और। तब भी तुम लोग मौज करते हुये घूम रहे हो, और मैं कर्तव्यके बन्धनमें बंधा हुआ, घूम रहा हूं।

लेकिन कितना आनन्दपूर्ण कर्त्तव्य है। ब्लेक फिर बोले —

नहीं, दोस्त! आनन्द कहां है? तुम लोग खारटूममें बसन्तकी शोभा देखते हुए घूम रहे हो और मैं पीरी ड्रुसीलीके हत्यारेको गिरफ्तार करनेके लिये जेबमें वारण्ट डाले घूम रहा हूं किसी आदमीके गलेमें फांसी लगानेके लिये दौड़ते फिरना आनन्दपूर्ण थोड़े ही हो सकता है। खैर, जो हो। दोस्तो! तुम लोगोंको देखकर मैं बहुत खुश हुआ और उम्मीद करता हूं कि निकट भविष्यमें फिर दर्शन होंगे। विदा।

एक अभिनेताकी तरह स्पीच झाड़कर बर्टरम चल दिया। तीनों उसके नाटकीय ढङ्गके जानेको देखते रहे, जबतक कि वह आँखोंसे ओझल नहीं हो गया।

११

राज भवनके सिंहद्वारपर

अत्यन्त कठोर पथरीला रास्ता टेढ़ामेढ़ा होता हुआ, पहाड़ियोंके ऊपर नीचे, दांए बांये होता हुआ, सांपकी तरह चला जा रहा था। ऐसे बीहड़ पथरीले, ऊंचे नीचे रास्तेसे पैदल जाना मुश्किल ही नहीं, एक प्रकारसे असम्भव सा था।

किन्तु, पथरीले चट्टानोंपर चलनेमें चिरभ्यस्त खच्चरोंके लिये यह रास्ता सुगम है। वे बड़े मजेमें चढ़ और उतर जाते हैं। पहाड़ी खच्चर सवारीके साथ साथ अपनी पीठपर काफी बोझा लादकर दिनभर चलते रहते हैं। मानो परमात्माने इस जगहके लिये ही खच्चरोंको पैदा किया हो।

पहाड़ियोंकी श्रेणी त्रिभुजाकार थी। बीचमें घना जंगल पड़ता था। कहीं कहीं बंजर जमीन भी मिलती थी। पहाड़ियोंके बीचमें लम्बे-लम्बे चट्टान सिर उठाये खड़े थे। किसी किसी पहाड़की चोटी मानो आकाशसे बातें कर रही थी। कहीं

कटीली झाड़ियां और नागफनीका कांटेदार जंगल था । झाड़ियों और ऊंचे पेड़ोंपर सैकड़ों हजारों घोंसले लटक रहे थे । कहीं युक्लिपटसके पेड़ थे । मतलब यह कि रास्ता पहाड़ी था और पहाड़ और जंगलकी विविधताओंसे परिपूर्ण था

पहाड़ियोंके बीच-बीचमें खड्ड थे और उनमें काफी झाड़-झंखाड़ थे । उनके बीचमें आदमीके बराबर पेड़ थे जिनमें थाली-के समान गोल गोल फूल थे ।

दो यात्री पहाड़ी रास्ता पार करते हुये आगे बढ़े, जैसे ही वे लोग पहाड़ीके शिखरपर पहुंचे, सूर्यकी किरणोंमें जगमगाता कमहारा राजमहलके सिंहद्वारका गुम्बज दिखलायी पड़ा । कम-हारा राजमहल महामान्य नीगस बहर करीनका था । वे अब-सीनियाके अन्तर्गत कमहारा प्रदेशके एकमात्र अधीश्वर थे ।

कमहाराके शाही महलके सिह द्वारका गुम्बज देखकर एक यात्रीकी आंखें भींग गयीं । उसको पन्द्रह वर्षकी पुरानी स्मृति ताजा हो गयी । उसे वह दिन याद आया जब वह इसी महलमें आनन्दपूर्ण जीवन व्यतीत करता था । जब वह कमहारा राज्य-का खजांची था । और फिर एक पाजीके विश्वासघातके कारण वह अपनी मातृभूमिसे निर्वासित ही नहीं हुआ, बल्कि अपने दयालु प्रभुकी नजरोंमें विश्वासघाती और अपनी प्रेयसी की नजरोंमें घृणित बन गया ।

यात्री पुरानी बातें यादकर व्यग्र और क्षुब्ध हो उठा । वह यात्री और कोई नहीं, पम्पन था ।

ग्रेनाइटने तिरछी नजरोंसे अपने साथीको देखा और इस बातका अन्दाज लगाने लगा कि वह क्या सोच रहा होगा? कमहारा राजमहल देखकर उसके भीतर कौन-कौनसे भाव जागृत हो रहे होंगे? उसकी मानसिक अवस्था कितनी अस्थिर हो रही होगी? वाकई, बहुत कम आदमियोंको अपने जीवनमें इतना आनन्द और अपार कष्ट भोगना पड़ा होगा। एक राज्य-का खजांची पन्द्रह वर्ष बाद, गूंगा बनकर विश्वासघाती समझा जाकर, दीन-हीन हालतमें लौट रहा हो। उसकी मानसिक हालत क्या होगी? यह अन्दाज लगाना कम मुश्किल नहीं है।

लेकिन, पम्पन क्षणभरको चञ्चलताके बाद ही स्थिर हो गया था। उसके चेहरेपर किसी तरहके भावावेगका चिह्न न था। उसके चेहरेको देखकर किसी तरह अन्दाज लगाना मुश्किल था। पम्पनका चेहरा, आंखें, ओठ बिलकुल स्थिर थे मानो काले पत्थरकी प्रतिमा हो।

तब भी ग्रेनाइट समझदार आदमी था। मानव हृदयके गुप्त भावोंका अन्दाज लगाना, उनको समझना और अनुभव करना वह जानता था। वह जानता था कि इस समय पम्पनका क्या भाव हो सकता है। पम्पनके भावोंको अपने दिलमें अनु-भव करना ग्रेनाइटके लिये सर्वथा सुलभ था। वह अलेक्जेण्ड्रिया के यूरोपियन होटलमें लिखी गयी पम्पनकी कहानीको सत्य-रूपमें सामने देख रहा था। कमहारा राजमहलके गुम्बज मानो पुकार-पुकारकर कह रहे थे कि पम्पनकी कथा सत्य है। भाग्य-

का मारा यह पम्पन नामधारी अबसीनियन, सचमुच किसी समय कमहाराके राज्यका खजांची था। कमहाराके राजप्रसादके गुम्बज मानो उसे अपने पास बुला रहे थे। उनका लक्ष्य कमहारा ही था। यहीं तक पहुंचनेके लिये पथरीले कण्टकाकीर्ण हजारों मीलतक फैले हुये दुर्गम पथको पारकर वे लोग इस पहाड़ीकी चोटीपर चढ़े थे। इसी राज महलमें पम्पनका मान संभ्रम छिपा हुआ था, इसीमें उसके युवा हृदयकी एक मात्र आशा निहित थी। अपने लक्ष्यको सामने पाकर किसे खुशी नहीं होगी? लेकिन पम्पनको नहीं हुयी। वह जबतक जेलोकी उपस्थितिमें महामान्य नीगस बहरकरीनकी सेवामें शाही कमरबन्द भेंट न कर देगा, जबतक अपने निरपराध होनेका विश्वास न दिला देगा, जबतक अपने साथ विश्वाघात करनेवालेको दण्ड न दिला देगा, तबतक उसे खुशी न होगी।

मार्सेलीज और अलेक्जेण्ड्रियामें पीछा करनेवाले उस पीले पाजीका कहीं पता न था। क्या पम्पन बने हुये ग्रेनाइटके पास कमरबन्द न पाकर वह निराश हो गया? क्या वह अपने निश्चयसे हाथ धो बैठा? अलेक्जेण्ड्रियाकी होटलकी खिड़कीमेंसे ग्रेनाइटके कमरेमें परछाहीं डालनेके बादसे वह दिखलायी भी नहीं पड़ा था। तब क्या वह लौट गया? अगर लौट गया तो वह कौन था? अगर नहीं लौटा, यदि अभी भी वह पम्पन और ग्रेनाइटका पीछा कर रहा था तो उसने बीहड़ जङ्गली पथमें पम्पन या ग्रेनाइटपर आक्रमण क्यों नहीं किया?

लेकिन बात यह थी कि उस दिनके बादसे उस अज्ञात पीली आंखोंवालेको ऐसा मौका ही नहीं दिया गया कि वह आक्रमण कर सके। क्योंकि कमरबन्दकी रक्षाके लिये ऐसा इन्तजाम किया गया था कि जब ग्रेनाइट सोता तब पम्पन पहरा दिया करता और जब पम्पन सोता तब ग्रेनाइट चौकी-दारी करता। उन्होंने कमरबन्दकी पूरी हिफाजत करनेका निश्चय कर लिया था। पीली आंखोंवालेके किसी तरहकी बाधा न दे सकनेपर भी वे लोग लापरवाह कभी नहीं हुये थे। ग्रेनाइट हर समय सजग रहता था और हमेशा आक्रमणके लिये मुस्तैद रहता था। ग्रेनाइटका विश्वास था कि वह खारटूमकी गाड़ीमें भी उनका पीछा कर रहा था। खारटूमसे वह उन्हींकी गाड़ीमें बैठ कर सीनरतक उनके पीछे-पीछे गया था। सीनरसे वह फमाका तक उनके पीछे गया। लेकिन फमाकाके आगे वह दिखलायी न पड़ा। फमाकासे ग्रेनाइट और पम्पनने खच्चरोंपर यात्रा शुरु की। उन्होंने अपने साथ सिर्फ तीन सोमाली कुली लिये थे। जो खच्चरों और सामानकी हिफाजत करते थे। इसलिये पांच आदमियोंकी टुकड़ीमें छिपकर चलना पीली आंखोंवालेके लिये असम्भव था। साथ ही वह नजदीकसे उनका पीछा भी नहीं कर सकता था। क्योंकि अगर ग्रेनाइट और पम्पन उसे पीछा करते हुये देख लेते तो सुनसान जङ्गलमें बिना उसकी हुलिया देखे न छोड़ते। सम्भवतः इसीलिये वह फमा-का तक उनके पीछे रहा और फिर गायब हो गया।

ग्रेनाइटने समझ लिया कि कमहारा राजमहलकी ओर बढ़ते देखकर वह समझ गया कि अब उसे शाही कमरबन्दकी सूरत भी देखनेको नहीं मिल सकती, और यह समझकर वह लौट गया। जो भी हो, ग्रेनाइटको यह विश्वास हो गया कि अब शाही कमरबन्द पर किसी तरहकी आफत नहीं आ सकती। पम्पनने कमरबन्दको अपने सीनेपर मजबूतीसे बांध रखा था।

कमहाराके शाही खजानेके शाही कमरबन्दको अब सिवा नीगस बहरकरीनके और कोई नहीं पा सकता था। पन्द्रह वर्ष तक उसको मारामोरा इधर-से-उधर फिरना पड़ा था, पर अब वह अपने योग्य स्थानपर पहुंच रहा था।

महामान्य नीगस बहरकरीन अपने महामूल्यवान शाही कमरबन्दको पन्द्रह वर्ष बाद पाकर क्या सोचेंगे? जिस शख्सके बारेमें उन्होंने पन्द्रह वर्षसे धारणा बना रखी थी कि वह शाही कमरबन्द चुराकर भाग गया, वही शख्स जब पन्द्रह वर्षबाद खुद महामान्यकी सेवामें उपस्थित होगा, तब महामान्य नीगसके भावोंमें अकस्मात कितना अद्भुत परिवर्तन हो जायगा? भाग्य-का कैसा विचित्र परिवर्तन है! जर और स्त्रीके लिये कैसे-कैसे षड़यन्त्र होते हैं। क्षणभरमें ही घटनाक्रममें कितना महान् परि-वर्तन हो जाता है। सूर्यकी तमाम किरणें कमहाराके गुम्बजोंको जगमगा रहीं थीं तब भी उन गुम्बजोंके भीतर कितना रहस्य-पूर्ण रोमांचकारी इतिहास छिपा हुआ था।

पन्द्रह वर्ष तक विश्वासघाती समझा जाकर अब पम्पनको

अपनेको निर्दोष साबित करनेका अवसर मिला था। यह सत्य-की विजय थी। पम्पनकी विजय थी।

किन्तु इस विजयमें कितना खूनखना हुआ था। अपराधी-का भी और निरपराधका भी। वह अपनेको निर्दोष साबितकर देगा, लेकिन निर्दोष प्रमाणित होनेसे ही क्या उसकी जुबान वापिस मिल जायगी। क्या वह उस रोमांचकारी घटनाको भूल सकेगा जब उस बेगुनाहकी ज़बान काट डाली गयी थी।

ग्रेनाइटने दुबारा अपने साथीको देखा और इसबार उसकी आंखोंमें एक अपूर्व जिज्ञासाका भाव पाया। मानो पम्पनकी आंखें पूछ रहीं थीं कि क्या तुम इस प्रदेशको पहिचानते हो? क्या तुमने इस महल और इसकी गुम्बजको पहिले कभी देखा था?

पम्पन आगे आगे चल रहा था। यहांकी भूमिसे वह अच्छी तरह परिचित था। वे पहाड़से उतरकर समतल भूमिकी तरफ आ रहे थे। ढालू रास्ता होनेके कारण वे खच्चरोंसे उतरकर पैदल चल रहे थे। रास्ता ढालू था और संकड़ा भी था। बीचमें चट्टान और ढोंके थे। ऐसे ढालू पत्थरीले और संकड़े रास्तेसे चलनेमें बड़ी मेहनत पड़ती थी, पर इस तरफ किसीका ध्यान नहीं था। ढालू रास्ता पार करके वे लोग पहाड़की तलहटीमें पहुंच गये। सूरज पहाड़की ओट छिप गया, लेकिन उसकी अस्त प्रायः रंगीन किरणें अभी भी जंगलमें अन्धकारसे युद्धकर रहीं थीं। पृथ्वी और आकाशकी सीमाओंके पास सूर्यका लाल गोला अन्धकारमें समा रहा था।

चलते-चलते वे लोग कमहारा राज प्रसादके नजदीक आ गये अधिकसे अधिक वे लोग राजमहलसे दो मीलकी दूरीपर थे। सामने राजमहल सिर उठाये खड़ा हुआ था और चारों तरफ फैला हुआ पार्वत्य प्रदेश जंगली वातावरणसे भरा हुआ था। क्रमशः अन्धकार बढ़ता जा रहा था, मानों प्रकृति नटीके वेश परिवर्तनके लिये विश्व-सूत्रधार संसारके मंचपर काला पर्दा डाल रहा हो। वे तेजीसे कदम बढ़ाते हुये राजमहलको ओर बढ़ रहे थे। वे चाहते थे कि रातका अन्धेरा गाढ़ा होनेके पहिले ही राजमहलके द्वारपर पहुंचा जा सके। जङ्गली परिस्थितिमें परिवर्तन होनेलगा। जंगली पेड़ों, झाड़ियों, और टीलोंके स्थानपर हरे भरे खेत, बाग बगीचे और किसानोंकी झोपड़ियोंमें टिमटिमाते चिराग दिखलायी पड़ने लगे। बीच-बीचमें जङ्गली जानवरों और देहाती गाड़ियोंके चलनेकी चरचर ध्वनि सुनायी पड़ने लगी। हरे भरे खेतोंको पार करनेके बाद, उन्हें राजमहल जानेवाली पक्की सड़क मिली। सड़क चौड़ी और साफ थी। वह घूमती हुई सीधा राजमहलको जाती थी।

राजकी सड़कपर चलते-चलते उनके दांये बांये बाग बगीचे छूटते जा रहे थे। जिनमें अबसीनियन फल, फूल, लता और पेड़ोंकी प्रदर्शनी सी लग रही थी। लाल, पीले, बैगनी, हरे, गुलाबी रङ्गके फूल खिले हुए थे। आगे चलकर बड़े बड़े पेड़ोंकी ओटमें राजमहल छिप गया। रातका सन्नाटा क्रमशः बढ़ने लगा, पर बगीचोंकी हवा खाकर आनेवाली वायुकी लहरोंमें मनको प्रसन्न करनेवाली

ताजा गन्ध भरी हुयी थी। टेढ़े राजपथ और बड़े बड़े पेड़ोंसे राजमहलको छिपानेवाले बगीचोंको पारकर वे सीधी-सादी सड़कपर आ गये। कमहाराका धवल राजप्रासाद फिर दिखलायी पड़ने लगा। अन्धकारमें सफेद राजमहल चान्दीके पहाड़की तरह चमक रहा था। आकाश चुम्बी गुम्बज सिर ऊंचा किये खड़े थे। राजमहल ऊंची जमीनपर बना था। उसकी रक्षाके लिये भूरे पत्थरोंकी मोटी दिवाल बनी हुयी थी, जिसमें बड़े-बड़े फाटक लगे हुये थे। दीवालके नीचे काफी गहरी और चौड़ी खाई खुदी हुयी थी और उसमें पानी भरा हुआ था। महलकी रक्षाके लिये पूरा इन्तजाम था। ग्रेनाइटने आश्चर्यपूर्वक यह सब देखा, लेकिन पम्पनके चेहरपर किसी तरहका ताज्जुबपूर्ण भाव न था। उसके लिये उस स्थानमें कोई आकर्षण नहीं था यह नहीं कहा जा सकता, बल्कि यही कहना ज्यादा ठीक होगा कि इस जगहका आकर्षण ही था जो पम्पनको इतनी दूर खींच लाया था। तब भी वह निश्चित गतिसे कदम बढ़ाता हुआ बढ़ा चला जा रहा था। वह देख रहा था कि ग्रेनाइट बार-बार उसकी तरफ मर्मभरी दृष्टिसे देख रहा है। वह यह भी समझ रहा था कि ग्रेनाइटके इस तरह देखनेका मतलब क्या है, पर तब भी वह बिना किसी बातका, उत्तर दिये बढ़ा चला जा रहा था। उसका प्यारा राजप्रसाद उसके सामने था। पहाड़ी पथ और बड़े-बड़े पेड़ोंवाले बागबगीचे पारकर जैसे ही वे लोग राजमहलके सामने वाली सड़पर आकर दो-ढाई फर्लाङ्ग चले, चौंककर रुक गये।

पेड़ोंके झुरमुटमेंसे कई सिपाही उनका रास्ता रोककर खड़े हो गये। सिपाही काले थे, लम्बे, हट्टे-कट्टे रौबीले शाही सिपाहियोंकी पोशाक पहिने हुये और अस्त्र शस्त्रोंसे सुसज्जित थे। वे भेड़की रंगीन खालके कपड़े पहिने हुये थे, उनके शिरस्त्राण बड़े विचित्र थे, जिनसे उनके सिर खुले हुये होने पर भी चारों तरफसे सुरक्षित थे। वे लाल और पीले झब्बे और पट्टे पहिने हुये थे। हर एककी कमरसे खड्ग लटक रहा था। वे चुप थे, किन्तु उनके चेहरोंसे और आंखोंसे दृढ़ता टपक रही थी। वे अपना बातके सच्चे, इरादेके पक्के और जानपर खेलनेवाले बहादुर सिपाही मालूम पड़ते थे। ग्रेनाइटने उनके एकाएक आगमनसे चौंककर उनकी तरफ देखा, वह क्षणभर उनकी पोशाक तड़क-भड़क और उनके चेहरे देखता रहा।

उन सिपाहियोंमेंसे जो शेरकी खालकी शानदार पोशाक पहिने हुये था, जिसके चमड़ेके पट्टेपर चांदीका पत्तर चढ़ा हुआ था, जिसके सीनेपर सोने और चांदीके तगमें लटक रहे थे, जो चमाचम चमकता हुआ मुकुट पहिने हुये था, जो सफेद घोड़ेपर सवार था, जो सबसे रौबीला और ताकतवर मालूम पड़ता था, घोड़ा बढ़ाकर, ग्रेनाइटके साम्हने आया और इथोपियन भाषामें कुछ बड़बड़ाया।

ग्रेनाइट उसकी भाषा समझ न सका, किन्तु उसके बोलने के ढङ्ग और स्वरसे वह समझ गया कि उसने जो कुछ कहा, मित्रभावसे ही कहा होगा। इसलिये उसने अपनी राइफल कन्धे

पर रख ली, क्योंकि उन्हें देखते ही ग्रेनाइटने राइफल तान ली थी और घुड़ सवारकी तरफ बढ़कर अरबीमें बोला। धन्यवाद! आप लोग अगवानीके लिये आ गये। धन्यवाद! हम लोग महामान्य नीगसकी सेवामें उपस्थित होने आये हैं। हमें महामान्य नीगसके दरबारमें हाजिर होकर बहुत जरूरी सन्देश सुनाना है।

जत्थेदारने भी अरबीमें जवाब दिया।

महाशयजी, आपका स्वागत है, उसने कहा। पम्पनकी उपेक्षा कर ग्रेनाइटके चेहरेको गौरसे देखते हुये उसने कहा—जनाब, मेरे महामान्य अधीश्वर और शाह नीगस वहरकरीनको आपके आनेकी सूचना मिल चुकी है। उन्होंने अत्यन्त अनुग्रह पूर्वक आपको उनकी सेवामें हाजिर करनेके लिये मुझे यहां भेजा है। मैं आपका स्वागत करता हूं।

धन्यवाद! तुम्हारे महामान्य नीगस वहरकरीनने हम लोगों का स्वागतकर जो अपार कृपा दिखलायी है, उसके लिये हम लोग अनुगृहित हैं। ग्रेनाइटने जवाब दिया। ग्रेनाइटके नम्रतापूर्ण सभ्यजनोचित उत्तरको सुनकर घुड़सवार हंसा, और सम्मान प्रकट करते हुये अपना सिर हिलाया। इसके बाद उसने अपने घोड़ेका मुंह अन्य घुड़सवारोंकी तरफ घुमाया और अधिकार पूर्ण स्वरसे कुछ आज्ञा दी। घुड़सवारकी आज्ञा पाते ही सब घुड़सवारोंने अपने-अपने घोड़ोंका मुंह राजमहल की ओर कर दिया, और घुड़सवारका इशारा पाकर ग्रेनाइट की छोटी टुकड़ी सवारोंके पीछे-पीछे आगे बढ़ी।

इस घटनाके बाद फिर उनके मार्गमें किसी तरहकी बाधा नहीं पड़ी। एकाएक घुड़सवारोंके आ जानेसे विपत्तिकी आशंकासे ग्रेनाइट चौंक गया था, पर क्षणभर बाद ही उसे मालूम हो गया कि उसकी आशङ्का निर्मूल थी। यही नहीं, बल्कि इस प्रकारकी अयाचित अनुकम्पाके कारण वह मन ही मन चकित भी हुआ पर उसनेअपने मनका यह भाव चेहरेपर न आने दिया। लेकिन वह यह जरूर सोच रहा था कि नीगसको उनके आनेकी खबर कैसे लगी? किन्तु नीगससे मुलाकात होनेकी प्रसन्नताने इस प्रश्नको जहांका तहां छोड़ दिया।

वह बढ़ा चला जा रहा था और सोच रहा था कि नीगससे मुलाकात करनेकी उसकी आशा कितनी शीघ्र फलीभूत हो रही है। वह अपने उद्देश्यकी सफलतापर भीतर ही भीतर खुश हो रहा था। सिर्फ नीगसको उनके आनेकी खबर कैसे लगी, यही एक प्रश्न रह रह कर उसके जीमें उठ रहा था।

ताज्जुबकी बात है, ग्रेनाइटने मन ही कहा, अबसीनियाके इस प्रदेशमें तार वगैरहकी सुविधा नहीं है। बीसवीं सदीके वैज्ञानिक आविष्कारोंके व्यवहारकी तो बात ही अलग, यहांके बहुतसे आदमियोंने तो उनका नाम भी नहीं सुना होगा। इस जंगली और पार्वत्य प्रदेशमें समाचारोंके भेजने-पानेके आधुनिक साधन न होने पर भी नीगसको हमारे आनेकी खबर कैसे लग गयी?

ग्रेनाइट फिर सोचने लगा।

गोकि युद्धकी परिस्थिति अबसीनियाको घेरे हुये है, पर मालूम होता है नीगस बहरकरीन और उसकी प्रजाको युद्धसे कुछ सरोकार नहीं है। वह युद्धसे बिलकुल अलग है। अब-सीनिया जैसा लम्बा-चौड़ा देश, जिसका हरएक प्रदेश सैकड़ों मील लम्बे पहाड़ोंसे एक दूसरेसे जुदा हो रहा है, जहांपर एक प्रदेशका मालिक अपने क्षेत्रमें पूर्ण स्वतन्त्र और दूसरेका कट्टर विरोधी है। ऐसी हालतमें अगर हरएक प्रदेशका स्वामी अपने अधिकृत प्रदेशोंमें आनेजानेवालोंपर कड़ी निगाह रखनेके लिये अपने सिपाही तैनात रखे और तुरत खबर पा जाय तो ताज्जुब क्या है?

इस कदर सोचते-सोचते ग्रेनाइटने आंखें उठाकर देखा तो वह महलके सामने तक पहुंच गया था। उनका दल महलकेसामने-वाले मैदानमें आ पहुंचा था। महलके सामनेका मैदान काफी बड़ा था। उसमें अनगनित तम्बू लगे हुए थे, मालूम होता था मानो इस प्रदेशके सारे लड़ाकू मर्द महलके बाहर तम्बू तानकर बैठ गये हों। इस असाधारण तैयारीका कारण ग्रेनाइटकी समझमें न आया! तम्बूओंकी कतारें पार करता हुआ ग्रेनाइटका दल महल-के दरवाजेपर आया। महलका दरवाजा बहुत ऊंचा था, इतना ऊंचा कि कोई भी हाथीपर खड़ा होकर भीतर चला जाय। शाही महलके दरवाजेके किवाड़ोंपर लोहेकी मोटी चादर चढ़ी हुई थी और हथियारबन्द सिपाहियोंका जत्था गश्त लगा रहा था।

घुड़सवार सिपाहियों और ग्रेनाइटके दलके दरवाजेतक पहुंचते ही, शाही दरवाजेके दरवानने पहिले घुड़सवारको और फिर ग्रेनाइटको सलाम किया। दो मिनटमें ही चर्र-चर्र शब्द करता हुआ दरवाजा खुल गया और वे लोग भीतर चले गये। उनके भीतर जाते ही फिर चर्र-चर्र करता हुआ दरवाजा बन्द हो गया। लोहेकी मोटी जंजीरें दरवाजेमें लगे हुए लोहेके कड़ों-में झूलने लगीं। पम्पनके चेहरेको गौरसे देखनेपर ग्रेनाइटको मालूम हुआ कि पम्पनके चेहरेपर सन्देहकी रेखा खिंच गयी है। ग्रेनाइट चौंक गया? पम्पन किस बातका सन्देह कर रहा है? पम्पनके हृदयमें किन भावनाओंने संग्राम मचा रखा है। वह कौन-सी आशंकासे विचलित हो उठा है? ग्रेनाइट सोचने लगा।

बड़ी विचित्र परिस्थिति है। अवस्था ऐसी थी कि बात-चीत करना मुश्किल था। इसीलिये ग्रेनाइटने पम्पनसे बातचीत करनेका प्रयत्न नहीं किया। बल्कि उसने सजग और हर तरहकी परिस्थितिका मुकाबिला करनेके लिये प्रस्तुत रहनेका निश्चय कर लिया, गोकि उसे खुद किसी तरहकी आपत्तिकी आशंका नहीं थी।

लेकिन पम्पनका संशयापन्न हो जाना ठीक हो सकता था। क्योंकि पन्द्रह वर्ष पहिले इसी महलमें उसके साथ कितना बड़ा विश्वासघात किया गया था, वह उसे भूला न था। मुमकिन है, अभी भी उसके दुश्मन महलमें मौजूद हों। यहांकी वास्त-विक परिस्थितिको पम्पनके सिवा कौन समझ सकता था?

वे लोग शाही महलके फाटककी महराबके नीचेसे निकल कर एक चौड़े घुमावदार रास्तेकी मोड़पर आये।

फाटकके भीतर और महलके सामने मैदान था। मैदानपर घासकी चादर बिछी हुई थी। बीच-बीचमें क्यारियां बना दी गयीं थीं। जिनमें किस्म-किस्मके सुगन्धित और रंगीन फूल खिले हुए थे। छोटे-छोटे रास्तोंके चौराहोंको बेलसे छादिया गया था। मैदानके बीचमें फव्वारे लगे हुए थे जिनमेंसे सैकड़ों धार बनकर पानी बरस रहा था। मैदानके किनारोंपर युक्लिप-टसके ऊंचे पेड़ थे, जिनकी पत्तियां हवामें हिल रही थीं। लम्बे-लम्बे यूक्लिलपटसके पेड़ोंमें महलका अधिकांश भाग छिप गया था। पर पेड़ोंकी कतारोंके बीचमेंसे महलकी झलक दिखलायी पड़ रही थी।

महलके सामनेकी शोभा देखता हुआ ग्रेनाइट पम्पनके साथ आगे बढ़ा।

शाही दरवाजेसे आनेवाला रास्ता आगे चलकर दो तरफ जाता था। दाहिने तरफ जो रास्ता जाता था, वह एक लम्बी झीलके किनारेपर था। झील प्राकृतिक नहीं किन्तु बनावटी थी और उसके बीचमें एक फव्वारा था। जिसमें परीकी मूर्ति बनी हुई थी, परी चक्कर लगा रही थी और उसके पंखों, कानों, आंखों, मुंह और स्तनोंसे पानी बरस रहा था। झीलका पानी साफ था और उसमें फव्वारे, राजमहल, सिपाहियों और पेड़ोंकी छाया प्रतिबिम्बित हो रही थी। सामने राजमहलकी

भव्य इमारत थी। जिसके आगे भैंसेसे मोटे ताजे काले हब्शी जवान नंगी तलवारें लिये पहरा दे रहे थे।

पम्पन और ग्रेनाइटके आगे आगे चलनेवाले घुड़सवार झील के किनारेके रास्तेसे बढ़ते हुए एक दालानके सामने रुके। दालानकी छत भी पत्थरकी टालियोंसे छायी हुयी थी। उसके खंभे भी पत्थर ही के थे। दालानमें बहुतसे गुलाम भिन्न भिन्न काम कर रहे थे। गुलामोंने नीची निगाहसे आगन्तुकों को देखा और अपने काममें लग गये, क्योंकि उनके सामने ही चमड़ेके कोड़े लिये हुये चौकीदार टहल रहे थे। दालान पारकर वे एक दूसरे सहनमें पहुंचे। वहां पहुंचकर वे लोग अपने अपने घोड़ोंसे उतर गये। सामने महलका द्वार था। घुड़सवारोंके उतरते ही ग्रेनाइट समझ गया कि अब भीतर जाना होगा। उसने फिर एकबार पम्पनकी तरफ ताका उसकी आंखोंमें संशय भरा हुआ था। ग्रेनाइट मन ही मन व्यग्र हो गया कि आखिर मामला क्या है? पम्पनकी आंखोंमें इतना संशय क्यों है? किन्तु उस समय भी बातचीत करने लायक परिस्थिति नहीं थी, इसलिये ग्रेनाइटने अपनी उत्सुकताको दबाना ही उचित समझा।

गुलामोंके झुण्डके झुण्ड काम कर रहे थे। वे लोग चमड़े-की आधी बांहकी कमीज पहिने हुए थे। उनके हाथ, पैर और नाक सिर नंगे थे। गुलामोंमेंसे कुछ लोग सवारोंको देखकर दौड़े और घोड़ोंकी रास पकड़कर खड़े हो गये। गुलामोंके रास थामते ही एक एक करके सब सवार उतर पड़े, सब घोड़े एक

कतारमें खड़े कर दिये गये। इसके बाद एक अफसर सामने आया, वह भी रोबीली पोशाक पहिने हुए था। उसने आते ही घुड़सवारोंके सरदारके साथ फौजी अभिवादनका आदान प्रदान किया। उसने अरबी भाषामें कहा—महाशय! अपने आदमियोंको हमारे साथ भेज दीजिये, हम उन्हें विश्रामालयमें स्थान दगे और स्नान भोजन आदिका भी प्रबन्ध कर देंगे। ग्रेनाइटने अपने खच्चरवाले साथियोंको उनके साथ जानेका इशारा किया। वह ग्रेनाइटके तीनों आदमियोंको लेकर चला गया, तब घुड़-सवार सरदारने ग्रेनाइटसे कहा—महाशयजी। आप भी थक गये होंगे, आपके विश्रामका भी प्रबन्ध करूं।

जी हां। आपकी कृपाके लिये हार्दिक धन्यवाद। सबसे पहिले आप स्नानका प्रबन्ध करवादें तो बड़ी कृपा हो। ग्रेनाइटने घुड़सवार सरदारको लक्ष्यकर कहा;

जनाब! स्नानका प्रबन्ध हो गया। आप मेरे पोछे पीछे आइये।

वे लोग सरदारके पीछे २ सीढ़ियोंपर चढ़ने लगे। आगे आगे सरदार था, और वे लोग सरदारके पीछे सीढ़ियोंके ऊपर चढ़ रहे थे। आगे आगे सरदार था, और उसके पीछे पम्पन और ग्रेनाइट जा रहे थे। थोड़ी देर पहिले पम्पनकी आँखोंमें सन्देहका जो भाव शुरूसे झलक रहा था, ग्रेनाइटके हृदयमें भी उसी भावने हलचल मचाना शुरू कर दिया। ग्रेनाइटको भी मालूम होने लगा कि दालमें कुछ काला है तब भी ग्रेनाइट पूरी सावधानी और दिलेरीसे सीढ़ियां चढ़ने लगा।

ग्रेनाइटके मनमें सन्देह होनेका कारण घुड़सवार सरदारका व्यवहार था। गोकि अपनी ज़ुबानसे उसने अभी तक ऐसी कोई बात नहीं कही थी कि जिसपर सन्देह किया जा सके। लेकिन उसका बरताव ऐसा था जिसके कारण सन्देह उत्पन्न होना स्वाभाविक था। वह जब बात करता था तब ग्रेनाइटकी तरफ ही मुखातिब होता था, पम्पनकी पूर्ण उपेक्षा कर रहा था, ग्रेनाइटने इसका मतलब नहीं समझा। क्योंकि जो शख्स इसी महलमें एक दफा खजांची था, क्या उसको पहिचाननेवाला इस महलमें कोई न रहा था। घुड़सवारने एक दफा भी आंखें उठाकर पम्पनकी तरफ नहीं देखा, मानो ग्रेनाइट अकेला ही है पम्पन उसके साथ है ही नहीं।

ग्रेनाइट और पम्पन साथ ही थे, साथ ही हैं, यह देखकर और जानकर भी घुड़सवारने पम्पनकी उपेक्षाकी, उसे आंख उठाकर ताका भी नहीं, यह अस्वाभाविक था। उन्हींकी जातिका लम्बा चौड़ा आदमी सामने खड़ा हो और अपनी ही जातिवाले आदमीको सामने पाकर अपनी जातिवालेसे बात न करके दूसरी जातिवालेसे बात करना और उसका आदर सत्कार करना सचमुच ताज्जुबमें डाल देनेवाली बात है। इससे सिद्ध होता है कि वह किसी खास मतलबसे पम्पनकी उपेक्षा कर रहा था। अन्यथा यह कभी मुमकिन नहीं था कि वह पम्पनको लक्ष्य किये बिना रह सके। संभव है उसे पम्पनसे बात चीत न करनेका हुक्म मिला हो। और अगर ऐसा है तो

निश्चय ही ये लोग भीतर ही भीतर हमें फंसानेके लिये जाल बुन रहे हैं। ग्रेनाइट सोच रहा था।

जान बूझकर की गयी उपेक्षा निश्चय किसी गहरे मतलबसे खाली नहीं है। मालूम होता है पप्पनको न पहिचाननेका ढोंग किसी तरहकी स्वार्थ सिद्धिकी भूमिका है। संभव है, ये लोग अपना कोई गूढ़ मतलब हल करना चाहते हों। वह मतलब क्या है? वह कौन सा स्वार्थ है?

मुमकिन है, घुड़सवारके इस व्यवहारमें उसका व्यक्तिगत स्वार्थ साधन न होता हो, सम्भव है वह अपने मालिककी आज्ञा पालन कर रहा हो। जो भी हो, घुड़सवार सरदारका न सही उसके मालिकका ही कोई गूढ़ उद्देश्य हो। लेकिन उसकी इस आज्ञाके पीछे कोई न कोई प्रयोजन जरूर है। क्या वह मतलब पाप पूर्ण हो सकता है? क्या ये हमारे साथ किसी तरहकी धोखेबाजी की चाल चलना चाहते हैं? क्या ये लोग हम दोनोंको किसी जालमें फंसाना चाहते हैं? इसी तरहके विचार ग्रेनाइटके दिमागमें चक्कर लगाने लगे।

किन्तु उस हालतमें किसी भी शंकाका समाधान नहीं हो रहा था। समाधान असम्भव था। ग्रेनाइटने बहुत सोच विचार कर यही समझा कि सिवा भविष्यमें घटनेवाली घटनासे यथा संभव सावधान रहनेके वह इस समय कुछ भी नहीं कर सकता। ग्रेनाइटने सोचा, इस समय यही मुनासिब है मनके भाव मनमें ही रखे जायं और सावधान रहा जाय। जब तक महामान्य

नीगससे मुलाकात नहीं होती तभी तक विपद्की आशंका है, महामान्य नीगस बहरकरीनसे मुलाकात होते ही भय और सन्देहकी कोई बात न रह जायगी।

सीढ़ियां पारकर जैसे ही वह महलके द्वारपर पहुंचा उसने घूमकर पम्पनको ताका। उसकी आंखें वैसी ही सन्देहपूर्ण बनी हुयी थी, लेकिन चेहरेपर किसी तरहका खास भाव नहीं था। उसकी आंखें स्थिर थीं मानो वह कोई स्वप्न देखता हुआ चल रहा हो। मानो पम्पनका शरीर चल रहा हो, मन किसी दूसरी दुनियामें हो।

महलके भीतरी द्वारसे वे लोग एक बड़े भारी दालानमें आये। दालान काफी लम्बा चौड़ा था, उसमें लम्बे, गोल खंभे लगे हुए थे। खंभोमें शेरोंके सिर और खालें लटक रही थीं।

दालानमेंसे कुछ दासियां भी आ जा रही थीं जो कीमती रेशमी पोशाक पहिने हुए थीं। पर किसीने भी उनकी तरफ नजर उठाकर नहीं देखा। जो आयी आंखें नीची किये हुए, जो गयी नजर जमीनपर गड़ाये हुए। वे दालान पारकर आगे बढ़े तो किसी अज्ञात स्थानसे आती हुई स्वर लहरी उनके कानोंमें पड़ी। वहांसे आगे बढ़कर वे लोग एक लम्बे रास्तेसे जाने लगे। दांये-बांये घूमते-घामते वे लोग लगभग दस मिनटतक चलते रहे। इसके बाद जहां रास्ता खत्म होता था वहांपर एक दरवाजा था जो बन्द था। घुड़सवार सरदार दरवाजेके सामने खड़ा हुआ, और किवाड़ खटखटाया। खटखटके बाद ही दरवाजा खुला पर

किसी आदमीने नहीं खोला बल्कि किसी अज्ञात स्थानमें बैठे हुए किसी व्यक्तिने खटखट शब्द सुना और कोई यंत्र घुमाया, यन्त्र घूमते ही दरवाजा खुल गया।

इस कार्यवाहीसे आश्चर्य चकित ग्रेनाइटको सम्बोधन करते हुए घुड़सवार सरदारने कहा, जनाब सामनेके कमरोंमें नहानेका इन्तजाम है। आप निश्चिन्त होकर स्नान कीजिये तबतक आपके लिये नाश्ता तैयार हो जायगा।

ग्रेनाइटने फिर एक बार धन्यवाद दिया और गमनोद्यत घुड़सवारसे पूछा—

मैं जनाबको किस नामसे सम्बोधित कर, अपनेको भाग्यशाली समझूं?

अल खलील। महाशयजी। मेरा नाम अल खलील है। घुड़सवारने अत्यन्त नम्रतासे जवाब दिया और मुस्कराता हुआ चल दिया। उसके जाते ही दरवाजा अपने आप फिर बन्द हो गया।

दरवाजा बन्द होते ही ग्रेनाइट चौंका, लेकिन फिर यह सोच कर कि पम्पनसे बात करनेका बहुत बढ़िया मौका हाथ लग गया, खुश हुआ। वह पम्पनसे बातचीत करनेके लिये बड़ी देरसे व्यग्र था। फिर कोई न आ जाय इस आशंकासे वह जल्दीसे पम्पनकी ओर बढ़ा और बोला।

क्या तुम इस आदमीको पहिचानते हो? ग्रेनाइटने अत्यन्त धीमे स्वरमें पूछा ताकि कोई सुन न ले।

पम्पनने अपना सिर हिलाया। ऐसा मालूम होता था मानो पन्द्रह वर्षकी पुरानी स्मृतियां ताजा हो गयीं हैं, और वह उन्हीं-की यादसे व्याकुल हो गया है।

ये लोग हमारे साथ किसी तरहकी चाल तो नहीं चल रहे हैं? ग्रेनाइटने पम्पनसे फिर पूछा।

इस बार पम्पनने सिर नहीं हिलाया, बल्कि उसकी अंगुलियोंकी हरकतने ग्रेनाइटके प्रश्नका उत्तर दिया। मुझे यह ताज्जुब हो रहा है कि हम लोग यहां क्यों लाये गये?

क्यों? इसमें ताज्जुबकी क्या बात है?

यह महलकी महिलाओंके लिये बनाया गया, स्नानागार है। पुरुष इसमें नहीं नहाते, बल्कि कोई मर्द यहां आ भी नहीं सकता। पम्पनकी अंगुलियोंने जवाब दिया।

पम्पनका जवाब सुनकर ग्रेनाइटने ताज्जुब भरी दृष्टिसे पम्पनको देखा। पम्पनकी बात सुनकर ग्रेनाइटको बड़ा आश्चर्य हुआ। वह भी सोचने लगा, स्त्रियोंके स्नानागारमें जहां मर्दके आनेका हुक्म भी नहीं है, हमलोग स्नान करनेके लिये लाये गये। उसने जनाने स्नानागारको गौरसे देखना शुरू किया, स्नानागारकी छत काफी ऊंची थी। छतकी धन्नियोंके नीचे कई झरोखे थे, जिनसे प्रकाश भीतर आ रहा था। कमरेमें नहानेके कई कमरे थे। प्रत्येक कमरेमें साफ पानीसे भरी हुई एक नाद रखी थी। हरएक कमरेमें दरवाजा लगा हुआ था। नादके नीचे सूराख था ताकि गन्दला पानी निकालकर साफ

पानी भरा जा सके। हर कमरेमें पानीकी टंकी लगी हुई थी। जिसकी जंजीर खींचते ही नाद पानीसे भर जाती। पानीमें गुलाब जल मिला हुआ था और प्रत्येक कमरा गन्धसे महक रहा था। प्रत्येक कमरेमें नया साबुन रखा हुआ था, और खूंटी-पर सफेद तौलिया लटक रहा था। ग्रेनाइट समझ गया कि उनके आनेके पहिले ही सब तरहकी तैयारियां कर ली गयी थीं। निश्चय ही ऐसा शानदार और आरामदेह स्नानागार महलकी महिलाओंके लिये ही हो सकता है।

ग्रेनाइटको ताज्जुब हो रहा था। पम्पनके कहनेके मुताबिक यह स्नानागार महलकी महिलाओंके लिये रिजर्व है तब उन्हें यहां क्यों लाया गया? ग्रेनाइटने सोचा, मुमकिन है, महामान्य नीगसकी आज्ञासे हमलोगोंके सन्मानके लिये यह खास प्रबन्ध किया गया हो। अगर यह सच है, जिसे सच होना ही चाहिये तो बड़ी खुशीकी बात है। जो भी हो, अभीतक किसी प्रकार की आपत्ति नहीं आयी। आगे आयेगी या नहीं भगवान जाने। अभीसे सजग रहना चाहिये, बस। मुमकिन है, सारी आशङ्का ही निर्मूल सिद्ध हो। ग्रेनाइटने स्नान करनेका निश्चय कर लिया। रास्तेकी थकावटके कारण उसका अंग अंग चूर हो गया था और गर्दसे उसका रोम रोम भर गया था। सामने गुलाबजलसे सुवासित निर्मल जल था। उसने कहा—

पम्पन। सोच विचार छोड़कर हमें सबसे पहिले नहा डालना चाहिये। थोड़ी देर बाद ही हमें महामान्य नीगसकी

सेवामें उपस्थित होना होगा। हमलोग स्नान घरके कमरे खुले ही रखेंगे। हमें सावधान रहना चाहिये।

पम्पनने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया। वेलोग अगल बगलके दो कमरोंमें घुस गये, जिनके बीचमें सिर्फ एक मोटी दीवाल थी।

स्नानघरके कमरेमें घुसते हुए ग्रेनाइटने कहा, दरवाजा खुला ही रहने देना, गोकि इस बातकी उम्मीद नहीं है कि हमलोग नादोंमें डूबकर गायब हो जायंगे।

भीतर जाकर ग्रेनाइटने अपने कपड़े खोले और स्नान करने लगा। सुगन्धित निर्मलजल शरीरके मैलको धोने लगा। उसकी सारी थकावट पानीके साथ बह गयी। शरीरमें नयी स्फूर्ति अनुभूत होने लगी। उसने चटपट स्नानकर बदन पोंछा और कपड़े पहिनने लगा। कपड़े पहिनकर, उसने अपने आप ही कहा, तबीयत हरी हो गयी। उसने बची हुयी थोड़ीसी सिगरेटोंमेंसे एक सिगरेट निकालकर सुलगायी।

सिगरेटका धुआँ उड़ाता हुआ ग्रेनाइट कमरेके बाहर आया और जिस कमरेमें पम्पन नहाने गया था, उस कमरेको, यह समझकर कि पम्पन भी नहा चुका होगा, देखनेके लिये, आगे बढ़ा। कमरेके सामने पहुंचकर उसने देखा—

पम्पन वहाँ न था और स्नानघर खाली पड़ा था।

१२

विश्वासघात

आशंका और आश्चर्यसे ग्रेनाइट स्तम्भित हो गया, वह तेजीसे भीतर घुसा पर पम्पनको न पाया। उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसने कमरेके बाहर निकलकर इधर उधर देखा पर पम्पन कहीं भी दिखलायी नहीं पड़ा। हर-एक स्नानघरमें देख लेनेपर भी पम्पनका पता न चला। आश्चय की बात थी। पम्पनका पता न था। जैसे जादूके बलसे कहीं उड़ गया हो। आखिर कहां चलो गया?

तब भी ग्रेनाइटका दिल नहीं मान रहा था। उसे यह घटना असम्भव मालूम हो रही थी। पम्पन क्या हवा है जो उड़ जायगा। आखिर बाहर जानेका रास्ता बन्द रहते हुए भी कहां चला गया? ग्रेनाइट सोचने लगा। वह पहिले ही नहा चुका होगा, कपड़े-लत्ते पहिन चुका होगा, और अपनी रायफल लेकर चला गया होगा?

क्योंकि न तो उसके कपड़े ही वहाँ थे और न रायफल ही।

लेकिन वह कहाँ गया ? किस तरफसे गया ?

कमरेमें यही एक दरवाजा है। वह जा कैसे सकता है ? बड़ा मुश्किल मामला है। अजीब उलझन है। ग्रेनाइटने एक बार फिर स्नानघरके कमरोंको देखा और स्नानागारका चक्कर लगाया, पर सब व्यर्थ। ग्रेनाइट स्नानागारमें पम्पनको खोज रहा था, गोकि वह जानता था कि पम्पनका मिलना दुश्वार है। पम्पन होता तो कहीं जा थोड़े ही सकता था। पम्पन चला गया। कहां चला गया ? कैसे चला गया? बार बार यही सवाल उसके दिमागमें चक्कर लगा रहा था। स्नान घरके कमरेसे पम्पन निकला होता तो उसे दिखलायी जरूर पड़ता। तब क्या वह कमरेसे ही गायब हो गया ? तब वह कहां गया ? इस समय कहां होगा ? वह इस तरह कहां गायब हो गया। कमरेमें छिपनेका भी कोई स्थान नहीं है। बाहर जानेके लिये कोई खिड़की या झरोखा भी नहीं है। सिर्फ एक दरवाजा है, वह भी खुला हुआ है, दिवाले भी काफी ऊँची और मोटी हैं। किसी तरफसे जानेका कोई मार्ग नहीं है।

तब भी पम्पन अदृश्य रूप धारण कर न जाने कहाँ चला गया ? उसका कोई भी निशान बाकी न रहा। उसने कमरेमें घुसकर तौलिया देखा तो वह बिलकुल सूखा था, इससे ग्रेनाइट समझ गया कि पम्पन बिना नहाये ही गायब हो गया।

घूम-फिरकर एक ही सवाल सामने आ जाता पम्पन कहाँ

चला गया? किसी तरहका अन्दाज करनेमें असमर्थ होनेके कारण ग्रेनाइट परेशान हो गया। चारों तरफ घूम-घामकर वह एक जगह खड़ा हो गया, सोचने लगा।

सोचते-सोचते वह एकका एक उस कमरेमें घुस गया जिसमें पम्पन घुसा था। ग्रेनाइटके निराश हृदयमें यह उम्मीद हुयी कि इसी कमरेसे पम्पन गायब हुआ है तो इस कमरेमें ही कोई ऐसी चीज या निशान मिल सकता है जिससे पम्पनका कुछ पता चल सके। कमरेमें घुसकर उसने देखा कि पानीसे भरी रहनेवाली नाद खाली पड़ी थी। उसने टीनकी नादके पेंदेको बजाकर देखा तो ऐसा मालूम हुआ कि मानो इसके नीचेकी जमीन पोली है। ग्रेनाइटका ताज्जुब और भी बढ़ गया। हैं? क्या इसके नीचेकी जमीन पोली है? क्या इसकी पर्त अलग भी हो सकती है? वह फिर नादके अगल-बगल देखने लगा। ऊपरकी लगी हुई टंकीकी नल नादतक आयी थी, उसमें दो टोटियां लगी हुयी थीं, दो टोटीका क्या मतलब है? जब कि पानी एक ही जगहसे आता है। उसने एक टोटीको दबाया, जिसपर लिखा हुआ था "पुस"। ग्रेनाइटने टोंटी दबा दी पानी नादमें भरने लगा, उसने टोंटी छोड़ दी पानी बन्द हो गया। इसके बाद उसने दूसरी टोंटीको दबाया, टोटी दबाते ही नादके किनारे खुलने लगे, नादमें लगे हुये टीनके पत्तर चार भागोंमें विभाजित होकर फर्शपर गिर गये, और नादका पेंदा खट्से अपनी जगहसे खिसक गया। दाँतोंमें अंगुली दबाते हुए ग्रेना-

इटने झुककर देखा जमीनमें दो आदमी जा सके इतना बड़ा छेद था। उसने टटोलकर देखा तो मालूम हुआ नीचे जानेके लिये सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। ग्रेनाइट सम्हलता हुआ नीचे उतर गया। उसे मालूम नहीं था कि ये रहस्यमय सीढ़ियाँ उसे कहाँ ले जायगीं पर वह पम्पन को पानेके लिये इतना व्यग्र हो रहा था कि उसे यह सब सोचनेका मौका ही नहीं मिला। पचीस फीट नीचे, लगभग पचास सीढ़ियाँ पार कर ग्रेनाइटने जमीनपर हाथ लगाकर देखा तो मालूम पड़ा जमीन पक्की है, शायद तहखाना है। वह समझा यहाँ पम्पन होगा। लेकिन वहाँ भी पम्पनका पता नहीं चला। टटोल टटोल कर आगे बढ़ते हुए वह दीवालसे टकरा गया। फिर दीवालके सहारे चलने लगा। चलते चलते वह लोहेके दरवाजेके सामने पहुँचा। ग्रेनाइटने हाथ फेरकर देखा दरवाजा इस्पातका बना हुआ था। उसने उसे खोलनेका निष्फल प्रयत्न किया। हताश होकर, ग्रेनाइटने एक ठण्डी सांस ली और सोचने लगा क्या करे? उसे विश्वास हो गया कि पम्पन इसी रास्तेसे गायब हो गया। महलके भीतरी रहस्यसे अच्छी तरह वाकिफ होनेपर भी पम्पन इस्पातके दरवाजेसे बाहर नहीं जा सकता था। ग्रेनाइटसे बिना कहे पम्पनका चला जाना असम्भव था। तब निश्चय ही कोई दूसरा आदमी उसे ले गया है। ओह! ये अबसीनियन भी कितने फुर्तीले हैं। ग्रेनाइटने सोचा, मुझे नहानेमें दस मिनटसे ज्यादा न लगे होंगे, इतनी ही देरमें

इतना बड़ा काण्ड हो गया और मुझे किसीकी आहट भी न मिली। अब क्या किया जाय? पम्पनका पता कैसे लगे?

अगर अलखलील स्नानागारमें आ गया होगा तो क्या होगा? सब रहस्य खुल जायगा, यह सोचकर ग्रेनाइट जल्दी जल्दी सीढ़ियोंके पास आया और इस रहस्य पूर्ण परिस्थितिपर विचार करता हुआ ऊपर चढ़ने लगा।

उफ: ! पम्पनकी तरह ही न जाने कितनी गुलाम रमणियां यहाँसे इसी तरह उड़ायी जाती होंगी। राजमहलोंके हत्याकाँड के रहस्य शायद इसीलिये प्रकट नहीं होते। महिलाओंका स्नानागार जान बूझकर ही इस तरहका बनाया गया है।

जो अभागो औरत किसी उच्च अधिकारीके क्रोधका निशाना बनती होगी, उसका इसी तरह सफाया किया जाता होगा। इस तरह आजतक न जाने कितनी अभागिने अपने प्राण खो चुकी होंगी। इस महलके नीचे भी कितनी लाशें गड़ी होंगी।

ओह! स्त्री। तू इतनी मोहक होते हुए भी इतनी निर्बल है।

और पम्पन। वह तो काफी ताकतवर था, जब वही इस तरहसे गायब कर दिया गया कि उसे अपना बचाव करनेतकका मौका नहीं मिला, तब औरतकी क्या बात? कैसा भयानक षड्यन्त्र है।

वह सीढ़ियोंके सहारे ऊपर आ गया और स्नानघरके कमरे-में आकर बटन दबा दिया। बस जमीनपर नादकी पर्त आ गयी, चारों पल्ले आपसमें जुड़ गये। किसीको शक करनेकी

जरा भी गुंजायश नहीं रही। स्नानघरके कमरेसे बाहर निकल-कर ग्रेनाइटने देखा कि भलखलील अभीतक नहीं आया था।

धीरे-धीरे ग्रेनाइटको समझमें सारा बातें आ रही थीं। अब वह समझ रहा था कि सिर्फ महिलाओंके लिये बनाया गया स्नानागार ही क्यों चुना गया। अब उसे मालूम हो रहा था कि उन लोगोंने अपना जाल इस होशियारीसे फैलाया था कि ग्रेना-इट जैसा चालाक भी भांप न सका। गोकि पम्पन और ग्रेनाइट दोनोंको ही सन्देह हो रहा था, किन्तु सन्देह करके भी कोई उनके जालमें फँसे बिना रह न सका। ग्रेनाइट समझ रहा था कि किसी महाधूर्तने महाराजाकी आड़में उसके स्वागत प्रबन्ध-का जाल रचा था। मुमकिन है, उसको ग्रेनाइट और पम्पनके कमहारा आनेका रहस्य मालूम था। उसे यह भी मालूम होगा कि दोमेंसे किसी एकके पास शाही कमरबन्द है। उसने यह भी समझ लिया होगा कि पम्पनके पास ही कमरबन्द होगा। इस तरह षड्यंत्रकारीने बिना सन्देह और सावधान होनेका मौका दिये पम्पनको उड़ा दिया।

आश्चर्य! महलमें इतना बड़ा षड्यंत्र हो और किसीको पता भी न चले।

अब पम्पनका पता कैसे चलेगा? महामान्य नीगस बहर-करीनके दरबारमें हाजिर करनेका आश्वासन भी क्या सिर्फ चाल ही है? पम्पनको किसने उड़ाया होगा? वह आदमी कौन है? महामान्य नीगस तो इसमें हो ही नहीं सकते। उन बेचारे-

को पता भी न होगा कि उनके महलमें इस तरहके षड्यंत्र रचे जाते हैं। तब पम्पनके पीछे कौन लगा है? ग्रे नाइट सोचने लगा।

क्या वही पीली आंखोंवाला शैतान ही तो नहीं है? जिसने अलेकजेण्ड्रिया और मार्सेलीजमें आक्रमण किया था। जो खार-टूम, सीनर और फमाकातक पीछे लगा हुआ था।

ग्रे नाइटने अपने मनसे सवाल किया। फमाकासे वह दिख-लायी नहीं पड़ा। मालूम होता है वह किसी दूसरे रास्तेसे हम लोगोंके पहिले ही राजमहलमें पहुंच गया और उसने अपने मालिकको हम लोगोंके आनेकी खबर दे दी। उफः! पीली आंखों-वाला कितना बड़ा पाजी है। इसी शैतानने बतलाया होगा कि पम्पनके पास शाही कमरबन्द है। इसीकी सलाहसे पम्पनको उड़ानेका षड्यंत्र रचा गया। इसीने घुड़सवारोंको स्वागतके लिये भिजवाया। यह पीली आंखोंवाला कौन है? इसका मालिक कौन है? किसीके इशारेपर वह सब काम कर रहा है। राज-महलका कोई उच्च अधिकारी ही हो सकता है। वह कौन है? कौन ऐसा है, जिसके अधिकारमें महलका इतना बड़ा भाग, इतने सवार, और इतनी ताकत है। वह शख्स कौन है, जिसका दबदबा इतना है कि कोई चूं नहीं कर सकता।

एकाएक उसके चेहरेपर सन्तोषका भाव दिखलायी पड़ा। मानो जिस चीजको ढूंढ़ रहा था, वही चीज उसे मिल गयी। मानो उसे षड्यंत्रकारोंका पता लग गया और वह षड्यन्त्रकी तहतक पहुंच गया। उसे पम्पनकी आत्म-कथाका वह भाग याद

पड़ा, जहांपर पम्पनने अपने प्रतिद्वन्दी, मित्र और विश्वासघाती रास टेकला गोमनके विश्वासघातका उल्लेख किया था। निश्चय ही रास टेकला गोमन ही इस भयानक षड़यंत्रका विधाता है। और पीली आंखोंवाला पाजी उसीके हाथकी कठपुतली है।

सब बातें साफ हो गयीं। अब खड़े-खड़े सोचते रहनेका समय नहीं है, दृढ़ और द्रुत कार्यकी जरूरत है। शीघ्र ही निश्चय कर लेना चाहिये। अल खलील आता ही होगा।

क्या किया जाय? पम्पनके पास कैसे पहुंचा जाय? एका-एक उसके दिमागमें यह बात आयी कि अबतक पम्पनका काम तमाम कर दिया गया होगा तो? अगर दुश्मनोंने पम्पनको मार डाला होगा तो क्या किया जायगा? इस विचारसे ग्रेनाइटका रोआं-रोआं कांप उठा। वह प्रतिहिंसासे अन्धा हो गया। पम्पनके मार डालनेके खयालने ग्रेनाइटको पागल बना दिया।

वह दौड़ा हुआ, वहां गया, जहां उसकी बन्दूक रखी हुई थी, किन्तु वहां पहुँचते ही उसका क्रोध और आश्चर्य चौगुना हो गया। बन्दूक वहांपर नहीं थी।

उफः बदमाशोंने राइफल भी गायब कर दी।

उसने गुस्सेमें हाथ फटकारते हुए, अपने आप कहा।

बन्दूकका न मिलना ग्रेनाइटके हकमें बहुत बुरा हुआ। क्योंकि बन्दूकके न रहनेके कारण उसका बल आधा हो गया। वह गुस्सेके मारे अपना होठ चबाने लगा। दौड़ा हुआ, स्नानघर के दरवाजेपर गया, पर वह बन्द था। उनके जाते ही बन्द हो

गया था और अभीतक नहीं खुला था। तो क्या वह भी इस स्नान घरमें बन्दी बना दिया गया ?

क्या अलखलील नहीं आयगा ? ग्रेनाइट और बन्दी ! ब्रिटिश गुप्त समितिका अधिकारी बन्दी। अपने पूर्व पद और प्रतिष्ठा तथा वर्तमान परेशानी और बेबसीका खयाल कर ग्रेनाइट क्रोधके मारे जलने लगा। स्नानघरमें एक मिनट भी ठहरना उसे असह्य मालूम होने लगा। उस समय अगर उसके पास बम होते तो वह एक ही बारमें महलके धुर्रे उड़ा देता। आह ! आदमीकी मजबूरी भी कैसी बुरी चीज है !

इस समय अगर ग्रेनाइटके पास रिवाल्वर न होता तो उस का साहस न मालूम कहाँ चला जाता, सौभाग्यवश ग्रेनाइटका रिवाल्वर अभी भी उसके पास था। जेबमें रहनेके कारण रिवा-ल्वर दुश्मनोंके हाथ नहीं लगा था।

कोई हर्ज नहीं ! रिवाल्वरसे बहुत काम निकलेगा। रिवा-ल्वरके घोड़े और कुण्डे पर अँगुलियां घुमाते हुये, ग्रेनाइट मन ही-मन बड़बड़ाया।

स्नानघरका दरवाजा अभीभी बन्द था। वह बाहर नहीं जा सकता था, और जब तक बाहर न जाय ग्रेनाइट कुछ भी नहीं कर सकता था। बेचैनीके साथ अलखलीलके लौटनेकी प्रतिक्षा करता हुआ ग्रेनाइट सोच रहा था।

इस समय बल प्रदर्शनसे काम नहीं चल सकता। अल-खलीलके आने पर उस पर आक्रमण करनेसे कोई फायदा नहीं।

पम्पनका पता लगानेके लिये इस समय बल नहीं चातुरीकी जरूरत है। लेकिन अगर पम्पन जिन्दा न हो तो ? यह खयाल आते ही ग्रेनाइट फिर बेचैन हो उठा। अलखलीलके आने तक प्रतीक्षा करना उसे असह्य मालूम होने लगा। वह स्नानघरके दरवाजे पर आकर दरवाजा खोलनेकी कोशिश करने लगा, पर पम्पनका पता लगानेकी कोशिशकी तरह यह भी बेकार हुयी। हर तरफसे निराश होकर ग्रेनाइट उत्तेजित हो दरवाजा पीटने लगा। पैरसे घूँसोंसे भड़ाभड़ आवाज करते उसे पाँच मिनट बीत गये। उसके मजबूत हाथ पैरोंमें दर्द होने लगा, उसकी बची खुची आशा भी लोप होने लगी। उसे मालूम होने लगा मानो, वह भी दुश्मनोंके जालमें फँस गया और स्नानघरमें कैद कर लिया गया। वह फिर कीवाड़ पीटने लगा इस बार दरवाजेके पेच घूमें, वह खिसक कर खड़ा हो गया। धीरे-धीरे दरवाजा खुलते ही ग्रेनाइट बाहर दौड़ा, पर दो हब्सी सिपाहियोंने उसका रास्ता रोक दिया। रास्ता रोकने पर भी, न तो उन्होंने ग्रेनाइट पर वार ही किया, न कुछ कहा और न उसे पकड़नेकी कोशिश ही की। ग्रेनाइटने अरबीमें गर्ज कर कहा—

सामनेसे हट जाओ !

दोनों सिपाहियोंने ग्रेनाइटकी बात सुनी पर उन पर उसकी बातका कुछ भी असर नहीं पड़ा। वे पत्थरके पुतलोंकी तरह निश्चल भावसे ग्रेनाइटका रास्ता रोके खड़े रहे।

ग्रेनाइटने देखा कि कहने सुननेसे काम नहीं चल सकता, बिना बल प्रयोगके ये रास्ता नहीं छोड़ेंगे। यह समझते ही वह थोड़ा पीछे हटा और फिर एकाएक आगे बढ़कर दोनों सिपाहियोंकी बाहें दोनों हाथोंसे पकड़ कर उमेठ दी, उनके हाथोंसे दुधारे झनझन शब्द करते हुए गिर पड़े, ग्रेनाइटने दोनोंको लात मारके ढकेल दिया, वे भट्टसे दिवालसे जा टकराये। ग्रेनाइट आगे दौड़ा।

पर इसी समय एक बन्द दरवाजा खुला और नंगी तलवारें लिये हुये सैनिक अपने सरदारके साथ घटनास्थलपर आ गये, और उन्होंने ग्रेनाइटको घेर लिया।

ग्रेनाइट अपने चारों तरफ नंगी तलवारें देखकर भौंचका-सा देखने लगा। वह क्षण भरके लिये स्तंभित हो गया। ग्रेनाइटने सैनिकोंके अफसरको देखा, लेकिन वह अलखलील न था।

अपने साथियोंको निःशस्त्र और जमीनपर पड़े हुये देखकर सैनिक उत्तेजित हो गये थे। वे ग्रेनाइटके टुकड़े-टुकड़े कर डालना चाहते थे पर अफसरकी आज्ञा न मिलनेके कारण मजबूर थे। तब भी वे लाल लाल आंखें निकाल कर ग्रेनाइटको इस तरह देखते थे, मानो आंखोंसे ही मार डालेंगे।

ग्रेनाइट सैनिकोंके साथ जूझनेकी तैयारी कर रहा था। उसने अपना रिवाल्वर निकाल लिया और सैनिकोंके अफसरसे पूछा—यहँ सब क्या मामला है? ये लोग मुझे घेरे हुए क्यों हैं? महामान्य नीगस क्या अंग्रेजोंका इसी तरह स्वागत करते हैं?

अफसरने शान्त और दृढ़ स्वरमें उत्तर दिया।

आप भूलते हैं, महाशयजी। आपको नुकसान पहुंचानेका कोई प्रयत्न नहीं किया गया।

अपने निहत्थेपहरेदारोंको इशारेसे दिखाकर अफसरने फिर मजाकपूर्ण स्वरमें कहा, देखिये। ये इस बातका प्रमाण हैं कि आप अपनी रक्षामें पूर्ण समर्थ हैं।

हां, जरूरत पड़नेपर मैं अपनी रक्षा हर हालतमें कर सकता। ग्रेनाइटने जवाब दिया।

महाशय, अभी कौनसी जरूरत पड़ी थी जो आपने इनपर आक्रमण किया?

तब क्या मैं महामान्य नीगस बहरकरीनके हुक्मसे बन्दी बना लिया गया? क्या धोखेबाजी करना ही तुम लोगोंका पेशा है?

नहीं जनाब, आप किसीके हुक्मसे बन्दी नहीं बनाये गये। आप खुशीसे महल छोड़कर जा सकते हैं। पहिरेदारोंपर आपने व्यर्थ ही आक्रमण किया। इन लोगोंने वही किया जो इन्हें करना चाहिये था, जिसके लिये इनको हुक्म मिला था। ये सिर्फ आपको रोक रखनेके लिये भेजे गये थे।

अफसरके इस उत्तरसे ग्रेनाइट बड़ी उलझनमें पड़ गया, पर उसने अपना यह भाव चेहरेपर न आने दिया, बल्कि उसी प्रकार दृढ़ स्वरमें अफसरसे बोला—मुझे महामान्य नीगस बहरक-रीनकी सेवामें एक बहुत ही जरूरी खबर पेश करनी है। मैं उस

समय तक महल नहीं छोड़ सकता, जबतक महामान्यके दर्शन नहीं होते, मैं वह महत्वपूर्ण खबर उनके कानोंतक नहीं पहुंचा देता। सच मानो! मैं जा नहीं सकता।

किन्तु, महाशयजी। महामान्य नीगस बहरकरीन यात्रापर गये हैं, इस समय महलमें नहीं हैं, तीन दिन बाद आयेंगे।

कुछ पर्वा नहीं। मैं तीन दिनतक उनका इन्तजार करूंगा। अलखलीलसे कहो कि मैं उससे मिलना चाहता हूं।

मुझे अफसोसके साथ कहना पड़ता है, अल खलील किसी कार्यवश महलसे बाहर चला गया है, वह कबतक लौटेगा कुछ ठीक नहीं।

क्षणभर पहिले जो मेरा साथी मेरे साथ ही स्नानघरमें घुसा था, वह कहां गया? तुम लोगोंने उसे कहां गायब कर दिया?

ग्रे नाइटके इस प्रश्नसे अफसरको बड़ा ताज्जुब हुआ। उसने आश्चर्यपूर्ण स्वरमें कहां, आपका साथी? महाशय! आपका साथी कौन? मुझे यही रिपोर्ट मिली है कि आप अकेले ही हैं?

अफसरका उत्तर सुनकर ग्रे नाइटको भी बड़ा ताज्जुब हुआ। अफसरकी बातोंसे, साफ मालूम हो रहा था कि वह जो कह रहा था, उसमें बनावट नहीं है। वाकई उसको पम्पनके संबंधमें कुछ नहीं मालूम था, ग्रे नाइटने अफसरसे फिर पूछा—

तुम्हें क्या करनेका हुक्म और अधिकार है?

मुझे यह हुक्म मिला है कि मैं अपके नाश्तेका प्रबन्ध करूं, महलमें आपको किसी किस्मका नुकसान न पहुंचे, इसका प्रबन्ध

करूं । इसीलिये मैंने अपने सिपाहियोंको आपकी रक्षाके लिये रख दिया था। मुझे हुक्म मिला है कि आपको महलके बाहर सीमान्त तक सुरक्षित रूपमें पहुंचा दूं । हमारा उद्देश्य आपकी रक्षा करना है ।

तुम किसके हुक्मसे ये काम कर रहे हो ? क्या महाराज नीगसके ?

जी नहीं । मैं रास टेकला गोमनका अनन्य सेवक हूं ।

अफसरका उत्तर सुनते ही ग्रेनाइट समझ गया कि उसकी आशंका निर्मूल नहीं थी। पम्पनके विश्वासघाती मित्रने ही इस बार भी उसके साथ धोखेबाजी की। ग्रेनाइटको रास-टेकलाका मतलब समझनेमें देर नहीं लगी। उसे विश्वास हो गया कि रासटेकलाने ही पम्पनको गायब करवाया है।

रासटेकलाको पहिलेसे सब बातें मालूम हो गयी थी । उसने अपने आदमियोंकी सहायतासे स्वागतका प्रबन्ध किया, उसके बादकी सब घटनाएं भी उसीके आदेशसे हुयीं। किन्तु ये घट-नाएं जिनके द्वारा घटित हुईं, उन लोगोंको भी मालूम नहीं था कि यह सब क्या हो रहा था। ये लोग तो टेकलाके हाथोंकी कठपुतली हैं।

ऐसी हालतमें रास टेकला गोमनसे रुबरू मिलना चाहिये। क्या यह संभव है।

ग्रेनाइटने सब बातें सोच लीं और वह एक निश्चयपर पहुंच गया।

बहुत अच्छा। मैं रास टेकला गोमनसे मिलना चाहता हूं। ग्रेनाइटने पहिलेकी तरह दृढ़ स्वरमें कहा, मुझे रास टेकला गोमनके पास ले चलो।

इतना कहकर ग्रेनाइट चुप हो गया और अफसरके उत्तरकी उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करने लगा।

मैं कह नहीं सकता कि रास टेकला गोमन आपसे मिलना चाहते हैं या नहीं। किन्तु मैं उनकी सेवामें उपस्थित होकर आपकी प्रार्थना सुना दूँगा। अगर वे कृपापूर्वक आपको दर्शन देना चाहेंगे तो मुझे कोई आपत्ति न होगी। आइये। मेरे साथ इस रास्तेसे चलिये, अफसरने जवाब दिया।

सिपाहियोंने तलवारोंको म्यानोंमें कर लिया। ग्रेनाइट अफसरके पीछे चला, चार सिपाही उनके पीछे-पीछे थे। मालूम होता था वे सिपाही अफसरके शरीररक्षक थे। वे नंगी तलवारें लिये चल रहे थे। सीढ़ियाँ पार कर वे दोतल्लेपर पहुँचे, वहाँसे थोड़ी दूरतक छज्जेपर चलकर, वे लोग और एकतल्लेपर पहुँच गये, ऊपर पहुँचकर बरामदा पारकर वे लोग एक कमरेके सामने पहुँचे जिसमें एक भी खिड़की नहीं थी और छत बहुत नीची थी।

कमरेके सामने पहुँचकर अफसरने ग्रेनाइटको सम्बोधित कर कहा, महाशय, आप यहाँपर बैठिये। ग्रेनाइट उस कमरेमें बैठ गया और अफसर सामने जाकर एक कमरेमें घुस गया, जिसके दरवाजेपर पर्दा पड़ा हुआ था।

अफसरके अन्दर जाते ही ग्रेनाइटके मनमें हुआ कि वह भी अफसरके पीछे-पीछे जाय। किन्तु अफसरके अंग-रक्षकोंकी नंगी तलवारोंने उसे आगे बढ़नेसे रोक दिया था। वह सोचने लगा—देखना चाहिये, रास टेकला अपनी खुशीसे मुझसे मिलना चाहता है या नहीं। अगर उसने मिलनेसे इनकार किया तो बलपूर्वक भीतर घुसकर उससे मिलना होगा। तब भी जबतक अफसर लौटकर नहीं आ जाता, तबतक चुप बैठना ही अच्छा है।

इसी निश्चयके मुताबिक ग्रेनाइट उस कमरेमें बैठा हुआ अधीरतापूर्वक अफसरकी प्रतीक्षा करता रहा, जबतक कि वह लौटकर नहीं आया। तब भी वह शान्त न था। वह विचार रहा था कि रास टेकलाके मिलनेपर सब कुछ निर्भर करता है। एक दफा रास टेकलासे मुलाकात हो जाय, बस फिर सब देख लिया जायगा। जरा देखा तो जाय कि वह आदमी कैसा है? कितना बड़ा चालाक है। एक दफा उससे मुलाकात हो, फिर सब समझ लिया जायगा। ग्रेनाइटने टेकलाका खून पीनेका निश्चय कर लिया।

वह सोच रहा था, या तो रास टेकला पम्पनको किसी तरह का नुकसान पहुंचाये बगैर वापिस कर देगा, अन्यथा उसे अपनी करनीका फल चखना पड़ेगा। किन्तु ग्रेनाइटको पम्पनके जिंदा रहनेकी उम्मीद नहीं थी। उसका ख्याल था कि रास टेकला के आदमियोंने पम्पनको अबतक मार डाला होगा। दुश्मनोंके

हाथमें पड़कर पम्पनका जिन्दा रह जाना उसे असम्भव मालूम हो रहा था। क्योंकि वह रास टेकलाके स्वभावसे अच्छी तरह वाकिफ हो चुका था। रास टेकला जैसा खूंखार आदमी अपने दुश्मनोंको मुट्ठीमें पाकर योंही छोड़ दे, इस बातपर ग्रेनाइटको विश्वास नहीं हो रहा था।

इसी तरह विचारोंकी उधेड़ बुनमें काफी समय बीत गया अफसरको गायब हुए आधा घण्टा बीत चुका था, ग्रेनाइटका धैर्य सीमा पारकर चुका था। ग्रेनाइट सोच ही रहा था कि चारों सिपाहियोंको चकमा देकर, वह उसी कमरेमें घुस जाय जिसमें अफसर जाकर, अभीतक नहीं लौटा था। ग्रेनाइट दौड़-कर घुस पड़नेके लिये खड़ा हो गया, उसका पहिला कदम बढ़ चुका था।

रास टेकलाने कृपा पूर्वक दर्शन देना स्वीकार कर लिया। अफसरने कमरेमेंसे निकलकर कहा, कृपया इधरसे चलिये।

ग्रेनाइट अफसरके साथ दरवाजेतक गया। अफसरने ग्रेनाइटके भीतर जानेके लिये, पर्दा हटा दिया, इसबार चारों सिपाही बाहर ही रह गये, उनमेंसे एक भी भीतर जानेके लिये आगे नहीं बढ़ा। दरवाजा पारकर ग्रेनाइटने देखा, वह कमरा नहीं था, बल्कि लम्बे आकारका दरबार था। उसमें गोल खम्भे थे, जिनपर आधी दूरतक मखमल मढ़ा हुआ था। दरबारके दोनों तरफ सीढ़ियाँ बनी हुई थीं, जो मंचपर पहुंचकर खतम हो जाती थीं। मंच साढ़े तीन गज ऊंचा और इथोपियाके काले

पत्थरोंका बना हुआ था। मंचके बीचोबीच एक सिंहासन रखा हुआ था, जिसपर सोने चाँदीका काम था। मंचपर कुर्सियोंकी दो तीन कतारें थीं, प्रत्येक कुर्सी एक दूसरीसे काफी फासले पर थी, बीचमें भी आने जानेके लिये जगह बनी हुयी थी। मंचपर कालीन बिछा हुआ था। महलके सबसे ऊपरवाले खण्ड में दरबार था। मञ्चपर पहुंचते ही महलके गुम्बज दिखलायी पड़ने लगते थे। दरबार काफी सजा हुआ था और उसमें झाड़ फानूस लटक रहे थे।

दरबारमें आने जानेके लिये कई दरवाजे थे। दीवालोंपर चित्रकारीका सुन्दर काम था। उनपर इथोपियाके इतिहासकी घटनाओंका सुन्दर चित्रण किया गया था जिनमें बारबेरिक और पाश्चात्य कलाका सम्मीश्रण था। सभा मंचपर सोनेके चौखटेमें जड़ा हुआ, महामान्य नोगस बहरकरीनका तैल चित्र था, जो कुछ दिनों पहिले ही एशियाके एक विख्यात चित्रकार-ने बनाकर भेजा था। दरबारमें: पूर्ण शांति छायी हुई थी। क्योंकि उस समय भीड़ भड़का नहीं था। तमाम कुर्सियां खाली पड़ी थीं। ग्रेनाइटने बड़े गौरसे दरबारकी सजावट देखी, उसकी तेज निगाहें तेजीसे घूमती हुयीं मंचपर सिंहासनासीन व्यक्तिपर जाकर रुक गयीं। वह और कोई नहीं, रास टेकला गोमन था।

रास टेकला गोमन बड़ी शानसे सिंहासनपर बैठा हुआ था। वह लगभग पैंतीस वर्षका था, पक्के रंगका, मोटा ताजा आदमी

था। उसकी छोटी छोटी आंखोंसे बदमाशी, चालाकी, कपट, धूर्तता टपक रही थी, उसके ओंठ बतला रहे थे कि वह अव्वल नम्बरका स्वार्थी है।

अफसरने अभिवादनकर ग्रेनाइटको हाजिर किया। रास टेकलाने ग्रेनाइटको देखा, अभिवादन स्वीकार किया और बोला— महाशय ग्रेनाइट! तुम कुछ निवेदन करना चाहते हो? वह साफ अरबीमें बोल रहा था, उसने कहा, मैं तुम्हारा नाम जानता हूं। यही क्यों मुझे तुम्हारे खारटूमसे आनेका हाल भी मालूम है। मैने ही कृपाकर तुम्हारे स्वागतका प्रवन्ध किया, तुम्हें हर तरहका आराम मिले इसका हुक्म दे दिया, मैंने अपने सिपाहियोंको हुक्म दे रखा है कि जब तुम यहांसे जाओ तो सीमान्ततक तुम्हें सुरक्षित पहुंचा दें। और अब क्या कहना चाहते हो?

आपकी इतनी कृपाके लिये मैं हजार बार शुक्रिया अदा करता हूँ। ग्रेनाइटने भी रास टेकला ही की तरह व्यंग पूर्ण वाणीमें जवाब दिया, और कहा मैंने आपकी सेवामें, मेरा मतलब महलसे है, उस वक्ततक रहनेका पक्का निश्चय कर लिया है, जबतक कि वह काम पूरा न हो जाय जिस कामके लिये मैं यहाँतक आया हूँ। क्योंकि बिना उद्देश्य पूरा हुए यहाँसे जाना मूर्खता है।

ओहो! तुम्हारा आना किसी उद्देश्यको लेकर हुआ है?

रास टेकला गोमनने यह सवाल हँसते हुए किया था, किन्तु

उसकी आँखोंसे टपकती हुयी व्यग्रता स्पष्ट बतला रही थी कि वह ग्रेनाइटका उत्तर सुननेके लिये व्यग्र है। ग्रेनाइटने रास टेकलाके इस भावको लक्ष्य किया और सोचने लगा कि इसने पम्पनको ही क्यों गायब करवाया और मेरे साथ इतनी मेहरबानी क्यों दिखला रहा है? शायद, रास टेकला समझ रहा था, कि उसके विश्वासघातका हाल ग्रेनाइटको नहीं मालूम। क्यों कि पम्पन गूंगा है इसलिये वह किसीसे भेदकी बात नहीं कह सकता। ऐसा ही विश्वास कर रास टेकलाने पम्पनको उड़वा दिया और ग्रेनाइटको अपने कामकी चीज न समझकर छोड़ दिया हो। सम्भवतः रास टेकलाने सोचा हो, कि पम्पनके गायब करनेसे ही उसके विश्वासघातकी कथा छिप जायगी। ग्रेनाइटने तय कर लिया कि इसकी मिथ्या धारणाको भंग कर देना चाहिये। इसे बता देना चाहिये कि पम्पनके गायब करवा देनेसे, उसे मार डालनेसे भी उसकी पाप कथापर पर्दा पड़ा नहीं रह सकता।

हाँ। बात ऐसी ही है, जैसा कि आप कह रहे हैं। मैं किसी निश्चित उद्देश्यसे यहाँ आया हूँ।

कौनसे निश्चित उद्देश्यसे?

एक बहुत ही महत्वपूर्ण समाचार महामान्य नीगस बहर-करीनको सुनाने।

महामान्य नीगस बहरकरीन महलमें नहीं हैं, वे बाहर गये हुए हैं, मुमकिन है कुछ दिनोंतक नहीं आवें। तुम महामान्य नीगसको किस तरहका समाचार सुनाना चाहते हो?

वह समाचार आप भी सुन लेंगे। किन्तु मेरे मुँहसे नहीं, खुद महामान्य नीगस आपसे वह समाचार कहेंगे। ग्रेनाइटने जवाब दिया, लेकिन आपके लिये भी एक समाचार है। बहुत ही गोपनीय, समझे। सिर्फ आप हीके लिये।

इतना कहकर ग्रेनाइट रास टेकलाके इतना नजदीक हो गया कि हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ सके। रास टेकलाने समझा कि गुप्त बात कहनेके लिये ग्रेनाइट इतना नजदीक आया है। रास टेकलाका इशारा पाकर अफसर दरबारके बाहर जाकर दरवाजेपर पहरा दे रहा था। रास टेकला कुछ सशंकित हुआ पर उसकी शंका क्षणभरमें विलीन हो गयी।

अच्छा, मेरे लिये गोपनीय समाचार है। तुम्हारे पास कितने समाचार हैं, मेरे लिये भी, महामान्य नीगसके लिये भी? रास टेकलाने पूछा।

ग्रेनाइटने अपनी आवाज धीमी की।

हाँ। एक समाचार है जिसे सिर्फ आपको ही सुनना चाहिये। उसने इतने धीमे स्वरमें कहना शुरू किया कि आवाज कमरेके बाहर न जा सके। ग्रेनाइटने कहा, इसके पहिले कि आप वह बात सुने मेरे कोटकी जेबकी तरफ देखिये, इसमें कोई चीज है, जिसे मेरी अंगुलियाँ पकड़े हुये है, जेबसे रिवा-ल्वर बाहर निकालकर रास टेकलाको निशाना बनाते हुये इसने कहा, देखिये, यह रिवाल्वर है, वस्तुतः यह बड़ा बढ़िया रिवाल्वर है, जो ठीक आपके सीनेकी तरह मुँह खोले हुये है, इससे छूटी

हुई गोली आपके सीनेके पार हो जायगी। आप जरा भी हिले, चिल्लाये, किसी तरहका इशारा किया और गोली आपका सीना छेदकर पार हुई ! क्षण भर भी नहीं लगेगा और आप मरकर ढेर हो जायँगे ।

रास टेकला गोमन चौंक गया । उसके चेहरेपर भय और आशंकाके भाव आ गये। उसकी छोटी आँखोंमें सन्देह भर गया । उसकी काली खोपड़ीकी विचारधाराएँ धक्का खाकर उलट गयीं । वह भय विह्वल हो गया । उसके पैरके पास ही घन्टी लगी हुई थी, पर प्राणोंके मोहके कारण उसे बजा नहीं सकता था , दरवाजेपर अफसर खड़ा हुआ था, पर वह चिल्ला नहीं सकता था । उसकी जान ग्रेनाइटकी मुट्ठीमें थी । दगाबाज रास घबड़ा गया । वह कुछ न कर सका । वह अध-मरा हो गया और उसकी साँस जोरोंसे चलने लगी ।

ग्रेनाइट रास टेकलाकी भयपूर्ण भावभंगी देखकर हँसा और उसी प्रकारकी धीमी किन्तु दृढ़ आवाजमें बोला ।

आप बड़े चालाक हैं । जनाब, मैं आपको अच्छी तरह पहि-चानता हूं । अब हमें कामकी बात करनी चाहिये । समय बहु-मूल्य है और आपका जीवन महामूल्यवान । लेकिन बातचीत करते समय रिवाल्वरका खयाल न भूल जाइयेगा । भगवान न करे, क्षणभरके लिये भी आप रिवाल्वरकी बात भूल गये तो अपनेको मरा ही समझियेगा ।

मेरे लिये भी यह दुर्भाग्यकी बात होगी कि आपको इतना

नजदीक पाकर भी बिना मारे छोड़ दूं। लेकिन आपने मेरी मांग पूरी कर दी तो आपका बाल भी बांका नहीं हो सकता।

रास टेकला गोमन पत्थरकी मूर्त्तिकी तरह बिना हिले-डुले बैठा रहा। ग्रेनाइट कहने लगा।

अब सबसे पहिले मुझे यह कहने दीजिये कि आपका इरादा क्या है। आप क्या करने जा रहे हैं। आप चिल्लाना चाहते हैं, इतने जोरसे चिल्लाना चाहते हैं कि बाहर खड़ा हुआ अफसर सुन ले। आप जा चुप रहकर सांस खींच रहे हैं, वह यही सिद्ध कर रहा है। आप चिल्लाकर उसे बुला तो सकते हैं किन्तु उसके यहां पहुंचनेके पहले ही आप मर जायंगे। आपकी आत्मा इस महलसे बहुत दूर चली जायगी। आप जान बूझकर मौतको निमन्त्रण देना चाहते हैं तो शौकसे दे सकते हैं, मुझे कोई आपत्ति नहीं। किन्तु आपकी मौत निश्चित है।

ग्रेनाइट रुका, यह देखनेके लिये कि उसकी बातोंका रासपर क्या असर होता है?

देखिये, यह मेरा हाथ है, यह मेरी घड़ी है। इसकी सेकेण्ड की सूई साठ पर है, अगर आप मेरी बात नहीं मानते हैं, तो तीसपर सेकेण्डकी सूई आते ही आप मर जायंगे। सिर्फ आधा मिनटका समय है। मौत या जिन्दगीमें से जो चाहें सो चुन लीजिये। याद रखिये, आधा मिनट बीतते ही अपना खात्मा ही समझिये।

ग्रेनाइट चुप हो गया। दरबारमें सन्नाटा छा गया। कैसी

भयंकर निस्तब्धता थी। दोनों चुप थे। सिर्फ कट-कटकर घड़ीके पुर्जे चल रहे थे। कांटा, छोटीसी घड़ीका कांटा बढ़ रहा था।

ग्रे नाइट तीस सेकेण्ड पूरी होनेकी प्रतीक्षा कर रहा था। रास टेकला गोमन, निश्चल भावसे काठपर खुदी हुयी मूर्त्तिके समान बैठा हुआ था। उसके चेहरेपर हवाईयां उड़ रही थी। वह बुद्धि शून्य हो गया था। उसकी समझमें नहीं आ रहा था कि क्या किया जाय? ग्रे नाइटकी तीक्ष्ण दृष्टि रास टेकलापर गड़ी हुयी थी। अफसर दरवाजे पर टहल रहा था।

दोनोंकी आंखें घड़ीके बढ़ते हुये कांटेपर केन्द्रित हो गयीं। ग्रे नाइट बाहरसे शान्त मालूम पड़ रहा था पर उसके हृदयमें भी द्वन्द मचा हुआ था। पम्पन जिन्दा है या मर गया? रास मेरी बात मानेगा या नहीं? दोनों .परिस्थितिकी भयंकरता अनुभव कर रहे थे। लेकिन ग्रे नाइटने निश्चय कर लिया कि अगर रास टेकला उसकी बात नहीं सुनेगा तो वह उसे जरूर मार डालेगा। फिर चाहे उसका नतीजा कितना ही भयंकर क्यों न हो। वह हर तरहकी परिस्थितिका सामना करनेके लिये तैयार था। रास टेकला जैसे आदमीको इसी तरह कुत्ते-की मौत मरना चाहिये। ग्रे नाइटने मन-ही-मन निश्चय कर लिया, इसे मारे बगैर काम नहीं बनेगा। मारना ही होगा।

घड़ीके कांटेकी सूई तीसके नजदीक आई और ग्रे नाइटने कहा,—अफसरसे कहिये,कि वह रास टेलकेननको हाजिर करे।

ग्रे नाइटने अपनी मांग पेश की। उसने रिवाल्वर रासके

सीनेकी तरफ बढ़ा दिया और बोला—समय हो गया। हां या तो मेरी बात मानिये, या मर जाइये। बस मैं गोली छोड़ता हूं। एक.........दो............

तीन कहनेके पहिले ही रासटेकला गोमन चिल्लाया। यंकाबरको लाओ। अफसरने रासकी आवाज सुनी।

अफसर भीतर आया, सलामकी और हुक्म तामील करने चला गया।

ग्रेनाइटको ताजुब हो रहा था कि यह यंकावर क्या बला है? वह सोचने लगा, किन्तु उसकी आंखें रास पर ही गड़ी हुयी थीं। वह जानता था कि जरासी गफलत दिखाते ही बाजी उलट जायगी। उसे मालूम था कि वह एक महा धूर्त आदमीके सामने बैठा है। इसीलिये वह रास टेकलाको सिरसे पैर तक भांप रहा था। थोड़ी देरतक दरबारमें सन्नाटा छाया रहा। दोनों चुप रहे। कोई कुछ न बोला। थोड़ी देर बाद, जो व्यग्रताके उन क्षणोंमें बहुत देर मालूम हो रहा थी, अफसर लौटा। उसके साथ एक आदमी था। जो लम्बा चौड़ा, काला, चमड़ेका काला पालिशदार कोट पहिने हुये था, जिसकी कमरसे चाभियोंका गुच्छा लटक रहा था, जिसका चेहरा बड़ा भयानक था सबसे भयानक थीं उसकी आंखें। वह आदमी बड़ा डरावना और दैत्याकार था।

उस आदमीके साथ आकर अफसरने झुककर अभिवादन किया, और वहांसे हट गया। यंकावर रास टेकला गोमनके

पास आया। वह लगभग दसगजके फासलेपर खड़ा हुआ, उसने झुक कर सलाम कियाऔर आज्ञा पालनके लिये खड़ा हो गया।

रास टेकला गोमनने कुछ कहनेके लिये अपने ओंठ खोले, पर फिर एकाएक न जाने क्यों बन्द कर लिये? चालबाज टेकला गोमनकी नीयत बिगड़ गयी। उसने सोचा ग्रेनाइटको धोखा दिया जाय। वह समझा कि मौतका समय निकल गया, अब क्या है? वह नहीं जानता था कि मौत उसके सीनेको निशाना बनाये हुये है। वह बदमाशी करनेकी सोचने लगा। उसने इशारा करनेका प्रयत्न किया। किन्तु ग्रेनाइट उससे कहीं ज्यादा होशियार था। उसने कहा, खबरदार! मेरे साथ धोखेबाजीकी चाल चलना आसान नहीं है। ग्रेनाइटके मना करनेपर भी एक हल्की चीख रास टेकलाके गलेसे निकल गयी, पर मुंहसे बाहर नही हो पायी। रासका बेबसीके कारण बुरा हाल था।

यंकावरको परिस्थिति सन्देह जनक मालूम पड़ी। उसने एकबार बड़े गौरसे रास टेकला गोमनके भयातुर चेहरे और फिर दुबारा ग्रेनाइटके मुख पर खेलते हुये दृढ़ भावोंको देखा, उसे मालूम हो गया कि परिस्थिति असाधारण है।

रास टेकला गोमनने भी मतलब भरी निगाह यंकावर पर फेंकी। उसने ग्रेनाइटको यंकावरकी तरफ देखते पाया और बड़ी फुर्तीसे कुर्सीसे कूद कर दूर जानेके लिये अपना पैर बढ़ा दिया, किन्तु उसी क्षण पिस्तौलको सीने पर रख कर ग्रेनाइटने अंगारेसी लाल आंखें निकाल कर आज्ञापूर्ण स्वरमें कहा—साव-

धान! रास टेकला। सावधान! मैं तुम्हें फिर आगाह करता हूं, इसबार तुम मौतके बहुत नजदीक आ गये हो, अबकी बार ऐसी कोशिश की तो मौत तुम्हारा सीना छेदे बगैर न मानेगी। याद रखना ग्रेनाइट कभी झूठ नहीं बोलता और उसका रिवाल्वर कभी झूठा फायर नहीं करता। याद रखो, अगर यह दरबार तुम्हारे सिपाहियोंसे भर भी जाय, तुम्हारे सब सिपाही यहां आ जांय तब भी, मेरा रिवाल्वर तुम्हारा सीना छलनी किये बिना न छोड़ेगा। तुमने जरा भी चालबाजीको तो तुम्हें मारे बगैर नहीं छोड़ूँगा। मैं फिर सावधान करता हूं और कहता हूं अपने दोनों हाथ चुपचाप मेरे सामने रखो।

रास टेकला गोमनने ग्रेनाइटकी आज्ञाका पालन किया, उसका दिल भयके मारे धक्‌धक् कर रहा था। वह धूर्त था किन्तु कायर था और मौतके नामसे थरथर कांपता था। उसने ग्रेनाइटकी इच्छानुसार इथोपियन भाषामें यंकावरसे कुछ कहा, जिसे ग्रेनाइट समझ न सका, सिर्फ रासकी कांपती हुई आवाजसे उसे यह मालूम हुआ कि वह डर गया है। यंकावर रास टेकला गोमनकी आज्ञा सुन कर चला गया। ग्रेनाइट पूर्ण सतर्कता और दृढ़ताके साथ प्रतीक्षा करने लगा, किन्तु उसने निश्चय कर लिया था कि जरा भी गड़बड़ होते ही, धोखे-बाजीका कोई भी लक्षण देखते ही वह सबसे पहिले रास टेकलाको मार डालेगा। फिर चाहे जो हो।

यंकावर फम्पनको लाने गया। जिन्दा या मुर्दा? ग्रेनाइटके

उत्तेजित दिमागमें उस समय पम्पन, सिर्फ पम्पनका खयाल था। वह उसे देखनेके लिये बेताब हो गया था, लेकिन क्या पम्पन अभी तक जिन्दा बच सका होगा ? क्या रास टेकलाने उसका काम तमाम न कर डाला होगा ? ग्रेनाइट उस सवाल-का फैसलो कर लेना चाहता था। वह चाहता था कि दुविधा से इसी क्षण छुट्टी मिल जाय। किन्तु मन-ही-मन उसे पम्पनको जिन्दा पानेकी आशा बहुत कम थी, वह पम्पनके सम्बन्ध की बुरी-से बुरी खबर सुननेकी सम्भावना कर रहा था। ग्रेनाइटका धैर्य सीमा तक पहुंच चुका था।

क्षण पर क्षण बीतने लगे। बेचैनी और बेताबीसे भरे क्षण, दरबारमें सन्नाटा छाया हुआ था जैसा मौतके पहले छा जाता है। उफः कितना भयङ्कर सन्नाटा था। दरबारमें सिर्फ दो आदमी थे, ग्रेनाइट और रास टेकला गोमन, घुड़सवार अफसर भी यंकावरके साथ चला गया था। कलाईकी घड़ी बहुत ही धीमे स्वरमें कटकट कर रही थी। रास टेकलाको घड़ीकी कट कट बड़ी कर्कश मालूम हो रही थी। एक एक क्षण घण्टोंका रूपान्तर मालूम हो रहा था। एक एक मिनट मानो पहरोंमें बीत रहा हो। दोनों ही अधीरता पूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे, एक आनेवाली मौतकी, दूसरा आ सकनेवाले दोस्त की।

इस प्रकारके स्तब्ध वातावरणमें पन्द्रह मिनट बीत गये। मानो पन्द्रह महिने! ग्रेनाइटका हृदय यंकावरके न आनेके कारण चालबाजीका शक करने लगा। क्या यह मुमकिन है कि

रास टेकलाने बदमाशीका कोई नया फन्दा तैयार करनेको यंकावरको भेजा हो ? ग्रेनाइटने सोचा, वह समझ रहा था कि रास टेकला कौन-सी चाल चला है। यंकावर अभी तक क्यों नहीं लौटा ? क्या वह पम्पनकी लाश लानेके लिये किसी दूर स्थान पर गया है ? या वह सिपाहियोंको तैयार करके ला रहा है ? क्या वह पम्पनको नहीं लायगा ? क्या रास टेकला मरना पसंन्द करता है ? ग्रेनाइट यह मान कर कि पम्पन मार डाला गया होगा, सोचने लगा क्या करना चाहिये ? रास टेकलाको मार डाला जाय। ग्रेनाइट घूम फिर कर इसी एक निश्चयपर पहुंचता था। एकाएक उसका ध्यान भंग हो गया, उसकी विचारधारामें विघ्न पड़ा, उसे बाहर दरबारसे दूर जूतोंकी आहट सुनायी पड़ी। कुछ लोग दरबारकी तरफ आ रहे थे। पम्पनको लिये हुये यंकावर और अफसर या सिपाहियोंको लिये हुये यंकावर और अफसर ?

दूसरे ही क्षण यंकावरने सिपाहियोंके साथ दरबारमें प्रवेश किया। उसके साथ आधा दर्जन सिपाही थे, जो काले कपड़े पहिने हुये थे और जिनके हाथमें नङ्गी तलवारें थीं। सिपाही यंकावरके पीछे आकर, अदबसे झुककर रास टेकलाके सामने खड़े हो गये। उन सिपाहियोंके बीचमेंसे निकलकर एक आदमी आगे बढ़कर खड़ा हुआ। उसके हाथ पीछेकी तरफ बन्धे हुये थे, किन्तु उसके भाव उसके चेहरेपर आजादीसे प्रगट हो रहे थे।

वह शख्स पम्पन था।

उसने सिर उठाकर रास टेकलाको देखा, उसकी आंखें प्रति-हिंसासे भरी हुयीं थीं किन्तु जैसे ही ग्रेनाइटसे उसकी आंखें चार हुयी, वैसे ही उसका भाव बदल गया और उसे मालूम हुआ मानों बड़ा भारी सहारा मिल गया। उसके चेहरेके चंचल भाव स्थिर हो गये। ग्रेनाइट भी पम्पनको देखकर इतना खुश हुआ कि दुश्मनोंके बीचमें भी वह अपनी प्रसन्नता छिपा न सका।

यंकावर उस तरफ आगे बढ़ा जिस तरफ रास टेकला बैठा था, और झुककर अभिवादन किया।

अभिवादन करनेके पश्चात् वह फिर अपने स्थानपर चला गया और नयी आज्ञाकी प्रतीक्षा करने लगा। पम्पन रास टेकला-के सामने खड़ा था। उस आदमीके रूबरू खड़ा था जिसने विश्वा-सघात करके उसका सत्यानाश कर डाला था। काले कपड़े पहिने हुये सिपाही सावधानीसे कैदीकी हरकतपर निगाह गड़ाये हुये थे, और रास टेकलाके हुक्मका इन्तजार कर रहे थे।

फिर वही भयङ्कर सन्नाटा, फिर वही भीषण स्तब्धता। किन्तु पम्पनको जिन्दा पाकर ग्रेनाइटका साहस दूना हो गया था, वह बड़ी तेजीसे सोच रहा था कि उसे आगे क्या करना चाहिये। किस तरहसे दुश्मनोंके पंजेसे छूटना चाहिये और पम्पनको स्वतन्त्र करना चाहिये। उसकी तेज बुद्धिने निर्णय करनेमें बिलम्ब नहीं किया। उसने कर्तव्यका निश्चय कर लिया।

किन्तु अपने निश्चयको कार्यरूपमें परिणित करनेके पहिले ही एक अभूतपूर्व घटनाने, एक अद्भुत परिवर्तनने, समस्या अपने आप हल कर दी। जिस समय पम्पन दरबारमें लाया गया था, उस समय वह समझ रहा था कि उसे मारडालनेके लिये ही टेकलाके सिपाही उसे कहीं लिये जा रहे हैं, फिर उसने सोचा कि मारनेके पहिले वे फिर अन्तिम बार उसे रास टेकलाके सामने पेश करेंगे। किन्तु दरबारमें आकर ग्रेनाइटको देखते ही पम्पनकी सारी दुर्बलता नष्ट हो गयी। उसके हृदयमें अपूर्व साहसका उदय हुआ। रास टेकलाकी उपस्थितिने उसकी प्रतिहिंसा और घृणाको बढ़ावा दिया। उसकी नसनसमें प्रतिहिंसा, घृणा और साहस चक्कर लगाने लगा। एक दृढ़ भावना उसके चेहरेपर छा गयी।

एकाएक उसके बेज़ुबान मुंहसे एक अस्पष्ट शब्द ध्वनि हुयी। उसने अपने मजबूत दांत कटकटायें और दूसरे ही क्षण उसने अपने बन्धे हुये हाथोंको पूरी ताकतसे घूमा दिया, हथकड़ी टुकड़े-टुकड़े होकर झन्नसे जमीनपर गिर पड़ी। वह बंधन मुक्त हो गया।

सिपाही उसे पकड़नेके लिये दौड़े, किन्तु सिपाहियोंके वहां तक पहुंचनेके पहिले ही वह रास टेकलाके सिंहासनपर कूद पड़ा और भयातुर रास टेकलाको पटककर उसका गला घोटने लगा। उसके फौलादी पंजेमें फंसकर रास टेकला छटपटाने लगा।

रास टेकलाकी चिल्लाहटसे दरबार गूंज उठा, सिपाही दौड़े

हुये मञ्चपर लड़ते हुये दोनों प्रतिद्वन्द्वियोंके पास पहुंच गये। सबके सब सिपाही पम्पनपर टूट पड़े और थोड़ी ही देरमें उन्हों-ने रास टेकलाका गला छुड़ाकर, पम्पनको अपने कब्जेमें कर लिया।

इतनी देरतक ग्रेनाइट चुपचाप तमाशा देखता था किन्तु जैसे ही उसने देखा कि पम्पन फिर दुश्मनोंके फन्देमें फंस गया, उसने एक सिपाहीसे तलवार छीन ली और एक सिपाहीकी तलवारपर जोरका हाथ मारा जो पम्पनपर वार कर रहा था। ग्रेनाइटने दो मिनटमें सब सिपाहियोंको मार भगाया।

किन्तु इस लड़ाई झगड़ेमें रास टेकलाको मौका मिल गया। वह सिंहासनपर खड़ा हो गया और पैरसे घण्टी बजाता हुआ जोर-जोरसे चिल्लाने लगा। रास टेकला गोमनकी इसबार-की चिल्लाहट व्यर्थ नहीं गयी। खतरेकी घण्टी सुनकर दरबारके सब दरवाजोंसे दर्जनों सिपाही दौड़ते हुये भीतर आये और क्षणभर बाद ही दरबार नङ्गी तलवारें लिये हुये सिपाहियोंसे भर गया। सिपाहियोंको देखकर रास टेकला गोमन बड़े जोरसे चिल्लाया।

पकड़ लो! मार डालो! पकड़ लो। जाने न पांय।

उसकी चिल्लाहट दरबारमें गूञ्ज उठी। आज्ञापालन अभ्यस्त खूंखार सिपाही ग्रेनाइट और पम्पनपर टूट पड़े।

१३

कमहाराकी तरफ

बर्टरम चारनके एकाएक दिखलायी पड़ने और चले जानेके बाद मिस्टर ब्लेकने निश्चय कर लिया कि पहिली गाड़ीसे ही खारटूम छोड़कर सीनर चला जाना चाहिये। अपने इसी निश्चयके मुताबिक वे लोग सवेरेकी गाड़ीसे सीनर रवाना हो गये। मिस्टर ब्लेक अबतक बर्टरमसे छकते आये थे। वे बराबर निश्चय करते कि इस बार उन्होंने बर्टरमको छका दिया, पर हर बार उन्हें मुंहकी खानी पड़ती।

बर्टरम उनके पहिले न सही, किन्तु उनके खारटूम पहुंचनेके साथ ही साथ कैसे पहुंच गया, बहुत कुछ सोचनेपर भी ब्लेक यह नहीं समझ पा रहे थे। उसका यह मजाक कितना गहरा था, कि "आप लोग मेरे आगे चल रहे हैं और मैं एक खूनीके पीछे पीछे दौड़ रहा हूँ।" बर्टरमको जरूर मालूम हो गया कि ब्लेक वगैरह पम्पनके लिये इधर आये हैं। उसे यह भी मालूम हो

गया होगा कि हम किस उद्देश्यसे परपनसे मिलना चाहते हैं। ब्लेक सोच रहे थे?

बर्टरमको इन सब बातोंका कैसे पता चला? उसे यह कैसे मालूम हुआ कि हम लोग मेण्टनसे यहाँ आ रहे हैं? हमारी यात्राका हाल तो सिवा स्मिथ, जुलो और कप्तान लिफीवरके किसीको नहीं मालूम। निश्चय ही बर्टरम हवाई जहाजसे यहाँ आया, किन्तु हमारे यहाँ आनेका उसे कैसे पता चला? किसने उसे खबर दी? उसे हमारे इरादेका पता चल जाना, हवाई जहाजसे उसका हमारा पीछा करना, हमारे अन्दाजके बाहरकी बातें हैं, हमने कभी सोचा भी न था। फिर रातकी चांदनीमें उसकी वह मुक्त हँसी, उसका वह तीखा मजाक और उपेक्षा पूर्वक उसका चला जाना, अद्भुत है। वाकई, बर्टरम बहुत चालाक आदमी है। उसके लिये कोई भी काम असाध्य नहीं है।

कितना बड़ा साहसी है, यह चोरन। इसने अपना इरादा हमसे छिपाया नहीं। बिलकुल सहज भावसे आकर अपने यहाँ तक आनेका मतलब बयान कर गया। यह भी बतला गया कि फिर मुलाकात होगी। यानी उसे मालूम है कि हम कहाँ जा रहे हैं? उसने साफ शब्दोंमें कह दिया कि उसकी जेबमें पीरी ड्रुसीलीके हत्यारेको पकड़नेके लिये वारण्ट है। वह उसे जुरूर गिरफ्तार करेगा। उसका इशारा साफ तौरसे परपनकी तरफ था। सबसे खराब बात यह है कि परपनको गिरफ्तार करनेके लिये हमारा पीछा करता हुआ, वह परपनके खिलाफ हमारा

उपयोग कर रहा है, और तिसपर भी कहता है कि हम उसके आगे और वह हत्यारेके पीछे पीछे है। वह हर समय हमीको बेवकूफ बनाता है, और खुद बड़ी होशियारीसे निकल जाता है। उफः बर्टरम!

ओह। घटनाओंका इतना विचित्र संयोग कभी नहीं हुआ था, ऐसा मामला ही कभी सामने नहीं आया! फिर इतना धूर्त जासूस भी तो देखनेको नहीं मिला। वाकई, बर्टरम अद्भुत आदमी है। सभी कुछ अद्भुत है, हत्या भी अद्भुत, तथाकथित हत्यारेका व्यवहार भी अद्भुत, हमारा पेरिस छोड़कर सीनर जाना भी अद्भुत, यह यात्रा भी अद्भुत, मानो अद्भुतकी प्रद-र्शनी तैयार हो रही हो। किन्तु सबसे अद्भुत तो बर्टरम है।

बर्टरम यद्यपि मिस्टर ब्लेकको पद-पद पर छका रहा था, यद्यपि वह इस समय उनका प्रतिद्वन्दी हो रहा था, तब भी इस मित्रता पूर्ण प्रतिद्वन्दितामें ब्लेकको मजा आ रहा था। पद-पद पर छकनेके कारण ब्लेक क्षणभरके लिये परेशान जरूर हो जाते, किन्तु वे अपने मित्र प्रतिद्वन्दीकी तारीफ किये बिना नहीं रह सकते थे। उनका उदार हृदय बर्टरमकी तारीफ किये बिना नहीं मानता था। वे बार-बार मन-ही-मन कहते, वाकई, बर्टरम बड़ा चलाक जासूस है।

किन्तु मिस जुली बर्टरमके बारेमें इस तरह नहीं सोच रही थी। उसे बर्टरमका बार २ आना, इस तरह उनका पीछा करना इस कदर मजाक उड़ाकर चलते बनना, बिलकुल पसन्द नहीं

था। वह बर्टरमको घृणा करने और उससे डरने लगी थी। अपने लिये नहीं बल्कि पम्पनके लिये। बर्टरमकी जेबमें पीरी ड्रुसीली के हत्यारे पम्पनकी गिरफ्तारीका वारण्ट था, और मिस जुली अपने वफादार नौकरको हर तरहसे बचानेका निश्चय कर चुकी थी। जो पम्पनका दुश्मन है, वह उसका भी दुश्मन है। खारटूम आकर मिस जुली बर्टरमसे निश्चिन्त हो गयी थी, उसे विश्वास था कि बर्टरम हजारों मील छूट गया और अब इस यात्रामें किसी तरहका विघ्न नहीं पड़ेगा। किन्तु बर्टरमके अकस्मात दर्शनने उसकी सारी आशाओंको धूलमें मिला दिया। उसकी बेचैनीको बढ़ा दिया, वह सोचने लगी इस कांटेको किस तरहसे रास्तेमेंसे हटाया जाय? किस तरह बर्टरमकी आँखोंसे बचकर निकला जाय?

रातमें होटलके बाहरके बगीचेमें दर्शन देनेके बाद फिर चारन दिखलायी नहीं पड़ा। वे लोग जल्दी-जल्दी चलने की तैयारी करने लगे और सुबह होते न होते, होटलके किसी भी आदमीसे बिना कुछ कहे सुने चुपचाप सवेरेकी गाड़ीसे सीनर जानेके लिये स्टेशनको चल दिये। रास्तेमें चारन नहीं मिला, स्टेशन पर भी उसकी सूरत नहीं दिखलायी पड़ी। वे चाहते भी यही थे कि जल्दीसे जल्दी खारटूमसे रवाना हो जांय और किसीको कुछ भी पता न चले।

किन्तु इतनेसे ही उन लोगोंको सन्तोष नहीं हुआ, गाड़ी स्टेशन पर आकर खड़ी हो गयी तब उन्होंने अपनी जगह सुर-

क्षित कर लेनेके बाद गाड़ीका हर एक डिब्बा खोज डाला। किन्तु इस बार भी उन्हें असफलता ही मिली। गाड़ीका हर एक डिब्बा ढूँढ़ लेनेपर भी बर्टरम चारनका कहीं पता न चला। इससे सिद्ध हो गया कि बर्टरम उस गाड़ीमें न था, जिससे वे लोग जा रहे थे। किन्तु इस असफलतासे उन्हे प्रसन्नता ही हुयी। यह जान कर कि बर्टरम चारन गाड़ीमें नहीं है, मिस जुलीकी परेशानी बहुत कम हो गयी।

किन्तु, ब्लेकको विश्वास नहीं था कि इसबार भी वे लोग बर्टरम चारनकी गैर जानकारीमें सफर कर रहे हैं। उसे उनके सीनर रवाना होनेकी खबर नहीं हुयी। बर्टरमको चकमा देना कुछ हंसीखेल नहीं था। अबतक वह बड़ी बुद्धिमानी और धीरजके साथ अपना काम निकालता आ रहा था। उसने कभी भी अपना मतलब भंपने नहीं दिया। उसे रास्तेमेंसे हटा देना, या उसे धोखा देकर निकल जाना आसान नहीं। उसका निश्चय टल नहीं सकेगा, यह ब्लेकको अच्छी तरह मालूम था। तब भी ब्लेक बीच-बीचमें बराबर बर्टरमको गाड़ीके डिब्बोंमें ढूंढ़ते रहे किन्तु, किसी डिब्बेमें बर्टरम नहीं मिला। ज्यों-ज्यों सीनर नजदीक आता था और बर्टरमका डिब्बोंमें कहीं पता न लगता था, जुलीकी प्रसन्नता बढ़ती जाती थी। दो पहरमें वे लोग सीनर पहुंच गये और वहां भी बर्टरमको न पाकर उन्हें निश्चय हो गया कि बर्टरम खारटूममें ही छूट गया। किन्तु इस निश्चय-में भी एक अज्ञात आशंका छिपी हुयी थी।

मिस्टर ब्लेकने बतलाया, यहां आकर ही हमें बर्टरमसे निश्चित नहीं हो जाना चाहिये, उसे जरा भी शक हुआ तो वह तुरत सीनर आ जायगा। हमें उसे जरा भी मौका नहीं देना चाहिये। ब्लेकका कहना था कि जितनी जल्दी हो हमें सीनरसे आगे बढ़ जाना चाहिये। सीनरमें हमें एकक्षण भी व्यर्थ न गंवाना चाहिये। मिस जुलीने मि० ब्लेककी सलाहको ठीक बताया, उसने कहा, मि० ब्लेक, मैं चाहती हूं कि हम लोग बर्टरमसे जितना दूर चल सकें, उसको जितना पीछे छोड़ सकें, उतना ही अच्छा है। सचमुच हमें यथा शीघ्र सीनरसे रवाना हो जाना चाहिये।

इसी निश्चयके अनुसार सीनर पहुंचते ही वे लोग आगेकी यात्राके प्रबन्धमें लग गये। रेल लाइन सीनरमें आकर खत्म हो जाती थी, यहांसे आगे जानेके लिये रेलगाड़ी न थी। यात्रा बहुत कड़ी थी। उन लोगोंको फमाका जाना था। फमाका अबसीनियाके सीमान्तपर और सीनरसे दो सौ मील था। किन्तु फमाका जानेके लिये रेल नहीं यात्रियोंका काफला जाया करता था। मि० ब्लेक यही पता लगाने निकल पड़े कि जल्दी ही कोई काफला जानेवाला है या नहीं? उन्हें मालूम हुआ कि दोपहर ढलते ही एक काफला रवाना होनेवाला है।

उन लोगोंने उसी काफलाके साथ जानेका निश्चय कर लिया। काफलाके सरदारने गोरे यात्रियोंको पाकर ज्यादा भाड़ा मिलनेके लिये, बहाना बनाना शुरु कर दिया। स्मिथने कहा, मियां। दुकानदारी क्यों करते हो? जो लेना है, साफ-साफ कहो

ओर चलो। बेकार बकवादमें अपना और हमारा समय क्यों बरबाद करते हो? आखिर मन मांगा भाड़ा मिल जानेपर वह उन्हें ले जानेको तैयार हो गया।

काफला दोपहर ढलनेपर रवाना होनेवाला था। दो घंटेका समय बाकी था। ब्लेकने सोचा, चलो तबतक बाजारसे सौदा-पत्तर ही खरीद लिया जाय आगे न जाने कुछ मिले, या न मिले? इस निश्चयके अनुसार वे लोग सीनरके बाजारोंमें घूमें और यात्राके लिये आवश्यक चीजें खरीदीं। चीज वस्तु खरीद-कर वे लोग काफलावालेकी सरायमें आ पहुंचे।

सराय आधी कच्ची और आधी पक्की बनी हुयी थी। उसके चारों तरफ ऊंची दीवाल थी और बीचमें बड़ा भारी चौक था। उसमें सैकड़ों ऊंट और दर्जनों घोड़े बन्धे हुये थे घोड़ोंकी हिनहिनाहट और ऊंटोंकी बलबलाहटसे सरायमें रह-रहकर विचित्र ध्वनि हो रही था। ऊंट और घोड़ोंके रातिबकी गन्धसे सराय गन्धित हो रही थी। काफलाके कूच करनेकी तैयारियां हो रही थीं। ऊंट और घोड़े कसे जा रहे थे। कई ऊंटोंपर सामान लादा जा चुका था, बाकीपर लद रहा था। पूरे ढाई सौका काफला जानेवाला था। अरब, मिश्र, और इथोपिया, माल्टा आदिके यात्रियोंका जमघट था। यात्री अपना-अपना सामान बान्धने और लदवानेमें लगे हुये थे नौकर सामान लिये हुये इधरसे-उधर दौड़ रहे थे। सफरकी तैयारियां जोरोंपर थीं।

ब्लेक जुला और स्मिथ सरायमें पहुंचकर काफला सरदार-

से मिले। काफला सरदारने उनका सामान लदवा दिया और हिफाजतका पूरा आश्वासन दिया। काफलाके साथ कुछ ऊंट और घोड़ोंपर बन्दूक लिये, तलवार बांधे कुछ लोग चल रहे थे, जो काफलाके रक्षक कहे जाते थे। इस तरह हड़बड़में दो घण्टेका समय बीत गया और काफला चल पड़ा।

ब्लेक, जुली, स्मिथ घोड़ोंपर सवार हुये। उन लोगोंने काफलावालेको मुंहमांगा दाम दिया था, इसीलिये उन्हें बढ़िया घोड़े मिले थे। किन्तु वे तीनों ही घुड़ सवार यात्री न थे, और भी कई यात्रियोंको घोड़े मिले थे जो ब्लेकादिकी तरह ही मुंह मांगा दाम दे सकते थे। वे लोग घोड़ोंपर सवार काफला के अगले भागमें चल रहे थे। काफलाके अन्य-गन्दे, बकवादी, साथियोंकी बकझकसे बचनेके लिये, सबसे अलग तथा सबसे आगे रहनेके लिये उन लोगोंने इतना रुपया खर्च किया था। सीनरसे रवाना होकर काफला शाम होते-होते एक गांव-के किनारे पहुंचा। वहां काफलादारकी मेहरबानीसे ब्लेक, स्मिथ और जुलीको काफी मिल गयी। थोड़ी देर ठहरकर काफला फिर चल दिया इस बीचमें मुसलमान यात्रियोंने वजूकी और नमाज पढ़ी।

अढ़ाई सौ ऊंटों और दर्जनों घोड़ोंवाला लम्बा काफला अजगरकी तरह नील नदीके किनारे पश्चिमकी तरफ बढ़ने लगा। काफला धीरे-धीरे इतमीनानके साथ बढ़ रहा था।

यात्री आपसमें गप्पें हांकते हुये तमाखू पीते हुये चल रहे

थे। बीचमें ऊंट बलबला उठते, उनके अस्पष्ट स्वरमें यात्रियोंकी आवाज दब जाती। फिर ऊंट चुप हो जाते और फिर यात्री अलिफलैलाके किस्से कहने सुननेमें मशगूल हो जाते, काफला मन्द गतिसे फमाकाकी तरफ बढ़ रहा था। मिस्टर ब्लेकको यह मन्दगति पसन्द नहीं आयी।

इस मन्द गतिसे··· मिस्टर ब्लेकने मिस जुलीसे कहा — हम लोग पन्द्रह बीस दिनमें भी फमाका नहीं पहुंच सकेंगे।

जी हां, मैं भी मन-ही-मन यही बात सोच रही हूं। जुलीने जवाब दिया। क्यों न हम लोग अकेले ही आगे बढ़ चलें।

हां, तुम्हारा कहना बहुत मुनासिव है। ब्लेकने जवाब दिया मैं काफलादारसे पूछता हूं।

मिस्टर ब्लेक घोड़ा बढ़ाकर काफलादारके पास पहुंच गये और अपने मतलबकी बात कही।

काफलादारकी समझमें ब्लेककी जल्दबाजीकी बात न आयी। वह कहने लगा, घबराइये, मत हम लोग ठीक समयपर फमाका पहुंच जायंगे। किन्तु उसे नहीं मालूम था कि उसके और मिस्टर ब्लेकके ठीक समय में बहुत अन्तर है। काफलादारके साथ सिर पचाते-पचाते घण्टों बीत गये। कुछ धनी यात्रियोंने भी मिस्टर ब्लेकके प्रस्तावका समर्थन किया। मालदार यात्रियों-के दबावके कारण आखिर काफलादारको मिस्टर ब्लेककी बात माननी पड़ी और वह ब्लेककी बातपर राजी हो गया।

इस तरह मालदार यात्रियों और हथियारबन्द काफला

रक्षकों तथा माल ढोनेवाले ऊंटोंको लेकर एक छोटा-सा काफला प्रधान काफलासे अलग होकर आगे बढ़ा। इस काफलामें कई रक्षक तो बन्दूकका निशाना लगानेमें अचूक थे और कई बार बड़ी बहादुरीसे डाकुओंका मुकाबिला कर चुके थे। मिस जुली और स्मिथ इस प्रबन्धसे बहुत सन्तुष्ट हुए साथ ही उनके साथी यात्रियोंने भी मिस्टर ब्लेकको इतना अच्छा इन्तजाम करनेके लिये बधाई दी। सौभाग्यवश रास्तेमें किसी तरहकी आपत्ति नहीं आयी, काफला निर्विघ्न बढ़ता चला गया।

जैसे ही उनका काफला फमाकाके करीब पहुंचा, मिस जुली और मिस्टर ब्लेक अपनी यात्राके आगेका बन्दोबस्त सोचने लगे। उन्हें फमाकासे आगे अबसीनिया जाना था। उन्हें यह निश्चय करना था कि किस रास्तेसे होकर अबसीनिया जायंगे। किन्तु उनका भावी कार्यक्रम ग्रेनाइट और पम्पनकी सूचना पर निर्भर करता था। उन्हें सबसे पहिले फमाकामें ग्रेनाइट और पम्पनके आने न आनेका पता लगाना था। किन्तु मिस्टर ब्लेकको विश्वास था कि ग्रेनाइट और पम्पन फमाका होकर जरूर गये होंगे। वे यह सोच रहे थे कि फमाका पहुंचने पर ग्रेनाइट और पम्पनका पता लग जानेसे मुश्किल आसान हो जायगी। तब भी ग्रेनाइट और पम्पनका पता लगाना आसान नहीं था।

ब्लेक सोच रहे थे कि जब तक फमाका पहुँच कर ग्रेनाइट और पम्पनका पता न लगा लिया जाय, तब तक बिना जाने

समझके कहीं चला जाना व्यर्थ है। बहुत कुछ सोच विचार और मिस जुलीसे विचार विनिमयके बाद, मिस्टर ब्लेकने काफलाके उपसरदारसे बातें कीं और उससे कहा कि हमें एक ऐसा आदमी चाहिये जो फमाका तथा अवसीनियन प्रान्तसे पूर्णतया वाकिफ हो और बहादुर हो। पहिले तो अपनी आदतके मुताबिक सरदारने अपनी असमर्थता प्रगट की, किन्तु थोड़ी देरबाद ही अच्छे दाम मिलनेपर एक बहुत ही बहादुर और विश्वासी आदमी देनेको तैयार हो गया। उसने कहा, जनाब, मैं जो आदमी दे रहा हूं वह शेरकी तरह बहादुर, चीतेकी तरह चालाक और कुत्तेकी तरह विश्वास पात्र है।

ब्लेकने उस आदमीको देखा, वह देखनेमें बड़ा भयानक मोटा-ताजा और होशियार मालूम पड़ता था। वह इस तरहका आदमी था जो पैसा मिलनेपर हर तरहका काम करनेको तैयार हो जाय। उसके ओठोंसे स्वार्थपरता टपक रही थी।

उसने ब्लेकको सलाम किया और कहा—हमारी कौम खूंखार है किन्तु नमकहराम नहीं। अबसे आप मेरे मालिक हुये।

उस आदमीका नाम शेमेल्का था। ब्लेकने कहा, सिर्फ मुझे ही नहीं उस सुनहरी बालोंवाली महिलाको जो मर्दकी तरह घोड़ेपर सवार है, अपनी मालकिन समझना। मिस्टर ब्लेकने कहा, हम लोग फमाका पहुँचकर एक अंग्रेज और इथोपियनके सम्बन्धमें छानबीन करेंगे। उसने कहा, हुजूर। आप जो

कहेंगे, बन्दा वही करेगा। आपका हुक्म बसरोचश्म बजानेके लिये मैं हमेशा तैयार रहूंगा। फमाका या अबसीनियाके इधरकी कोई भी जगह मुझसे छिपी हुयी नहीं है, हर जगह मेरी जान पहिचानके लोग मौजूद हैं। आपको किसी तरहकी तकलीफ नहीं हो सकती; आप अबसीनियामें चाहें जहाँ घूम सकते हैं। बदमाशों और डाकुओंका मुकाबिला करने लायक ताकत मुझमें बहुत है।

शेमेल्काकी लम्बी चौड़ी बातें सुनकर मिस्टर ब्लेक मनही मन हंसे, उन्होंने सोचा, चाहे इसकी बातें कोरी ढींग ही हों किन्तु इससे काम तो निकल ही सकेगा। हफ्ते भरतक चलनेके बाद, काफला फमाका पहुंचा। मिस्टर ब्लेक स्मिथ और जुलीको इस रास्तेमें बहुत तकलीफ हुयी, किन्तु और कोई उपाय न देखकर उन लोगोंने बड़ी सहनशीलताके साथ यात्रा की परेशानियोंको सहा।

फमाका पुराना शहर था। बिलकुल पुराने ढंगपर बसा हुआ। पश्चिमीय सभ्यताको ही यदि सभ्यता कहा जाय तो फमाका अर्द्ध सभ्य है। वहाँके निवासी भी इसी अनुसार अर्द्ध-सभ्य थे। वहांकी सोमाली औरतें सिरके केशोंको पीछेकी तरफ बांधे हुए थीं और उनपर जाल पहिन रखा था। उनके गलोंमें मूंगेकी मालाएं थीं, ये औरतें भेड़ें और बकरियाँ पालती थीं। वे तमाखु पीती थी और बहुत बकवाद करनेवाली थीं। फमाकाके मर्द तो आलसी थे, वहाँकी औरतें ही ज्यादा काम करती थीं।

फमाकामें रहनेवाली सोमाली जातिके अलावा वहाँपर पहाड़ी प्रदेशोंसे आये हुए भेड़ोंकी खालोंके कोट पहिने हुये पहाड़ियोंकी भी बड़ी भीड़ थी। वे लोग पहाड़ियोंमें पैदा होने-वाली चीजें कन्धोंपर ढोढो कर लाते थे। वे तरह तरहकी जंगली दवाइयाँ, फल, मेवे और ऊनी कपड़े बेचने आये थे। सड़कोंपर लाल टोपी पहिने हुए नाचने गानेवाले घूम रहे थे। उनके पीछे लड़के लड़कियोंका झुण्ड था। बाजारके मकानात पुराने ढर्रेके थे, पर जो मकान पिछले दस वर्षों में बने थे उनके रंगढंगमें कुछ नयापन आ गया था। कुछ औरतोंकी पोशाक बड़ी विचित्र थी, यानी वे सिरसे पैर तक बुर्का ओढ़े हुये थीं। किन्तु ऐसी औरतोंकी संख्या बहुत कम थी। फमाकामें कहवा घर बहुत थे। यहाँ रहनेवाले आलसी, जिद्दी और बहादुर थे। उनके स्व-भावमें परस्पर विरोधी गुणोंका अपूर्व सम्मिश्रण था।

किन्तु मिस्टर ब्लेक स्मिथ या जुलीको इन सब विविध-ताओंको देखनेकी ज्यादा फुर्सत नहीं थी। उन्हें बहुत ही जरूरी काम था और उस कामको छोड़कर उन्हें फमाका का तमाशा देखनेकी फुर्सत नहीं थी। वे लोग फमाकामें आते ही ग्रेनाइट और पम्पनका पता लगाने लगे।

शेमेल्काको अपने प्रयत्नमें सफलता मिली। शेमेल्का बाजार में घूमता हुआ काफी घरों, सरायों और होटलोंका चक्कर लगाने लगा। वह हर जगह जाता और ग्रेनाइट तथा पम्पनके बारेमें पूछता। शुरूमें तो उसे कई जगह निराश होना पड़ा।

जिससे उसने पूछा, उसीने कहा कि हमने इस तरहके आदमी नहीं देखे। किन्तु शेमेल्का निराश होनेवाला जीव नहीं था। वह जानता था कि जब वे लोग फमाका आये, तब कहीं न कहीं रात जरूर बितायी होगी, मैं इसका पता जरूर लगा लूंगा।

आखिर उसका परिश्रम सफल हुआ। उसे ग्रेनाइट और पम्पनके आने और ठहरनेका पता ही नहीं लगा, बल्कि उसे यह भी मालूम हो गया कि वे फमाकासे कहां गये हैं। उसे पता चला कि ग्रेनाइट और पम्पन चार दिन पहिले आये थे और फमाकाकी सबसे बड़ी सरायमें रात भर ठहरे थे और दूसरे दिन तीन खच्चरवालोंको साथ लेकर वे लोग सबेरे ही रवाना हो गये। उसे यह भी मालूम पड़ा कि फमाकासे वे लोग कमहारा गये हैं। कमहारा फमाकासे दो सौ मील दूर था। शेमेल्काने मिस्टर ब्लेक और जुलीको बतलाया कि कमहाराके राजमहलका अधीश्वर नीगस बहरकरोन है। शेमेल्काको अपने पहिले ही काममें कामयाबी हासिल हुयी थी, इसलिये वह बहुत खुश था।

बड़ी खुशीकी बात है ग्रेनाइट और पम्पनका पता इतना जल्द चल गया। मिस्टर ब्लेकने कहा, शेमेल्का जिन दो आदमियोंकी बात कह रहा है वे ग्रेनाइट और पम्पन हैं। लेकिन मिस जुली पम्पनकी यात्राका रहस्य खुलनेके बनिस्पत और भी जटिल होता जाता है। कमहाराके राजमहलमें जानेका उनका मतलब निश्चय ही महत्वपूर्ण हैं। संभवतः वे लोग नीगस

बहरकरीनसे मुलाकात करने कमहारा गये हैं। किन्तु मेरी समझमें नहीं आता कि पम्पन नोगप्तसे क्यों मिलना चाहता है? इतनी दूर आनेपर भी हमलोग अभीतक अंधेरेमें ही हैं। तुम्हारा क्या ख्याल हैं मिस जुली?

आप जो कह रहे हैं; उन्हीं बातोंको मैं भी दुहरा देना चाहती हूं। मेरा वही ख्याल हैं जो आपका। मिस जुलीने कहा, किन्तु मिस्टर ब्लेक मैं समझती हूँ कि हमें फमाकामें वक्त बरबाद न कर आगे बढ़ना चाहिये, जबतक उन लोगोंसे न मिला जाय तबतक किसी बातका पता नहीं चल सकता। क्यों स्मिथ कमहारा देखोगे?

क्यों नहीं मुझे तो इस तरफका हरएक शहर अजी बोगरीब दिखलायी पड़ता है किन्तु जो भी कहो मिस जुली, यह रास्ता बड़ा वाहियात हैं। तब भी मैं कमहारा चलनेको तैयार हूँ।

मैं अपने साथी शेमेल्कासे कुछ पूछना चाहता हूँ। क्यों मिस्टर शेमेल्का, हमलोग दो पहरमें ही चलनेकी तैयारी कर सकते हैं? मेरा खयाल है कि दोपहर ढलते-ढलते हमें यहाँसे रवाना हो जाना चाहिये।

शेमेल्का अपनी मालकिन मिस जुलीके अमीराने ढंगसे पूर्ण प्रभावित हो गया था और उसकी तीक्ष्ण आँखें अक्सर मिस जुलीके आभूषणोंपर पड़ जाती थीं; और वह अपनी सेवाओं द्वारा मिस जुलीको हर तरहसे सन्तुष्ट करनेका प्रयत्न करता आ रहा था। किन्तु ब्लेकके इस प्रश्नके उत्तरमें उसने

जो जवाब दिया वह उनके कयासके बाहर था। उसने अपना सिर हिलाते हुए असम्मति प्रगट की और कहा, मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि आप लोग इतना जल्द रवाना होना चाहेंगे। उसने कहा, कि रास्ता निरापद नहीं है और वह नहीं चाहता कि खतरनाक रास्तेमें जाकर मालिकोंको विपत्तिमें डूबाकर, खुद भी उसीमें फँस जाय। उसने उन लोगोंके साथ चलनेसे इन्कार कर दिया।

ब्लेकने सोचा कि शेमेल्काका आसरा छोड़कर किसी दूसरे पथ-प्रदर्शककी तलाश करना चाहिये, यह सोचकर वे दूसरे आदमीकी खोजमें निकल पड़े।

शेमेल्काको गये हुए दो तीन घण्टे बीत चुके थे। वे लोग काफी पीकर यात्राका प्रबन्ध कर रहे थे; जुली और स्मिथ सामान रखने और बाँधनेमें लगे हुए थे। जब शेमेल्काको गये हुए बहुत समय बीत गया और वह नहीं लौटा तो स्मिथने कहा—मिस जुली, यह नौकर बड़ा धोखेबाज निकला।

हां, स्मिथ। उसकी बातोंसे तो मालूम हो रहा था कि वह बड़ा वफादार है किन्तु अब ऐसा ही मालूम हो रहा है, मानो वह लौटकर नहीं आयगा।

नहीं आयगा तो भाड़में जाय। हम दूसरे आदमीका इन्त-जाम कर लेंगे। लेकिन, इस समय अगर वह लौट आय तो बिना चपतियाये न छोड़ूंगा।

स्मिथने इतना कहा ही था कि उसके सामने शेमेल्का

आकर खड़ा हो गया। उसने आते ही पहिले जुली, और फिर ब्लेक और स्मिथको सलाम किया।

शेमेल्का खच्चरोंके झुण्डके साथ लौट आया। जिसके साथ खच्चरोंके मालिक उनकी औरतें और कच्चे बच्चे थे।

खच्चरोंके झुण्डके आते ही सरायके बाहरकी गलीमें कोलाहल मच गया। खच्चर रेंकने और पैर पटकने लगे, खच्चरवाले जोर-जोरसे बातें कर शोर मचाने लगे, औरतें बातें करतीं-करतीं लड़ने लगीं और बच्चे रोने लगे। सारी गलीमें एक विचित्र वातावरण उपस्थित हो गया। ये लोग खच्चर पालने और बेचनेवाले थे और झुण्ड बनाकर इधरसे उधर घूमा करते थे। तीनों यूरोपियन यह चिल्लपों देखकर घबरा गये। मि० ब्लेकने शेमेल्कासे कहा, जल्दीसे भावताव करो और सौदा तय कर लो। किन्तु खच्चरवालोंकी प्रकृति खच्चरोंमें रहते-रहते उनकी जैसी ही हो गयी थी। वे कमसे कम दस गुना दाम मांग रहे थे और बात-बातमें खुदाकी कसम खा रहे थे।

स्मिथने दो-तीन खच्चरवालोंको डांट दिया। आधा घण्टेकी खिचखिचके बाद सौदा तय हुआ और वे लोग सिक्के गिन-गिनकर बड़बड़ाते हुए रवाना हो गए।

उनके चले जानेके बाद शेमेल्काने कहा, देखा हुजूर ! कितने सस्ते दामोंमें सौदा करवा दिया। जनाब, मैंने छ आदमियोंको साथ चलनेके लिये ठीक किया है, लेकिन, वे लोग सुबहसे पहिले नहीं चल सकते।

उनको जहन्नुममें जाने दो। तुम दूसरे छ आदमी ठीक करो जो घण्टे भरमें हमारे साथ चलनेको तैयार हों। अन्यथा तुम्हें अपनी नौकरीसे हाथ धोना पड़ेगा, मैं ऐसा बेकाम नौकर नहीं रखना चाहता। हम लोग यहां ठहर नहीं सकते। समझे।

मि० ब्लेकका कड़ा उत्तर सुनकर वह अप्रतिभ-सा हो गया। उसका सारा उत्साह ठण्डा पड़ गया। ऐसा मालूम हो रहा था कि वह किसी अज्ञात कारणवश कम से कम रातभर फमाकामें ठहरना चाहता है। शेमेल्का बड़बड़ाने लगा, आप लोग इतनी जल्दीबाजी करते हैं, यहां क्या आदमियोंका खान है, विश्वास-पात्र आदमी दुनियामें बहुत कम हैं, लेकिन आप लोग नहीं जानते, समझते हैं कि मैं बहाना करता हूं, इस तरह बड़बड़ाता हुआ शेमेल्का चला गया।

थोड़ी देर बाद शेमेल्का फिर लौटा उसके साथ एक दर्जन जंगली आदमी और गदहे थे। उसने आकर कहा, मालिक, आदमी हाजिर हैं। बड़ी मुश्किलसे बहुत कुछ कहने-सुननेपर ये लोग घण्टेभर बाद चलनेको तैयार हुए हैं।

लेकिन, हमने छ आदमी लानेको कहा, तुम बारह आदमी क्यों लाये? ब्लेकने आगन्तुक जंगलियोंको गौरसे देखते हुए, शेमेल्कासे पूछा।

हाँ। बारह ही लाया हूं। इनमेंसे छ "डालमीन" है।

डालमीन, ब्लेकने दोहराया। एकाएक उन्हें कुछ याद आया और वे जुलीकी तरफ मुखातिब होकर कहने लगे, मैं भूला जा

रहा था। ये लोग जंगली, भयानक और विचित्र होते हैं। हम छको अपने साथ लेलें और बाकी छका जमानतके तौरपर सरायमें छोड़ दें। जबतक हम लोग नहीं लौटेंगे तबतक ये लोग यहाँ रहेंगे। इनकी जमानत बहुत जरूरी है, मिस जुली। इस मुल्कमें पथ प्रदर्शक चुननेमें बड़ी सावधानी रखनी चाहिये। मेरा खयाल है यह इन्तजाम बहुत बढ़िया रहेगा। फिर शेमेल्काकी तरफ घूमकर बोले, इसमें कौन कौन हमारे साथ चलना चाहता है? छ आदमियोंको चुन लो।

शेमेल्काने उन जंगली और खूंखार पथ-प्रदर्शकोंमेंसे छ हट्टे-कट्टे आदमियोंको चुन लिया। ये लोग देखनेमें बड़े भयंकर थे। उनमेंसे तीनके चेहरे बड़े डरावने थे वे बर्बर थे। पांच वर्ण-संकर हब्सी, एक गोरा, नाटा, अरब। इस विचित्र गिरोहको साथ लेकर मिस्टर ब्लेक चलनेकी तैयारियाँ करने लगे। उन्हों-ने शेमेल्कासे कहा कि इन लोगोंसे कहो कि आधा घण्टेमें चलनेको तैयार हो जांय। किन्तु उन लोगोंने साफ शब्दोंमें कह दिया कि जबतक "बक्सास" नामक मादक पेय पदार्थ पीनेको नहीं मिलता तबतक वे लोग कोई काम नहीं कर सकते। उन लोगोंका यह हठ देखकर ब्लेकको कुछ बुरा मालूम पड़ा किन्तु उन्होंने कुछ कहा नहीं और शेमेल्काको "बक्सीस" लानेका आर्डर दे दिया। शेमेल्का दौड़कर दो तीन हांडी "बक्सास" ले आया। वे लोग "बक्सास" पीनेमें मशगूल हो गये। लगभग आधा घण्टा उन्हें बक्सास पीने और बकवाद

करनेमें लग गया, वे आपसमें गाली-गलौजतक करने लगे। वे जंगली जानवरोंकी तरह लड़ने लगे। शेमेल्काने उन्हें डांट-कर चुप किया और सरायके भीतर मिस्टर ब्लेकके पास गया। मिस्टर ब्लेक, स्मिथ और जुली खा-पीकर टंच हो चुके थे। स्मिथको कोफ्ता बहुत पसन्द आया था। मिस्टर ब्लेकने कहा, हमलोग खाना खा चुके और चलनेको तैयार हैं।

सामान खच्चरोंपर लाद दिया गया। तीनों यूरोपियनोंने सरायसे सड़कपर आकर देखा कि तम्बू, खाने-पीनेकी सामग्री, और अन्य सामान लाद दिया गया। वे लोग सवार हो गये। शेमे-ल्का भी सवार हो गया, खच्चर इधर-उधर दौड़ने, पैर पटकने और रेंगने लगे। हल्ला-गुल्ला सुनकर सड़कके दोनों तरफ पास-पड़ोसके आदमी जमा हो गये और आपसमें टीका-टिप्पणी करने लगे। सड़कमें काफी भीड़ जमा हो गयी। ब्लेकका यात्रादल इस हल्ले-गुल्ले और भीड़ भाड़में रवाना हुआ। दर्शक उनके रवाना होते ही तालियां पीटने लगे।

जब वे लोग फमाका शहरकी गलियोंको पार करते हुये शहरसे बाहर आ गये तब मिस जुलीका मुँह खुला, पहिले वह खिलखिलाकर हँसी और फिर बोली, मिस्टर ब्लेक हमारी असली यात्रा अब शुरू हुयी। इस समय हमलोगोंने सचमुच बर्टरम चारनको मात कर दिया। भला, बेचारा बर्टरम इस रास्तेमें क्यों आने लगा।

हाँ, मालूम ऐसा ही पड़ता है। ब्लेकने जवाब दिया।

मालूम क्या पड़ता है ? कहिये, अब बर्टरमके दर्शन न होंगे।

ब्लेकने कुछ जवाब नहीं दिया, बल्कि वे गहरी विचारधारामें डूब गये।

शाम होनेमें अधिक देर न थी। दिनभर तपकर सूर्य ठण्डा होता हुआ पश्चिममें गिर रहा था। अस्त होते हुए सूर्यकी सुनहरी किरणें यात्रियोंके धूल धूसरित चेहरोंपर पड़ रहीं थीं। शाम होते होते वे लोग फमाका की सरहद पारकर अबसीनियाके सीमान्तपर पहुंच गये। उनका काफला बढ़ा चला जा रहा था। नील नदी अभी भी उनसे दाहिने ही बह रही थी, जिसके कारण हवामें नमी और मौसिममें तरावट थी। वे ज्यों ज्यों आगे बढ़ते जा रहे थे, रास्ता कठिन होता जा रहा था। हवा घोंघों करती हुयी तेजीसे बहने लगी थी। गर्मी सर्दी सहनेके लिये तैयार यह दल अपने पथपर अग्रसर हो रहा था।

आगे बढ़ते ही पथरीली जमीन मिलने लगी। पथरीला रास्ता बतला रहा था कि आगे चलकर उन्हें पहाड़ियां पार करनी पड़ेंगी। लेकिन पथरीली जमीनमें लता गुल्मों और पेड़ पौधोंकी कमी नहीं थी। बीच बीचमें पानीके गड्ढ भी मिल रहे थे।

बीच बीचमें पीले गलीचेके समान पीली जमीन मिल रही थी। नागफनीके पेड़ोंकी भी कमी न थी। घनी पुष्पित लताओं, आदमकदके ऊंचे कांटेदार पेड़ों, हरे, पीले, लाल गुलाबी जंगली फूलोंसे रास्ता भरा हुआ था। वारकाके बड़े २ पेड़ोंकी

हजारों शाखाएं एकके बाद एक फैलती हुयी आधी एकड़ जमीन तक घेरे हुये थी। वारकाके पेड़ोंपर तरह तरहके पक्षियोंके हजारों लाखों घोंसले थे। जङ्गलमें सन्नाटा था, बीच बीचमें किसी जंगली जानवर या पक्षीके शब्दसे सन्नाटा भंग हो जाता था। बड़ी जंगली मक्खियाँ इधरसे उधर उड़ रहीं थीं। डूबते हुए सूरजकी रोशनी पड़नेसे आकाशमें उड़ते हुए पक्षियोंके रंगीन पर यों चमक रहे थे मानो जवाहिरात चमक रहे हों। हवा घर घराती हुयी चल रही थी। मानो प्रकृति नटी अपने अनुपम वेशपरिधारणमें व्यस्त थी। शायद वह किसीसे मिलने जानेके लिये श्रृंगार कर रही थी, या उसके घर कोई आनेवाला था।

अहा! प्रकृति नटीने कैसा अद्‌भुत साज सजा है, मिस जुली। मैं गद्‌गद्‌ हो गया। ओह! प्रकृतिमें कितना सौन्दर्य है, कितना आकर्षण है। प्रकृतिके इस सौन्दर्य साधनका परिणाम चाहे जो हो, किन्तु मुझे विश्वास है कि प्रकृतिका यह रूप अपरूप है।

एकाएक मौन भंगकर मिस्टर ब्लेकने प्रकृतिकी तारीफ कर डाली।

तीनो यूरोपियनोंके पीछे चलनेवाले पथ प्रदर्शक और रक्षक जंगलमें भी आनन्द और उत्साहसे वञ्चित न थे। वे सामानसे लदे हुए ढोरोंको हांकते हुए आपसमें हास्य विनोद कर रहे थे। वे लोग नाटे मोटे अरबका मजाक उड़ा रहे थे। क्योंकि वह बेचारा जिस खच्चरपर सवार था वह बड़ा बद‌-माश था। उसने अरबका बैठना मुहाल कर दिया था। दो आदमी

अरबपर आवाज़ाकसी कर रहे थे और बाकी हंसकर उसे चिढ़ा रहे थे। मोटे नाटे अरबकी दिल्लगी उड़ते देखकर स्मिथ हंसा और बोला, सरदार! मोटे आदमीकी हर जगह मुश्किल है। मोटा होना पाप है।

तुम मोटे होते तो पाप पुण्यका पता चलता। मिस जुलीने कहा। सबके सब एक आदमीके पीछे पड़ जायं यह क्या कोई अच्छी बात है?

लेकिन मिस जुली। वही तो उन लोगोंके दिल बहलावका सामान हो रहा है। स्मिथ बोला

ब्लेकने मिस जुली और स्मिथकी बातोंमें कोई भाग नहीं लिया। बल्कि वे शेमेल्कासे कमहारा राजमहल और उसके मालिक बहर करीनके बारेमें पूछताछ करने लगे। ब्लेकको कमहाराके सम्बन्धमें बातें करते सुनकर मिस जुली भी ब्लेककी तरफ चली आयी और उनकी बातें सुनने लगी। क्योंकि कमहाराके मामलेमें कुछ भी जाननेके लिये वह सबसे अधिक उत्सुक थी। शेमेल्काकी बातचीतसे मालूम हुआ कि उसे महल और बहर करीनके सम्बन्धमें बहुत सी बातें मालूम हैं। गो कि उसका कहना था कि वह कई मरतबा महलमें जा चुका है, और सब कुछ जानता है, किन्तु उसने ब्लेकसे जो कुछ बातें कहीं उससे ब्लेकको यही मालूम हुआ कि उसकी बातें बिलकुल उटपटांग हैं और शायद उसने एक बार भी महलके अन्दर पैर नहीं रखा।

बातचीत करते हुए वे लोग बढ़ते चले गये। पक्षियोंका कलरव बन्द हो गया, सूरज पश्चिममें डूब गया, अन्धेरेकी चादर छा गयी और रातका आगमन हो गया। रात गाढ़ी होनेसे पहिले ही उन लोगोंकी चाल रुक गयी। वे ठहर गये। खच्चरों-परसे तम्बू उतारे गये और मैदानमें तान दिये गये, तम्बूओंमें रोशनी हो गयी और नाटे मोटे अरबने कहा, हुजूर! मैं खाना बहुत बढ़िया बनाता हूं। ब्लेक और जुलीकी सलाहसे स्मिथने बेनीकालीको भोजन तैयार करनेका हुक्म दे दिया। बेनीकाली वाकई बहुत बढ़िया खाना बनाता था।

खाना तैयार हो गया ब्लेक आदिने खाना खाकर पूर्ण सन्तोष प्रकट किया। बेनीकाली सिर्फ अच्छा रसोइया ही नहीं था किन्तु हँसोड़ भी था। जब सब लोग खा पीकर आगकी अंगीठी बीचमें रखकर तापने बैठे, तब बेनीकाली उन्हें छोटी छोटी विनोदपूर्ण कहानियां सुनाकर हँसाने लगा। बेनीकाली तीन यूरोपियनोंके लिये ही नहीं किन्तु अपने अन्य साथियोंके लिये भी मनोरंजक सिद्ध हुआ। वह हरएकका मनोरंजन कर सकता था, सिर्फ एक खच्चर ही उससे नाराज था, जो उसे अपनी पीठपर नहीं चढ़ने देता था। बेनीकाली कोशिश करनेपर भी खच्चरको खुश नहीं कर सका। तब उसके साथियोंने कहा, काली, तुम हमारा खच्चर ले लेना।

बेनीकालीने जवाब दिया, मेरे पास आकर वह भी बदमाशी करने लगेगा। तुम जानते हो! खच्चर ही मुझसे नाराज होते हैं।

जुली अपने तम्बूमें सोने चली गयी थी। मि० ब्लेक और स्मिथ भी सोनेकी तैयारी कर रहे थे, वे अपने विस्तर खोल-कर बिछा रहे थे, क्योंकि यात्राकी थकानसे उनके बदन भी चूर चूर हो रहे थे। स्मिथ बहुत ही ज्यादा थक गया था, क्योंकि ऐसी यात्रा करनेका उसे पहिले पहल मौका मिला था। थोड़ी ही देरमें तम्बूओंमें सन्नाटा छा गया और यात्री सुखकी नींद सो गये।

सबेरा होते ही सब लोग उठ बैठे। प्रातः कृत्यसे छुट्टी पाकर शेमेलका तम्बू उखाड़कर लदवाने लगा। ब्लेक, स्मिथ और जुली कहवा पीकर और नाश्ता करके चलनेको तैयार हो गये। आगेका रास्ता बड़ा मुश्किल और दुर्गम था। यह जानते हुए भी वे लोग रवाना हो गये। क्रमशः वे लोग पहाड़ियोंके नजदीक आने लगे। छोटी छोटी पहाड़ियोंके बीचमेंसे जानेवाला रास्ता इतना संकड़ा था कि कभी कभी उन लोगोंको एक एककी लाइन बनाकर चलना पड़ता था। पहाड़ियोंकी पथरीली दुर्वह घाटियोंको पार करते हुये, वे लोग आगे बढ़ते जा रहे थे। दिन भर वे लोग चलते, रातमें विश्राम करते। बेनीकाली हंसा हँसाकर उनका पथश्राम हर लेता।

इस तरह लगातार चलते चलते कमोकासे रवाना हुये जब उन्हें ६ दिन और ६ रातें बीत गयीं तब वे सातवें दिन अपनी यात्राके सबसे ऊंचे स्थानपर आ पहुंचे। यह स्थान एक पहाड़के शिखरपर था, जो समुद्र तटसे लगभग पांच हजार फीट ऊंचा

था। यहाँसे उनकी चढ़ाई खत्म हो गयी और उनकी यात्रा उत्तरकी तरफ बढ़ी। चढ़ाईकी शीघ्र थका देनेवाली यात्राका अन्त हो जानेके कारण सारा दल खुश हो गया। रास्ता सुगम मालूम पड़ने लगा। रात होते ही उन्होंने डेरे डाल दिये। तम्बू गाड़ दिये गये, जानवर बाँध दिये गये, उन्हें खिला पिला दिया गया और बेनीकालीने तीनों यूरोपियन यात्रियोंके लिये खाना तैयार कर लिया।

खाना खा लेनेके बाद तीनों यात्री तम्बूमें बैठे हुये थे। ब्लेक अपने पाइपमें तम्बाखू भरकर पी रहे थे, और गप्पें लड़ाने-में मशगूल थे कि गोली चलनेकी आवाजने तीनोंको चौंका दिया, तीनों हीके चेहरोंपर आश्चर्य और जिज्ञासा सूचक भाव झलकने लगा। तीनों तम्बूके बाहर रातके घने अन्धकारमें एकटक ताकने लगे।

उन लोगोंके तम्बुओंसे थोड़ी दूरपर एक तम्बू था, जहांपर कि खच्चरोंके रखवाले और पथप्रदर्शक सोये हुये थे। वहांसे लोगोंके फुसफुसानेकी आवाज आ रही थी। शेमेल्का बोला, हुजूर, यह बन्दूक चलनेकी आवाज है। यह सुनिये, फिर सुनिये, गोलियां चल रहीं हैं।

ब्लेक रुके न रह सके, वे तम्बूके बाहर निकल आये। शेमेल्का उनके पीछे पीछे दौड़ा। ब्लेक तेजीसे कदम बढ़ाते हुये उस तरफ चले, जिस तरफ गोलियां चलनेका अनुमान था। वे आगे बढ़ते गये, पर उन्हे फिर गोली चलनेकी-आवाज न सुनायी

पड़ी। अपने दलमें तो कोई नहीं लड़ मरा है? इस जंगलमें इतनी रातको बन्दूक चलाने कौन आया होगा? ब्लेकने पूछा।

नहीं, अपनी पार्टीमें तो कोई गोलमाल नहीं है। फिर ये गोलियां कहाँ चलीं? बड़े ताज्जुबकी बात है। लेकिन, हुजूर, आवाज गोलीकी ही थी। मालूम होता है दूरसे किसीने गोलियाँ चलायी थीं। शेमेल्काने जवाब दिया।

उन लोगोंने जब इधर-उधर देखकर किसीको नहीं पाया, तब फिर अपने डेरेमें लौट आये।

ब्लेकने आकर कहा, हमारे दलमें सब ठीक है। कोई डर नहीं है, जो होगा देखा जायगा।

ब्लेकके लौट आनेपर वे लोग फिर यात्रा सम्बन्धी बातें करने लगे। शेमेल्काने बतलाया इस प्रदेशमें गोलियाँ चलना और चिड़ियोंका चहचहाना एकही बात है।

मिस जुलीने ब्लेकसे विदा ली और सोनेके लिये अपने तम्बूमें चली गयी। थोड़ी देरमें स्मिथ भी सोने चला गया, ब्लेक और शेमेल्का रह गये। सबको गया देखकर ब्लेकने शेमेल्काको भी सोनेकी इजाजत दे दी, वह भी सलाम करके चलता बना।

सब लोग सो गये या सोने चले गये। सिर्फ दो आदमी जग रहे थे। एक मिस्टर ब्लेक और दूसरा पहरेदार जो घूम-घूमकर पहरा दे रहा था। घोर सन्नाटा छाया हुआ था। ब्लेकने जबसे गोलियोंकी आवाज सुनी थी तबसे वे व्यग्र हो रहे थे। वे सोच

रहे थे कि बन्दूककी आवाज क्यों आयी? किन्तु अभीतक वे किसी निश्चयपर नहीं पहुँचे थे। उन्होंने अपना पाइप साफ किया और ताजा तमाखू भरी और पीने लगे। वे चुपचाप बैठे हुए तमाखू पीने लगे और सोचने लगे। इस प्रकार ध्यानावस्थित अवस्थामें एक घण्टा बीत गया। उनकी पाइपकी तमाखू जल गयी थी और नींदने उन्हें आ घेरा था। इसलिये वे पाइपसे आखिरी कश लेकर सोनेके लिये उठे।

अपने तम्बूमें जानेके पहिले उन्होंने स्मिथसे कुछ बातें की और तब वे सोनेके लिये चल पड़े। किन्तु पहरेदारकी आवाज और पद-शब्द न सुननेके कारण ब्लेकने सोचा कि क्या पहरेदार भी सोने चला गया? ब्लेकको सन्देह हुआ और वे सोने न जाकर उस तरफ गये जिस तरफ खच्चर बँधे हुए थे और जिस तरफ शमेल्का आदि सोये हुए थे। ब्लेकको ताज्जुब हो रहा था कि वह सोने क्यों चला गया? उनके तम्बूसे वहाँका फासला बहुत अधिक नहीं था इसलिये वे अपनी तसल्ली करने उधर चल पड़े।

ब्लेक अपने तम्बूसे चलकर थोड़ी ही दूर बढ़े होंगे कि गोली चलनेका शब्द और घोड़ेके हिनहिनानेकी ध्वनि सुनायी पड़ी।

ब्लेक बड़ी सावधानीसे आगे बढ़ने लगे। उन्हें विश्वास हो गया कि कुछ न कुछ गोलमाल जरूर है। किन्तु अन्धकार इतना गाढ़ा था कि वे कुछ भी समझ नहीं सकते थे। इसलिये पूर्ण सावधानीसे, रिवाल्वर हाथमें लिये हुए मि० ब्लेक आगे बढ़ते चले गये। वे जैसे ही आगे बढ़ते गये उन्हे घोड़ेकी टाप सुनायी

पड़ती गयी। आवाज तेजीसे उनके नजदीक आ रही थी। थोड़ा आगे बढ़ते ही एक घोड़ा हांफता हुआ उनके सामने आकर खड़ा हो गया। बहुत बढ़िया घोड़ा था। वह ब्लेकके सामने गर्दन झुकाकर खड़ा हो गया, मानो सहायताके लिये भीख मांग रहा हो। एक आदमी उसकी पीठपर सवार था, ब्लेक उसे उतारनेके लिये आगे बढ़े, किन्तु वह पहिले ही गिर पड़ा। और गिरते ही मर गया।
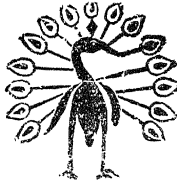
१४

महलमें गड़बड़

रास टेकला गोमनके सिपाही ग्रेनाइट और पम्पनपर टूट पड़े। ग्रेनाइट और पम्पनने परिस्थितिकी गंभीरताको समझा और वे प्राणापनसे अपनी रक्षा करने लगे।

सिपाहियोंके हल्ला बोलते ही वे दीवारके सहारे खड़े हो गये, और सिपाहियोंसे लड़ने लगे। पीछे दीवार होनेके कारण उन्हें बड़ी सहायता मिली, वे डटकर दुश्मनोंका मुकाबला करने लगे। ग्रेनाइट बड़ी बहादुरी और पम्पन अद्भुत मुस्तैदीके साथ लड़ रहा था। उन दोनों बहादुरोंने सिपाहियोंका आगे बढ़ना मुश्किल कर दिया।

बलिक ग्रेनाइट उन्हें पीछे हटाने लगा। अपने सिपाहियोंको कमजोर पड़ते देखकर रास टेकला चिल्लाया, "मार डालो!" बान्ध लो। दो आदमियोंसे क्या डरते हो? मार डालो! मार डालो!! सुनते हो मार डालो।

रास टेकलासे बढ़ावा पाकर सिपाही पूरे जोशसे ग्रेनाइट-पर टूट पड़े, वे लोग ग्रेनाइटपर वार करने लगे। ग्रेनाइट बड़ी फुर्ती और बहादुरीसे अपनी रक्षाकर रहा था। किन्तु वह समझ रहा था कि इतने सिपाहियोंके मुकाबिलेमें वह अधिक देरतक टिक न सकेगा, उसने सोच लिया था कि मौत आयी होगी तो मर जाऊंगा पर हार नहीं मानूंगा, आत्मसमर्पण नहीं करूंगा। पम्पनने देखा कि ग्रेनाइट बुरी तरह घिर गया है, उसे बचाया न जायगा तो मर जायगा। पम्पन सिपाहियोंको खदेड़ता हुआ आगे बढ़ा और ग्रेनाइटको ढकेलकर दीवालकी तरफ कर दिया।

ग्रेनाइट और पम्पन लड़ते-लड़ते दरबारके एक कोनेकी तरफ बढ़ गये, सिपाही क्रमशः उनके नजदीक होते जाते थे, इतनेमें पम्पनने दीवालमें लगा हुआ एक बटन दबा दिया। दीवालमें लगा हुआ एक बड़ासा पत्थर अलग हो गया, दोनों उसके भीतर घुस गये, फिर पत्थर अपनी जगहपर आ गया। दरबारके सिपाही यह लीला देखकर मूढ़ बन गये। ग्रेनाइटने पम्पनकी पीठ ठोकते हुए कहा, बहुत अच्छा किया, वाह! हमें कुछ देरके लिये छुट्टी मिल गयी।

पम्पनने कुछ जवाब नहीं दिया और वह ग्रेनाइटको महलके एक निर्जन भागसे लेकर जाने लगा। उसकी आँखोंमें प्रसन्नता छा गयी और वह उत्साहित तथा आशा-पूर्ण मालूम होने लगा। पम्पनके लिये यह मुश्किल नहीं था, क्योंकि वह वहांके प्रायः सभी गुप्तपथोंसे परिचित था। इसलिये

उसे महलके किसी भी भागमें आने-जानेमें दिक्कत नहीं थी। उसने अपनी जिन्दगीके बीस वर्ष कमहारा राजमहलमें ही बिताये थे, यहींपर वह शाही ढंगसे नाजोंसे पाला गया था, यहींपर वह खेला था, यहींपर जवान हुआ था, और यहींपर उसकी जिन्दगीका सबसे रंगीन स्वप्न सत्य हुआ था, यहीं उसने सर्वप्रथम शाहजादी जेलीको प्रेम किया था, जिसके कारण उसकी यह हालत हुयी थी।

वे लोग दरबारके पीछे पहुँचकर एक संकड़े रास्तेसे आगे बढ़ने लगे। रास्तेके दोनों तरफ पत्थरकी ऊँची दिवाल थी। मोड़पर पहुँचकर पम्पन एक छलांगमें उसपर चढ़ गया और ग्रेनाइटको चढ़नेके लिये कहा, ग्रेनाइट भी चढ़ गया। ग्रेना-इटके दीवारपर आते ही पम्पन पन्द्रह फीट ऊँची दीवारसे नीचे कूद गया, ग्रेनाइटने भी पम्पनका अनुकरण किया। उस समय बिलकुल सन्नाटा था। चार सौ गजके फासलेपर एक बड़ा भारी कमरा दिखलायी पड़ रहा था। उत्तरकी तरफ सौ गज चलनेके बाद पम्पन एक जगह खड़ा हो गया, और उसने फिर दीवारसे बाहर निकले हुए पत्थरके टुकड़ेको दबा दिया फिर सामनेसे एक पत्थर हट गया और दरवाजा निकल आया, वे लोग दरवाजेमेंसे निकलकर दूसरी तरफ आ गये।

ग्रेनाइटने वहां पहुंचकर देखा कि सफेद पत्थरकी पतली सीढ़ियां थीं जो बढ़ती हुई महलके बीचवाले प्रधान सभा-भवन-की ओर जाती थीं। सभा भवनकी इमारत बड़ी शानदार थी

और उसके ऊपर गुम्बज बना हुआ था जो कोसों दूरसे दिख- लायी पड़ता था। सभा भवनकी तरफसे कोलाहल सुनायी पड़ रहा था, शायद ग्रेनाइट और पम्पनके गायब होनेकी खबर महल भरमें फैल गयी थी और सिपाही उन लोगोंकी तलाशमें महलके अन्य भाग ढूंढ़ते हुए वहांतक आ गये थे। पम्पनने इशारेसे ग्रेनाइटको उधर बढ़नेसे रोका, कोलाहल बढ़ता जा रहा था, उन लोगोंके सामने सिर्फ एक दीवार थी जो उन्हें सिपा- हियोंकी आंखों और नंगी तलवारोंसे बचाये हुए थी। पम्पन समझ गया कि थोड़ी ही देरमें सिपाही इधर आ जायंगे, इस- लिये वह ग्रेनाइटका हाथ पकड़कर दूसरी तरफ भागा। दीवार के सहारे छिपते हुए चलकर वे लोग सीढ़ियोंके ऊपर एक छोटीसी खिड़कीके सामने पहुंचे। खिड़की बन्द थी, पम्पनने धक्का मारकर खिड़की खोल दी और दोनों भीतर चले गये। खिड़कीके सामने महलके ऊपरकी छत थी जो काठकी बनी हुई थी। पम्पन और ग्रेनाइट काठकी बनी हुई छतपर दौड़ने लगे, किन्तु शायद सिपाहियोंको उनकी आहट मिल गयी, पम्पन और ग्रेनाइटको सिपाहियोंके ऊपर चढ़नेके शब्द सुनायी पड़ने लगे।

सिपाही हल्ला मचाते हुए "मारो काटो" चिल्लाते हुए सीढ़ियोंपर चढ़ रहे थे। वे लोग छतके किनारेतक पहुंच गये थे, अब आगे कहां जाय यही समस्या थी। ग्रेनाइट सोचने लगा, इन सिपाहियोंसे बचकर महलमें छिपना असम्भव है।

यहां उन्हें आश्रय देनेवाला कौन है? सभी पम्पनके दुश्मन दिखलायी पड़ रहे हैं। छत पार करके दूसरी तरफ जाते ही वे पकड़ लिये जायंगे, छतपर खड़े रहते हैं, तब भी रक्षा नहीं। क्या किया जाय? ग्रेनाइट सोचने लगा। यह बात ठीक थी कि पम्पन महलके गुप्त रास्ते जानता था इसलिये वे लोग कुछ देरतक शायद कहीं छिपे रह सकते थे, किन्तु आखिर उन्हें सिपाहियों-का सामना तो करना ही पड़ता। पम्पनकी सहायतासे अगर वे किसी तरह महलके बाहर भी निकल जांय तब भी कुछ फायदा नहीं, क्योंकि न तो उनके पास खच्चर थे और न घोड़े, बिना इन जानवरोंकी सहायताके राज्यकी सीमासे निकल जाना असम्भव था। ग्रेनाइट सोच रहा था, महलसे भागनेपर भी हम फिर पकड़कर महलमें लाये जायंगे, इसलिये भागना व्यर्थ है। इस तरह भागनेकी कोशिश करना जान बूझकर मौत-को गले लगाना है। भागनेपर भी जब छुटकारेकी आशा नहीं है, पकड़े जाकर मौतको गले लगानेकी आशंका है, तब क्यों न बहादुरीसे मुकाबिला किया जाय। मरना ही पड़े तो बहादुरों-की मौत मरा जाय।

ग्रेनाइटने निश्चय कर लिया, अब वह भागनेकी कोशिश नहीं करेगा। वे भागनेके लिये तो इतनी कड़ी यात्रा करके यहां नहीं आया। उनके कमहारा आनेका एक निश्चित उद्देश्य था, जबतक वह पूरा न हो जाय तबतक वह महलसे बाहर कैसे जा सकता था, बस, इस तरहके विचार उठते

ही उसका भागनेका इरादा रफूचक्कर हो गया और उसके विचारों तथा चेहरेपर दृढ़ताके चिन्ह दिखलायी पड़ने लगे। उसने निश्चय कर लिया कि या तो अपना कार्य सिद्ध करूंगा या मर जाऊंगा, पर भागूंगा नहीं। वह अभीतक बहर करीनसे नहीं मिल सका था, रास टेकलाके विश्वास-घातकी कहानी न कह पाया था, अभीतक शाही कमरबन्द नीगस बहर करीनको लौटाया नहीं गया था। तब वह कैसे जा सकता था? जवांमर्द आदमी अधूरा काम छोड़कर नहीं भागते। इस तरह विचारोंको दृढ़कर ग्रेनाइटने छतके दूसरी तरफ उतरकर न भागकर, खिड़कीमेंसे महलके ऊपर जानेका निश्चय किया। सिपाही ऊपर नहीं आये थे, शायद भ्रमवश वे दूसरी छतकी तरफ चले गये। पम्पनका हाथ पकड़ खिड़कीकी तरफ जाते हुए, दृढ़ स्वरमें ग्रेनाइटने कहा।

पम्पन इस तरफ मत चलो। हम भागेंगे नहीं। मैंने यही निश्चय किया है। आओ मेरे साथ चलो।

पम्पनने इशारेसे ग्रेनाइटको मना किया, पर दूसरे ही क्षण उसे मालूम हो गया कि ग्रेनाइट अपने इरादेपर दृढ़ है और वह उसकी बात नहीं मान सकता।

ग्रेनाइट पम्पनका हाथ पकड़े हुए सीढ़ियां पार करता हुआ, महलके हालमें पहुंच गया और दौड़ता हुआ जाकर मंचपर खड़ा हो गया। पम्पन भी उसके साथ था और ग्रेनाइटकी रक्षा करनेके लिये खूब सतर्क हो रहा था। उसने मन ही मन निश्चय कर

लिया था कि ग्रेनाइटकी प्राणपनसे रक्षा करेगा। दरबारके मंचपर उनके पहुंचते ही सिपाहियोंके झुण्डके झुण्ड हालमें भरने लगे, उनके चेहरोंपर उत्तेजना थी और हाथोंमें नंगी तलवारें।

गुस्सेमें बहुतसे सिपाही चिल्ला रहे थे। थोड़ी ही देरमें महलहाल नंगी तलवारों और खांड़ोंसे भर गया। हालभरमें सिपाहियोंका कोलाहल गूंजने लगा और तलवारें चमकने लगीं। ग्रेनाइट और पम्पन इस खौफनाक वातावरणसे जरा भी नहीं घबराये और जहाँके तहां खड़े रहे। उत्तेजित सिपाहियोंकी भीड़ ने जब देखा कि ग्रेनाइट और पम्पन मारकाट नहीं कर रहे हैं, बल्कि दृढ़ भावसे मंचपर खड़े हैं, तो उनकी बुद्धि चकरा गयी।

सिपाहियोंकी यह अवस्था देखकर, ग्रेनाइटने अवसरसे लाभ उठानेकी बात सोची, और वह तेज आज्ञापूर्ण स्वरमें चिल्लाया—सुनो!

वह चिल्लाया। उसका गम्भीर स्वर महलके गुम्बज में गूंजकर सारे महलमें फैल गया। सिपाहियोंके कान खड़े हो गये।

सुनो। मैं क्या कहना चाहता हूं? तुम देख रह हो, मैं एक अंग्रेज हूं। मेरा वतन यहांसे बहुत दूर है। मैं तुम्हारे मुल्कमें बीहड़, पथरीले, भयानक पथ पारकरके मरनेके लिये नहीं आया हूं। तुम यह सवाल कर सकते हो, मैं क्यों आया? मैं इसी सवालका जवाब देरहा हूं। मुझे तुम्हारे महामान्य नेगसको एक बहुत ही महत्वपूर्ण समाचार सुनाना है। वह समाचार

बहुत ही महत्व पूर्ण है, मैं झूठ नहीं कह रहा हूं। महामान्य नीगस यहां नहीं हैं, इसलिये वह समाचार मैं तुम्हें सुनाता हूं। पहिले मेरी बात सुन लो, फिर विचार करनेके बाद जो चाहो सो करो। मुझे तुम्हारी बहादुरीपर विश्वास है और साथ ही मैं तुम्हारी सच्चाईपर भी विश्वास करता हूं, इसलिये कह रहा हूं, सुनो! पन्द्रह बीस वर्ष पहिले—

ग्रेनाइट आगे न कह सका, न जाने कहांसे रास टेकला गोमन हालमें आ गया और आते ही ग्रेनाइटको गालियां देने और चिल्लाने लगा। उसने भीड़में अशान्ति मचा दी। वह चिल्लाने लगा--यह झूठा है। इसे पकड़ लो!

ग्रेनाइट मुस्तैदीसे खड़ा हुआ देख रहा था कि रास टेकला की बातोंका उपस्थित लोगोंपर क्या असर होता है?

कुछ भी असर नहीं हुआ। रास टेकलाका चिल्लाना अरण्य रोदन साबित हुआ। ग्रेनाइटके शब्दोंका लोगोंपर असर पड़ चुका था, वे लोग उसकी बातें सुननेके लिये उत्सुक हो गये थे उन्होंने रास टेकलाकी बातें नहीं सुनी, बल्कि उसे चुप रहनेको कहा। कई आदमी चिल्लाने लगे, चुप रहो,। चुप रहो। हम सुनेंगे। चुप रहो।

रास टेकला क्षणभरके लिये चुप हो गया, अशान्ति मिटी। सबके कान ग्रेनाइटकी बातें सुननेको व्यग्र हो गये, अकेला टेकला ग्रेनाइटकी बातें नहीं सुनना चाहता था।

कोई उपाय न देखकर रास टेकला महल हालके रक्षकको

तरफ बढ़ा और उससे ग्रेनाइटकी बुराई की और कहा कि इस अंग्रेजकी बात मत सुनो, यह झूठा है। इसे गिरफ्तार कर लो।

महल हालके रक्षकने कहा—जो भी हो। हम इसकी बात जरूर सुनेंगे। जब सब सिपाही और नौकर चाकर उसकी बातें सुनना चाहते हैं, तब हम क्यों न सुने? बादमाश होगा तो हम इसे इसकी बातें सुननेके बाद भी गिरफ्तार कर सकते हैं।

रास टेकला महलहाल रक्षककी बातोंका जवाब न देकर बकने और चिल्लाने लगा, उस समय उसकी हालत पागलोंकी सी हो रही थी। सिपाही और गुलाम उन दोनोंको घेरकर खड़े हो गये और उनकी बहस सुनने लगे।

महल हालका अधिकारी रास टेकलाकी बात माननेको बिलकुल तैयार नहीं था। उत्तेजनावश बकते बकते रास टेकला इतना गर्म हो गया कि उसे गश आ गया और वह मुंहके बल जमीन पर गिर पड़ा।

भीड़में सन्नाटा छा गया। लोग झुककर रासटेकलाका मुंह और नब्ज देखने लगे। बहस खत्म हो गयी और पाँच सात आदमी रास टेकलाके बेहोश शरीरको उठा कर ले गये।

रास टेकलाके ले जाये जानेके बाद फिर सन्नाटा छा गया। सिपाही ताज्जुबसे अंग्रेज यात्री और उसके काले साथीको देख रहे थे। पम्पन भी चुप चाप यह सब काण्ड देख रहा था। महलहालका अफसर कुछ देर खड़ा सोचता रहा, फिर ग्रेनाइट की तरफ बढ़ा, पर भीड़के कारण ग्रेनाइटके पासतक पहुंचना

आसान नहीं था, इसलिये वह अपने सिपाहियोंके साथ ग्रेनाइट के सामने कुछ फासलेपर जाकर खड़ा हुआ और ग्रेनाइटको सम्बोधन करके कहने लगा।

अजनवी!

ग्रेनाइटकी तरफ मुंह करके वह बोला।

अजनवी! तुम हमारे लिये अचम्भेकी चीज हो, जिस तरह तुम्हारा महलमें उपस्थित होना आश्चर्यजनक है। हम तुम्हें नहीं जानते, और न यही जानते हैं कि तुम यहांतक कैसे पहुंचे। किन्तु जैसा कि तुमने कहा, तुम बीहड़ दुर्गम पथ पार करके महामान्य नीगसको एक महत्वपूर्ण समाचार सुनाने आये हो। ऐसो हालतमें किसीकी ताकत नहीं जो तुम्हारे बदनमें हाथ लगाये और मौतको गले लगाये। तुम निर्भय होकर अपनी बातें कहो। कोई भी तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। हमलोग तुम्हारी बातें सुननेको तैयार हैं, तुम जो चाहो सो बिना संकोच कह सकते हो। कृपया अपनी बात पूरी करो।

इस प्रकार महल रक्षकका खुला आमन्त्रण पाकर ग्रेनाइट बहुत खुश हुआ, उसने देखा सबकी आंखें उसीपर लगी हुयी हैं, उसका साहस दूना हो गया, उसने उसी प्रकारके गम्भीर और तेज स्वरमें अपनी बातचीतका सिलसिला शुरू किया।

पन्द्रह वर्ष पहिले। इसी कमहारा राज महलके दरवाजेपर एक बीमार यूरोपियन यात्री आकर टिका था। उसका नाम पीरी द्रुसीली था। तुम्हारे महामान्य नीगस बहर करीनकी

दयालुताके कारण वह महलमें लाया गया, और उसकी सेवा सुश्रूषा की गयी। थोड़े ही दिनोंमें वह अच्छा हो गया। किन्तु उसने दयालुताका बदला विश्वासघातसे दिया। उसने एक षड़यन्त्र रचा। किसी रातको उसने महलके खजांची रास टेलकेननसे खजानेकी चाभियां ले ली। किस तरह? रास टेलकेननने अपनी खुशीसे चाभियां नहीं दी, बल्कि शराबमें बेहोशीकी दवा पिलाकर उसे बेहोश कर दिया गया और चाभियां ले ली गयीं। पीरी ड्रुसीली खजाना खोलकर अन्दर दाखिल हुआ और खजानेमेंसे बेशकीमती शाही कमरबन्द चुराकर खजाना पूर्ववत् बन्द कर दिया। यही नहीं, वह शाही कमरबन्दके साथ ही साथ बेहोश रास टेलकेननको भी लेता गया। यहांसे जाकर पीरी ड्रुसीलीने रास टेलकेननको गुलाम फरोश अरब सरदारके हाथ इस शर्तपर बेच दिया कि उसकी जुबान काटकर उसे गूंगा बना दिया जाय। ताकि वह कभी भी सच घटना किसीसे न कह सके और उसका पाप छिपाका छिपा रह जाय।

पन्द्रह वर्ष पहिले राजमहलके खजानेसे शाही कमरबन्द गायब हुआ था, चूँ कि उस समय रास टेलकेनन खजांची था। और वह भी कमरबन्दके साथ ही साथ गायब हो गया था, इस लिये तुम लोगोंने, शायद महामान्य नीगसने भी यही समझा कि रास टेलकेनन, चोर और विश्वासघाती निकला।

पन्द्रह वर्ष बाद आज मैं तुम लोगोंके सामने कहता हूं, टेलकेनन चोर या विश्वासघाती नहीं था। जो सच बात थी, वह

मैंने तुम्हारे सामने कह दी। अच्छा! उसके बाद क्या हुआ सुनो!

अरब सरदारने रास टेलकेननकी जुबान काट डाली और उसको गुलामोंके दलमें शामिल कर लिया। रास टेलकेनन गुलाम नहीं था, और न गुलाम रहना चाहता था, इसलिये वह एक दिन मौका पाकर भाग निकला और एक नदीके किनारे बेहोश होकर गिर गया। वहांसे उन आदमियोंने उसकी रक्षा की जहां वह अभी तक था। जहां उसने अपनी जिन्दगीके पन्द्रह वर्ष बिताए। पन्द्रह वर्ष बीत गये पर किसीको भी रास टेलकेननके रहस्यका पता नहीं चला, क्योंकि कोई यह भी नहीं जान सका कि वह किस निर्दयतासे जबरन गूँगा बना दिया गया और उसे क्या-क्या अत्याचार सहने पड़े।

कुछ दिनों पहिले, रास टेलकेननने पेरिसकी सड़कपर पीरी ड्रूसीलीको जिन्दा देखा। पीरी ड्रूसीलीको देखते ही रास टेलकेननकी स्मृतियां ताजा हो गयीं और पीरी ड्रूसीली उसी मौत मारा गया जिस मौत उसे मरना चाहिये था, और रास-टेलकेननको पीरी ड्रूसीलीके कपड़ोंके नीचे चुराया हुआ बेश-कीमत शाही कमरबन्द मिल गया। कमरबन्द मिलते ही रास टेलकेननने निश्चय किया कि इस कीमती आभूषणको यथा शीघ्र उसके असली महामान्य दयालु मालिककी सेवामें पहुँचा देना चाहिये यह निश्चय करते ही वह हजारों मील दूरसे हर तरहकी सफर की तकलीफें उठाता हुआ, यहांके लिये रवाना हो गया।

विश्वासघाती पीरी ड्रुसीलीकी भयङ्कर नीचताके कारण रास टेलकेननकी जुबान चली गयी थी और वह मुँहसे अपनी बात भी नहीं कह सकता था। इसलिये मैंने एक सच्चे और ईमान-दार आदमीका साथी बनना उचित समझा। इस समय मैं उसी की तरफसे बोल रहा हूं, जुबान मेरी है, बात उसकी। अब मैं तुमलोगोंको उस शख्सका नाम बतलाना चाहता हूं जिसने पीरी ड्रुसीलीकी धोखेबाजी और चोरीमें उसका साथ दिया था और मदद की थी।

आप उस आदमीको जानते हैं। उसका नाम रास टेकला गोमन है। इस आदमीने पीरीके साथ मिलकर खजानेमें चोरी करवायी। यही आदमी हमें अपने कब्जेमें करके, मारकर; सत्य का गला घोंटनेका प्रयत्नकर रहा था। यही आदमी चाहता था कि हमलोग मार डाले जाँय ताकि उसके काले कारनामोंसे दुनिया अपरिचित ही रह जाय।

इस समय आपके सामने बेजुबान रास टेलकेनन खड़ा है, रास टेकला गोमनमें हिम्मत हो तो वह आये और कहे कि रास टेलकेननका कहना गलत है। वह आपसे न्यायकी भीख चाहता है, वह चाहता है कि उसके साथ अन्याय करनेवालेको अन्याय-की पूरी सजा मिले, और उसके सम्राटका भ्रम दूर हो जाय।

इतना कहकर, ग्रेनाइट चुप हो गया। हालभरमें शान्ति छा गयी। थोड़ी ही देरमें शान्ति भंग हो गयी और लोग फुस-फुसाने लगे कुछ लोग इथोपियन भाषामें बोलने लगे, कुछ

जबाब देने लगे। हालमें फिर शोरगुल मच गया। बात यह हुई थी ग्रेनाइट अरबीमें बोला था किन्तु नौकर और सिपाही अरबी नहीं जानते थे, इसलिये वे जानना चाहते थे कि ग्रेनाइटने क्या कहा? लोग अरबी न जाननेवालोंको ग्रेनाइटकी बातें बतलाने लगे और जिन्होंने सुनकर समझ लिया था, वे घटनाओंकी सम्भावना और असम्भावना तथा अन्य पहलुओंपर विचार प्रकट कर रहे थे। हालभर बहस समितिमें परिणित हो गया था।

पांच सात मिनट बीत जानेपर हाल रक्षकने अपने साथियोंसे सलाह कर लोगोंको चुप रहनेका आदेश देनेके लिये हाथ उठाया और बोला, चुप रहो। सुनो!

प्रायः सब लोग चुप हो गये।

अजनबी! तुमने हमें जो कहानी सुनायी वह रोमांचक और अद्भुत है। इतनी रोमांचक कि निर्दयता भी थर्रा उठे। इतनी अद्भुतकी जैसी हमने आजतक नहीं सुनी। किन्तु तुम्हारी अद्भुत कहानीकी सच्चाईका निर्णय महामान्य नीगस बहरकरीन ही कर सकते हैं। वे शीघ्र ही लौटनेवाले हैं। किन्तु जब तक महामान्य नहीं लौटते हैं, तबतक तुम दोनोंको किसीसे डरनेकी जरूरत नहीं है, कोई भी तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचा सकता। मैं तुम दोनोंकी रक्षा और आरामका वादा करता हूं। महलके अन्दर तुम लोगोंको किसी तरहकी तकलीफ नहीं हो सकती। मैं तुम लोगोंकी तमाम आवश्यकताएं पूरी करवा दूंगा। तुम लोग चिन्ता मत करो।

बहुत अच्छा। ग्रेनाइटने कहा—हम लोगोंने अपने एक दोस्त रास टेकला गोमनको नाराज कर दिया, पर शीघ्र ही हमें दूसरा मित्र मिल गया। अब हम लोग यहांसे किसी अच्छे स्थानमें जाना चाहते हैं।

पम्पनने सिर हिलाकर ग्रेनाइटकी बातका समर्थन किया। हालसे रवाना होकर वे लोग सीढ़िया चढ़ते उतरते हुये, टेकला गोमनके खाली दरबार हालको पार करते हुये, एक दूसरे बड़े भारी हालके सामने पहुंचे।

जैसे ही वे लोग हालमें पहुंचे सिपाहियों और गुलामोंने उन्हें घेर लिया लेकिन महल रक्षकने सबको हट जानेका हुक्म दिया। जो लोग पम्पन और ग्रेनाइटके चारों ओर जमा हुये थे, उनमेंसे दो एक इस तरह सिर हिला रहे थे मानो वे पम्पनको पहिचान रहे हों। लेकिन, कोई भी कुछ बोला नहीं।

सिर्फ महल रक्षक ही ग्रेनाइटके सामने आया और ग्रेनाइट से पूछने लगा, इस समय आपको सबसे पहिले क्या चीज चाहिये?

खाना। ग्रेनाइटने जवाब दिया। पम्पनका सिर थोड़ासा हिला।

अभी तैयार मिलता है। उसने नम्रतासे कहा, जरा मेरे पीछे-पीछे चले आओ।

वह उन्हें अपने व्यक्तिगत स्थानमें ले गया जहांपर वह खुद रहता था।

भीतर दाखिल होते ही, दो सफेदपोश नौकरोंने अदबसे सलाम किया। दोनोंके सामने दस्तरखान बिछा दिये गये, और रकाबियां तथा थालियां और सुराहियां रखी जाने लगी।

किसी चीजके जरूरत होते ही घण्टी बजा देना। मैं तुम लोगोंके सोनेका इन्तजाम करने जाता हूं। खानेके बाद आराम भी चाहिये।

इतना कहकर वह चुपचाप दरवाजेतक चला गया, फिर लौट कर खड़ा हुआ और बोला—तुम दोनोंको मालूम होना चाहिये कि रास टेकला गोमनका महलमें काफी प्रभाव है, और अपने व्यवहारसे तुम लोगोंने उसे नाराज कर दिया है। इसलिये, बुद्धिमानी इसीमें है कि जबतक तुम लोगोंको महामान्य नीगस वहर करीनकी सेवामें उपस्थित न किया जाय तबतक तुम लोग मेरे स्थानकी सीमासे बाहर न जाओ।

इतना कहकर उसने अर्थपूर्ण ढंगसे ग्रेनाइटको ताका, मानो पूछ रहा हो—

समझे?

ग्रेनाइटने सिर हिलाकर कहा, हां। और वह चला गया।

दरवाजा बन्द होते ही, ग्रेनाइट हँसा और बोला—ओह, हो! हमने प्रिय मित्र रास टेकलाको नाराज कर दिया। ओह! वह भीतर ही भीतर जल रहा होगा।

पम्पन मुसकराया, ग्रेनाइट फिर हँसा और दोनों खानेमें जुट गये।

१५

पुराना दोस्त नये रूपमें

सवारके घोड़ेसे गिरते ही ब्लेक चौंक कर हट गये। इसमें तो कोई शक ही नहीं था कि सवार घोड़ेसे गिरते ही मर गया था, क्योंकि गिरनेके बाद उसके हाथ-पैर नहीं हिले थे। किन्तु समस्या यह थी, घोड़ा और सवार आया कहांसे? ब्लेक अद्भुत घटनाओंका मुकाबिला करनेके आदी हो चुके थे, किन्तु यह घटना अत्यन्त अद्भुत थी। इतनी रात गये, सुनसान जंगलमें गोलियोंकी गड़गड़ाहट, घोड़ेका उनके सामने भागते हुए आना, और सवारका उनके सामने ही गिरकर मर जाना, ताज्जुबमें डाल देनेवाली बातें थीं।

ब्लेक आश्चर्य सागरमें गोते लगाते हुए मृत व्यक्तिकी लाश-पर घुटनोंके बल झुके और लाशको गौरसे देखने लगे। मृतव्यक्ति तगड़ा, नाटा, था। उसका चेहरा रूखा था और बाहें काफी लम्बी और पुष्ट थीं, उसका चेहरा लम्बा था और आँखें बादाम-

कीसी तथा पूर्वीय। उसका चमड़ा पीला था, और मुँहपर एक बड़ा-सा गोल मसा था।

उसका गला और सीना खूनसे तरबतर था। गोली उसके गलेके बायीं तरफसे घुसकर दाहिनी तरफ निकल गयी थी। मिस्टर ब्लेक तुरत समझ गये कि गोलियां चलनेके जो शब्द सुनाई पड़े थे, वे ठीक थे, और इसीको लक्ष्यकर गोलियां चलायी गयीं थीं, जिनमेंसे एकने इसकी जान ले ली। मालिक परस्त घोड़ा, घायल हालतमें ही उसे लेकर इस तरफ दौड़ आया, मुमकिन है यह रास्तेमें ही मर गया हो, और घोड़ेके ठहरते ही गिर गया हो, घोड़ेने इस समय वाकई कमालका काम किया जो तम्बूकी तरफ भागा, नहीं तो यह लाश कहीं जंगलमें गिर जाती और जंगली जानवरोंकी जेवनारका सामान बन जाती। लेकिन, यह कौन है? ब्लेक सोचने लगे। किसने इसपर गोलियां चलायीं? और क्यों?

इन प्रश्नोंका उत्तर पानेकी आशासे ब्लेकने लाशको सीधा किया और उसके कोटकी जेबें देखने लगे। वे सोच रहे थे कि लाशके पाकेटमें कोई न कोई चीज तो जरूर मिल जायगी, जिससे इस रहस्यपर कुछ प्रकाश पड़ेगा। वह घोड़ेकी सवारीके लिये पहिने जानेवाले बूट पहिने हुए था, ब्लेकने देखा जूते अङ्गरेजी मेकरके थे। किन्तु उसके कन्धेपर पड़ा हुआ चमड़ेका पट्टा और मफलर अबसीनियन था। उसकी जेबमें कई तरहके इंगलिश, फ्रेंच, और अबसीनियन सिक्के और नोट थे। किन्तु

ऐसी कोई भी चीज नहीं थी जिससे यह मालूम हो सके कि वह कौन था ? और किस कारणसे उसे अज्ञात व्यक्तिकी गोलियों-का निशाना बनकर मरना पड़ा।

कोटकी जेबोंमें जब ब्लेकको कामलायक कोई चीज नहीं मिली, तब वे मृत व्यक्तिके भीतरी कपड़ोंकी तलाशी लेने लगे। उन्होंने उसके वास्केटकी बटनें खोल दीं और कमीजकी तलाशी लेनी शुरू की, उन्हें कमीजके नीचे, सीनेपर कोई चीज बन्धी हुयी मालूम हुई, उन्होंने कमीजकी बटनें खोल दीं और देखा कि उसके सीनेसे एक चमड़ेका पट्टा बन्धा हुआ है।

पट्टे में चमड़ेके घर बने हुए थे, उनमेंसे बीचका एक घर उभरा हुआ था जो बतला रहा था कि उसके अन्दर कुछ है। ब्लेकने उसे खोलकर अंगुलियां अन्दर डालीं और भीतरकी चीज निकाली। जो चीज बाहर निकली उसे देखर ब्लेक हैरतमें पड़गये, वह चीज इस कदर चमक रही थी कि उसपर आंखें गड़ाना मुश्किल था। उस चीजमें जड़े हुये जवाहिरात अन्धेरेमें जगमगा रहे थे। वे चमकते हुए जवाहिरातोंको उलटपलटकर देखने लगे।

मृत व्यक्तिके पास यह चीज पाकर ब्लेकके ताज्जुबका ठिकाना न रहा। वे कमरबन्दको गौरसे देखने लगे, जो ऊंटके बालोंसे गुंथा हुआ था, उसमें सोनेके तार और तारे पिरोये हुये थे, प्रत्येक तारेमें एक एक रत्न जड़ा हुआ था, और रत्नोंके बीचमें एक हीरा जगमगा रहा था। कमरबन्दके आगेकी तरफ सोनेके तारोंसे पिरोया हुआ, तारोंके बीचमें सोनेका सांप बना

हुआ था, उसकी दोनों आंखोंमें लाल जड़े थे और उसके फनपर तरह-तरहके जवाहिरात थे। कमरबन्दकी कारीगरी अद्भुत थी, उसकी बनावट गजबकी थी, और उसकी कीमतका अन्दाज लगाना संसारके बड़ेसे बड़े जौहरीके लिये भी आसान नहीं था।

ब्लेक अद्भुत कमरबन्दको पाकर लाश, घोड़े और तम्बू सब कुछ भूल गये, और दूर तम्बूके सामने जलनेवाली आगकी आती हुयी रोशनीमें कमरबन्दको बार बार देखने और मन ही मन तारीफ करने लगे। इसी तरह न मालूम कितने मिनट गुजर गये, तब उनका ध्यान भंग हुआ, और उन्होंने देखा कि एक आदमी उनके बिलकुल करीब खड़ा है।

उन्होंने उसी क्षण कीमती कमरबन्दको छिपा लिया और अपने कोटके अन्दरकी जेबमें रख लिया, ब्लेक समझ गये थे कि कमरबन्द बहुत ही बेशकीमती है। उन्होंने सिर उठाकर आगन्तुककी तरफ देखा, उसका नाम यारूबा था। वह व्यक्ति ब्लेकके उन छ आदमियोंमेंसे एक था, जिन्हें उन्होंने अपनी सहायता और रक्षाके लिये साथ ले रखा था। यारूबा घोड़ेकी तरफ हटकर लाशको देखने लगा और फिर ब्लेकको अपनी तरफ देखते देखकर बोला—

हुजूर! क्या मामला है? उसने कहा—मेरा खयाल है कि मैंने गोलियाँ चलनेके शब्द सुने हैं?

तुम शायद अपने तम्बूमें लेटे हुए थे, खैर! इस घोड़ेको उधर ले जाओ और इसे दाना पानी दो। जल्दी जाओ।

यारूबाने कुछ हिचकिचाहटके साथ ब्लेककी आज्ञा मानी, उसने घोड़ेकी रास पकड़कर उसे तम्बूकी तरफ घुमाया और लाशपर गहरी नजर गड़ाकर, ब्लेकको सलामकर घोड़ेको दाना पानी देने चला गया। यारूबा जबतक तम्बूके पास न चला गया, ब्लेक एक टक उधर ही देखते रहे, फिर लाशके सीनेसे चमड़ेका पट्टा खोलकर, जल्दीसे पहिन लिया, और उसमें कमरबन्द रखकर बटन बन्द कर लिये। इसके बाद तेजीसे कदम बढ़ाते हुए अपने तम्बूमें चले गये।

तम्बूमें जाकर ब्लेक सोचने लगे, क्या यारूबाने कमरबन्द देख लिया? वे चाहते थे कि यारूबाने कमरबन्द न देखा हो तो बड़ा अच्छा है। इसीलिये, वे यह विश्वास करना चाहते थे कि यारूबाने कमरबन्द नहीं देखा। वे यह बात किसीसे भी नहीं कहना चाहते, उनकी इच्छा थी कि यह रहस्य गुप्त ही रहे। किसी भी किसीको भी इस बातकी खबर न हो। वे चाहते थे कि इस तरह सम्बन्धकी जितनी बातें जानने लायक हों, जान ली जायं। उनका समस्त ध्यान कमरबन्दका रहस्य छिपानेमें लगा हुआ था।

वे जानते थे कि कमरबन्द बेशकीमत है। लाखोंकी सम्पत्ति है। इसीके कारण घुड़सवार चाईनीजको मरना पड़ा। शायद इसी कमरबन्दके पीछे कुछ-न-कुछ रहस्य जरूर है, ब्लेकको यह विश्वास हो गया। और यह विश्वास होते ही वे रहस्य-भेदके लिये बेताब हो गये। उनकी नींद न जाने कहां चली गई? वे कमरबन्दकी चिन्तामें लीन हो गये।

सबसे प्रधान आशंका उन्हें यह हो रही थी कि कहीं, यारूबाने कमरबन्द देख न लिया हो। क्योंकि वे जानते थे कि उनके ६ साथी, हद्द दर्जेके स्वार्थी और लालची हैं। पैसा ही उनका धर्म है। वह पैसेके लिये जान ले भी सकते हैं, और दे भी सकते हैं। यारूबाने अगर देख लिया हो, और वह जाकर उनसे कह दे तो वे लोग इस कीमती चीजको पानेके लिये मेरा खून करनेमें भी आगा-पीछा न करेंगे। इन लोगोंकी जाति भेड़िये-की तरह खूंखार, कुत्तेकी तरह लालची हैं। ये लोग धनके दास हैं। क्या ही अच्छा हो, यदि यारूबाने कमरबन्द न देखा हो।

ब्लेक इस तरहकी विचारधारामें गोता लगा रहे थे, तम्बू-के सामने चट-चट करके आग जल रही थी, चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था, एक भयंकर निस्तब्धताका साम्राज्य था। ब्लेक आगकी लपटें देखकर सोच रहे थे, लालच इन लपटोंकी तरह ही भयानक है। वे इस मामलेमें शेमेल्कातकका विश्वास करना नहीं चाहते थे, गोकि उनकी धारणा अन्य ६ साथियों-की बनिस्बत शेमेल्काके सम्बन्धमें अच्छी थी। वे सोचने लगे, रात बीत जाय तो निश्चय किया जाय कि कमरबन्दका क्या करना चाहिये।

स्मिथ बेखबरीमें सोया हुआ था। ब्लेककी इच्छा हुई कि अपने साथीको जगाकर सब बातें कहें, किन्तु कुछ सोचकर उन्होंने ऐसा नहीं किया और स्मिथको सोता छोड़कर ही तम्बूसे बाहर निकल पड़े। जिस तरफ खच्चर बंधे थे, और

नौकर चाकरोंका तम्बू था उस तरफसे बातचीत करनेकी आवाज आ रही थी, आगे बढ़कर ब्लेकने सुना कि शेमेल्का बड़बड़ा रहा है। ब्लेक और थोड़ा आगे बढ़े और शेमेल्काको आवाज दी। ब्लेककी आवाज सुनकर शेमेल्का बातचीतको बीच-में ही छोड़कर ब्लेककी तरफ दौड़ा हुआ आया और बोला—

हुजूर। बहुत बढ़िया जानवर है। वाकई बहुत बढ़िया घोड़ा है जनाब। लेकिन बेचारा भूखा था, शायद चौबीस घण्टेसे उसे दाना-पानी नहीं मिला था। इतना कहकर वह रुका, रुकते ही उसकी नजर लाशपर पड़ी और वह चौंक गया, दांतोंमें अंगुली दबाते हुए बोला—यह क्या?

मुर्दा! लाश! ब्लेकने जवाब दिया। इसके गलेको छेदकर गोली निकल गयी, मैं इसे सम्हाल ही रहा था कि यह घोड़ेसे गिर पड़ा।

हुजूर। मैं कह रहा था कि गोलीकी आवाज सुनायी पड़ी, मेरा खयाल ठीक था। आवाज इसी तरफसे आयी थी। मेरा खयाल है घोड़ा इसी तरफसे आया होगा?

शेमेल्का तुम्हारा कहना ठीक है। घोड़ा इसी तरफसे भागता हुआ आया था।

तब यह जरूर कमहारा राजमहलसे आया है, और डाकुओं-ने सवारका पीछा किया होगा, उन्हीं की गोलियोंसे सवार मार डाला गया।

बहुत सम्भव है। ब्लेकने जवाब दिया। मुमकिन है, वे लोग

महलसे ही इसके पीछे लगे हों और यहाँ मौका पाकर मार डाला हो। किन्तु यह नहीं मालूम हुआ कि मृत व्यक्ति कौन था? इसकी जेबोंमें भी ऐसी कोई चीज नहीं मिली जिससे इसका परिचय मिल सके।

आपने अच्छी तरह तलाशी ली है? शेमेल्काने पूछा—जरा मैं भी देख लूं।

यह कहकर वह लाशपर झुका और उसकी तलाशी लेने लगा। नोटोंके बण्डल और सिक्कोंपर हाथ जाते ही वह चौंका और यह समझ कर कि ब्लेक इस तरफ नहीं देख रहे हैं, लाशकी जेबमेंसे नोट निकाल कर अपनी पाकेट भरने लगा। ब्लेक यह देखकर भी चुप थे। क्योंकि वे जानते थे कि इस समय शेमेल्काके काममें बाधा डालनेसे वह नाराज हो जायगा और झगड़ने लगेगा। मुमकिन है, कहा-सुनी बढ़ जाय और भयंकर परिस्थितिका कारण बन बैठे। साथ ही उन्होंने यह भी सोचा, अनुकूल परिस्थिति पाते ही शेमेल्कासे नोट और सिक्के निकलवा लेंगे, तबतक यही लेकर खुश हो ले। इसी तरहकी बातें सोचकर ब्लेक चुप थे और शेमेल्का मालदार बन रहा था।

जी हाँ, हुजूर। इसकी पाकेटमें कुछ भी नहीं है। इसका परिचय पाना तो मुश्किल हो गया। लेकिन खुदा झूठ न बुल-वाये, मैंने अपनी जिन्दगीमें आजतक ऐसा भयंकर आदमी नहीं देखा। क्यों सरकार?

हाँ। यह खूबसूरत नहीं है। जो भी हो। शेमेल्का, मैं चाहता

हूं कि उसे कम्बलमें लपेटकर रख दिया जाय और सवेरेतक अगर कोई लाशका दावेदार न आवे तो इसे दफना दिया जाय।

जी हाँ। कोई नहीं आयगा। लाशके दुश्मन भले ही लाश-को गायब करनेके लिये आ जांय । दोस्त ही होते तो यह यों क्यों मरता है? मेरा खयाल है कि इसे अभी दफना दिया जाय, एक काम खत्म हो और छुट्टी मिले। लाशको खराब होने देनेसे क्या फायदा?

शेमेल्का जिस समय ये बातें कह रहा था, उस समय उसे लाशकी बनिस्बत लाशकी जेबमें पाये गये धनका खयाल ज्यादा था।

नहीं। शेमेल्का, हमें सुबहतक इन्तजार करना चाहिये। ब्लेकने अपनी बातपर जोर दिया।

जैसी मालिककी मर्जी। सुबह दफना दिया जायगा।

इस बातचीतके बीचमें बाकी खच्चरवाले भी जग गये थे और घोड़े तथा लाशकी बात सुन चुके थे। इस आश्चर्य जनक घटनाको सुनकर वे आपसमें बातें करने लगे, क्रमशः उनकी आवाज तेज होने लगी, वे आपसमें ही गुस्सा दिखाकर एक दूसरेकी बात काटने लगे। दो-तीन तो बकझक करते हुए उस तरफ बढ़ आये जिस तरफ शेमेल्का और ब्लेक खड़े हुए थे। शेमेल्काने डांटकर उन्हें चुप किया, और कुछ आदमियोंको बुलाकर कहा, इस लाशको तम्बूमें ले चलो।

शेमेल्काकी आज्ञा सुनकर दो आदमियोंने लाशको उठा

लिया, और तम्बूकी तरफ ले गये, जब वे लोग दूर निकल गये तब ब्लेकने शेमेल्कासे कहा।

शेमेल्का! अपने आदमियोंसे कह देना कि लाशकी निगरानी रखें ऐसा न हो कि तुम्हारे कहनेके मुताबिक डाकू लोग आवें और लाशको उठाकर चलते बने।

जो हुक्म हुजूर! शेमेल्काने कहा।

शेमेल्काको कुछ आवश्यक आदेश देकर वे अपने तम्बूमें लौट आये।

आप हैं, जनाब! हल्ला-गुल्ला होनेके कारण नींदसे जगकर स्मिथने पूछा।

हाँ! मैं हूं।

इतना हल्ला-गुल्ला क्यों हो रहा है?

कुछ नहीं। इस समय चुपचाप सो जाओ। सबेरे सब बातें बतलाऊंगा। अभी मौका नहीं है। करवट बदल लो और सो जाओ। समझे। अभी सवेरा होनेमें बहुत देर है।

स्मिथने ब्लेककी बातें मानी और करवट बदलकर आँखें बन्द कर लीं, शीघ्र ही वह स्वप्न राजमें विचरण करने लगा।

ब्लेक तम्बूमें टहलते हुए बाहरसे आनेवाली आहट ले रहे थे। तम्बूकी तरफसे आवाज आ रही थी, वे लोग बातें कर रहे थे, किन्तु आवाज धीमी पड़ती जा रही थी।

थोड़ी ही देरमें सारा हल्ला-गुल्ला सन्नाटामें बदल गया। तम्बूकी तरफसे आवाज आनी एकदम बन्द हो गयी। सिर्फ पह-

रेदारके चलनेकी ध्वनि और बीचमें उसकी खांसीका शब्द सुनायी पड़ रहा था। तब भी ब्लेक टहलते रहे।

फिर वे एक जगह रुक गये और गम्भीरता पूर्वक सोचने लगे। घोड़ा, लाश, कमरबन्द उनके दिमागमें चक्कर लगा ही रहे थे, इन सबके साथ यारुन्ना और शेमेल्का भी। कैसी अद्भुत घटना हुई। शेमेल्काने कितनी फुर्तीसे नोट और सिक्कोंसे अपनी जेबें भर लीं। उसे यदि कमरबन्दका हाल मालूम होता? ब्लेककी अंगुलियां सीनेपर गईं, उन्होंने टटोलकर देखा, पट्टा उनके सीनेसे बंधा हुआ था, ब्लेकने कई बार धीरे धीरे उसपर अंगुलियां घुमायीं, पर उसे खोलकर नहीं देखा। कमरबन्द उनके सीनेपर बंधा हुआ था। कमरबन्दकी परीक्षा करनेके लिये रोशनीकी जरूरत थी और तम्बूमें रोशनी होते ही हरएकका ध्यान उस तरफ खिंच जाता। जब कि ब्लेक चाहते थे कि किसीका ध्यान भी इस तरफ न जाय। उन्होंने मनही मन निश्चय किया कि कमरबन्दकी परीक्षा दिनमें की जायगी। सबेरा होनेपर ही वे मिल जुली और स्मिथसे रातकी अद्भुत घटनाका वर्णन करेंगे और उन्हें कमरबन्द दिखलाकर सबकी रायसे काम करेंगे।

ब्लेकने सोचा, मुमकिन है, सवेरा होनेपर लाशके सम्बन्धमें कोई नयी बात मालूम पड़ जाय, सम्भव है, मृतचाइनीजके साथ और भी आदमी रहे होंगे, वे पीछे पड़ गये हों। वे सोच रहे थे कि इतनी कीमती चीज लेकर कमहारा राजमहलसे यह चाइनीज अकेला नहीं चला होगा। शेमेल्काकी यह बात कि, चाइ-

नीज घुड़सवारपर डाकुओंने आक्रमण किया और वह उन्हींकी गोलीसे मारा गया, ब्लेकको ठीक नहीं मालूम हो रही थी। बल्कि वे यह सोच रहे थे, कि सम्भवतः यह चाइनीज ही कमर-बन्द चुराकर भागा हो और महलके सिपाहियोंने ही उसे मार डाला हो। अगर ऐसा हुआ, चाइनीज चोर निकला, तब यह मामला भी रहस्यमय और दिलचस्प हो जायगा। ब्लेकने सोचा घटना चाहे जिस कारणसे घटित हुई हो, चाइनीज चाहे जिसके द्वारा मार डाला गया हो, इसमें कोई शक नहीं कि यह हत्या और कमरबन्द किसी षड़यन्त्रका भाग है। इस तरह बहुत कुछ सोच विचार करनेके बाद, ब्लेक कपड़े उतारने लगे। फिर यह निश्चय करके कि सब लोग तो सो गये और चमड़ेका पट्टा उनके सीनेसे ही बंधा है, वे सोनेके लिये बिस्तरपर लेट गये। लेटनेपर भी ब्लेकको नींद नहीं आ रही थी। किन्तु दिन भर कठिन पथ पार करना था। रास्तेकी धूप और धूल तथा हर तरहकी आनेवाली आपत्तियोंसे बचनेके लिये जरूरी था कि वे अपने शरीर और मनको विश्राम दें, ताकि सबेरा होनेपर उनके शरीरमें थकावट और आँखोंमें नींद न रहे।

यह सोचकर इच्छा न रहते हुए भी मिस्टर ब्लेक सोनेकी कोशिश करने लगे। आँखें बन्द किये हुये ब्लेक थोड़ी देरतक पड़े रहे, क्रमशः उनकी आंखोंमें नींद घिर आई और वे सो गये।

उनकी आँख लगे एक घण्टा भी नहीं बीता होगा कि, वे एकाएक चौंक गये और उठ बैठे। उन्होंने कोई बुरा सपना

नहीं देखा था। किन्तु कोई आदमी उनके सीनेपर चढ़ा आ रहा था; जिसका बोझ पड़ते ही उनकी आखें खुल गयीं, और वे हड़बड़ाकर उठ बैठे। अफसोस! कैसी बुरी साइतमें वे लेटे थे कि एक घण्टा भी न सो सके।

उनके जागते ही आक्रमणकारी सीनेपरसे हट गया। वह ब्लेकके बिस्तरसे कूद कर खेमेके पास बैठ गया था और ब्लेड की तेज धार द्वारा तम्बूका कपड़ा काटकर बाहर भागनेका यत्न कर रहा था। वह तम्बूका हाथ भरके करीब कपड़ा काट चुका था और बाहर निकलनेवाला ही था कि ब्लेक एकाएक उस आदमीपर कूद पड़े और उसे जोरोंसे दबा लिया। ब्लेकने उसके हाथका छुरा छीन लिया और उसे खींचते हुए तम्बूके दरवाजेके सामने ले जाकर खड़ा कर दिया। उसने भी ब्लेकके हाथमें पड़ते ही बचने और भागनेकी कोशिश छोड़ दी और चुपचाप जिस तरफ ब्लेक ले जाना चाहते थे चला गया।

वह शख्स, छोटा, मोटा अरब बेनीकाली था।

किन्तु ब्लेकने उससे अरबीमें नहीं, बल्कि फ्रेंचमें बातचीत की।

बर्टरम! इस तमाशेका अन्त करो। तुम इस समय कौनसा खेल खेल रहे थे?

उफ! तुम बड़े चालाक हो, ब्लेक। तुमने मुझे पहिचान ही लिया।

इतना कहकर वह हंसने लगा। स‥च वह बर्टरम चारन था।

ताज्जुब है, मैं तुम्हें भ्रममें न डाल सका। तुम्हारी बुद्धि बड़ी तेज है। यार तुम बड़ी जल्दी जाग पड़े। लेकिन दोस्त! मैंने तुम्हारी जान बचाई है। कुछ समझे या नहीं। यह देखो!

इतना कहकर बर्टरमने अपनी जेबसे टार्च निकालकर जलाया। टार्चकी तेज रोशनीमें मिस्टर ब्लेकने देखा कि एक आदमी जमीनपर पड़ा हुआ था। ब्लेकने भी अपना टार्च निकाल कर जलाया, रोशनी दुगुनी हो गयी और तेज रोशनीमें ब्लेकने देखा, जमीनपर पड़ा हुआ आदमी, और कोई नहीं, यारूबा है।

यारूबाकी हालतमें जमीनपर पड़ा हुआ था, उसके सिरके पीछेसे खून निकल रहा था, जिससे उसके कपड़े भींग गये थे। यारूबाको देखते ही ब्लेकके दिमागमें बहुतसी बातें एक साथ आ गईं।

ओह। यारूबाने कीमती कमरबन्द देख लिया था। ब्लेकने यह बात समझ ली और बर्टरमसे इसे छिपानेका पक्का निश्चय कर लिया। वे समझ गये कि यारूबा वहांसे जाकर चुपचाप नहीं बैठा, बल्कि उपयुक्त अवसरकी प्रतीक्षा करने लगा। जैसे ही उसे विश्वास हुआ कि सब लोग सो गये। और अब उसके रास्तेमें रुकावट डालनेवाला कोई नहीं रहा, वह आत्मरक्षा और आक्रमणके लिये छुरा लेकर चल दिया। अगर ठीक समयपर बर्टरम न पहुंच जाता तो यारूबा ब्लेकके सीनेमें छुरा भोंक देता। यह खयाल करके बर्टरमके प्रति ब्लेकका हृदय कृतज्ञतासे

भर गया। पर ज़ुबानसे यह भाव प्रगट न करके, वे बर्टरमकी तरफ बढ़े।

ब्लेकने बर्टरमका हाथ अपने हाथमें ले लिया और बोले।

मैं समझ गया। बेशक तुमने मेरी, जान बचाई। लेकिन मैं यह जानना चाहता हूं कि तुमको यह कैसे मालूम पड़ा कि यारूबा मेरी जान लेनेके लिये ही तम्बूसे निकला है?

पहिले इसे घसीटकर तम्बूके बाहर कर देने दो, यह मरा नहीं है, बेहोश हो गया है। फिर जो तबीयत हो, पूछ लेना। पहिले इसे तो बाहर निकालो।

उस समयतक स्मिथ भी जाग गया था, और बार बार नींद टूट जानेके कारण झल्ला उठा था। उसने उठते ही ब्लेक बेनीकाली और यारूबाको देखा और एक साथ कई सवालकर बैठा। ब्लेकने स्मिथको चुप रहनेको कहा और वे चारनकी सहायतासे यारूबाको तम्बूसे उठाकर मैदानमें ले गये और थोड़ी दूर ले जाकर जमीनपर डाल दिया।

होश आते ही अपने विस्तरपर भागेगा, या मलहम पट्टीकी फिकर करेगा अब यह हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता, कमसे कम बाकी रातमें तो वह इस लायक भी न होगा कि तुम्हारे तम्बूतक आनेका साहस करे। रातभर पड़ा रहा तो सर्दीके मारे अकड़ जायगा। चारनने कहा।

वे लोग यारूबाको मैदानमें छोड़कर चले आये। तम्बूओंमें पूरा सन्नाटा था। इस घटनाका किसीको भी पता नहीं चला।

सब गहरी नींदमें सोये हुए थे। तम्बूमें आकर उन्होंने देखा कि स्मिथ उनकी प्रतीक्षामें बैठा हुआ है।

अच्छा। अब कहो। क्या हुआ? ब्लेकने पूछा।

तुम अपनेको भाग्यशाली कहो कि जो होनेवाला था नहीं हुआ। चारनने फौरन जवाब दिया। मुझे यारूबापर सन्देह था, इसलिये मैं बराबर इसपर नजर रखता आ रहा था। जब चारों तरफ सन्नाटा छा गया, तब मैंने समझा कि तुम्हारे सिवा सब लोग सो गये होंगे। थोड़ी ही देरमें मुझे आहट मिली और मैंने देखा कि यारूबा दांतोंमें छुरा दबाये, तुम्हारे तम्बूकी तरफ बढ़ रहा है, तब मुझे भी यही मुनासिब जान पड़ा कि मैं उसका पीछा करूं। मैंने ऐसा ही किया। वह तुम्हारे तम्बू तक चला आया और बिना आज्ञा लिये ही भीतर घुस गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे भीतर आया। वह तुम्हारे सीनेपर सवार हो गया और वार करना चाहता था कि मैंने उसकी खोपड़ी-पर डण्डा जमा दिया। लेकिन बहुत ही हल्के हाथसे नहीं तो वह मर ही जाता।

तुमने बड़ी मेहरबानी की। धन्यवाद। लेकिन, यह तो बत-लाओ कि यारूबाके ऊपर तुम्हें सन्देह क्यों हुआ? ब्लेकने पूछा।

मुझे सन्देह इसलिये हुआ कि जो चीज तुम बड़ी हिफा-जतके साथ सीनेसे बान्धे हुए हो, वह चीज उसने देखी थी और उसका मन चञ्चल हो गया था। मेरा खयाल है कि वह किसी षड़यंत्रमें शामिल था। उसपर सन्देह करनेका मुझे हक था।

चारन तुम क्या कह रहे हो ? ब्लेकने आश्चर्यपूर्ण स्वरमें जल्दीसे कहा, तुमने भी उस चीजको देखा है ?

जी हां । निश्चितरूपसे, बिना जरा भी शकके, समझे ! मैंने वह चीज उस समय देखी थी जब घोड़ा लाशको लिये हुए तुम्हारे सामने आकर खड़ा हुआ था, और लाशके जमीनपर गिर जाने पर तुमने उसकी तलाशी लेकर वह चीज प्राप्त की थी । तुम्हें शायद मालूम नहीं कि मैं उस समय वहां मौजूद था ।

ओह ! तुम वहां मौजूद थे ? ब्लेकने कहा, तुम बड़े धूर्त, चालाक और होशियार हो । मैं तुम्हारी चालाकी और बहादुरी देखकर दंग हूं । सचमुच, मुझे जरा भी गुमान नहीं था कि तुम मुझे देख रहे हो । मैंने उसे पाते ही छिपा लिया था । यारूबाने उसे देख लिया इस बातका मुझे सन्देह जरूर हुआ था, किन्तु तुम्हारे बारेमें तो मैंने कुछ सोचा ही नहीं था । उससे बचनेके लिये ही मैंने उसे घोड़ा ले जानेको कहा था ।

दोस्त ! मै जानता हूं ।

लेकिन, दोस्त, तुमने उस चीजको जरा सी चमक ही देखी है । चारन, मैं क्या बयान करूं, वह अद्भुत चीज है । उसकी कारीगरी अद्भुत है, और उसकी असली कीमतका अन्दाज लगाना आसान नह

ठीक है । जानता हूं ! पहिले भी मैं वह चीज देख चुका हूं ।

क्या ? .1 ?? ब्लेकने हैरतमें आकर पूछा ।

तुम्हें ताज्जुब हो रहा है, दोस्त ! लेकिन मैं सच कह रहा

हूं। मैंने उस कमरबन्दको देखा है, दूरसे नहीं, बल्कि हाथमें लेकर उसकी कीमतका अन्दाज भी लगाया है, यह कई हफ्ते पहिलेकी बात है। पेरिसमें मैंने यह कमरबन्द देखा था।

चारनकी बातें सुनकर ब्लेक अवाक् हो गये। क्षण भर चुप रहकर उन्होंने पूछा।

तुम भूल तो नहीं कर रहे हो?

अगर इस तरहके दो कमरबन्द नहीं हैं तो, मैं दावेके साथ कहता हूँ कि मैं ठीक हूँ।

दो कमरबन्द होना, मुश्किल है पर असम्भव नहीं।

बिलकुल असम्भव। मेरे दोस्त। तुम विश्वास करो, मैं ठीक कह रहा हूं। इस कमरबन्दका जोड़ा संसारमें नहीं है।

सच! तुम्हें इन बातोंका पता कैसे लगा? चारन!

ब्लेक देख रहे थे कि चारनके सामने उनका ज्ञान अधूरा साबित हो रहा था। इसलिये उन्होंने यही मुनासिब समझा कि चारनसे ही सब बातें सुन ली जायं। पीरी ड्रुसीलीके हत्या काण्डके सम्बन्धमें मिस्टर ब्लेकको बर्टरम चारन पर पहिले ही से शक था। वे शुरुसे ही समझ रहे थे कि इस हत्याकाण्डके सम्बन्धकी कुछ ऐसी बातें हैं जो सिर्फ बर्टरम ही जानता है, और वह उन बातोंको किसीसे कहना नहीं चाहता।

तुम्हारी ही तरह मैं भी यह जान कर हैरतमें पड़ गया था कि मेरे और एक आदमीके सिवा तुम्हें इस कमरबन्दका हाल कैसे मालूम हुआ। बर्टरम चारनने कहा। मेरा यह खयाल था

कि इस कमरबन्दका हाल या तो पीरो ड्रूसीलो जानता था, या उसका हत्यारा, उसके बाद मैं और पेरिसका सबसे बड़ा हीरों-को जौहरी। पेरिसके प्रधान जौहरीके पास यह कमरबन्द गया था। उसका नाम फरनन्द है, किन्तु मुझे विश्वास नहीं होता कि उसने तुम्हें इस बारेमें कुछ भी कहा हो?

मैं तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तर दूंगा, किन्तु पहिले तुम सब बातें कह जाओ। क्योंकि सवाल पहिले मैंने किया है। ब्लेकने जवाब दिया।

दोस्त यह एक तरहका सौदा हुआ। खैर। कमरबन्द पीरी ड्रूसीलीके पास था, उस समय तक जबतक वह जिन्दा था। सम्भवत: यह कमरबन्द बेचनेके लिये ही वह पेरिस आया था। उसने फरनन्दको कमरबन्द दिखलाया और बेचनेकी इच्छा प्रगट की। फरनन्दने कमरबन्द देखा और उसकी कीमतका अन्दाज लगाते ही चौंक गया। उसे पीरी पर सन्देह हुआ और उसने मुझे फोन किया। फरनन्दके प्राइवेट कमरेमें जाकर मैंने कमरबन्द देखा। फरनन्दने मुझे बड़ा भारी जौहरी बतलाया। दूसरे दिन हम दोनों विनोसा होटलमें गये, और उस कमरबन्द को पीरीके कमरेमें फिर देखा, मैंने कमरबन्दकी परीक्षा की। फरनन्दने कहा, यह बड़ा भारी जौहरी है और मेरा साझीदार तथा अमेरिकन शाखाका हेड हैं। मैंने उससे पूछा—तुम्हें यह कमरबन्द कहाँसे मिला?

ड्रूसीलीने यह बतानेसे ही इन्कार नहीं किया बल्कि वह

नाराज भी हो गया और मेरे प्रश्नोंसे खिजलाकर बोला, तुम लोग मेरे कमरेसे निकल जाओ। मैं फरनन्दके साथ निकल आया और उसपर नजर रखनेके लिये एक सिपाही तैनात कर दिया, किन्तु अफसोस उसी रातको किसीने रहस्यपूर्ण ढंगसे पीरी ड्रूसीलीको मार डाला और कमरबन्द गायब कर दिया।

जब हम लोगोंको पीरो ड्रूसीलीकी हत्याका समाचार मिला तो मैं दौड़ा हुआ होटलमें आया, पीरीकी लाश पड़ी हुयी थी। मैंने तलाशी लेते समय ही जान लिया कि हत्यारा पीरीको मार कर कमरबन्द ले गया। मैं समझ गया कि कमरबन्द पानेके लिये ही पीरी ड्रूसीलीकी हत्या की गयी। मैंने पीरी ड्रूसीलीके सम्बन्धमें बहुत छानबीन की।

इधर-उधर दौड़ धूप करनेके बाद पेरिसके बैंकोंसे पता लगाते हुये मुझे मालूम पड़ा कि पेरिसके एक नामी बैंकमें पन्द्रह वर्ष पहिले पीरी ड्रूसीलीने एक डिब्बा जमा किया था और पेरिस आनेके कुछ ही दिनों बाद उसने बैंकसे वह डिब्बा ले लिया था। मैं समझ गया कि बैंकके डिब्बेमें वह कमरबन्द ही था।

इस बातका पता लगाते ही मैं पन्द्रह वर्ष पीछे चला गया। और पन्द्रह वर्ष पहिलेकी जुआचोरीकी घटनाओंके विवरण देखने लगा। दो-तीन दिनके बाद ही मुझे मालूम हो गया कि अबसीनियाके कमहारा राजमहलके खजानेसे वहांके नीगस वहरकरीनका शाही कमरबन्द गायब हुआ था, जिसका अभी तक पता नहीं चला। मुझे विश्वास हो रहा था कि वह कमरबन्द

कमहाराके खजानेसे चुराया गया कमरबन्द ही है। इस तरह मुझे मालूम हो गया कि पन्द्रह वर्ष पहिले कमहारा राजमहलके खजानेसे कमरबन्द चुराया गया, संभवतः पीरीने ही चुराया था, वही कमरबन्द पेरिसके एक बैंकमें जमा किया गया, और पन्द्रह वर्ष बीत जानेपर पीरीने शायद यह समझकर बैंकसे निकाला था कि कमरबन्द बिना किसी दिक्कतके बिक जायगा। लेकिन कमरबन्द नहीं बिक सका और पीरी ड्रुसीली मार डाला गया।

पीरी ड्रुसीलीकी हत्याका कारण जाननेकी वजहसे मैं यह सोच रहा था कि हत्यारा कुछ दिनों बाद ही कमरबन्द बेचनेकी कोशिश करेगा। किन्तु मेरी धारणा गलत निकली, उसने कमरबन्द बेचनेकी कोशिश नहीं की। हत्यारा पेरिससे भाग गया, शायद मुझे पता भी न चलता कि वह कहां गया? किन्तु तुम्हारी कृपासे यह मुश्किल भी आसान हो गई।

मिस्टर ब्लेकने चुपचाप चारनकी बातें सुनी। उन्हें बर्टरमकी बातें सुनकर ताज्जुब तो जरूर हुआ पर साथ ही इस बातका सन्तोष भी हुआ कि उनकी यह धारणा कि बर्टरमने पीरीके हत्याकाण्डकी कुछ खास बातें छिपा रखी हैं, सच निकली। वाकई अबतक बर्टरम चारनने ये तमाम महत्त्वपूर्ण बातें बड़ी होशियारीसे छिपा रखी थीं। बर्टरमकी बातें सुनकर आश्चर्य चकित मिस्टर ब्लेक कहने लगे।

तुमने मुझे हैरतमें डाल दिया, चारन। मुझे ऐसा मालूम

पड़ रहा था कि तुम शुरूसे ही मेरी चतुराईकी परीक्षा लेना चाहते थे। साथ ही तुम्हें यह भी शक था कि मैं भी तुमसे कुछ बातें छिपाये हुए हूं। लेकिन मैं सच कह रहा हूं कि मैंने तुमसे कुछ भी नहीं छिपाया तुम्हारा सन्देह गलत है।

इसका क्या मतलब है? चारनने पूछा।

मैं अभी कह चुका हूं। मुझे कमरबन्दके बारेमें कुछ भी नहीं मालूम था किन्तु तुम्हारी बातोंसे यह मालूम हो रहा है कि तुम समझते हो कि मैं कमरबन्दका हाल जानता था। किन्तु, सच जानो, मृत व्यक्तिके पास कमरबन्द पानेके पहिले मैं इस बारेमें कुछ भी नहीं जानता था, और उसके पाससे पाने पर भी मैंने यह सोचा भी नहीं था कि इस कमरबन्दका पीरी-की हत्याके साथ कोई सम्बन्ध हो सकता है।

सच? क्या तुम सच कह रहे हो? तब तो मैं व्यर्थ ही इतनी बातें बक गया। खैर, जो कह दिया सो कह दिया। तब भी मैं तुम्हें इसके लिये धन्यवाद तो जरूर दूंगा कि तुम्हारी वजहसे मुझे पीरीके हत्याकारीका पीछा करनेमें बड़ी सहायता मिली और मेरा विश्वास है कि अबतक ठीक रास्तेपर हूं और हत्या-कारीको गिरफ्तार कर सकूंगा।

तुम्हारा विश्वास है कि पम्पनने ही पीरी ड्रुसीलीका खून किया?

क्यों नहीं? क्या प्रमाण यह सिद्ध नहीं करते कि मुझे ऐसा विश्वास करना चाहिये?

हां। प्रमाण इस तरहका इशारा जरूर करते हैं, किन्तु निश्चितरूपसे नहीं।

हां। तुम अधिकसे अधिक यही कह सकते हो कि पीरी ड्रूसीलीकी हत्या करते हुए पम्पनको किसीने नहीं देखा।

लेकिन, पम्पनने पीरी ड्रूसीलीका खून क्यों किया?

यह तो बिलकुल मामूली सवाल है। तुम सुन चुके हो कि जो कमरबन्द इस समय तुम्हारे पास है, वह पीरीके पास था, और उसे पानेके लिये ही, पम्पनने पीरीका खून किया। पम्पन भी अबसीनियाका रहनेवाला है, जिस समय पीरी ड्रूसीलीने कमहारा राज-महलसे कमरबन्द चुराया, उस समय पम्पन वहां रहा होगा, वह जानता था कि पीरीने कमरबन्द चुराया, फिर जब पन्द्रह वर्ष बाद उसने पेरिसमें पीरीको देखा तो उसे कमरबन्दकी याद आ गयी, उसने होटलतक पीरीका पीछा किया और यह जानकर कि कमरबन्द अभी भी पीरीके पास है। पम्पनने विनोसा होटलमें पीरीको मार डाला और कमरबन्द ले लिया।

अगर पम्पनने पीरीको मारकर कमरबन्द चुराया तो वह उस लाशके पास कैसे मिला?

सवाल पेचीदा मालूम पड़ता है, पर बिलकुल आसान है। मैं समझता हूं कि इस चाइनीजने कुछ घण्टे पहले कमरबन्द पम्पनके पाससे चुरा लिया और इधर भाग आया। कुछ घण्टों पहिले हमलोगोंने गोलियां चलनेके जो शब्द सुने थे वे बतलाते हैं कि पम्पन और चाइनीजमें गोलियां चलीं और चाइनीज

पम्पनकी गोलीसे घायल होकर भागा तथा यहां आते आते मर गया। तुम यह तो जानते ही हो कि पम्पन कमहारा राजमहल की ओर बढ़ रहा है, तब मेरी बात सही मान लो ! मैं समझता हूं वह हमसे कई मीलके फासले पर है। सम्भव है, वह गहरा ईनाम पानेके लालचसे कमहाराके नीगस बहर करीनको कमर-बन्द लौटानेको लिये जा रहा हो लेकिन इस चाइनीजने बीचमें ही उसकी सारी आशाओंपर पानी फेर दिया। किन्तु चाइनीज भी मर गया और कमरबन्द तुम्हारे पास आ गया, यह संयोग की बात नहीं तो क्या है ?

इतना कहकर वर्टरम हंसा, और चुप हो गया।

ब्लेक चारनकी बातों पर गौर करने लगे। उन्हें वर्टरमकी बातें सच-सी मालूम हो रहीं थीं। वे मिस जुलीके मुँहसे सुन चुके थे कि पन्द्रह वर्ष पहिले पम्पन अटबारा नदीके किनारे बेहोशीकी हालतमें पाया गया था। कुछ देर चुप रह कर ब्लेकने कहा !

मेरा जहाँ तक खयाल है, चारन, तुमने जितनी बातें कहीं हैं, वे ठीक हो सकती हैं लेकिन मामला बड़ा ही पेचीला और रहस्यमय है। मुमकिन है जब सब बातें अपने असली रूपमें हमारे सामने आवेंगी, तब हम मामलेको दूसरे ही रूपमें देखने लगेंगे। तब भी मैं निश्चित रूपसे कुछ नहीं कह सकता और तुम्हारी बातें ही ठीक मान लेता हूं। किन्तु तुम जो हाथ धोकर पम्पन के पीछे पड़ गये हो और पेरिस छोड़कर यहां चले आये हो, उसका कारण पम्पनका गिरफ्तार करना है, या कमरबन्दके

रहस्यका पता लगाना? मैं तो यही समझता हूं कि पीरीके हत्याकारीकी बनिस्पत, पीरीके पासवाले कमरबन्दके रहस्यने तुम्हें अधिक उकसाया है। क्यों ठीक है न?

बिलकुल ठीक! तुम सच कह रहे हो।

तुम जानते हो, जब तक पम्पन अबसीनियामें है, तब तक तुम उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। क्योंकि तुम्हारा फ्रेंच कानून अबसीनियामें नहीं चलता। इसलिये मैं चाहता हूं कि तुम अब लुका छिपीका खेल छोड़ दो और हमारे साथ रहो। मैं तुम्हें तुम्हारी होशियारीके लिये धन्यवाद देता हूं और तुमने ऐन मौकेपर आकर, मेरी जान बचाकर जो उपकार किया है, उसके लिये कृतज्ञता प्रगट करता हूं। मेरा खयाल है कि तुमने हमारे नौकर शेमेलकाको घूस देकर ही खच्चरवाले छ आदमियोंमें स्थान पा लिया था। नहीं तो शेमेल्का तुम्हें हमारे पास इस रूपमें कदापि न लाता।

हाँ, यही बात है।

लेकिन यह तो बतलाओ कि तुम खारटूमके उस होटलमें रातके समय कैसे पहुँच गये थे? शायद तुम हवाई जहाजसे आये थे। लेकिन मेन्टन छोड़नेके बाद तुमको यह कैसे मालूम हुआ कि हमलोग खारटूम ही जा रहे हैं? क्या किसी ज्योतिषी ने बतला दिया था?

तुम्हारे जहाज बोनवेण्टरपर मेरा एक आदमी था, उसीसे मुझे सब बातें मालूम हो गयीं। चारनने कहा—

ओहो! यह बात थी? ब्लेक हँसते हुये बोले, खैर, अब तुम छिपकर तो रह नहीं सकते, न हम तुम्हें भागने ही देंगे। तुम्हें हमारे साथ ही रहना और चलना होगा।

तुमने मेरा बड़ा उपकार किया, चारन। तुमने मेरी जान बचायी है। लेकिन जब शेमेल्काको कीमती कमरबन्दकी बात मालूम होगी तो वह उपद्रव मचा सकता है, हमें उसका होश ठिकाने लानेके लिये प्रस्तुत रहना चाहिये। वह बड़ा लालची है।

शेमेल्काको कमरबन्दकी बात कैसे मालूम होगी?

यारूबा जब होशमें आकर उन लोगोसे मिलेगा तब वह शेमेल्कासे जरूर कहेगा।

कुछ चिन्ता नहीं। जबतक वह शेमेल्कासे रहस्यकी बात न कहे तबतक हमें कुछ न करना चाहिये। वह जब होशमें आयेगा, तब अपनेको जमीनपर पड़ा पाकर चकित हो जायगा। उसे यह भी नहीं मालूम कि मैंने उसपर आक्रमण किया, इसलिये वह मुझपर सन्देह नहीं कर सकता। सच तो यह है कि शेमेल्का भी नहीं जानता कि सचमुच मैं कौन हूं। जब मैं शेमेल्कासे मिला, उस समय वेश बदले हुये था, मैं सीनरसे तुम्हारे काफले के साथ था। मैं अभी उन्हींके दलमें मिला रहूंगा, कोई मुझपर शक भी नहीं करेगा और मैं उनकी सब गुप्त बातें जानता रहूंगा, कोई खतरेकी बात होगी तो हम लोग उसका प्रबन्धकर लेंगे। हमें किसी भी बातसे घबराना नहीं चाहिये। समझे। अब मैं यारूबाको देखने जा रहा हूं, फिर मिलूंगा।

हां। तुम अभी बेनीकाली ही रहो और इसी रूपमें सबको बुद्धू बनाते रहो।

हां। यही उचित है। गोकि बड़े असभ्य और गन्दे आदमियों के साथ रहना पड़ेगा, पर जासूस बनकर ऐसी बातोंसे घबराने से काम नहीं चलता। मुझे आये काफी देर हो गयी, मैं चलूं, कहीं उन्हें मेरी गैरहाजिरीका पता न लग जाय। ब्लेक, तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो। मैं बराबर यारूबा, शेमेल्का और बाकी सबकी हरकतोंपर कड़ी नजर रखूंगा। मुझसे छिपकर वे कुछ न कर सकेंगे।

चारन ब्लेकके तम्बूमेंसे निकलकर अंधेरेमें छिप गया।

ब्लेकने स्मिथके विस्तरेके पास जाकर दबे स्वरसे उसे घटनाका संक्षिप्त हाल बतला दिया। स्मिथको ब्लेककी बातें सुनकर बहुत ताज्जुब हुआ, बर्टरमकी चालाकी की बात सुनकर तो वह स्तब्ध हो गया। जासूस हो तो ऐसा हो, उसने मन-ही ही मन कहा। स्मिथको सब बातें बतलाकर ब्लेक अपने विस्तर पर चले गये और सोनेकी कोशिश करने लगे। थोड़ी ही देरमें ब्लेक सो गये।

रातके बचे हुए दो तीन घण्टे बिना किसी प्रकारकी गड़बड़ी या दुर्घटनाके बीत गये। आकाश और जमीनका सन्धि स्थल सुर्ख होने लगा। सवेरा हो गया। लोगबाग जग गये, तम्बूओंमें चहल पहल मच गयी। ब्लेक सोकर उठे, स्मिथ और जुली भी। हर रोजकी तरह बेनी कालीने आकर नाश्ता तैयार

किया और सबने नाश्ता किया। कोई कुछ नहीं बोला; सिर्फ ब्लेकके साथ उसकी आंखें मिलीं।

रातकी रहस्यमय घटना सुनकर जुलीको बहुत ताज्जुब हुआ। वह कुछ सहमसी गयी,पर यह भाव उसके हृदयमें अधिक कालतक नहीं रह सका, वह शीघ्र ही प्रसन्न और स्वस्थ्य हो गयी। लेकिन ब्लेकने जुलीसे कमरबन्द और बर्टरमका रहस्य नहीं कहा। स्मिथको भी ब्लेकने रातमें ही मना कर दिया था इसलिये वह भी चुप रहा।

चाइनीज घुड़सवारकी बात सुनकर जुलीने उसे देखना चाहा। किन्तु देखनेपर भी वह उसे पहिचान नहीं सकी। सब-की सलाहसे चाइनीज बिना किसी प्रकारकी मृतक क्रियाके जमीनमें गाड़ दिया गया इसके बाद चलनेकी तैयारियां होने लगी और सूरजके सामने आते आते वे लोग कमहारा राज-महलकी तरफ बढ़ चले।

यारूबा भी काफलेके साथ चल रहा था, पर सबके पीछे। उसकी आंखोंमें निराशा और चेहरेपर वेदनाके चिन्ह थे। किन्तु अभीतक उसने शेमेल्कासे कुछ नहीं कहा था। वह परेशान सा दिखलायी पड़ रहा था। वह कमरबन्दको आशा छोड़कर, यह सोच रहा था कि रातमें उसके कार्यमें बाधा देनेवाला कौन था? वह विना किसीसे बोले चाले चुपचाप चल रहा था। ब्लेक भी छिपे तौरसे देख रहे थे।

काफला जब जङ्गलके बीचमेंसे जा रहा था और शेमेल्का

तथा छ खच्चर वाले पीछे थे, तब ब्लेकने तम्बूमें जो बातें जुलीसे छिपायीं थीं, वे कह दीं। लेकिन मिस जुलीको ब्लेककी बातें सुनकर खुशी नहीं हुयी। उसने जब यह सुना कि बेनीकाली और कोई नहीं बर्टरम चारन ही है। और उनको तमाम साव-धानी, जल्दबाजी और होशियारीपर पानी फेरकर बर्टरम बेनी-काली बनकर उनके साथ चल रहा है, तब उसे अफसोस और झुंझलाहट मालूम पड़ी। उसके मनमें तो आया कि इस धूर्त जासूसको अभी अपने साथसे अलग कर दे, पर ब्लेकके मना करनेपर वह चुप रह गयी। किन्तु मन-ही-मन वह बर्टरमको कोस रही थी। वह इस बातपर जल रही थी कि बर्टरम इतना चालाक क्यों है?

कमरबन्दकी बात सुनकर तो उसके ताज्जुबका ठिकाना ही न रहा। उसकी कीमतके बारेमें ब्लेककी ऊंची धारणा सुनकर वह विस्मित हो गयी। पम्पनका इस कमरबन्दके साथका सम्बन्ध सुनकर उसे और भी आश्चर्य हुआ, लेकिन जबानसे उसने कुछ प्रकट नहीं किया और चारनकी इस रायको कि चाइनीजने पम्पनके पाससे कमरबन्द चुराया होगा, ठीक बताया।

तमाम बातें सुनकर मिस जुलीने आश्चर्य प्रकट करते हुये कहा—अगर ये बातें हैं तो मेरा खयाल है कि पम्पन और ग्रेना-इट बहुत दूर नहीं होंगे, वे चाइनीजकी तलाशमें घूम रहे होंगे।

हां। तुम्हारा अन्दाज ठीक हो सकता है, मिस जुली।

ब्लेक बोले मुमकिन है रास्तेमें ही हमारी ग्रेनाइट और पम्पन-से मुलाकात हो जाय।

वे लोग कमरबन्दको योंही थोड़े ही छोड़ देंगे। स्मिथ बोला।

ग्रेनाइट और पम्पनके मिलनेकी सम्भावनाने उन्हें तेजीसे आगे बढ़नेको उकसाया। वे लोग उत्सुकता पूर्वक आगे बढ़ रहे थे। सबसे अधिक उत्सुकता मिस जुलीके हृदयमें थी। चलते-चलते घण्टों गुजर गये पर ग्रेनाइट या पम्पनकी परछांही भी दिखलायी नहीं पड़ी। शेमेल्का उन लोगोंसे बीस गजके फासले पर चल रहा था। वह एकाएक बड़े जोरसे चिल्लाया। शेमेल्काकी चिल्लाहट सुनकर सबका ध्यान उधर ही चला गया।

खच्चरोंको तेजीसे हांककर वे लोग शेमेल्काके पास पहुँचे शेमेल्का खच्चरसे उतरकर जमीनपर खड़ा था, उसके पैरोंके पास एक आदमीकी लाश पड़ी हुयी थी। लाश एक अबसीनियनकी थी और उसपर शेरके चमड़ेकी कीमती पोशाक थी। शेमेल्का-चुपचाप खड़ा हुआ लाशको देख रहा था।

लाशके करीब पहुंचकर उसका अबसीनियन चेहरा देखते ही ब्लेकने समझा कि मिस जुलीका नौकर पम्पन ही है, किन्तु खच्चरसे उतरकर लाशको अच्छी तरह देखनेपर उन्हें यह जान-कर प्रसन्नता हुयी कि लाश पम्पनकी नहीं किसी दूसरे अब-सीनियनकी है।

मिस जुली स्मिथ और ब्लेक लाशको गौरसे देखते रहे थे, किन्तु कोई भी लाशको पहिचान नहीं रहा था। ब्लेकने पत्थरसे खड़े हुये शेमेल्काकी तरफ नजर दौड़ाकर, लाशकी परीक्षाके लिए घुटने जमीनपर टेक दिये और बोले, मरगया !

जी नहीं, सरकार। यह अभी जिन्दा है। शेमेल्काने जवाब दिया, इसका नाम अलखलील है।

१६

पम्पनपर संकट

जब अफसर दरवाजा बन्द करके चला गया और ग्रेनाइट तथा पम्पन भोजनकर चुके तब ग्रेनाइट रास टेकला गोमनकी बदमाशी, घटनाओंका एक-एक परिवर्तन और महामान्य नीगस-का महलसे गैरहाजिर होना, आदिपर गौर करने लगा। उस समय पम्पन क्या सोच रहा था यह उसे मालूम नहीं था, किन्तु वह यही समझ रहा था कि जिन बातोंको वह सोच रहा है, पम्पन भी उन्हीं बातोंपर विचार कर रहा होगा, उसे यह भी उम्मीद थी कि वक्त आनेपर किसी जगह छिपकर पम्पनकी सहायतासे विपत्तिसे बचा जा सकता है।

वह सोच रहा था कि रास टेकला जैसा बदमाश आदमी बिना उनपर हमला किये नहीं रह सकता। इस स्थानपर चाहे वह कुछ न कर सके; किन्तु अफसरके कहनेके मुताबिक यह तो सच है कि महलमें उसका प्रभाव है। जो भी होगा देखा जायगा, आखिर ग्रेनाइटने यही निश्चयकर अपने मनको स्थिर किया।

सार इमरान (अफसरका यही नाम था) ने ग्रेनाइट और पम्पनके लिये अपने रहनेके स्थानके पास हीका कमरा खालीकर दिया। थोड़ी ही देरमें कमरेमें आवश्यक चीजें आ गयीं। ग्रेनाइट और पम्पन उसी कमरेमें चल गये। सार इमरानने अपने कुछ विश्वासपात्र नौकर ग्रेनाइट और पम्पनकी हिफाजतके लिये वहां छोड़ दिये। क्योंकि ग्रेनाइटकी तरह ही उसे भी रास टेकला गोमनके आक्रमणका भय था। वह भी सोच रहा था कि न जाने किस समय उसके आदमी हमला कर बैठें। इसलिये उसने पहिलेसे ही होशियार हो जाना ठीक समझा, वह नहीं चाहता कि उसकी रक्षामें रहते हुये, ग्रेनाइट और पम्पनको किसी तरहकी हानि उठानी पड़े।

दो आदमी इसलिये रख दिये गये थे कि जहाँ भी वे जावें वहां उनकी रक्षाके लिये हर वक्त साथ रहें, 'उनको ग्रेनाइटकी आज्ञा माननेका हुक्म मिल चुका था। ग्रेनाइटने देखा कि उनके खानेपर कड़ी नजर रखी जाती है। भोजनकी पहिले परीक्षाकर ली जाती है, तब उन्हें दिया जाता है। क्योंकि इस बातकी आशंका थी कि कहीं किसी आदमीको मिलाकर उन्हें भोजनमें विष देनेकी कोशिश न की जाय। ग्रेनाइटको विश्वास था कि रास टेकला जैसे आदमीके लिये यह असम्भव नहीं है।

दूसरे दिनतक वे लोग अपने अपने स्थानसे बाहर नहीं निकले। उन्हें बाहर जानेकी कोई जरूरत भी नहीं थी। जिन चीजोंकी उन्हें आवश्यकता पड़ती रास इमरान उनकी पूर्तिकर देता।

एक दिन और रात उन्हें महलके उसी भागके कमरेमें बीत गयी। लेकिन उन्हें किसी बातकी तकलीफ नहीं हुयी।

इतने समयमें ग्रेनाइटने बहुतसी बातें सोची। ग्रेनाइटकी चिन्ताका सबसे बड़ा कारण शाही कमरबन्द था। जिसको पीली आंखोंवालेसे बचाते हुये वे लोग महलके भीतरतक ले आये थे। किन्तु रास टेकलाके आदमियोंने पम्पनको चुराकर कमरबन्द गायब कर दिया था। अब उनके पास कमरबन्द नहीं रहा था। कमरबन्दका उनके पास होना बहुत जरूरी था, क्योंकि उसके बिना रास टेकलाकी बेईमानीका सुबूत नहीं दिया जा सकता था। ग्रेनाइट यही सोच रहा था कि किस तरह कमरबन्द फिरसे पाया जाय? बहुत कुछ सोचनेपर भी उसके दिमागमें कमरबन्द पानेकी तरकीब नहीं आ रही थी।

ग्रेनाइटको विश्वास था कि कमरबन्द रास टेकला गोमनके अधिकारमें है। किन्तु वह अधिक दिनोंतक अपने ही खिलाफ जबर्दस्त प्रमाण नहीं रहने देगा। मौका पाते ही वह कमरबन्दके टुकड़े टुकड़े कर डालेगा, उसे तोड़कर उसके रत्नोंको अलग करके दूर देशोंमें बेचनेका यत्न करेगा। मुमकिन है रास टेकलाने अभीतक कमरबन्द नष्ट नहीं किया हो। ग्रेनाइटने पम्पनसे कमरबन्दके बारेमें सवाल किया।

किन्तु पम्पन भी सन्तोषजनक उत्तर नहीं दे सका; क्योंकि पम्पन जिस समय नहानेके कमरेमें घुसा क्लोरोफार्मके कपड़ेसे उसका मुंह और नाक कस दिया गया। संभलनेके पहिले ही

वह बेहोश हो गया और किसीने स्नानघरके नांदके नीचेका दर-वाजा खोला और सीढ़ीमें लाइन बान्धकर खड़े हुये कुछ आदमियोंकी सहायतासे उसे हाथों-हाथ तहखानेमें पहुंचा दिया। तहखानेमें पहुंचा देनेके बाद चोर दरवाजा खोलकर वे लोग टेकलाके बताये हुये एक सुनसान, अन्धकारपूर्ण जेलके कमरेमें उसे ले गये। बेहोशीकी हालतमें ही उसे लिटा दिया गया और उसके कपड़े उतार लिये गये, उसकी तलाशी ली गयी। उसके पाससे शाही कमरबन्द छीन लिया गया और उसके हाथ पैरोंमें हथकड़ी डाल दीं, जब पम्पनकी आँखें खुलीं तब उसने अपनेको कैदी पाया और देखा कि वे लोग बड़ी तत्परतासे उसके मार डालनेकी तैयारियां कर रहे हैं। रास टेकलाका हुक्म हो चुका था कि तलाशी लेनेके बाद उसे मारकर कहीं ऐसी जगहमें गाड़ दिया जाय जहां किसीको पता न लगे। पम्पन समझ गया कि मरनेमें देर नहीं है, वह बन्धन मुक्त होनेके लिये हथकड़ी तोड़नेका यत्न करने लगा किन्तु सफल नहीं हुआ। पम्पनके मार डाले जानेमें जरा भी सन्देह नहीं था यदि ग्रे नाइट रास टेकलाके दरबारमें पहुंचकर उसे पम्पनको बुलानेके लिये वाध्य नहीं करता।

कमरबन्द रास टेकला गोमनके पास था, बिना कमरबन्दके उनका कोई काम नहीं बन सकता था, इसलिये यह अनिवार्य था कि किसी-न-किसी तरकीबसे रास टेकलासे कमरबन्द ले लिया जाय। लेकिन कैसे लिया जाय? दो उपायोंसे ही कमरबन्द

मिल सकता था, चोरी या चालाकी। रास टेकला अपनी खुशी से कमरबन्द वापिस कर देगा, यह खयाल करना ही फिजूल था। महामान्य नीगस बहर करीनके सामने वह साफ इन्कार कर जायगा। कहेगा, दुहाई महाराजकी। मैं कुछ नहीं जानता। उसके ऐसा कहनेसे पम्पनकी सारी आशाओंपर पानी फिर जायगा। उसका परिश्रम व्यर्थ हो जायगा। रासटेकला शरीफ का शरीफ बना रह जायगा।

तब क्या किया जाय? किस तरह कमरबन्द वापिस लिया जाय? किस तरह टेकला गोमनसे अपना मतलब निकाला जाय।

सिर्फ तीन आदमियोंको रास टेकलाकी बदमाशी और गुप्त रहस्यका हाल मालूम हो सकता है। यांकावर, अल-खलील और पीली आंखोंवाला चीनी। पीली आंखोंवाले चीनीका तो सीनरके बाद पता नहीं चला था, या तो वह सीनर-वापिस लौट गया था, या किसी दूसरे रास्तेसे उन लोगोंके आनेके पहिले ही महलमें पहुंच गया था और पहिचान लिये जानेके भयसे उनके सामने नहीं आया था। इसके बारेमें कुछ सोचना ही इस समय असामयिक है। ग्रेनाइटने विचार किया कि यांकावर और अलखलीलमेंसे किसीको अपनी तरफ मिलाया जा सकता तो बहुत अच्छा होता। अगर इन लोगोंको काफी धन देनेका लालच दिया जाय तो शायद वे लोग कुछ रहस्य और कमरबन्द पानेकी तरकीब बता दें। मुमकिन है

उनपर दबाव पड़े तो वे लोग मजबूर होकर जो कुछ जानते हों, सो बतला दें।

ग्रेनाइटने सोचा लालच देनेसे काम निकल जाय तो बहुत अच्छा है। यही विचारकर वह इस बातपर गौर करने लगा कि किस तरहसे यांकावर या अलखलीलको मिलाया जा सकता है। उस समय रात हो चुकी थी। बाहर आना जाना सुविधा जनक नहीं था। इसलिये ग्रेनाइटने रातभर चुप रहना ही उचित समझा। दूसरे दिन उसने यांकावर और अलखलीलसे मिलनेका निश्चय किया। आधी राततक कमरबन्द और पम्पनके बारेमें सोचते सोचते ग्रेनाइटकी आंख लग गयी। सबेरे उठनेपर नित्य-नैमित्तिक कर्मोंसे निबटकर ग्रेनाइट नाश्ताकर रहा था कि सार इमरान आ गया। उसने आते ही सवाल किया। रात कैसी कटी?

किसी कदर कट गयी। अच्छी तरह ही समझिये। ग्रेना-इटने जवाब दिया। कुछ इधर उधरकी बातें करके सार इमरानने कमरबन्दकी बात चलायी। वह बोला—

ग्रेनाइट साहब। तुम शाही कमरबन्दकी बात कह रहे थे। वह आपके ही पास है। अगर अविश्वास न हो तो, मुझे दे दो। क्योंकि आप लोग इधर उधर जाते हैं। यद्यपि मेरे आदमी हमेशा साथ ही रहते हैं तो भी होशियार रहना अच्छा। कमर-बन्द मुझे दे दो तो मैं जबतक महामान्य नीगस लौटकर न आवें तबतक उसे सुरक्षित स्थानमें रख दूं।

ग्रेनाइट सार इमरानकी बातका जवाब न दे सका। उसे

ताज्जुब हो रहा था कि इससे पहिले सार इमरानने कमरबन्दकी बात नहीं की, आज ही क्यों कर रहा है ? लेकिन, ग्रेनाइटको ज्यादा देरतक संशयमें नहीं रहना पड़ा, उसने देख लिया कि ऐसे आदमीपर सन्देह करना मनुष्यताका अपमान करना है। जिस आदमीने बिना जान पहिचानके सिर्फ न्यायके लिये, रास टेकलाकी पर्वा न करके उन्हें शरण दी, उनके लिये हरतरहके आरामका बन्दोबस्त किया, रक्षाका प्रबन्ध किया, वह पूर्ण विश्वासके लायक है। ग्रेनाइटने बिना किसी संकोचके कमर-बन्दके गायब होनेका सारा हाल सुना दिया। साथ ही उसने यह भी कहा कि कोई ऐसी तरकीब बतलाओ जिससे कि कमरबन्द फिर हमें मिल जाय।

सार इमरानने शान्ति पूर्वक ग्रेनाइटकी बातें सुनी, और कुछ देरतक गम्भीरतापूर्वक सोचता रहा, फिर बोला—

मैं इस झगड़ेमें किसीका पक्ष नहीं लेना चाहता।

तुमको मालूम नहीं कि रास टेकला इस समय खजांची है। न्यायकी खातिर मैंने उसकी भी पर्वा नहीं की। अब तुम लोगों-को सम्राट्के आनेतक चुपचाप बैठना चाहिये। तुम्हारा झगड़ा सिर्फ महामान्य नीगस बहर करीन ही मिटा सकते हैं।

लेकिन अगर तुम्हारा कहना सच है तो, रास टेकला बड़ा भीषण अपराध कर रहा है, वह आगके साथ खेल रहा है। किन्तु अगर कमरबन्द उसके पास नहीं निकल सका तो उसका कुछ भी नहीं बिगड़ सकेगा, और तुम्हारी एक भी बातका विश्वास

नहीं किया जायगा। फिर तुम लोगोंको ही उल्टे लेनेके देने पड़ जायेंगे। मैं पहिले भी कह चुका और अब भी कहता हूं रास टेकला महल और दरबारमें काफी प्रभाव रखता है, मेरे मालिक महामान्य नीगस भी उसका विश्वास करते हैं इसलिये जो कुछ कहो, या करो खूब सोच समझकर।

लेकिन, यांकावर रास टेकलाके षड़यन्त्रमें शामिल है, वह सब कुछ जानता है। गवाहके रूपमें उसे पेश किया जाय तो? ब्रे नाइटने पूछा।

वह चाहे रास टेकलाके षड़यन्त्रमें शामिल हो, किन्तु उसके खिलाफ एक शब्द भी न कहेगा। महलमें यांकावरका जो स्थान है, और दरबारसे यांकावरको जो आमदनी है, वह सब रास टेकलाकी कृपासे, इसलिये वह कभी भी भरी थालीको लात नहीं मारेगा, वह रास टेकलाके विरुद्ध कुछ न कहेगा। निश्चय समझ लो यांकावरसे किसी भी तरहकी सहायता नहीं मिल सकती, कोई दूसरी तरकीब सोच सकते हो तो सोचो।

अच्छा। अल खलीलके बारेमें क्या कहते हो?

हां। अल खलीलको किसी तरह कह सुनकर रास्तेपर लाया जा सकता है। सार इमरानने गम्भीरतापूर्वक सोचते हुये कहा, लेकिन यह काफी संशयापन्न है क्योंकि अल खलील रास टेकलाके नीचे घुड़ सवार है, इसलिये वह अपने अफसरका सम्मान जरूर करेगा। तब भी मैं उससे बातचीत करूंगा और अगर किसी तरहसे वह सच बातें कहनेको तैयार हो

गया तो बदलेमें मुंह मांगा ईनाम देनेमें भी संकोच नहीं करूंगा। मुझे विश्वास है कि अल खलील मेरी बातोंकी उपेक्षा न कर सकेगा। बेहतर यही है कि इस कामका भार तुम मेरे ऊपर छोड़ दो।

ग्रेनाइटने सिर हिलाकर स्वीकृत दी पर मुंहसे कुछ न बोला, मानो वह सार इमरानकी बातोंसे पूर्ण सन्तुष्ट न हुआ हो। रास इमरान शीघ्र ही लौटकर आनेका वादा करके चला गया।

सार इमरानके जानेके बाद ग्रेनाइट फिर विचार धारामें डूबने उतराने लगा, पर शीघ्र ही सार इमरानके आ जानेसे उसकी विचारधारा भंग हो गयी। सार इमरानने लौटकर बतलाया कि उसके बहुत खोजनेपर भी महलमें अल खलीलका कहीं पता नहीं चला। पूछताछ करनेपर मालूम हुआ कि परसों शामसे ही उसका पता नहीं है, वह अपने निवासस्थानपर भी नहीं गया। परसोंसे ही महलसे बाहर है पर कहां और क्यों गया यह मालूम नहीं हुआ।

सार इमरानकी बात सुनकर ग्रेनाइटने कहा, जिस आदमीने हमको रास टेकलाके सामने पेश किया था, उससे मैंने पूछा था कि अलखलील कहां है, तब उसने भी यही कहा था कि वह महलसे बाहर गया हुआ है। वह आदमी कौन है? उसका नाम क्या है?

फलाश!

क्या वह हमारा काम नहीं कर सकता?

नहीं !

क्यों ?

क्योंकि वह रास टेकलाका आदमी है। उसका व्यक्तिगत नौकर है। वह रास टेकलाके खिलाफ शायद ही बोले। लेकिन तुम चाहो तो मैं उससे भी बातचीत करके देखूं।

जरूर, उससे भी हमारा काम निकल सकता है। ग्रेनाइटने कहा।

फलाशसे बातचीत करनेका भी कुछ नतीजा नहीं निकला, उसने कोई बात कहनेसे ही इन्कार नहीं किया, बल्कि यह भी कहा कि रास टेकलाने उसे स्नान गृहके बाहर अंग्रेज मुसाफिर-का स्वागत करनेके लिये, सिपाहियों सहित खड़ा रहनेका आदेश दिया था, और उसका विश्वास है कि सिर्फ एक आदमी, ग्रेना-इट ही रास टेकलाके दरबारमें उसके साथ गया था, वह किसी दूसरे आदमीके बारेमें कुछ भी नहीं जानता। सार इमराननें फलाशका जवाब ग्रेनाइटको बतला दिया।

ग्रेनाइटके सब प्रयत्न विफल हुये। वह किसी भी आदमीको अपनी तरफ न मिला सका। रास टेकलाने बड़ी सफाईसे सब-को गांठ रखा था, इसलिये कोई भी रास टेकलाके खिलाफ जानेको तैयार न होता था। संभवतः वह पहिले ही समझ गया था कि उसके साथियों और सहायकोंको उसके खिलाफ भड़-कानेका प्रयत्न किया जायगा, इसलिये उसने पहिलेहीसे सबको अपनी मुट्ठीमें कर लिया था। अपने प्रयत्नोंमें विफल होकर

ग्रेनाइट सोचने लगा, शायद रास टेकलाको आशङ्का थी कि अल खलील उसके खिलाफ हो जायगा इसीलिये उसे महलसे बाहर कर दिया,या दुनियासे ही उठा दिया हो तो असंभव नहीं।

अलखलील और फलाशके बाद यांकावर ही बच रहा था, जिसके बारेमें सार इमरान पहिले ही कह चुका था कि उससे यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह रास टेकलाके विरुद्ध और ग्रेनाइटके पक्षमें महामान्य नीगसके सामने कुछ कहेगा। किन्तु सार इमरानके निराशा प्रगट करनेपर भी ग्रेनाइट निराश नहीं था। वह मन-ही-मन इस तरहकी बात सोच रहा था जिस-से यांकावरको फंसाया जा सके, और वह सच बात नीगसके सामने कहनेको मजबूर हो जाय। इस कामके लिये जोर-जुल्म भी करना पड़े तो, ग्रेनाइटको इन्कार नहीं था। किन्तु यांका-वरको बातों और वादोंके जालमें फंसाना आसान नहीं था, इस कामके लिये होशियारी और बहादुरीके साथ-साथ अनुकूल समयकी भी जरूरत थी, जल्दीबाजीमें यह काम हो ही नहीं सकता था। किन्तु अनुकूल समय नहीं आया, और महा धूर्त रास टेकला दूसरा भयङ्कर, घातक वार कर बैठा।

घटना यों हुई कि दोपहर तक तो ग्रेनाइट और पम्पन खाने पीने और आराम करनेमें लगे रहे किन्तु दोपहरके समय ग्रेना-नाइटका जी घबराने लगा। असल बात यह थी कि वह, यहां न जाना, वहां न जाना आदि पाबन्दियोंसे ऊब गया था और इच्छानुसार घूमना चाहता था। उसने पम्पनसे कहा; इस कमरे

मैं बैठे-बैठे तो पैर रह गये चलो जरा बाहर टहल आयें। वह कहने लगा।

दोस्त पम्पन ! मैं यहांपर सिर्फ रास टेकला गोमनको खुश रखनेके लिये भींगी बिल्ली बन कर नहीं बैठ सकता। जो होगा सो देखा जायगा। और ऐसे होता ही क्या है ? चलो, जरा लोगोंको देखें सुनें, महलवालोंको दर्शन दें। मेरा खयाल है कि यह महल पुराना होनेपर भी दर्शनीय है। फिर तुम तो महलके सब प्रगट और गुप्त रास्ते जानते ही हो।

इस तरहकी बातें करके ग्रेनाइट पम्पनको लेकर अपने स्थानसे बाहर आया। बाहर आते ही महलके लोग घेरकर उन्हें देखने लगे। ग्रेनाइटके बनिस्पत लोग पम्पनको ज्यादा देख रहे थे। सम्भवतः वे लोग पम्पनसे कुछ कहना चाहते हों, पर कह न सकते हों। पम्पन अपने ही घरमें वेगाना हो रहा था। ग्रेनाइटने देखा कि महलके रक्षकों और सिपाहियोंकी दृष्टिमें आग नहीं थी तो पानी भी नहीं था, यानी वे लोग उन्हें किसी अच्छी निगाहसे नहीं देख रहे थे। बल्कि जैसे-जैसे वे आगे बढ़ रहे थे उनके आसपासका वातावरण आशंकाजनक हो रहा था।

तब भी न तो किसीने उनका स्वागत किया न किसीने उनका रास्ता ही रोका, वे थोड़ी देर तक इधर उधर टहलते रहे फिर धीरे-धीरे सीढ़िया पार करते हुये मैदानमें चले गये। उनका मतलब हवा खाने और बगीचोंमें घूमनेका था।

मैदानकी हरी-भरी घासको पारकर वे लोग बगीचेमें पहुंचे

बागमें बहार छायी हुयी थी, ऐसा कोई पेड़ न था जिसपर फूल न हो, ऐसी कोई लता न थी जो किसी पेड़से लिपटी न हो, ऐसी कोई डाल नहीं थी जो मस्तीसे झूल न रही हो। यह दृश्य देखकर ग्रेनाइट और पम्पनकी तबीयत ताजा हो गयी। बनावटी पहाड़ियोंकी गुफाओं और लता कुञ्जोंसे गुजरते हुये, वे लोग जब बागके दूसरे सिरेपर आये, उस समय सूरज अस्ताचलपर पहुंच रहा था। उसकी किरणें फव्वारेके उड़ते हुये जल कणोंके साथ खेल रहीं थीं। सार इमरानके दो सिपाही बराबर उनके साथ थे क्योंकि सार इमरानने कह रखा था कि जहां भी वे लोग जांय दो सिपाही हर समय उनके साथ रहें। पम्पन सिपाहियोंको साथ देखकर मन-ही-मन खुश था। किन्तु इस तरहकी रक्षाका आदी न होनेके कारण ग्रेनाइटको यह अच्छा नहीं लग रहा था, मगर वह कुछ बोला नहीं।

जैसे ही वे लोग एक लता कुञ्ज पार करके आगे बढ़े शेरकी गर्ज सुनकर ग्रेनाइट चौंक पड़ा।

चिड़ियाखाना है। पम्पनकी अँगुलियोंने कहा।

ओहो! तब महलमें जानेसे पहिले हम इसे देखेंगे। ग्रेनाइटने उत्साहपूर्वक कहा, पम्पन राजी हो गया।

बागके दूसरी तरफ चिड़ियाखाना था। चिड़ियाखाना काफी लम्बा चौड़ा और देखने लायक था। उसमें जंगली जानवरोंकी अच्छी प्रदर्शनी लग रही थी। शेर, चीते, तेन्दुए, काले-चीते आदि भयङ्कर कीमती और अलभ्य जानवर भी थे।

ग्रेनाइटने देखा कि एक लोहेके छोटेसे पिंजरेमें एक अफ्रीकन शेर, और शेरनी बन्द है। इसी शेरकी दहाड़ सुनकर ग्रेनाइट चौंका था। ग्रेनाइटने देखा, दोनों, शेर और शेरनी दुबली हो गयी थी। वे भूखे मालूम हो रहे थे, इधर-उधर घूम रहे थे। ग्रेनाइटको शेरकी इस तरहकी हालतपर बहुत तरस आया।

ग्रेनाइटने पम्पनसे अपने मनका भाव कहा, और आस-पास किसी दरवान या नौकर चाकरको देखने लगा, किन्तु कोई आदमी दिखलायी नहीं पड़ा। ग्रेनाइटने देखा कि सिर्फ सार इमरानके दो बहादुर वफादार आदमी उनकी रक्षाके लिये थोड़ी दूरपर खड़े हुये हैं और किसी तीसरे आदमीका पता नहीं है। शाम होते देखकर ग्रेनाइट पम्पनके साथ महलमें लौट आया।

सार इमरान रास्तेमें ही मिल गया, उसने ग्रेनाइट और पम्पनको देखकर सन्तोष प्रगट करते हुये कहा, तुम लोग बड़ी देरसे बाहर गये हुये थे, मुझे तो डर लग रहा था कि कहीं कुछ हो न गया हो। बड़ी खुशी है जो तुम लौट आये। कोई अड़चन तो नहीं पड़ी।

कुछ भी नहीं। सार इमरान आप हम लोगोंको इतना डर-पोक या कमजोर न समझें। हम लोग अपनी रक्षा कर सकते हैं। ग्रेनाइटने जवाब दिया।

बहुत अच्छा है, किन्तु विपत्तिके रास्ते ही क्यों चला जाय? आफतसे बचकर चलना ही बुद्धिमानी है। सार इमरानने पूछा, तुम लोगोंके पास हथियार हैं?

हां, एक विश्वास पात्र, अचूक निशानेबाज रिवाल्वर है। ग्रेनाइटने कहा, हमारी बन्दूकें स्नान घरमेंसे गायब कर दीं गयीं।

अच्छा, मैं इस मामलेकी जांच पड़ताल करूंगा। सार इमरान बोला, नाश्ता तैयार है, भीतर चलो।

जब वे लोग अपने कमरेमें पहुंच गये तो ग्रेनाइटने अपना रिवाल्वर पम्पनको देते हुये कहा, इसे अपने पास रखो, विपत्तिसे हमेशा होशियार रहना चाहिये। तुम्हींपर अधिक आफत आनेकी उम्मीद है, इसलिये तुम मेरा रिवाल्वर ले लो, मैं सार इमरानसे दूसरा मांग लूंगा।

दिनके प्रकाशका स्थान रातके अन्धेरेने ले लिया था, और सार इमरानसे पूर्ण सहमत न होते हुये भी ग्रेनाइटने उसके कहनेके मुताबिक अन्धेरेमें बाहर न जानेका निश्चय कर लिया था। लेकिन बैठे-बैठे जी नहीं ल ' रहा था। लगभग नौ बजे ग्रेनाइटने महलके पुस्तकालयसे पढ़ने ल्यक मासिक पत्र या किताब लेने जानेका निश्चय किया। उसने अपना इरादा पम्पनसे कहा, और दो एक मामूली बातें कहकर पुस्तकालयकी तरफ चल दिया। एक आदमी पम्पनकी हिफाजतके लिये रह गया और दूसरा ग्रेनाइटके पीछे-पीछे पुस्तकालयकी तरफ बढ़ा। पुस्तकालय उनके ठहरनेके स्थानसे बहुत दूर नहीं था और उसमें अच्छी-अच्छी किताबोंका उत्तम संग्रह था। इथोपियन, हिब्रू, फ्रेञ्च, और अरबीकी काफी किताबें थीं। ग्रेनाइटने कुछ फ्रेञ्च

किताबें पसन्द की और उन्हें लेकर अपने डेरेकी तरफ लौटा, उसे पुस्तकालयमें मुश्किलसे पांच मिनट लगे होंगे।

जैसे ही उसने अपने ठहरनेके महलके भागमें प्रवेश किया, दरवाजा पारकर भीतर गया, वैसे ही वह यह देखकर स्तब्ध हो गया कि जो सिपाही पम्पनकी हिफाजतके लिये रह गया था, वह जमीनपर बेहोश पड़ा हुआ था। उसके सिरपर किसीने करारा वार किया था और वह घायल और बेहोश होकर गिर पड़ा था। दूसरे सिपाहीने जैसे ही पहिले सिपाहीको घायल और बेहोश देखा, ताज्जुब और भयसे चिल्ला उठा और ग्रेनाइट की तरफ दौड़ आया!

ग्रेनाइटने दूसरे सिपाहीका भय और आश्चर्यका भाव देखा, पर उससे कुछ भी न कहकर वह उस तरफ बढ़ा जिस तरफ वह पम्पनको छोड़कर गया था।

कमरेमें पहुंचकर ग्रेनाइटने देखा कि कमरा खाली था, और पम्पनका कहीं पता न था। उफः इतनीसी देरमें पम्पन कहां चला गया।

वह दौड़ा हुआ बाहर आया, बाहर आते ही सार इमरानसे मुलाकात हो गयी, उसे भी दुर्घटनाकी खबर लग गयी थी, और वह हांफता हुआ इधर ही आ रहा था।

उसे देखते ही ग्रेनाइट चिल्लाया, यह रास टेकलाका काम है। मैं उस बदमाशको अभी ठीक किये देता हूं और बिना कुछ कहे सुने रास टेकलाके रहनेके स्थानकी तरफ दौड़ा।

सार इमरान उसके पीछे दौड़ा। ग्रेनाइट सीढ़ियां और दालान, सहन पार करता हुआ दौड़ा चला जा रहा था। उसमें न जाने कहांकी ताकत आ गयी थी। जैसे ही वह महलके पीछे-वाली सीढ़ियोंके पास पहुंचा उसने शेरकी दहाड़ और एक आदमीकी चिल्लाहट सुनी। वह सीढ़ियां फांदता हुआ चिड़िया-घरमें शेरके पिंजड़ेके सामने पहुंचा। पम्पन और शेरमें भयानक युद्ध हो रहा था। शेरकी दहाड़ और पम्पनकी चिल्लाहट महलमें गूञ्ज रही थी। ग्रेनाइटने भीतर जाना चाहा पर पिञ्जड़ेपर ताला लगा हुआ था।

चाभी! चाभी!! ग्रेनाइट पागलकी तरह चिल्लाया।

चाभी यांकावरके पास है! सार इमरानने कहा।

ग्रेनाइटने एक बड़ासा पत्थर उठा लिया और पिञ्जरेके ताले-पर दे देकर मारने लगा। ग्रेनाइट ताला पीटे जा रहा था। क्षणभरमें पत्थरके टुकड़े-टुकड़े हो गये और साथ ही ताला भी टूटकर गिर पड़ा, ठीक उसी क्षण पिंजरेमें शेर और पम्पनके गिरनेका शब्द सुनायी पड़ा।

भीतर जाते ही ग्रेनाइटने खांडा संभालकर टार्च जलाया। शेर मर चुका था और पम्पन खूनसे लथपथ शेरके पास पड़ा हुआ था। वह भी मर चुका था! ग्रेनाइटने पम्पनके पास पहुंच कर उसके कपड़े खोले और सीनेपर हाथ रखा।

वह प्रसन्नातासे चीख उठा, पम्पन बेहोश था।

———

१७

पम्पनका विवाह

पम्पनके घाव गहरे नहीं थे। शेरके पिञ्जरेमें पहुंचनेका हाल बतलाते हुए पम्पनने कहा कि जैसे ही तुम (ग्रेनाइट) पुस्तकालयकी तरफ गये एक आदमी दौड़ा हुआ आया और कहने लगा कि सार इमराननें अल खलीलको बन्दीकर लिया और तुमको नीचे बुलाया है। मैं उसके साथ गया और उस आदमीने पिञ्जड़ेकी तरफ जानेका इशारा किया, बस जैसे ही मैं भीतर गया दरवाजा बन्द हो गया।

इतना कहकर पम्पन फिर बेहोश हो गया। ग्रेनाइटने आग-बबूला होकर कहा, यह पाजी रासकी बदमाशी है। तुम जरा पम्पनको देखो मैं अभी उसकी गरदन मरोड़कर आता हूं।

दरवाजा रोककर इमराननें कहा—समझदार आदमी होकर जल्दीबाजी करते हो! तुम्हारा कहना ठीक है पर हमारे पास उसके विरुद्ध कुछ सबूत नहीं है और वह अपने स्थानपर सिपाहियों और अंग रक्षकोंसे सुरक्षित है। वहां जाना ठीक नहीं।

सार इमरानकी बात मानकर वह रातभर पम्पनके बिस्तरेके सहारे बैठा उसकी सेवा करता रहा। रातभरकी सेवा-सुश्रूषासे घावोंका दर्द बहुत कुछ कम हो गया, और सबेरे सार इमरानके आनेपर उसने हंसकर उसका स्वागत किया। दोपहरको उन्हें मालूम हुआ कि महामान्य नीगस कब सबेरे पधारेंगे। शाहजादी जेली भी नीगसके साथ ही आ रही थी और किसी कारणवश उसने अभीतक शादी नहीं की थी। ग्रे नाइटने शाहजादी जेलीके सम्बन्धमें पम्पनसे बात करना चाहा, पर सार इमरानकी मौजूदगीके कारण वह चुप रहा। किन्तु दिनभर पम्पन शाहजादी जेलीकी मधुर स्मृतिमें डूबा रहा। महलमें काफी चहल-पहल मच रही थी और नीगसके स्वागतकी तैयारियां हो रही थीं। आधी राततक महलमें कोलाहल मचा रहा। जेलीका ध्यान करते-करते पम्पन सो गया।

सबेरे आंखें खुलते ही उसने सार इमरानको अपने सामने खड़े पाया। वह कह रहा था—

आज मुझे बड़ा काम रहेगा जरा भी फुर्सत मिलनेकी उम्मीद नहीं है। शायद मैं तुम लोगोंसे मिलने दिनमें न आ सकूं। तुम लोग किसी बातका खयाल मत करना। मैं समय पाते ही नीगससे तुम्हारा जिक्र करूंगा और मुलाकातके लिये कहूंगा। किन्तु मिस्टर ग्रे नाइट एक प्रार्थना है, आप लोग इस स्थानसे बाहर जानेका जरा भी प्रयत्न न करेंगे।

मैं वादा करता हूं ऐसा ही करूंगा! ग्रे नाइटने कहा।

मैं वादा करता हूं ऐसा ही करुंगा ! ग्रेनाइटने कहा।

बहुत अच्छा ! एक और नयी खबर है रास टेकलाकी तबीयत खराब है उसे डाक्टर देख रहे हैं।

सार इमरान चला गया।

दो पहरमें बाजों-गाजोंसे महल गूंज उठा। सार इमरान दौड़ा हुआ आया और मैं सब ठीककर लूंगा कहकर चला गया।

महाराज आ गये।

एक घण्टे भर बाद फिर सार इमरान घबड़ाया हुआ सा आया और कहने लगा। मैं जो चाहता था सो नहीं हो सका। रास टेकलाने तुम लोगोंके खिलाफ बहुतसी बातें कह दीं। किन्तु मैंने शाहजादी जेलीसे मिलकर सब बाते कहीं और उसके जोर देनेपर नीगसने तुम्हारा वक्तव्य सुनना स्वीकार कर लिया।

"हम तैयार हैं।" कहकर ग्रेनाइटने हाथका सहारा देकर पम्पनको उठाया पम्पन ग्रेनाइटके कन्धेका सहारा लेकर चलने लगा। वे लोग सार इमरानके साथ सम्राट्की सेवामें उपस्थित हुये।

सम्राट् नीगस बहर करीन वयोवृद्ध थे, उनकी दाढ़ी घनी और सफेद थी। वे एक रत्नजटित सिंहासनपर बैठे हुये थे। अगल-बगल मन्त्री और अधिकारीवर्ग था। रास टेकला भी बैठा था। वह यद्यपि बीमार था और उसका चेहरा भी सूखा हुआ था, तब भी वह बदमाशीसे हंस रहा था।

शाहजादी जेली ठीक अपने पिताके पीछे बैठी हुयी थी।

वह लगभग तीस वर्षकी थी किन्तु अपूर्व सौन्दर्य्य उसके चेहरेपर छाया हुआ था। वह निहायत हसीन थी।

सम्राट्ने ग्रे नाइटका अभिवादन स्वीकार किया पर पम्पनपर नजर पड़ते ही उनकी आँखोंमें आग चमकने लगीं।

पम्पन चुपचाप खड़ा था और शाहजादी कातर होकर पम्पनको देख रही थी।

अंग्रेज सज्जन! सम्राट्के ओठ हिले। हम तुम्हारा स्वागत करतें हैं। किन्तु तुम्हारे साथीका नहीं, जिसने इतना बड़ा विश्वासघात करनेपर भी पन्द्रह वर्ष बाद आनेका दुस्साहस किया और आते ही हमारे विश्वास पात्र रास टेकला गोमनपर झूठा इलजाम लगा दिया। तब भी हमने कृपापूर्वक उसकी तरफ से तुम्हें बोलनेकी इजाजत दी है। कहो क्या कहना चाहते हो?

हम आपके अनुग्रहको सिर माथेपर लेते हैं। लेकिन हम सिर्फ कृपा ही नहीं न्याय भी मांगने आये हैं। मैं अपने दोस्त रास टेलकेननकी तरफसे बोल रहा हूँ, जो बोलनेसे लाचार है। आप सुनेंगे किस तरह रास टेलकेननके साथ विश्वासघात किया गया और उसकी ज़ुबान काट डाली गयी। ग्रे नाइटने कहा, पन्द्रह वर्ष पहिले पम्पन बेहोश करके यहांसे उड़ा दिया गया था। यह घटना कैसे घटी उसका पूरा ब्यौरा सुनाता हूं।

पन्द्रह वर्ष पहिले.........और उसने पम्पनकी लिखी हुयी तमाम बातें सम्राटको सुना दीं। उसके बाद उसने पीरी ड्रूसीलीकी मृत्यु और पम्पनको कमरबन्द मिलनेकी बातें सुनायीं।

यही आदमी है जिसने पीरी ड्रु सीलीके षड़यन्त्रमें उसकी मदद की, ग्रेनाइट चिल्लाया, रास टेकला गोमन विश्वासघाती है।

ग्रेनाइटकी बात सुन, टेकला भी चिल्लाने लगा—यह झूठा है। झूठा है। शुरूसे आखिर तक झूठ बोलता है।

सम्राटने रास टेकलाको चुपकर दिया। सम्राटने कहा, मैंने तुम्हारी बातें सुन लीं, किन्तु महाशय ग्रेनाइट, तुम समझ सकते हो कि ऐसी बातोंके लिये प्रमाण चाहिये। सिर्फ जुबानसे कह देनेसे ही काम नहीं चल सकता।

प्रमाण! खुद रास टेलकेनन यहाँ हाजिर हैं। हम यही कहने तो हजारों मीलका सफर कर यहां आये हैं! हमारे साथ शाही कमरबन्द था, जिसे इसी रास टेकलाने विश्वासघात करके ले लिया। उससे कहिये कि कमरबन्द हाजिर करे।

तुम पागल हो। मैंने कमरबन्द देखाही नहीं। रास बोला।

अच्छा। आप यांकावरको बुलाइये और उसे सच बातें कहनेके लिये मजबूर कीजिये, सब भेद अपने आप खुल जायगा।

हम यांकावरसे सब सुन चुके। तुम्हारे पास कोई प्रमाण है?

अल खलील होता तो वह कह सकता था, उसे बुलवाइये।

अच्छा। अल खलीलको बुलाओ।

हुजूर। वह तीन दिनसे गायब है। सार इमरानने कहा।

रास टेकला जानता है।

नहीं। मैं कुछ भी नहीं जानता।

सार इमरान जाकर, अल खलीलको ढूंढ़ो। सम्राट्ने हुक्म दिया।

हुजूर। अल खलील मिल गया। उसके साथ दूर देशसे आये हुए यूरोपियन भी हैं। वह घायल हो गया है। मैंने उसे दरबार में हाजिर करनेका हुक्म दे दिया है।

तुम खुद जल्दीसे जाकर ले लाओ!

तुम घायल कैसे हुये? अल खलीलके आते ही सम्राटने पूछा।

मैंने चाइनीज कूमिंगका पीछा किया था जैसा कि रास-टेकलाका हुक्म था। लेकिन उसे सन्देह हो गया और उसने मुझपर गोलियां चलायीं, घायल होकर मैंने भी फायर किये पर वह भाग गया।

मैं कुमिंगको नहीं जानता! रास फिर चिल्लाया।

चुप रहो! सम्राटने डांटकर कहा। रास टेकलाने कुमिंगको मारनेके लिये तुमसे क्यों कहा था?

क्योंकि उसके पास रास टेकला गोमनका कमरबन्द था जो उसने चुराया था।

झूठा है। फिर रास चिल्लाया और सम्राटने उसे फिर डांटा।

मिल गया! मिल गया!! चिल्लाता हुआ सार इमरान भीतर आया और बोला—कमरबन्द मिल गया। कुछ यूरोपियन अभी आये हैं उनमेंसे एकके पास है।

उन्हें यहां लाओ। बहर करीनने हुक्म दिया।

दूसरे ही क्षण ब्लेक, स्मिथ, जुली और चारन दरबारमें हाजिर हुए। ग्रेनाइटको देखते ही जुली उस तरफ बढ़ गयी। ब्लेकने कमरबन्द ग्रेनाइटको दे दिया।

यह प्रमाण है। ग्रेनाइटने शाहको कमरबन्द दिखाकर कहा। जरा उसकी तरफ देखिये। उसका चेहरा ही पापियों जैसा हो रहा है।

गिरफ्तार कर लो! नीगसने हुक्म दिया। इसके गुनाहोंकी सजा मौत है।

बादशाहके इतना कहते ही रास टेकलाने छुरा निकालकर सीनेमें भोंक लिया।

दरबारमें खलबली मच गयी।

शाहने हुक्म दिया कि यूरोपियन अतिथियोंको मेरे महलमें हाजिर करना। दरबार बरखास्त!

जाते जाते जुलीने पम्पनको भर नजर देखा और आनेका इशारा किया पम्पन भी उसीके पीछे पीछे चल दिया।

रास टेकलाकी लाश लोग उठाकर ले गये।

× × ×

तुम यहां कैसे आये। ग्रेनाइटने चारनसे पूछा।

रास टेलकेननको गिरफतार करने! ब्लेकने जवाब दिया।

किस अपराधमें?

पीरी ड्रूसीलीकी हत्याके अपराधमें!

किन्तु दोस्त, पम्पनने पीरीका खून नहीं किया। पम्पनकी लिखी हुई आत्मकथाका आखिरी अंश पढ़कर सुनाता हूं। तुम लोगोंको असली हत्याकारीका पता लग जायगा। सुनो!

"मैं विनोसा होटलके कमरेमें गया। वहां एक आदमी था जो

पीरी ड्रुसीली नहीं था, उसने खंजरसे मुझपर आक्रमण किया जो मेरे हाथमें लगा। मैं खून रोकने लगा इतनेमें वह खिड़कीकी राह भाग गया। पीरी बिस्तरपर पड़ा हुआ था। मैंने आगे बढ़ कर देखा वह मर चुका था, उसीने उसका गला घोट दिया था। मैंने पीरीकी तलाशी ली और कमरबन्द प्राप्त कर लिया।"

ओह यह बात है? ब्लेकने कहा, तब चीनी कुमिंगने ही पीरीका खून किया। चारन तुम्हारा कहना ठीक था कि जुजुत्सु जाननेवाले किसी पूर्वीयने पीरीका खून किया है।

वह चीना भी बड़ा छटा हुआ था। वह पीरीका रहस्य और टेकलाका विश्वासघात अच्छी तरह जानता था। चारनने कहा, वह रास टेकलाके पास कमरबन्द दिखाकर कुछ लेने आया था और बदमाश रास मुफ्तमें ही कमरबन्द पाना चाहता था।

इतनेमें ही नीगसके यहांसे उनका बुलावा आया। वहां सब लोग उपस्थित थे। सम्राट्, शाहजादी जेली और पम्पन एक ही पंक्तिमें बैठे थे। वह शाहजादीके इशारेपर उसके पीछे-पीछे गया था और एकान्तमें सम्राट्से सब बातें कह दीं थीं। रास इमरान, अल खलील भी मौजूद थे। सम्राट्ने रास टेलकेननको खजांची-का पद दे दिया था।

यूरोपियन यात्रियोंके आते ही सम्राट्ने उनका स्वागत किया और कहा—

बहादुर यूरोपियनों!

हम तुम्हारा स्वागत करते हैं। आपलोग सच्चे और ईमान-

दार तथा दयालु हैं। आपके आनेसे हमारा महल पवित्र हुआ। हम मिस जुलीके कृतज्ञ हैं जिन्होंने रास टेलकेननकी जान बचायी, हम ग्रेनाइट साहबको भी धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने हमारे खजांचीका साथ दिया और हम जासूस सम्राट् ब्लेक और चारन तथा स्मिथको धन्यवाद देते हैं।

परमात्माकी कृपासे पन्द्रह वर्ष बाद हमारा खजांची हमें मिला, हमारे राज्यसे रास टेकला जैसे विश्वासघातीका नाम मिटा और हमें फिर रास टेलकेनन जैसा विश्वासी खजांची प्राप्त हुआ। साथ ही हमें इस बातकी बड़ी खुशी है कि शाहजादी जेलीकी विवाह करनेकी प्रतिज्ञा भी पूरी हो गयी। मेरी प्यारी बेटी, पन्द्रह वर्षसे जिसका इन्तजार कर रही थी, वह महाभाग उसे मिल गया। मैं बड़े आनन्दसे घोषणा करता हूं कि आगामी बृहस्पतिको शाहजादी जेली और खजांची रास टेलकेननका विवाह होगा। आप लोग हमारी समस्त प्रजाके साथ विवाहोत्सव और दावतमें शरीक हों और हमारा गौरव बढ़ावें।

सम्राट्की घोषणा सुनकर सबके चेहरे प्रसन्नतासे खिल गये। जेली कनखियोंसे अपने प्रियतमको देख रही थी, और यह उक्ति चरितार्थ कर रही थी।

जाकर जापर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिले न कछु सन्देहू॥

❀ समाप्त ❀